Remove Watermark Now

Catalog

ग्रन्थ -1-203 1
वाल इतहिास (शोधग्रन्थ)- 204-last 117

pdfelement

Remove Watermark Now

अग्रवाल इतिहास

(शोध ग्रंथ)

१८० वैश्य घटकों का सप्रमाण विवरण

लेखक:

चौ. वृन्दावन कानुनगो

श्रीकृष्ण नगर, सफीदों रोड, जींद-126102

Remove Watermark Now

अग्रवाल इतिहास

(शोध ग्रंथ)

१८० वैश्य घटकों का सप्रमाण विवरण

pdfelement

लेखक :

चौ० वृन्दावन कानुनगो

श्रीकृष्ण नगर, सफीदों रोड़, जींद-126102

प्रकाशक :

अखिल भारतीय महाराजा अग्रसैन वंश इतिहास शोध संस्थान

श्रीकृष्ण नगर, सफीदों रोड़, जींद - 126102 (हरियाणा)

दूरभाष : 2500

प्रकाशक :

अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान
श्रीकृष्ण नगर, सफीदों रोड़, जीन्द-126102 (हरियाणा)

दूरभाष : 2500

□

सम्पादक :

कुलदीप भारद्वाज

□

लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है
(पुस्तक से कोई भी उद्धरण लेने से पूर्व अधिकृत स्वीकृति अनिवार्य है)

□

मूल्य 26/- (छब्बीस रुपए मात्र)

□

मुद्रक :

जैको पेपर कन्वर्टर्स
राजनियुक्त मुद्रक एवं प्रकाशक
रोशनगंज तिलकद्वार, मथुरा.
फोन : 4292

Remove Watermark Now

अग्रवाल इतिहास शोधग्रंथ

●

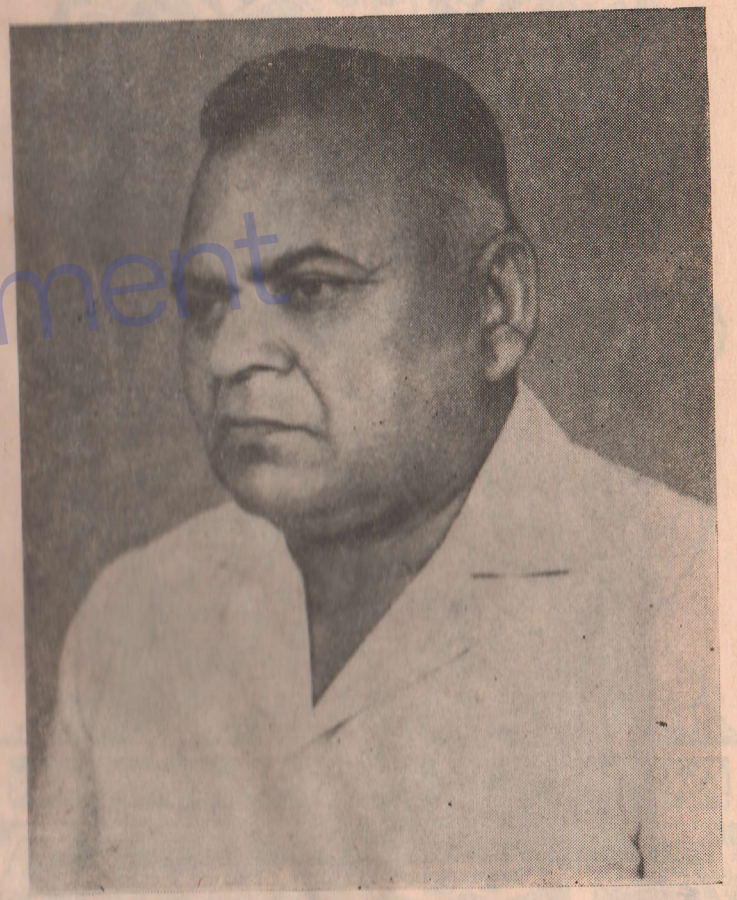

लेखक :-श्री वृन्दावन कानूनगो

pdfelement

Remove Watermark Now

श्रीमती सौभाग्यवती
धर्मपत्नि श्री वृन्दावन कानूनगो

श्री अग्रसैन जी महाराज

pdfelement

Remove Watermark Now

श्री लक्ष्मीजी

pdfelement

Remove Watermark Now

Remove Watermark Now

अग्रवाल एवं वैश्य वंश इतिहास

शोध-ग्रन्थ

॥ श्री गणेशायः नमः ॥

सरस्वतीमयं दृष्ट्वा वीणापुस्तकधारिणीम् ।
हंसवाहसमायुक्ता विद्यादानकरी मम ॥ १ ॥

प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती ।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थं हंसवाहिनी ॥ २ ॥

पञ्चमं जगति ख्याता षष्ठं वाणीश्वरी तथा ।
कौमारी सप्तमं प्रोक्ता अष्टम ब्रह्मचारिणी ॥ ३ ॥

नवमं बुद्धिदात्री च दशमं वरदायिनी ।
एकादशं क्षुद्रघण्टा द्वादशं भुवनेश्वरी ॥ ४ ॥

ब्राह्मी द्वादशनामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
सर्वसिद्धिकरी तस्य प्रसन्ना परमेश्वरी ॥ ५ ॥

सा मे वसतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती ।

pdfelement

Remove Watermark Now

भूमिका

मेरे पिता श्री परमपूज्य लाला श्रीकृष्णदास जी जो कि अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के महामन्त्री थे। उन्होंने लाहौर (पंजाब) से अग्रवाल सेवक पत्रिका का प्रकाशन किया था। इनके द्वारा लिखित लेखों से पता चलता है कि उनकी हार्दिक अभिलाषा अग्रवाल इतिहास का शोध करने की थी। और वे इस कार्य में अग्रसर भी थे। परन्तु सन् १९३५ में जब वे ३५ वर्ष के थे, उनका अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया, जिसके कारण उनका स्वप्न पूरा न हो सका। उनके कार्य को पूरा करने का संकल्प मेरे मन में उठा और मैंने शोध कार्य प्रारम्भ कर दिया। पुराना रिकार्ड लाहौर (पाकिस्तान) में रह गया था। अतः पहले लिखी अग्रवालों की इतिहास की पुस्तकें उपलब्ध करके उन पर शोध कार्य प्रारम्भ किया। इन पुस्तकों में मुख्यतः अग्रवैश्य, वंशानुकिर्तनम उग्र चरित्रम एवं डा० सत्यकेतू जी द्वारा लिखित अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास शामिल है। यह शोध द्वारा अप्रमाणित, तथ्य हीन एवं कल्पनाओं पर आधारित प्रतीत हुई। इनके बाद श्री-ब्रह्मानन्दजी ब्रह्मचारी द्वारा लिखित विष्णु अग्रसेन वंश पुराण उपलब्ध हुआ। उनमें जितनी भी अग्रवालों द्वारा लिखित व सुनी सुनाई किवदन्तियाँ थीं, अग्रसेन वंश पुराण में उनका संग्रह था और लिखा कि अग्रवाल स्वयं समझदार हैं। अपने आप सोचेंगे कि वह कौन से अग्रसेन के वंशज हैं। कई बार अग्रोहा व उसके आस पास के गांवों का भ्रमण किया और पुरातत्व वस्तुओं का संग्रह किया जिनमें कुछ हस्तलिखित भी शामिल हैं। और उनके आधार पर सन् १९७८ में अग्रवंश प्रकाश पुस्तक प्रकाशित की। श्रीमती स्वराज्यमणी अग्रवाल लेखिका अग्रोहा, अग्रवाल, अग्रसेन का पत्र आने पर कुछ सामग्री के चित्र उन्हें भेजे। तथा विचारों का आदान-प्रदान भी किया। अग्रवंश शोध संस्थान के

संस्थापक व प्रधान श्री देवकीनन्दन जी गुप्त से भी पत्र व्यवहार प्रारम्भ किया। उन्होंने श्री परमेश्वरीलाल जी गुप्त द्वारा लिखित "अग्रवाल जाति का विकास" पुस्तक भेजी। उसे पढ़ने से ऐसा प्रतीत हुआ कि डा० गुप्त जी ने अग्रवालों के कपोल कल्पित इतिहास पढ़ कर यह धारणा बनाली कि जैसे यह इतिहास कपोल कल्पित है वैसे ही महाराजा अग्रसेनजी का नाम भी कपोल कल्पित है। तथा इतिहास के अन्य तथ्यों को शोध करने की आवश्यकता न समझ कर ज्यों का त्यों लिख दिया। और अग्रसेन के अस्तित्व से इन्कार कर दिया। अब यह स्थिति आ गई कि अग्रसेन नाम का होना ही नहीं मानते। चाहे उन्हें कितने प्रमाण उपलब्ध कराये जाएं। इसी दौरान मुझे अग्रोहा से कुछ मुद्रांक प्राप्त हुए। उनके चित्र डा० परमेश्वरीलाल जी को भेजे। उनका उत्तर आया कि यह अग्रोहा के नहीं हैं। इनका अग्रोहा व अग्रवालों से कोई सम्बन्ध नही है। जब यह मुद्रांक भारतीय मुद्रा परिषद वाराणसी को पढ़ने के लिये भेजे तो वहाँ से विवरण प्राप्त हुआ कि प्रथम मुद्रांक पर राज्ञ राज्ञों अगर वर्मस्य, द्वितीय पर सूर्य व नन्दि का चिन्ह व देवसिद्ध, एवं तृतीय पर त्रिरत्न का चिन्ह व त्रिलकस्य लिखा है। मुझे शोध द्वारा जो जानकारी प्राप्त होती थी उसे जनता की जानकारी के लिये अग्रवाल पत्रिकाओं में प्रकाशित करवा दिया जाता था। जिससे इतिहास में रुचि रखने वाले बन्धुओं से पत्र व्यवहार द्वारा विचारों का आदान-प्रदान प्रारम्भ हुआ, जिसका अच्छा प्रभाव रहा। शोध करते-करते अन्त में मेरे मन में भी डा० परमेश्वरी लाल गुप्त वाले विचार उत्पन्न होने लगे। जब में यह सोच रहा था कि एक घटना घटी कि मेरा छोटा पौत्र संजीत जो कि तीन वर्ष का था, मेरे पास आकर कहने लगा कि दादाजी क्या आप यह सोच रहे हैं कि यह दादाजी हुए नहीं (महाराजा अग्रसेन जी के चित्र की ओर संकेत करके) और कहने लगा कि आप पटियाला चले जावें। मेरे मन में पटियाला जाकर भाईयों से मिलने का विचार आया। मैं पटियाला चला गया। वहाँ पर अकस्मात महाराजा अमरेन्द्रसिंह से मिलने का अवसर मिला। बातचीत के दौरान राजा अग्रसेन की बात चली। उन्होंने कहा कि उग्रसेन के वंशजों के बाद अग्रोहा में हमारे वंश का राज्य हुआ था। और इन्होंने अपने रिकार्ड से कागजात निकाल कर दिखाये। इससे मुझे अग्रवाल इतिहास की सही व नई

Remove Watermark Now

दिशा प्राप्त हुई। फिर गजेटियर उपलब्ध किया गया। उसके बाद गुजरात महाराष्ट्र व अन्य स्थानों से पुस्तकें उपलब्ध करने में पचास हजार रुपये से अधिक राशि खर्च हुई। कुछ दुर्लभ पुस्तकें उपलब्ध न हो सकीं। उन्हें प्राप्त करने के लिये गुजरात व महाराष्ट्र का दौरा किया गया, जिसमें तिलकराज जी अग्रवाल बम्बई वालों ने हर प्रकार की सहायता की यहाँ तक कि अपने कर्मचारीं भी साथ भेजें। वे दुर्लभ पुस्तकें भी प्राप्त हो गईं और उनसे बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। जिससे इतिहास की अनेक समस्याएं सुलझ गई। सारांश यह निकला कि सूर्यवंश की जम्मुलोचन शाख में हरिवर्मन राजा हुआ, वह कुरुक्षेत्र आ गया। उसके वंश में सिकन्दर के आक्रमण के समय राजा अग्रमीस (आगरा) का राजा था। यह वंश मौर्यकाल में महाराष्ट्र आ गया और सातवाहन (सूर्य) वंश कहलाया। इस वंश को वैश्यव्रती भी कहते थे। इस वंश में राजा शालीवाहन हुआ। उसका पडपौत्र तान हुआ। फिर इस वंश की एक शाख चालुक्य कहलाई। उस समय इस वंश में [illegible] व [illegible] भी कहलाने लगे थे। चालुक्य वंश में श्री बल्लभ मंगलेश्वर के पुत्र उगवर्मन हुए। रवेती द्वीप (गोवा) के राज्यपाल नियुक्त हुए और उनको सत्याश्रय ध्रुवराजा इन्द्र वर्मन की उपाधि मिली। इनके पुत्र अग्र वर्मन हुए। ताम्रपत्र में लिखे इसके नाम को कोई विद्वान् उग-वर्मन, कोई पुग वर्मन, कोई यज्ञवर्मन तो कोई अग्र वर्मन पढ़ता है। मंगलेश्वर व उनके भतीजे पुलकेशिन II में युद्ध हुआ। मंगलेश्वर ने वीरगति प्राप्त की। अग्रवर्मन गृह कलह के कारण पुलकेसेन को राज्य देकर पंजाब आ गया और विक्रमी संवत् ६९९ में अग्रोहा को राजधानी बनाया। अग्रोहा उस समय वीरान पड़ा था। इसका प्राचीन नाम अवन्ती नगर था। अग्रोहा के आस पास स्थित ग्रामों के नाम गुजरात के ग्रामों के नाम से मिलते जुलते हैं। जैसे बरवाला, कुम्हारी, दुर्जनपुर कण्डेला, सोमनाथ, पाली, बड़ोदा आदि हरियाणा के अनेक नगरों व ग्रामों के नाम गुजरात व महाराष्ट्र के नगरों व ग्रामों से मिलते हैं। अग्रसेन का पडपोत्र वत्सराज ने गुजरात जाकर अपना राज्य स्थापित किया, उसके वंशज तान कहलाते है। संवत् ७५६ में सिकन्दर रूमी मुस्लिम बादशाह ने अग्रोहा पर आक्रमण किया। रतनसेन व गोकुलचन्द के देशद्रोही

pdfelement

होने के कारण पराजय हुई। बारह हजार स्त्रियाँ सती हो गईं। नौवीं शताब्दी में अग्रोहा के निवासियों ने काष्ठासंघ जैन मुनि लौहाचार्य से जैनधर्म की दीक्षा ली। सन् ११९३ ई० में मौहम्मद गौरी ने अग्रोहा पर आक्रमण किया। अग्रोहा का शस्त्रगार कुरमाण (किरमारा) को जला डाला। मौहम्मद गौरी अग्रोहा के राजा धीरपाल को पकड़ कर ले गया। उसे मुसलमान बना वनुड़ (पंजाब) का नबाब बना दिया। अग्रोहा का राज्य भट्टी राजपूत भीमवल को दिया, जिसके वंशज पटियाला, नाभा व जीन्द के राजा हैं। अग्रोहा के सम्पन्न निवासी व महाराजा अग्रसेन के वंशज अग्रोहा छोड़ कर दूसरे नगरों में चले गये और अग्रवाल (अग्रोहा के निवासी) कहलाने लगे। फिरोजशाह तुगलक ने हिसार फिरोजा बनाने के लिये अग्रोहा के मन्दिरों व महलों को गिराकर अग्रोहा का मलवा मंगवाकर हिसार में लगवाया। अकबर काल में महम के सेठ हरभजशाह ने अग्रोहा को आवाद करने का निश्चय किया। इस कार्य में भट्टी राजपूत राजा रसालु मलेर कोटला जो हरभजशाह का मित्र था, ने सहायता का वचन दिया। हरभजशाह की पुत्री शीला पर इसकी नजर पड़ गई। उसने षड़यन्त्र रचा। शीला अपने सत पर रही और सती हो गई। हरभजशाह का दिल टूट गया। कार्य अधूरा रह गया। अतः सन् १७८० में अग्रोहा को आबाद करने का विचार दीवान नानुमल व ठण्डीराम ने किया। किला बनवाना शुरू हुआ। यह कार्य भी अधूरा रह गया।

वर्ण व्यवस्था:—वर्ण व्यवस्था को चार वर्णों से विभाजित किया ब्राह्मणों का कार्य पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना, करवाना, क्षत्री का कार्य धर्म व देश की रक्षा करना, वैश्यों का धर्म, गौपालन, बनज, व्यापार, कृषि था। अतः वैश्य समुदाय में कृषि करने वाले जाट आदि व गौपालन करने वाले अहीर आदि सभी आते है। प्राचीन प्रशस्तियों में अग्रवाल व खन्डेलवाल व वघेरवाल आदि को अर्थात बनज करने वाले (वणिक) लिखा है। वर्तमान में केवल व्यापारियों को ही वैश्य कहते है। जो कि उचित परम्परा नहीं है। इसी प्रकार अग्रवाल शब्द अग्रोहा निवासियों के लिये आया है, केवल अग्रसेन के वंशजों के लिए नहीं। क्योंकि अग्रवाल सैनी (माली) व ब्राह्मण आदि भी है। महाराजा अग्रसेन के वंशज केवल १७½ गौत्री के नाम निम्नलिखित हैं जो कि अग्रवाल हैं।

Remove Watermark Now

बाकी अग्रोहा निवासी है। इसका अपभ्रंश शब्द भी नहीं है। अग्रोहा निवासियों का जो कि महाराजा अग्रसेन के पुत्रों के पुरोहितो के शिष्य थे उनके भी वही गौत्र है। वह अपभ्रंश नाम से हैं जैसे गोयल का गोहिल। शोध कार्य करते समय अनेक वैश्य समुदायों के इतिहास नजर आये। तब विचार आया कि इन धटकों का इतिहास भी साथ लिख दिया जावे। जिससे इतिहास की भ्रान्तियाँ दूर होंगी जैसे कि वैश्य मनुजी से बने थे। जन्म से वर्णव्यवस्था बनी है। जबकि कर्म से वर्ण व्यवस्था बननेके प्रमाण मिलते हैं। इतिहास शोध का कार्य कभी भी समाप्त नहीं होता। हमें केवल दिशा मिली है। इस विचार से सन् १९८२ ई० में अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन इतिहास शोध संस्थान की स्थापना की। जिसके प्रथम महामन्त्री श्री शीशपाल जी गर्ग गने। छः हजार पुस्तकें शोध विषय पर प्रकाशित करके सन् १९८२ के प्रथम कुम्भ अग्रोहा पर बिना शुल्क बाँटी गई। और अग्रोहा से प्राप्त प्राचीन पुरातत्व सामग्री की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। "अग्रोह एवं सती महात्तम", मानव धर्म एवं श्रीकृष्ण रहस्य नामक तीन हजार पुस्तकें निःशुल्क वितरित की। इस संस्था के पास अग्रोहा से प्राप्त पुरातत्व दुर्लभ सामग्री एवं दुर्लभ पुस्तकों का एक भण्डार है। और इस पुस्तक का प्रथम संस्करण भी निःशुल्क सरकारी व गैर सरकारी पुस्तकालयों एवं शोध प्रतिष्ठानों व पुरातत्व विभागों को भेजने का प्रावधान है। यह विचार इस कारण बना कि अगस्त १९८३ में इतिहास शोध कार्य एवम् दुर्लभ पुस्तकों की प्राप्ति हेतु महाराष्ट्र व गुजरात के दौरे पर श्री वृन्दावन जी कानुनगो गये तब औरंगाबाद व हैदराबाद एवं बड़ौदा के पुरातत्व विभाग एवं विश्वविद्यालय के निदेशकों ने अपने ये विचार प्रकट किये थे कि आप अग्रवाल इतिहास पर शोध में समय व धन बरबाद न करें, क्योंकि हमारे विचारों के अनुसार अभी तक अग्रवालों द्वारा लिखित सभी इतिहास कपोल-कल्पित हैं। तब मैंने उनको अपने शोध द्वारा प्राप्त सामग्री की प्रतिलिपियां दी। उन प्रतिलिपियों को देखने के बाद वह हमारी सहायता करने के लिए तत्पर हो गये। और सहायता की। और कहा कि आपको जो भी जानकारी प्राप्त हो उनकी सूचना हमें दें। हम हर प्रकार से इस शोध कार्य में आपकी सहायता करेंगे। इसी पुस्तक के भाग द्वितीय में सामग्री एवं अग्रवाल विभूतियों का जीवन परिचय देने का विचार है।

pdfelement

"अग्रवाल जाति का विकास" पुस्तक एवं अग्रसेन-अग्रोहा अग्रवाल व अन्य कई पुस्तकों में अग्रोत कान्वेय शब्द लिखी प्रशस्तियों को अग्रवाल (अग्रसेन के वंशज) मान लिया है। परन्तु ऐसा प्रतीत नहीं होता।
१. अग्रवाल जाति का विकास पृष्ठ १९७-१९८ में लिखी प्रशस्ति ज्येष्ठ शुक्ल तृतीय वृहस्पतिवार को संग्रामपुर में श्रीमान् सिन्ध के राज्य के समय आदि पुराण की प्रति चन्द्रकिर्ती ने अग्रोत कान्वय भुगिल गौत्री साह श्री लिए लिखी।

२. सिद्धान्त सार ग्रन्थ अग्रोत कान्वय गर्ग गौत्र के गुजर कुटुम्ब की पुत्री वाई मीवों ने लिखवाई माघ सुदी पंचम सोमवार सम्वत् १६६४.

३. पृष्ठ १९९ पर चैत्र बदी ११ शुक्रवार अग्रोत कान्वय गोहिल गौत्र भाशीवाल सराफ कुटुम्ब वालों से लिखवाई।

तस्याँ पुर्यस्ति वणिजामग्रोतक निवासिनां।
वंशें श्री साच देवाख्या साधुस्तत्राद पद्यत: ।।

अर्थात् अग्रोत निवासी शाक वंश के वणिक
(जम्बूस्वामि चरित राजमल्ल)

अथ संवसरेस्मिन श्रीनृप विक्रमादित्यगतांशब्द संवत् १६३२ श्री-कुमार सेनानाम घैयास्तदाम्नाये अग्रोत कान्वेय भटानिया कोल वास्तव्य साधु श्रीनन्दनं एतेषां मध्ये परभसुश्रावक साधुश्री"

अर्थात् अग्रोत कान्वेय भयानिया श्री कुमारसेन।

उपरोक्त प्रशस्तियों से प्रतीत होता है कि लेखकों ने अग्रोत कान्वेय का अर्थ अग्रोहा के निवासी एवं अग्रसेन के वंशज मानकर हर उसव्यक्ति को जिसे अग्रोत कान्वेय लिखा गया था अग्रसेन का वंशज मान लिया। परन्तु ऐसा नहीं प्रतीत होता। जैसे अग्रोत कान्वेय भुगिल गौत्र लिखा है-

१. अग्रसेन के वंशजों के गौत्रों में भुगिल गौत्र नहीं है।
२. अग्रोतकान्वेय गर्ग गौत्र के गुजर कुटम्ब की बाई मीवों गर्ग गौत्र अग्रवाल वंशजों के गौत्रों में है, परन्तु गर्ग गौत्र गुजर माली सेनी जाट एवं राजपूतों में भी पाये जाते हैं।
३. अग्रोत कान्वेय गोहिल गौत्र आसीवाल सराफ कुटम्ब गोहिल महा-राजा गौहलादित्य के वंशज है सम्भवत: आसी में रहने व सराफ का व्यवसाय करने के कारण आसीवाल सराफ कहलाये। फिर अग्रोहा आ बसे।

Remove Watermark Now

४. वणिजामग्रोतक निवासनां वंशों साचा (शाक)
अर्थात् शाक वंश के वाणिक जो अग्रोतक के निवासी थे।

५. अग्रोत कान्वेवं भटानिया कुमारसेन
महेश्वरियों में भटानिया गौत्र है अर्थात भटानिया .हेश्वरी अग्रोतक निवासी।

सिद्ध होता है कि अग्रोहा का हर निवासी अपने को अग्र कान्वेय लिखाता था वर्तमान में कुछ माली (सैनी) चमार ब्राह्मण आदि अपना अग्रवाल गौत्र मानते हैं। इसी प्रकार गर्ग, गोयल, सिंगल, मित्तल आदि २ गौत्र राजपूत जाट सैनी चमार आदि अनेक जातियों में पाये जाते हैं। महाराजा अग्रसेन के केवल १७½ गौत्र हैं।

१. गर्ग २. गोयल ३. सिंगल ४. मित्तल ५. जिन्दल ६. बंसल ७. बिंदल ८. कांँसल ९. तायल १०. तुंगल ११. मंगल १२. एरन १३. टैरण १४. गंगल १५. कुच्छल १६. मुद्गल १७. भंदल १८. गौन।

कदीमी अग्रवाल वंश:—जो लोग मौहम्मद गौरी के आक्रमण से पूर्व अग्रोहा से निकलकर दूसरे प्रान्तों में जा बसे वे कदीमी कहलाये। और जो अग्रोहा से युद्ध के बाद निकले वे पछाही कहलाए। किसी कारण किसी व्यक्ति का जाति बहिष्कार किया गया वह दसा कहलाये। इसी प्रकार पंजाब ढैया बने।

निवेदन: —हमें अग्रवाल शब्द का उल्लेख चौदहवीं शताब्दी ई० में मिला है। किसी बन्धु को इससे पूर्व अग्रवाल शब्द का उल्लेख होने का पता हो या उल्लेख मिले तो कृपया सूचित करने का कष्ट करें।

इस पुस्तक के लिखते समय अगस्त सन् १९८४ को आकस्मात प्राचीन हस्तलिखित अग्रपुराण जिसका भाटों के पास होना बताया जाता था बहुत खोज करने पर भी प्राप्त न हो सका था, वह प्राप्त हो गया उसका फोटो स्टेट करवा लिया है। उस पर शोध करके इस पुस्तक में लिखा है। जिस के अनुसार जो गौत्र है उनके नाम पृष्ठ ९७ पर दिये गये हैं। तथा यह भी स्पष्ट हो गया है कि महाराजा अग्रसेन के वंशजों ने वैश्य कर्म सन् ११९३ के बाद अपनाया। इससे प्रथम क्षत्री कर्मी थे। देहली पर भी कुछ समय तक राज्य किया। अग्रसेनजी के

पुत्रों का विवाह मथुरा के राजा पदमनाग की पुत्रियों से विक्रमी सम्वत् ६७० में हुआ। महाराजा अग्रसेनजी से लेकर राजा अनंगपाल तक की अग्रोहा राज्यावली भी इसी पुस्तक में दी गई है। इस ३०० वर्ष प्राचीन लिखित पुस्तक अग्रपुराण में लिखा है कि यह कथा अग्र-पुराण की अर्जुन के पौत्र अभिमन्यु के पुत्र परीक्षत को सुनाई गई। जिससे शंका उत्पन्न होती है कि कि राजा परीक्षत महाभारत के बाद अर्थात ई० पूर्व १३८८ वर्ष जन्म हुआ तो यह कथा उन्होंने कैसे सुनो? जब इस कारण की खोज की गयी तो पता तगा कि चन्दोभा नगर (दुबकुण्ड) का राजा पाण्डू था। उसका पुत्र अर्जुन था। अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु था। अभिमन्यु के विजय हुआ। विजय के विक्रम हुआ। विजय का राज्यकाल सन् १०८८ था। उसे यह कथा सुनाई गयी। ऐसा प्रतीत होता है कि ३०० वर्ष पूर्व जब यह अग्रपुराण जिसकी हमने फोटो स्टेट ली है को भाट ने जिस पुरानी पुस्तक से नकल की और उसने परीक्षत के स्थान पर विजय लिखा देखकर अपने अल्पज्ञान द्वारा इन्हे महाभारत का पाण्डू वंशी समझकर परीक्षत लिखा। यह ताम्रपत्र इस पुस्तक में आप पृष्ठ १५६ पर देख सकते हैं। इस पुराण से और भी महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आय जो इस पुस्तक में लिखे हैं।

Remove Watermark Now

ॐ

प्रस्तावना

Dr. Bhup Singh Rajput

डॉ० भूपसिंह राजपूत

NUMISMATIST, PHILATELIST, GENEALOGIZIST
ORIENTALIST, ANTIQUARIAN, MANUSCRIPTIST
HOROSCHOPIST, PURANOLOGIST, JAINOLOGIST
JEWOLOGIST, CHRISTOLOGIST, MOHEMDOLOGIST
ZOROSTEROLOGIST, BUDDHOLOGIST ETC. ETC.

RAJPUT BHAWAN, LAL SARAK
PURANI SUBZI MANDI, HANSI
PIN 125033 (HARAYANA RAJYA)
TELE PHONE NO. 619

(डॉ० भूपसिंह राजपूत)

मैंने पुस्तक अग्रवाल एवं वैश्य वंश इतिहास सरसरी तौर पर पढ़ी है। आपका यह प्रयास सराहनीय है। आशा है भावी पीढ़ियां इस पुस्तक के अवलोकनोपरान्त यह जान सकेंगीं कि हमारे पूर्वज कैसे कीर्तिवान् मेधावी लोग थे। अपने पूर्वजों का इतिहास एवं चरित्र का पठन एवं मनन करते हुए उनके वंशधरों को उन गुणों को जपनाने की ललक पैदा स्वाभाविक रूप से ही होती है जिनकी खान उनके पूर्ववर्ती थे और जिनका न्युनाधिक अभाव उत्तरवर्तियों में हो इतिहास पुस्तकों और जातीय बही भाटों की विरदावलियाँ सभी दिशा में किये गये हमारे पूर्वजों के दूरदर्शितापूर्ण निर्णय हैं। जिन पर हम उचित रूप से गर्व कर सकते हैं।

महापुरुष किसी एक जाति या सम्प्रदाय के लिये नहीं माने जा सकते, उन पर कभी देशवासियों का उचित रूप से समान अधिकार होता है। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, दशमेशगुरू गोविन्दसिंह प्रभृत्ति महान् विभूतियाँ आज सारे भारतीयों के लिये गौरव एवं प्रेरणा का प्रकाश स्तम्भ हैं। महाराजा अग्रसेनजी न केवल एक रियासत के शासक ही थे। वरन् कई उन गुणों के सम्पृक्त भी थे जो किसी महापुरुष की महानता के अनिवार्य लक्षण होते हैं। उनकी महानता के कारण वह केवल सूर्यवंशी क्षत्रियों या अग्रवालों के लिये ही सुरक्षित नहीं किये जा सकते बल्कि उन पर इन सभी का अधिकार है जो उन्हें श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते हैं। सूर्यवंशी होने के कारण या वैश्य कर्म अपनाने के कारण ये पंक्तियाँ नहीं लिख रहा हूं इसका इनके अलावा भी कारण है बल्कि जिनका उत्तर उपरोक्त पंक्तियों में मैंने दिया हैं।

महाराजा अग्रसेन का समय कई बार किसी महापुरुष के श्रद्धालु उसका समय भावातिरेक के कारण इतना पीछे निकल जाते हैं कि उसकी अच्छी भली ऐतिहासिकता पौराणिकता में बदल कर काल्पनिकता में चली जाती है। कई बार यह काम शरारतन और कुछ लोगों द्वारा किया जाता है। दोनों ही हालत में यह प्रवृत्ति निन्दा और खेद का विषय है। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में महान् है तो इसकी ऐतिहासिकता में कमी नहीं आती और यदि किसी व्यक्ति में कोई कमी ही रही है तो पौराणिकता से वह संवर नहीं जाती। पुराणों के सभी राजाओं को महान् नही माना जाता और ऐतिहासिक विभूतियों को कमतर करके नहीं आँका जाता। यह पुस्तक अग्रवाल समाज को सही इतिहास की जानकारी देने में सहायक सिद्ध होगी।

□

Remove Watermark Now

विषय सूची

क्रमाँक	नाम	पृष्ठांक
१.	वन्दना	१
	सर्ग प्रथम	
२.	अनन्त से वैवस्वत मनु	२
३.	प्रलयकाल एवं सृष्टि रचना काल	२-३
४.	बाराह कल्प में वैवस्वत मनु के अवतार	३-५
५.	वर्तमान २८वीं चतुर्युगी का सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग, द्वापर में महाभारत, कश्यप ऋषि का मिश्र देशों से प्राचीन भारतीयों को लाना।	५-१०
६.	गोरख पन्थियोगियों की युगों के बारे में धारणा, कश्यप से नन्द तक, बुद्ध एवं महावीर। पंचाल परिषद् का विवरण	१०-१४
	सर्ग द्वितीय	
७.	अग्रवाल जाति के प्राचीन इतिहास पर विवेचना	१५-१९
८.	अग्र वैश्य वंशानुकीर्तनम पर विवेचना	१९-२३
९.	अग्रवाल इतिहास परिचय पर विवेचना	२३-२४
१०.	अग्रवाल जाति के विकास पर विवेचना	२४-२८
११.	अग्रसेन अगोहा- अग्रवाल पर विवेचना	२८ ३२
१२.	अग्रपुराण पर विवेचना	३२-३७
	सर्ग तृतीय	
१३.	वर्णव्यवस्था का जन्म से न होकर कर्म से होना	३८-४०

१४. महाभारत काल से गुप्तकाल तक अग्रय गण नहीं था। ४०-४५

१५. भारत पर सिकन्दर का आक्रमण, आगरा सम्राट अग्रमीस ४५-४६

१६. शोध अग्रोहा नरेश अग्रसेन ४६-५३

१७. शोध राजा शालीवाहन ५३-५५

१८. शोध चालुक्यवंश ५५-५६

१९. सातवाहन वैश्य सातवाहन सूर्य वंशी हैं—चालुक्य राजा वैश्य राजा कहलाते थे ५६-५७

२०. महाराजा अग्रसेन द्वारा निर्मित दुर्ग, अग्रनगर, अग्रोहा ५७-५८

२१. शोध नागवंश, नाग कन्याओं की कथा की भ्रान्ति ५८-६१

२२. गौत्र व्यवस्था ६१-६३

२३. शोध काष्ठा संघ, धुङ्गनाथ कथा ६३-६७

सर्ग चतुर्थ

२४. सूर्य वंश का कश्मीर पर राज्य, सीमुखसातवाहन कान्हा या कृष्ण सा॰कर्णी प्रथम, गौतमी पुत्र सातकर्णी ६७-७५

२५. राजा शंख व राजा विक्रमादित्य ७५-७८

२६. पुलमावी तृतीय, सातवाहन साम्राज्य का अन्त, सातवाहन वंश की शाखायें, इक्षवाकू वंश, बृहत्-फलायन कुल, आनन्द कुल, वाकाटक, कदम्ब कुल, पल्लवकुल, हरितपुत्र कुटु कुलानन्द सातकर्णी ७८-८५

२७. राजा शालीवाहन, चालुक्यवंश बादामी ८५-८७

२८. अग्रवर्मन, अग्रोहा राज्य का निर्माण, अग्रोहा पर सिकन्दर रूमी का आक्रमण, अग्रोहा के राजकुमार वत्सराज का गुजरात पर आक्रमण ८७-९९

२९. अग्रोहा वासियों का जैनधर्म अपनाना, अग्रोहा पर दिल्लीपति विजयपाल तोमर का आक्रमण अग्रवालों का देहली पर राज्य ९९-१०३

३०. मसूद गजनवी का अग्रोहा पर आक्रमण, अग्रोहा पर राजा चम्पकसेन का राज्य १०३-१०४

३१. अग्रोहा पर मोहम्मद गौरी का आक्रमण, सन् ११९७ में अग्रोहा १०४-१०५

३२. अग्रोहा सन् १३४५ में, अग्रोहा फिरोजशाह तुगलक काल में १०६

३३. सेठ हरभजशाह का अग्रोहा पुनः निर्माण कराना १०७-१०८

३४. माहरसिंह का अग्रोहा आना व कामेश्वर मन्दिर अग्रोहा का किला निर्माण, १०८

३५. सती नारायणी, गौत्र निर्माण बारे भ्रान्ति, वैवाहिक सम्बन्ध परम्परा १०९-११२

३६. नागवंशी व राजवंशी में भेद, लक्खी सरोवर, छत्र का महत्व ११२-११४

३७. प्रसिद्ध वंशों की उत्पत्ति ११४-११५

सर्ग पंचम

३८. गोधुम वैश्य, सभी वंशों से ब्राह्मण व वैश्य, अडा-खुआ महीर वैश्य, महोर गण्डलाये वैश्य, मधुवर रैनिवार, सूर्यवंशी, कश्यप द्वारा बनाये गये वैश्य, श्रीमाल वैश्य, बड़ायत वैश्य, लाडबाणिक ११६-१२१

३९. हरसोले, भार्गव, बालोरा, ओसवाल, बघेरवाल, खण्डेलवाल वैश्य १२१-१२५

४०. माहेश्वरी, बर्णवाल, अग्रहारी, धूसर, रोहतगी, रस्तोगी राजा बरावरी १२५-१३१

४१. महाजन, आयरवाल, आइरवाल, नाहटा, महतियान, लोहाना १३१-१३३

४२. भाटिया, उगावाल, प्राग्वाट, ठाकुरी, नागर, नाग. देह, भट्ट मेवाड़े, बन्दरवार, महोडिया, लोहिया जाति, जायसवाल १३३-१३५

Remove Watermark Now
pdfelement

४३.	बाराह श्रेणी, बन्धुमती, खेरलीवाल, केसरवानी उमर आगली सिलवाल कसौधन, कुसता	१३५-१३६
४४.	वैश्व घटकों की सूची।	१३६-१३८

सर्ग षष्ठम्

४५.	तराई स्तम्भ शिलालेख. निगलीवा स्तंभाभिलेख,प्रयाग प्रशस्ति. मथुरा स्तम्भ लेख. गुप्तवं ी क्षत्री थे।	१३९-१४४
४६.	ताम्रपत्र देवगिरि पलमारू ताम्रयत्र, अल्तेम ताम्र-पत्र	१४५-१४८
४७.	कोल्हापुर ताम्रपत्र, एहोला शिलालेख, लक्ष्मणेश्वर ताम्रपत्र	१४८-१५८
४८.	चालुक्य बल्लभेश्वर का बादामी, शिलालेख, अमिन भावी शिलालेख तोरगुल	१५८-१५९
४९.	बादामी गुफा शिलालेख (i) वादामी गुफा (ii) नेरर ताम्र-पत्र, मुधोल ताम्रपत्र	१५९
५०.	गोआ ताम्रपत्र, महाकूट स्तम्भ शिलालेख	१६०
५१.	दुबकुण्ड शिलालेख (काष्ठासंघ) दुबकुण्ड शिलालेख (जायसवाल)	१६०-१६२
५२.	हुम्मच महोग्रवंश शिलालेख	१६२
५३.	प्रशस्तियाँ	१६३-१६६
५४	नकल बन्दोबस्त अग्रोहा	१६६-१७०
५५.	राजगान पंजाब अग्रोहा	१७१

सर्ग सप्तम्

५६.	लेखक का वंश परिचय	१७२-१९६
५७.	संरक्षक संस्थान	१९६-२००
५८.	पुरावशेषों तथा कला सामिग्री के चित्र	२०३
५९.	सन्दर्भ सूची	

—x—

वन्दना

ॐ दामोदर हृषिकेश वासुदेव नमोऽस्तुते ।

अथ अग्रवाल एवं वैश्यजाति का इतिहास

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोतममा देवी सरस्वती व्यासं ततो जय मुदीरयेत ।

शरद विकच पङ्कज श्रिय मंतीव विद्वषंक ।
मिलिन्द मुनी सवितं कुलि कंज चिह्नावृतम् ॥

स्फुरत्कनक नूपुर दलित [illegible] ता [illegible] ।
[illegible] द्युति पद [illegible] दधामी राधापते ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पीयूष [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] पातु सोऽयं गिरं मे ॥

[illegible] [illegible] विहार: [illegible] [illegible] कुमार: ।
[illegible] दुरित हार: शार्ङ्ग धन्वावतार ॥

□

सर्ग प्रथम

अनन्त से वैवस्वत मनु तक

भारतीय ऋषियों ने अपने यौगिक तथा भौतिक ज्ञान तथा विज्ञान द्वारा सृष्टि रचना एवं प्रलय आदि का काल इस प्रकार शास्त्रों में निरूपण किया है। सत्युग, त्रेता युग, द्वापर युग, कलयुग इन चारों युगों की एक चतुर्युगी होती है। इकहत्तर चतुर्युगी का एक मनु (मन्वन्तर) होता है। चौदह मनु का एक कलप होता है। एक चतुर्युगी में बारह हजार दिव्य वर्ष होते हैं। मन्वन्तरों के क्रमांक वार नामकरण ऋषियों ने इन के गुणों के आधार पर किये हैं। प्रथम स्वंभु मनु अर्थात् जिस में स्वयं ब्रह्माण्ड शक्ति माया (प्रकृति) द्वारा जड़ पदार्थ उत्पन्न हुआ। द्वितीय स्वरोचिष मनु में वह पदार्थ घूमने वाला तथा स्वर उत्पन्न करने वाला हुआ। तृतीय मनु उत्तम में वह पदार्थ चमकने वाला (ज्योति लिंग) रूप को प्राप्त हुआ। चतुर्थ तमास मनु में वह पदार्थ ठन्डा शान्त हो गया। पंचम रैवत मनु में वह पदार्थ खण्ड-खण्ड होकर ग्रह नक्षत्र तारागण आदि रूप धारण कर गया। छटे चाक्षुष मनु में वायु, बादल, बर्षा बर्फ आदि तत्वों की रचना हुई। ब्रह्माण्ड जीव रचना योग्य हुआ। सातवें वैवस्वत मनु में सृष्टि की रचना हुई आठवां मनु सार्वणिक, नौवां दक्ष सार्वणिक दसवां ब्रह्म सार्वणिक, ग्यारहवाँ धर्म सार्वणिक, बारहवाँ रुद्र सार्वणिक, तेरहवाँ रोच्य सार्वणिक, चौदहवाँ भौम सार्वणिक होंगे। इन चौदह मनु के व्यतीत होने पर महा प्रलय होती है।

प्रलय काल

जब चौदह मनु भी अपनी आयु भोग लेते हैं तब महा प्रलय होती है। ब्रह्माण्ड का कोई भी ग्रह एक दूसरे ग्रह से टकरा जाता है तदन्तर सारे ग्रह अपनी आकर्षण शक्ति खोकर एक दूसरे से टकरा कर विकराल अग्नि

Remove Watermark Now

प्रकट कर देते हैं तथा भस्म हो जाते हैं। [illegible] लय हो जाता है। जल तत्व वायु तत्व में लय हो जाता है। वायु तत्व आकाश तत्व में और आकाश तत्व, महातत्व में लीन हो जाता है। इसी महातत्व को ब्रह्म (निराकार) अनन्त आदि नामों से कहा जाता है। यह निराकार प्रलय काल तथा सृष्टि काल में सब जगह सर्वभूतों (तत्वों) में विद्यमान रहता है। इस सारे संसार (जड़ चेतन) की रचना इन पाँच तत्वों द्वारा होती है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश। इन्हीं तत्वों द्वारा प्राणी का शरीर बना है जो इसी निराकार शक्ति के अंश से चेतन होता है जिसे आत्मा नाम से जाना जाता है। मानव अपनी श्रद्धा व भाव अनुसार इसी निराकार परमात्मा के अनेक नामों में से एक नाम से इसकी उपासना करता है तथा अपना इष्ट मानता है अथवा शरीर के नष्ट होने पर इसी ब्रह्म में समाने (मोक्ष) की कामना करता है। उदाहरणार्थ मैं इसी अनन्त को भगवान कृष्ण के नाम से उपासता हूँ। इसी नाम से सृष्टि रचना विषय को आप लोगों के समक्ष रखता हूं। पाठकगण इसी को आगे [illegible] में जान सकते हैं।

सृष्टि रचना

सर्वप्रथम जब इस अनन्त शक्ति को सृष्टि रचने की स्फुरणा हुई तो गोलोक का प्राकट्य किया तथा दो भुज श्री कृष्ण चन्द्र रूप ग्रहण करके अपने हृदय कमल से श्री राधा जी (प्रकृति) का प्रादुर्भाव करते हैं। क्योंकि कोई भी कार्य कर्ता तथा शक्ति बिना नहीं हो सकता। भगवान कृष्ण ने पालन कर्ता तथा पालन शक्ति के रूप में विष्णु, लक्ष्मी को प्रकट किया तथा उनको संसार का पालन करना कार्य सौंपा गया। विष्णु तथा लक्ष्मी ने ब्रह्मा व सावित्री को उत्पन्न किया तथा इनको संसार उत्पन्न करने का कार्य सौंपा गया। ब्रह्मा और सावित्री ने रुद्र व पार्वती को प्रकट किया तथा इनको सृष्टि का संहार कार्य सौंपा। ये तीनों शक्तिमान व शक्तियाँ सृष्टि के उत्पन्न व पालन तथा संहार कार्य में रत रहती है।

वराह कल्प में वैवस्वत मनु के अवतार

वर्तमान कल्प से प्रथम कल्प का अन्त होने के पश्चात महाप्रलय हुई तथा वर्तमान कल्प की रचना हुई। इस कल्प का नाम ऋषियों ने खेत वराह कल्प रखा। इस कल्प के छः मनु के बीत जाने पर सातवाँ वैवस्वत

मनु आरम्भ हुआ। तब पृथ्वी दो भागों में विभक्त हो गई। एक भाग चन्द्रमा बना दूसरा भाग पृथ्वी कहलाया। पृथ्वी सागर के जल में मग्न हो गई थी। उस काल में सूर्य वर्तमान काल के तेज से हजारों गुणा अधिक तेज वाला हो गया। जिसके कारण पृथ्वी के ऊपर का जल सूख गया। पृथ्वी जल से बाहर आ गई। इसी घटना को पुराणों में वराह अवतार की कथा के रूप में लिखा है। सूर्य का एक नाम वराह भी है। हिरण्य नाम सागर का है। पुराणकारों ने इसी वराह को सुअर व सागर को हिरण्य यक्ष के रूप में वर्णन किया है। अर्थात् प्रथम अवतार सूर्य का हुआ। इसी मनु में जड़ चेतन जीवों की उत्पत्ति हुई। सनक, सनन्दन, संन्तन, सनातन, संत कुमार, नारद, आदि महाऋषि मनु ध्रुव, उत्तानपाद, विरोचन, बली जैसे राजा हुए। द्वीप, वर्षों, पर्वतों, खण्डों का नामकरण हुआ। वर्तमान चतुर्युगी इस मनु की अठाइसवीं चतुर्युगी बताई जाती है। इस चतुर्युगी में हरि, वामन, नरसिंह, परशुराम, भगवान राम, भगवान कृष्ण, बुद्ध अवतार हुए माने जाते हैं।

२८वीं चतुर्युगी का वर्णन तथा भूगोल

जम्बु द्वीप आदि सात द्वीप लिखे हैं। जम्बु द्वीप का भूगोल जिसमें हम निवास करते हैं इस प्रकार है। इस जम्बु द्वीप के आठ वर्ष हैं। और इन वर्षों की सीमा का विभाग करने वाले आठ पर्वत हैं। इनके मध्य में ईला नाम का वर्ष है। इस वर्ष के मध्य में मेरू पर्वत है इसे पर्वतों का राजा लिखा है। ईला वर्ष के उत्तर में क्रमशः नील रैवत पर्वत है जो कि हिरण्यवर्त के पूर्वी वर्षो की सीमा बांधते हैं। ये पूर्व की ओर पश्चिन तक के खारे पानी के सागर की ओर फैले हुए हैं। इस प्रकार इलावर्त के दक्षिण की ओर एक के बाद एक निषद हेमकूट हिमालय पर्वत है। यह भी पूर्व की ओर से पश्चिम तक फैले हैं। इनसे क्रमशः हरि वर्ष किम्पुरुष वर्ष, भारत वर्ष की सीमाओं का विभाग होता है।

इलावर्त के पूर्व की ओर तथा पश्चिम की ओर उत्तर में नीलगन्ध, मादन और माल्यवान पर्वत है। इनके इलावा मन्दिर मेरू, मन्दिर सुपार्श्व कुमुद पर्वत है। गंगा मेरू के शिखर से चार धाराओं में विभक्त होकर सीता, अलकनन्दा, चक्षु भद्रा नाम से अलग-अलग चार दिशाओं में बहकर सागर में गिरती है। अलकनन्दा दक्षिण की ओर हेमकूट हिमालय को लाँघती हुई भारतवर्ष को प्लावित करती हुई समुद्र में गिरती है। अतः

Remove Watermark Now

मान सरोवर को बिन्दु मानकर मानचित्र लिया जाए तो सही स्थिति पृथिवी के सामने आती है। वाकी द्वीप भी इसी पृथ्वी का अंग है।[1] अठारह पुराणों से शोध करके लिखा है।

वर्तमान २८ वीं चतुर्युगी का समयुग

प्रलय भी चार प्रकार के बताए हैं। महाप्रलय कल्प के अन्त में होती है। मनु की प्रलय मन्वन्तर के अन्त में होती है। नेमितक प्रलय युग परिवर्तन पर होती है। नित्य प्रलय तो नित ही होती रहती है। अर्थात् यह नित्य प्रलय तो मानव के अन्त काल को ही कहते हैं। जब २७वीं चतुर्युगी के कलयुग का अन्त हुआ तब प्राकृतिक आपदाओं तथा आपसी युद्धों द्वारा मानव का महा संहार हुआ। उस समय जो कुछ मानव किसी कारण बच गए उन्हीं मानवों से २८वीं चतुर्युगी के प्रथम सतयुग का आरम्भ हुआ। उस समय के राजा सूर्य वंशी ईक्षवाकु नाम का था। जो कि [illegible] राजा का पुत्र था। इस युग में विकुक्षी, रिपुज्य, [illegible] आदि भद्रस्व, युवनास्व, श्रावस्थ, सत्यपाद, [illegible], [illegible], [illegible], निकुम्भ, प्रषदशव, वृषुमान, तन्त्रीदशव, सत्य-व्रत, [illegible], त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र, रोहित, हारित, चंचुभूप, विजय, तद्ररूप, सगर, असमंजस, अंशुमान, दलीप, भागीरथ, कलमास पाद, सुदास, हरिवर्मा, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], खटवांग, दिर्घबाहु, सुदर्शन आदि सूर्यवंशी राजाओं ने चार हजार वर्ष तक राज्य किया। इसी युग में गंगा को भागीरथ जी भारतवर्ष में लाए। राजा सुदर्शन ने केवल २७ वर्ष चार मास १० दिन इस युग में राज्य किया। फिर युग परिवर्तन हो गया।

त्रेता युग–

त्रेता युग में दलीप, रघु, अज, दशरथ, भगवान राम, कुश, अतिथि निषध, नल, नाभ पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, [illegible], द्वारक, अहिन, कुरू, पारियात्र बलपाल, [illegible] नारी, [illegible] [illegible], व्युत्थनाभ, विष्वपाल, स्वर्णनाभ, पुष्पसेन ध्रुवसन्धि, अपवर्मा, शीर्घहन्ता, मरुपाल, स्रसुच भूप, सुसन्धि, महाकिन, बृहदबाल, बृहदराज, मरु, वत्सपाल, वत्सबंधु, व्योम,

[1] भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग-पर्व अध्याय १

pdfelement

देवकर, सहदेव, वृहदशव, भाँनुरत्न, सुप्रतिक, मरुदेव, सुनक्षत्र, केशीधर, अन्तरिक्षपाल, स्वर्ण अंगद, अमितजीत, धर्मपाल, कृतज्य, रनज्य, संगम, शाक्यवर्धन, क्रोधधान, अतुल विक्रम, प्रमेनजीत, शुद्रक, सुरथ ।

उपरोक्त साठ राजा त्रेता के तृतीय चरण में जबकि त्रेता के १७५६ वर्ष १० दिन बीत गए थे मृत्यु को प्राप्त हुए थे इस समय सुरथ के पुत्र बुद्ध को छोड़कर शेष सूर्य वंशियों ने वर्णाश्रम बदल लिया था । इस बुद्ध की कन्या को राजा चन्द्रमा जो कि अन्य वंश का था और पश्चिमी देश का राजा था ने पाणि ग्रहण कर लिया । उससे पुरूरवा का जन्म हुआ । पुरूरवा नाना की गद्दी पर बैठा और भारत वर्ष का सम्राट बना तथा चन्द्र वंश की स्थापना की ।

पुरूरवा के पश्चात् क्रमांक वार आयु, नहुष, ययाती, यदु, क्रोष्टा, ब्रजनन्दन, स्वादचर्ण, चित्रार्थ, अरविन्द, सवी, तामस, उशन, शीत शकु, कमलशु, परावत, जामधना, विदर्भ, कलाल, कुन्ती भोज, जन्मेजय इन उपरोक्त २१ राजाओं ने ११७ वर्ष राज्य किया । ययाती के तीन पुत्र, मलेच्छ देशों को चले गए और वहाँ बस गए । इसी वंश में भगवान कृष्ण जी का अवतार हुआ । ययाती के दूसरे पुत्र कुरू के वंश का वृतान्त इस प्रकार है । कुरू, वृषवर्ण, मायाविर्ष, जन्मंज्य, प्रीतिनाम, प्रतीर, नभस्य, अवस्य सुधमन, बाहुम्य, संयाती, धनपति, ऐन्द्रास्य, रन्तीदेव, सुतपा, सवर्ण अंगद, आर्याय अंगद ये उपरोक्त १७ राजा ३८४ वर्ष ७ मास १० दिन राज्य करते रहे । इन त्रेतायुगी ९९ राजाओं ने ३२८३ वर्ष ७ मास २५ दिन राज्य किया । राजा सवर्ण के समय त्रेतायुग समाप्त हो गया और द्वापर युग चला । इस समय शूद्र वंश का शास्वत राजा मथुरा का और श्यश्रु अरब देश का राजा था ।

द्वापर युग में महाभारत

द्वापर युग—

द्वापर युग का प्रथम राजा सूर्यजापि, सरोयज्ञ, अतिथिवर्धन, दवादश आत्मा, दिवाकर, प्रभासुक, अश्वआत्मा विश्वयज्ञ, हरीदास, वैकर्तन, आर्कषिमान, मार्टण्ड, मिहरार्थ, अरूप, घुमाण, तारिण, मैत्रयेवर्धन, विरो-

भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग-पर्व अध्याय २

Remove Watermark Now

[illegible], हंस, [illegible], सावित्र धनपति, मलेच्छदतता, आनन्दवर्धन, धर्मपाल, [illegible], [illegible], परमेष्ठी, आत्मपर परा, हिरण्य वर्धन, धातृयात्री, [illegible], [illegible], कमलासन, शमकर्ता, श्राददेव, पितृवर्धन, सोमदत्त, [illegible], सोमवर्धन, अवतंस, प्रतंस, प्रातंस, अतंयस, समातांस, अनुतंस, [illegible], [illegible], समुतस ।

उपरोक्त ५० राजाओं ने द्वापर के ३७८ वर्ष १० मास २५ दिन राज्य किया । [illegible], दुष्यंत, भरत (राजा भरत), शकुन्तला तथा दुष्यंत का पुत्र था । इसी के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा । इन तीन राजाओं ने १२२ वर्ष १० माह २० दिन राज्य किया । इसके पश्चात् राजा [illegible], भारद्वाज, मन्यमान, वृहतक्षेत्र, सुहोत्र, वीतहोत्र, यज्ञहोत्र, शक्रहोत्र, इन आठ राजाओं ने ४२१ वर्ष २ मास १० दिन राज्य किया । इसी समय सूर्यवंशी राजा, प्रतापेन्द्र ने अयोध्या राज्य की पुनः स्थापना की और चन्द्रवंशी राजाओं को विजय किया । प्रतापेन्द्र, माडलीक, विजेन्द्र, [illegible], शक्रहोत्र इन राजाओं ने १३६ वर्ष ११ मास १० दिन राज्य किया । चन्द्रवंशी राजा हस्ती ने इनको पराजित करके हस्तिनापुर राजधानी बनाकर चन्द्र वंश के राज्य की पुनः स्थापना की । हस्ती, अजमीड़, [illegible], [illegible], कुरु इन चार राजाओं ने ९५ वर्ष ७ मास २० दिन राज्य किया । कुरु ने कुरुक्षेत्र के ऋषियों के लिये ४८-४८ कोस की भूमि में आश्रमों आदि का निर्माण किया । इसी कारण यह स्थान धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र कहलाया ।

कुरु के पश्चात् [illegible], दशारी, विर्भावन, जीमुत, विकृति, भीम रथ इन पांच राजाओं ने ६८ वर्ष ५ मास राज्य किया । इस समय द्वापर युग के [illegible] वर्ष ७ मास २५ दिन बीत गए थे । इसके पश्चात् नवरथ, दशरथ, [illegible], [illegible], [illegible], देवक्षेत्र, मधु, कुरूवर्थ अनुरथ पुरूहोत्र, वचित्र [illegible], विदुरथ, सुर भगत, सुमना, ततिक्षेत्र, स्वामभव, [illegible], [illegible] विधुरथ, सर्वभौम, जयसैन, अपर्व चतुर्सागर, [illegible] भीमसेन ये उपरोक्त ३१ राजाओं ने ६५५ वर्ष २ मास १५ दिन राज्य किया । इसके पश्चात् दलीप, प्रदीप, सान्तनु, विचित्रवीर्य, पाण्डव, धृतराष्ट्र, इन ६ राजाओं ने ९० वर्ष १० मास १५ दिन राज्य किया । इसमें द्वापर युग के २००९ वर्ष १० मास १५ दिन बीत गए थे ।[1]

१. भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व अध्याय ३

pdfelement

जब द्वापर के २००९ वर्ष ५ मास १० दिन बीत गये, महाभारत युद्ध हुआ। राजा पाण्डव के पाँच पुत्र युधिष्ठर. भीम, अर्जुन नकुल, सहदेव और पाण्डु के भाई धृतराष्ट्र के दुर्योधन आदि १०० पुत्र थे। इस युद्ध का वर्णन महाभारत ग्रन्थ में विस्तार पूर्वक लिखा है। इस युद्ध के आरम्भ में महाभारत ग्रन्थ के ११००० श्लोक थे। भोजकाल तक एक लाख श्लोक हो गये थे। वर्तमान में एक लाख बीस हजार श्लोक हो गये हैं इस काल में (महाभारत) भौतिक ज्ञान विज्ञान चरम सीमा पर था। अणु परमाणु विज्ञान भी चरम सीमा पर था। जैसे उदाहरण है— ऋषि पुण्डरिक चन्द्रलोक तथा इन्द्रलोक तक का भ्रमण अपनी पादुका द्वारा करते थे। संजय युद्ध का आँखों देखा हाल हस्तिनापुर में बैठा नेत्रहीन राजा धृतराष्ट्र को बता रहा था। त्रिपुर ने आकाश में लोहे का दुर्ग बना रखा था। जो अजेय था। उसका भगवान श्री कृष्ण ने पैने सुदर्शन चक्र द्वारा नाश किया। अर्जुन भगवान कृष्ण के साथ जाकर (हिमालय) कैलाश पर्वत से दिव्य अनु शस्त्र लाया और युद्ध समाप्ति पर शेष शस्त्र वहाँ ही रख कर आये। इस युद्ध में अठारह अक्षोहिणी सेना ने भाग लिया। यादव वंशी बावन कोटि अर्थात् बावन गोत्री थे। वे भी परस्पर लड़कर नष्ट हुए। युधिष्ठर के पश्चात् परिक्षित राजा बना जो भगवान कृष्ण के भानजे अभिमन्यु का पुत्र तथा अर्जुन का पौत्र था। परिक्षित के समय भारत पर नाग लोग आक्रमण करने लगे थे, परिक्षित नागों द्वारा मारे गये, तथा जन्मेजय ने नागों का विध्वंस करके पिता का बदला लिया।

जन्मेजय के पश्चात् शतानिक, यज्ञदत्त, निशक, तदुष्टपाल, चितुर्थ, धृतिमान, सुबेन, सुनीत मखपाल नचक्ष, सुखवन्त, परिपक्व, मेघसवी, कृपंजय, मृधु, निम्न ज्योतिवृहस्य, वसुदान, स्तानीक, उधीन महीनर निमित सेभक, प्रधोत, वेदवान, सुनन्द आदि २६ राजाओं ने ९५ वर्ष १० मास २७ दिन राज्य किया। राजा सुनन्द के समय महाभारत को २४१ वर्ष ४ मास २० दिन हुए थे। युधिष्ठिरी संवत् दो सौ उन्यासी था। इस समय अरब देश का राजा नुह था। राजा सुनन्द पुत्रहीन था। इसी शताब्दी में भारत में प्रलय आई, उसका कारण वह शस्त्र थे जो अर्जुन हिमालय में रख कर आया था जो समय आने पर नष्ट हो गये थे इनके नष्ट होने का कारण वर्फ पिघलने से जल की इतनी राशि बही कि भारतवर्ष जल

Remove Watermark Now

स्थापित हो गया। ऋषिकेश तक की भूमि तक जल चढ़ गया। सौ वर्ष तक भूमि जल मग्न रही। दैवयोग से जो व्यक्ति ऊँचे पर्वतों पर चले गये थे वो सुरक्षित रहे। जो लोग हिमालय की ओर चले गये थे वे अपने रहने योग्य स्थान खोजते-खोजते कश्मीर के मार्ग से होते हुए मिश्र तथा तिब्बत आदि देशों में जाकर बस गये। जो लोग विध्यांचल, आदि पर्वतों के ऊंचे स्थानों पर चले गये थे उनके वंशज कौल द्रावड़ आदि कहलाए। पृथ्वी सौ वर्ष तक जल मग्न रही इस कारण महाभारतकालीन अवशेष सागर के गर्भ में चले गये। खनन में उनका कोई चिन्ह प्राप्त नहीं होता। जो भारतवासी कश्मीर तिब्बत आदि देशों को चले गये थे वहाँ की सभ्यता में उनका समावेश हो गया था। उदाहणार्थ कृष्ण के वंशज हरिवंशी अर्थात् हरकुलिश कहे गये हैं।

ऋषि कश्यप का मिश्र आदि देशों से प्राचीन भारतीयों को लाकर भारत में पुनः बसाना।

जब महाभारत युद्ध को लगभग ५०० वर्ष हुये थे तो कश्यप नाम के एक महाविद्वान ब्राह्मण मिश्र आदि देशों में जाकर वहाँ पर बसे प्राचीन भारतीयों को सनातन धर्म (वैदिक धर्म) का उपदेश देकर दस हजार के लगभग भारतीयों को साथ लेकर भारत आये और सरस्वती नदी तथा दृष्वती नदी के मध्य क्षेत्र में बसाया, जिनमें से दो हजार को ती मिश्रा, द्विवेदी, चतुर्वेदी, पाण्डेय, शेष आठ हजार को क्षत्री व वैश्य बनाया। सर्व सम्मति से इनका गणनायक तथा राजा पृथु बनाया। पृथु के दस पुत्र हुए जिनके दस प्रान्त बने। कश्यप जी कश्मीर में रहे।[१]

नोट— पुराणों में वर्णित दो कश्यपों का नाम मिलता है। एक आदि कश्यप जिनकी पत्नी दिति और अदिती थी और सारा संसार उनका पुत्र माना जाता है, दूसरे कश्यप जी कश्मीर के थे जिन्होंने प्राचीन वैदिक धर्म वर्ण व्यवस्था को स्थापित किया। वर्ण जन्म से न होकर कर्म से माना जाता था जैसे उपरोक्त विवरण से सिद्ध होता है कि सर्वप्रथम कुरुक्षेत्र धर्म क्षेत्र पर ही आर्यों की स्थापना हुई। इस क्षेत्र में सबसे महानगर अवन्ती जिसे बाद में अग्रोहा कहा गया बना! इसी प्रकार पृथु के भी दो वर्णन मिलते हैं एक तो पृथुका! नाम चौबीस अवतारों

१. भविष्य पुराण—प्रतिसर्ग पर्व अध्याय ६ श्लोक १ से २० तक

में राजा वैन के पश्चात् आता है जिसने पृथ्वी को समतल करके कृषि योग्य बनाया था। दूसरा पृथु जिनके पुत्रों ने भारत में दस प्रान्तों का निर्माण किया अर्थात हरियाणा ही प्रथम क्षेत्र वैदिक सभ्यता का है।

सरस्वती दृष्द्वत्यों देवर्न द्योर्यदन्तरम्।
ते देव निर्मित दृस्द्वत्यों देश हरियांक प्रचलेत ॥

अर्थात् देव नदी सरस्वती और दृष्दवती उनका जो अन्तर है उस देश को हरियाणा कहते हैं। अर्थात् जिसकी उत्तरी सीमा पर सरस्वती और दक्षिण सीमा पर दृष्दवती है कुरुक्षेत्र भूमि भरण्डक रामहृद से लेकर मचुक्रुक (अमीन) तक है। अर्थात अमीन से लेकर रामराये तक तरन्तक से लेकर पटियाला के पास बहर गाँव तक हरियाणा की दक्षिण सीमा पर राजस्थान पूर्वी पर माथुर सीमा पर बाम्वी झील, पश्चिमी सीमा पर हिरण्यवती के संगम पर मोक्ष दायनी तीर्थ माना जाता था ऐसा पदम पुराण में लिखा है।

गोरख पंथी योगियों की युगों के बारे में धारणा

श्री गोरखनाथ जी योगेश्वर का कथन है कि सतयुग तब जानो जब योगी जन तथा जनता मिट्टी के बर्तन, मिट्टी के जेवर, मिट्टी की माला तथा मिट्टी की मुद्रा आदि का प्रयोग करते हैं। त्रेता युग तब जानो जब ताम्र का प्रचलन, ताम्बे के जेवर, ताम्बे की मुद्रा प्रयोग में आये। द्वापर युग में सफेद नाम चाँदी का मुद्राओं तथा आभूषण में प्रयोग हो। कलियुग तब जानो जब योगीजन गृहस्थियों से भी ज्यादा स्वर्ण संचय करे। इसी आधार पर भविष्य पुराण में आल्हा-ऊदल के संग्राम की द्वापर का अन्त बताया है तथा महाभारत से तुलना की है।

कश्यप से नन्द तक

राजा प्रथु के बाद मागध,-क्रतु शिशुनाग काकवर्ण-क्षेत्र धर्मा-क्षेत्रज्ञ बिम्बसार-अजातशत्रु, दर्भक, उशीवर-नन्दीवर्धन। महाभारत युद्ध से लेकर नन्दीवर्धन तक कुल दस सौ अस्सी वर्ष हुए थे। विष्णु पुराण चतुर्थ अंश अध्याय २४ श्लोक १०४ में लिखा है राजा परीक्षित के जन्म से लेकर अन्तिम नन्द के अभिषेक तक एक हजार पचास वर्ष हुए थे। तीस वर्ष नन्द ने राज्य किया अर्थात् नन्द तक दस सौ अस्सी वर्ष हुए। नन्द को चन्द्रगुप्त मौर्य ने तीन सौ बीस ईस्वी पूर्व पराजित किया अर्थात महा-

भारत युद्ध ईसा के चौदह सौ वर्ष पहले हुआ।

बुद्ध एवं महावीर

भगवान बुद्ध तथा महावीर का प्रादुर्भाव राजा बिम्बसार के समय हुआ। उनके सरल आदेशों तथा ब्राह्मणों के यज्ञों आदि के चक्र के कारण साधारण जनता बुद्ध और महावीर से ज्ञान प्राप्त करके बौद्ध और जैन होने लगी। ब्राह्मणों ने यज्ञों को बहुमूल्य बना दिया था कि साधारण जनता यज्ञ का एक अंश भी नहीं कर सकती थी। उधर पश्चिमी देशों के यवन राजाओं ने वेदों का उच्चारण तथा यहाँ तक कि भगवान का नाम लेना भी अपने राज्यों में बन्द कर दिया और अपने आपको ही भगवान घोषित कर दिया। इस विषम परिस्थिति में ऋषियों तथा राजाओं ने एक सभा बुलाई जिसमें प्राचीन परम्पराओं पर विचार विमर्श हुआ। उस सभा का नाम पंचाला की परिषद् हुआ। भगवान बुद्ध श्री रामचन्द्र जी के पुत्र कुश के वंश में महाभारत काल में राजा बृहद्वल कौरवों की ओर से लड़ते हुए अभिमन्यु के हाथ वीरगति प्राप्त हुए। उसके वाद बृहतरान राजा हुआ। यह पाण्डवों का मित्र था। इसकी बाइसवीं पीढ़ी में राजा संजय हुआ। इसका पुत्र किसी कारणवश गौतम ऋषि के आश्रम में रहने लगा। वहाँ पर शाक वृक्षों का भारी वन था। इस राजकुमार का नाम तथा इसके परिवार शाक्य नाम से जाना जाता है इसी कारण भगवान बुद्ध को शाक्य मुनि कहा जाता है।

भगवान महावीर

ऋषभजी को जैन मत वाले प्रथम तीर्थंकर मानते हैं। इनके पुत्र विकुक्षी हुए थे। उनके पुत्र शिशाद थे। शिशाद अयोध्या के राजा बने। इनके छोटे भ्राता निमी थे जो कि मिथिला के राजा बने। उनकी बाईस-वीं पीढ़ी में महाराज सीरध्वज जनक (सीता के पिता) हुए इनकी तिरासी वीं पीढ़ी में राजा कर्ण हुए जिनके नाम पर कनागत (श्राद्ध) बने। इनकी सत्तावन वीं पीढ़ी में सिद्धार्थ हुए जिनके पुत्र वर्द्धमान महावीर के नाम से विख्यात हुए।

पंचाल परिषद् का विवरण

यह सभा राजा बिम्बसार के समय उत्तरी पंचाल की राजधानी कम्पीला में जुड़ी। पंचाल संघ के प्रतिनिधि कुरु संघ के धनञ्जय और

Remove Watermark Now

श्रुत सौतेय अश्क का राजा ब्रह्मदत्त कलिंग का राजा संत्यभु, सौवीर नरेश भरत, कपिलवस्तु का बुद्धराज, घनपरक ज्योतवन, नालिन्दा, तक्षशिला, कन्नौज उज्जैन मिथिला मगध राजगृह कौशम्भी के आर्यों के प्रतिनिधि क्षेत्रीय भारद्वाज, कात्ययायन, शौनक, बोद्धायन औलक, वशिष्ठ सांकलायन, गौतम, आपसत्भब यज्ञवलक्य, जैमिनी, कंणाद और हरित, पाणिनी वैश्यपायन, पैल अंगरिश, माण्डव उपनिवर उपस्थित हुए। इस सभा में प्राचीन वैदिक प्रथाओं पर विचार करके संशोधन किया गया।

वैश्यपायन ने प्रस्ताव रखा कि अब तक की मर्यादा में कन्या वर चुनने को स्वतन्त्र है वह विवाहित पति के पास आजीवन रहने को बाध्य नहीं है। वह पुरुष के आधीन नहीं है। धर्मकृत्यों में व यज्ञों में इसका स्थान नहीं है। स्त्री का दायाँ भाग ब्राह्मण को मिलता है। वह नगर वधु भी बन सकती है। वह अनेक पति रख सकती है। इस मर्यादा को बदलने की आवश्यकता है।

अंगरिश ने कहा कि अब आर्यों का कार्य केवल पशु पालन तथा कृषि ही नहीं रह गया है उनके बड़े-२ राज्य सेना, सम्पदा, व्यापार आदि कार्य हो गये हैं। अतः यह मर्यादा बदलना आवश्यक है। मेरा मत है कि कोई भी आर्य कन्या स्वयं पति न चुने। एक पति के साथ अन्तिम समय तक अनुबंधित रहेगी। कन्या के गुरुजन (माता-पिता) वर को देंगे। स्त्री पुरुष (पति) के आधीन रहेगी। और यज्ञ धर्मकृत्यों में उसका दाँया भाग रहेगा।

भारद्वाज ने कहा कि स्त्री पति की सेवा नियमों का पालन करेगी। सास सुसर पति के साथ रहेगें। केवल पत्नी ही नहीं परिवार का एक अंग होगी।

एतरेय ने कहा कि मेरा मत है कि पुरुष अनेक पत्नियाँ रख सकेगा। स्त्री अनेक पति न रख सकेगी। चार पीढ़ियों के अन्तर्गत आत्मियों का विवाह न होगा।

आप सत्मंब ने कहा कि माता-पिता की छः छः पीढ़ियों तथा गोत्र में विवाह का निषेध होना चाहिए।

वैश्यपायन ने कहा कि यह सब अब की बनाई मर्यादा आर्य अनार्य

Remove Watermark Now

अनुलोम सभी वर्णों पर लागू हो। इससे राष्ट्र की सम्पत्ति, धर्म, राजनीति अखण्ड होगी।

गौतम ने प्रस्ताव रखा, मित्रो, मैं एक आवश्यक मर्यादा रखता हूं। हमारे अभी तक तीन वर्ण हैं। अब अनेक आर्यों व अनार्यों बन्धुओं के मिश्रण से अनेक जातियाँ व शाखायें फैल गई हैं। अनार्य बन्धु संसर्ग के उपभोजन देने के कारण हमने अस्वर्ण विवाह मर्यादा बनाई थी न ऐसे विवाह से उत्पन्न सन्तान को दाँयें भाग से वंचित करता हूँ। वह अनुलोम हो या प्रतिलोम की अलग जाति बनाई जाये।

१. ब्राह्मण पिता क्षत्री माता की सन्तान सूत कहलायेगी।
२. क्षत्री पिता ब्राह्मण माता की सन्तान अम्बष्ट कहलायेगी।
३. क्षत्री पिता वैश्य माता की सन्तान उग्र कहलायेगी।
४. वैश्य पिता क्षत्री माता की सन्तान खत्री कहलायेगी।
५. वैश्य पिता शुद्र माता की सन्तान शुद्र कहलायेगी।

सांख्यान ने कहा इस व्यवस्था से शंकरो का संगठन अधिक हो जायेगा, किसी समय वे सबल हो जायेंगे और आर्यों से विद्रोह करेंगे तब ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यों की भी अनेक जातियाँ हो जावेंगी। हर जाति अपने को श्रेष्ठ समझेगी। भीतरी भेदभाव बढ़ जायेगा। आर्यों का संगठन नष्ट हो जायगा। परन्तु सांख्यान के प्रस्ताव का अनुमोदन न हुआ।

गौतम ने कहा कि विवाह भी छः प्रकार के घोषित करता हूं।

१. उत्तम : जिस समय पिता या गुरुजन वर को केवल अर्घ द्वारा कन्यादान करें।
२. देव : गाय या बैल के साथ कन्या वर को दान करें।
३. आर्ष : माता पिता वस्त्रों भूषणों सहित कन्या वर को दान करें।
४. गन्धर्व : कन्या वर स्वयं चुने।
५. क्षात्रीय : कन्या के सम्बन्धियों को युद्ध में विजय करके लाया जाए।
६. मानष : पिता या गुरुजन से वर कन्या का मूल्य देकर ले।

आपसंतमब ने कहा कि मर्यादा स्वीकार करने योग्य है परन्तु क्षात्रय विवाह का नाम असुर व मानष विवाह का नाम राक्षस विवाह रखा जाये।

बौद्धायन ने कहा कम्बोजों में बलपूर्वक कन्या प्राप्त करने की प्रथा है। नन्दी नगर के कम्बोज आर्य संघ में मिल गये हैं। कम्बोज सीमायें गंधार से मिलती हैं। इनके रीति रिवाज जंगली हैं। इनको साथ रखना आवश्यक है इसलिए पिशाच विवाह की मर्यादा रखी जावे।

वशिष्ठ ने कहा कि मैं इससे सहमत हूं। पिशाच विवाह बलपूर्वक कन्या के सम्बन्धियों से कन्या को हरण करके लाना।

आपसत्मंब ने कहा कि मैं नियोग का विरोध करता हूं। सभ्य पुरुष को अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरे की पत्नी से नियोग नही करना चाहिए।

गौतम ने कहा जिस विधवा स्त्री के सन्तान न हो वह अपने बड़ों की आज्ञा लेकर देवर का संग कर सकती है। देवर न हो तो पति के गौत्र सम्बन्धी से नियोग कर सकती है।

हरित ने इसमें सहमति प्रकट की।

भारद्वाज ने कहा कि अविवाहित कन्या किसी पुरुष द्वारा बलात् भोगी गई हो तो उसे अक्षत यौनी माना जाए उसका कन्या भाव नहीं छूटेगा क्योंकि उसका कोई दोष नहीं था।

कात्यायन ने कहा कि कोई नपुसंक पति की स्त्री दूसरा विवाह कर ले तो वह अपनी प्रथम सन्तान अपने नपुसंक पति को दे।

सब सभा ने इस नयी मर्यादा का अनुमोदन कर दिया तथा राष्ट्रों में इसकी घोषणा करवायी।

"अम्बपाली आचार्य चतुर्सेन के संभार से"

—❀—

Remove Watermark Now

सर्ग द्वितीय

अग्रवाल जाति के प्राचीन इतिहास पर विवेचना

अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास, लेखक डा० सत्यकेतू विद्यालंकार पर विवेचना –

डा० सत्यकेतू विद्यालंकार ने अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास नामक पुस्तक लिखी है। उसमें इन्होंने ऊरु चरित्तम नामक हस्त लिखित पुस्तक को प्रमाणित मान कर अग्रसैन का अस्तित्व स्थापित किया है। इस पुस्तक में वर्णित उल्लेखों के बारे में यह आवश्यक जान पड़ता है कि इस पुस्तक की प्रमाणिकता का विवेचन कर दिया जावे।

उरुचरितम : इस पुस्तक में उरु नाम के राजा का वृत्तान्त लिखा है। उसे चन्द्रवंशी बताया है। यह पुस्तक किसने लिखी कब लिखी आदि बातों का कुछ पता नहीं चलता। इसकी प्राचीनता का निर्णय करना कठिन है। पुस्तक की भाषा देखकर डा० सत्यकेतू जी भी स्वयं इसकी प्राचीनता पर सन्देह करते हैं। चन्द्रवंश पुराणों का एक प्रमुख वंश है। उरु नाम के किसी भी राजा का पुराणों में नाम नहीं आता उरु चरित्तम् कथा के पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि वह कल्पित कथा है। इस पुस्तक में पृष्ठ ४१ पर लिखा है कि अग्रोध की सन् १९३९ की खुदाई में अनेक सिक्के भी उपलब्ध हो गये हैं। जिन पर अगोद का अगाच जनपदस्य (अग्रोदक का आग्रेय) जनपदस्य लेख उत्कीर्ण है। ये सिक्के बड़े महत्व के हैं क्योंकि इनके द्वारा यह सुनिश्चित रूप से प्रमाणित हो गया है कि अग्रोहा का प्राचीन नाम अग्रोदक था। महान विद्वान ने इन सिक्कों को जिन पर अगोद का अगाच जनपदस्य लिखा है पता नहीं कैसे आग्रर्यगण मान लिया है और अग्रवालों से इनका सम्बन्ध स्थापित किया तथा अगोद को अग्रोदक बना डाला और अगाच को आग्रेय मान लिया जबकि अगाच का अर्थ महान

होता है। प्राचीन मौर्यकाल के शिलालेखों पर अगाच का शब्द लिखा मिलता है। अगोद शब्द के स्थान पर कई सिक्कों में अगद शब्द भी लिखा हुआ है। यह राजा अगद शुङ्ग नरेश दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व हरियाणा का राजा हुआ है। इस नाम के दो खेड़े अगद व अगरा हरियाणा में हैं। इसी प्रकार डा० साहब ने अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की डेढ़ वर्ष अंक में भी लिखा है कि अग्रोहा से प्राप्त सिक्कों पर अगोद का अगाच लिखा है। ऐसा प्रतीत होता है कि सिक्कों के समय के शब्दार्थों पर ध्यान न देकर शब्द अपभ्रंशता पर ध्यान दिया है जो उचित नहीं है।

पृष्ठ ६१ पर लिखा है कि महाभारत में कर्ण दिग्विजय के वर्णन में आग्रेय का नाम आया है। महाभारत के इस श्लोक में इन जनपदों को मलेच्छ तथा शुद्र जनपदस्य बताया है। वास्तव में महाभारत की प्रथम मूल में केवल छः हजार श्लोक थे जो अब एक लाख के लगभग हैं। ये शेष श्लोक समय-समय पर कपोल कल्पित रच कर शामिल किये गये हैं। तथा इस श्लोक से ऐसा प्रतीत होता है कि अग्रोहा निवासियों के जैन होने के कारण ब्राह्मणों ने उनको मलेच्छ और शूद्र लिखा है। अग्रोहा निवासियों ने आठवीं शताब्दी ईसवी के बाद जैन धर्म अपनाया था। अर्थात् यह श्लोक आठवी शताब्दी के बाद लिखा गया है।

पृष्ठ ६५ पर लिखा है—उरु चरित्तम में वंशावली इस प्रकार दी है। मनु के दो पुत्र निदिष्ट और ईला से अनुभाग भलन्दा, वत्स, प्रिय, मांकिल के कुल में धनपाल, प्रताप नगर का राजा उसके आठ लड़के शिव, नल, अनल, कुमुद, वैन्य शेखर एवं नल सन्यासी हो गया। शेष सात द्वीपों के राजा हुए। शिव जम्मू द्वीप का राजा हुआ। शिव के चार पुत्र, आनन्द बड़ा था। बाकियों ने योग मार्ग ग्रहण किया। आनन्द का पुत्र अय हुआ। उससे वैश्यों के बहुत कुल विस्तृत हुए। उससे वैश्यों के बहुत कुल विस्तृत हुए। उसके कुल में सुदर्शन राजा हुआ। इसके धुन्धर व नन्दिवर्धन हुए। नन्दिवर्धन के अशोक, अशोक के वंश में समाधि हुआ। इस वंश में क्षिणता आने लगी। आपसी द्वेष में नगर छोड़कर भिन्न-भिन्न भागों में बस्तियाँ बसानी आरम्भ की गई। कई पीढ़ियों बाद मोहन दास हुआ। इसने दक्षिण में कीर्ति प्राप्त की। इसका पड़ पौता नेमीनाथ था उसने नेपाल बसाया। नेमी का लड़का वृन्द हुआ। उसने वृन्दावन बसाया। वृन्द के गुजर हुआ उसने गुजरात बसाया। इसके हरि राजा हुआ। हरि के रंग हुआ जिसके

Remove Watermark Now

सौ पुत्र हुए। निन्यानवे पुत्र शूद्र हो गये। फिर सौ वर्ष तपस्या करके ब्राह्मण हो गये। रंग के त्रिशोक मधु, महिन्द्र बल्लभ आदि सात पुत्र हुए। बल्लभ ने पिता का राज्य ग्रहण किया। उसके अग्रसैन व सुरसैन दो पुत्र हुए।

विवेचना :— इस वंशावली का किसी भी पुराण में कोई वर्णन नहीं है। सतयुग की मनु के निदिष्ट व ईला का वर्णन पुराणों में नहीं है। त्रेतायुगी पुराणों में ईला का नाम आता है जो कि बुद्ध का पुत्र था। श्राप वश कन्या हुआ। यह भविष्य पुराण अध्याय २ श्लोक ४३ भाग १ प्रति सर्ग वर्ग में लिखा हुआ है।

ईला का विवाह चन्द्रमा से हुआ इससे चन्द्र वंश चला। नेपाल इक्षवाकु के पुत्र निम्मी ने बसाया था। इक्षवाकु सूर्यवंशी राजा थे। भागवत पुराण दसम् स्कन्ध वृन्दावन गमन में भगवान कृष्ण का वृन्दावन बसाने का वर्णन है। गुजरात का इतिहास में लिखा है कि गुजरात का प्राचीन नाम सौराष्ट्र था। सन् ईसवी पांच सौ चालीस में गुजरात नाम रखा। गुर्जर की गुजरात बसाने की बाबत माने तो अग्रसैन इस वंशावली में गुर्जर से पांचवी पीढ़ी में दिखाये गये हैं तो अग्रसैन का होना इसके बाद होता। स्पष्ट है कि यह वंशावली कपोल कल्पित है।

सुरसैन :- पृष्ठ २१० पर लिखा है कि सुरसैन (अग्रसैन के भाई) के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मथुरा आगरा का नाम सुरसैन देश रखा। डा० साहब कल्पना करते हैं कि हो सकता है कि सुरसैन ने अपने नाम पर सुरसैन देश की स्थापना की हो। यही गण वैश्यों के रूप में परिवर्तित हो गया हो। डा० साहब भूल गये कि रामायण तथा पुराणों के अनुसार भगवान राम के भाई शत्रुध्न के पुत्र सुरसैन के नाम से मथुरा मधुबन का नाम सुरसैन देश पड़ा था। उरुचरित्तम् कथित मथुरा का नाम सुरसैन या शौरगण की कल्पना असंगत एवं अनुपयुक्त जान पड़ती है।

गौड़ देश : उरु चरित्तम् में लिखा है कि अग्रसैन ने अपना निवास गौड़ देश बनाया जो कि हिमालय में गंगा यमुना नदियों के मध्य का क्षेत्र भी।

श्लोक—शिष्य स हि गौडो देशः हिमस्थानेदि सवृतः।
गंगया यमुना च जायते सुप्रवाहितं :॥

अर्थ—गौड़ देश हिमालय में गंगा यमुना नदी के मध्य क्षेत्र में था। अभी भी आदिवासी पर्वतीय लोग उस क्षेत्र को गौडवाल कहते हैं और

pdfelement

उसे आम भाषा में गढ़वाल क्षेत्र कहा जाता है। अग्राहा से इसका किसी प्रकार भी तालमेल नहीं बैठता।

वामन पुराण अध्याय २२ श्लोक ४१-५१-५२-५९-६० भाग I अवन्ती (अग्रोहा) सरस्वती व दृष्टवती नदी के संगम पर है। दृष्टवती को वर्तमान काल में घग्घर नदी कहते हैं। शाहनामा फिरदोषी में लिखा है कि घग्घर नदी अग्रोहा के पास बहती है।

अग्रोहा पर विदेशी आक्रमण : पृष्ठ १४२ पर लिखा है कि भाटो के अनुसार सिकन्दर महान ने अग्रोहा पर आक्रमण किया। गोकल चन्द सिकन्दर से जा मिला। बहुत अग्रवाल मारे गये। स्त्रियाँ बलिदान हो गई। यह निश्चिय करना कठिन है। सामान्यत: सिकन्दर महान ई० पू० चौथी शताब्दी का ग्रहण होता है यह संम्भव है कि जिस सिकन्दर का हाल भाट वर्णन करते हैं सिकन्दर लोधी हो।

इन्वैशन बाई एलगजेंडरा पृष्ठ ३१०-एरियन ५-२२-२७ कटियर्स ९-२-२२१ CAM-HIST-IND खण्ड २ पृष्ठ ३७२ में लिखा है कि सिकन्दर ब्यास नदी से आगे नहीं बढ़ा। अगल सोई सिन्ध नदी के पार का क्षेत्र था जहाँ पर सिकन्दर की सेना को भारी युद्ध करना पड़ा था। बहुत से विद्वान अगल सोई को अग्रश्रनी लिखते हैं। यह सही नहीं है। अगल सोई सिन्ध नदी के पश्चिम का क्षेत्र था। जब सिकन्दर महान् व्यास नदी से ही वापिस चला गया तो अग्रोहा पर आक्रमण कैसे हुआ। जो सिकन्दर लोधी का अग्रोहा पर आक्रमण माने उस समय अग्रोहा आजाद नही था। इतिहास फिरोजशाही पृष्ठ ३२२ पर लिखा है कि फिरोजशाह तुगलक ने अग्रोहा के मलबे से हिसार फिरोजा बनबाया है।

पृष्ठ ५८ पर लिखा है पंजाब में प्रचलित गीतों में रिसालु और शीला सम्बन्धी गाथा बहुत प्रसिद्ध है। शीला अग्रोहा की रहने वाली थी और राजा रिसालु स्याल कोट का राजा था। इतिहासकों ने रिसालु को प्रसिद्ध कुषाण सम्राट विम कैर फिशस से मिलाया है। पृष्ठ ४९ पर लिखा है शीला और राजा रिसालु की कथा गीत रूप से हरियाणा के देहातों में गाई जाती है। इस कथा का गाँवों में बहुत प्रचार है। रसालु स्यालकोट का राजा था जिसका विवाह अग्रोहा के हरिवंश शाह की लड़की शीला से हुआ था।

Remove Watermark Now

विवेचना इतिहास राजस्थान बाई कर्नल टाड जैसलमेर परिच्छेद में लिखा है कि राजा गज ने गजनी बसाया। उसके पुत्र शालीवाहिन ने शालीवाहनपुर (स्यालकोट) बसाया था। राजा विम कैड फिशिस कुषाण स्यालकोट के बसाने अर्थात् राजा रसालु से बहुत पहले हो चुका फिर ये दोनों एक कैसे हुए।

इतिहास पटियाला पृष्ठ ६१ पर लिखा है कि यादविन्द्र गज ने गजनी बसाया। उसके पुत्र शालीवाहन ने स्यालकोट बसाया। पृष्ठ ६३ पर लिखा है शालीवाहन का पुत्र राजा रिसालु हुआ। जिसका ६२३ ई० में स्वर्गवास हुआ। इससे आगे राजा रसालु तथा कोकिला की कथा लिखी है। इसी रसालु का पुत्र पूर्ण भक्त था। पंजाब में राजा रसालु तथा कोकिला सम्बन्धी गाथा प्रसिद्ध है उसमें शीला व दीवान मेहता का वर्णन नहीं आता। हरियाणा के किसी भी गाँव में राजा रसालू तथा शीला का लोकगीत नहीं गाया जाता। अग्रवालों में यह प्रसिद्ध है कि सती शीला महम के [illegible] मेहता की पुत्री थी हरभजशाह भामाशाह का भाई था [illegible] मानसिंह से कहा सुनी हुई थी जबकि वो अफगानिस्तान पर आक्रमण करने गया था शीला रोहतक विवाही थी। हरभजशाह की राव रसालु से मित्रता थी राव रसालु मलेर कोटले का जमींदार था। सम्वत् १९६६ में हाथरस से प्रेस में छपी पुस्तक जागती ज्योति निकली थी जिसमें वंशावली में मोहनदास को रंगजी का मन्दिर बनवाने का लिखा था जबकि रंगजी का मन्दिर आठवीं शताब्दी में बना। इससे यह भली-भाँति सिद्ध होता है कि उरु चरित्तम नामक पुस्तक तथ्य हीन अप्रमाणित है।

pdfelement

अग्र वैश्य वशानु कीर्तिनम पर बिवेचना

अग्रवैश्य वशानु कीर्तिनम : इसकी मूल प्रति के अन्त में लिखा है इति श्री भविष्य पुराण लक्ष्मी महातम केदार खण्डे वैश्यवशानु, कीर्तिनम षोडशोअध्याय अर्थात यह भविष्य पुराण लक्ष्मी महात्तम का अंश है। अग्रवाल जाति का विकास पृष्ठ १९ पर लिखा है कि भविष्य पुराण की कई प्रतियाँ मूल व मुद्रक बहना नन्दजी ब्रह्मचारी से लेकर बहुत विद्वानों ने देखी और मैंने खुद भी पाँच प्रतियाँ देखीं। परन्तु किसी भी प्रति में उपरोक्त वर्णन प्राप्त नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त श्री महालक्ष्मी ब्रह्मकथा

की कई कथा मुद्रित हुई और मुल भी सरस्वती पुस्तकालय काशी मद्रास व पूना के पुस्तकालय तथा लन्दन के इन्डिया ऑफ लाइब्रेरी में भी है। परन्तु किसी में भी यह अंश देखने को प्राप्त नहीं हुआ। डा० भगवान दास समन्यव प्रथम संस्करण पृष्ठ २०७ बही पृष्ठ १६ पर लिखा है कि अग्रवंशालु कीर्तिनम से प्रक्षिप्ति होने में कोई सन्देह नहीं है।

प्रमाणिकता का अभाव : अग्र वैश्य वंशानु कीर्तिनम की मूल प्रति पर लिखे जाने की तिथि चैत्र मास का द्वादसी गुरुवार संवत विक्रमी १६११ है। अर्थात् किसी महान कुशल ब्राह्मण ने ईष्ट पूर्ति वास्ते इसे रच कर अपना कार्य सिद्ध किया।

अग्रवंशानु कीर्तिनम के लेखक की अज्ञानता श्लोक १३० में लिखा है।

हरिद्वारात पश्चिमांया दिशी क्रोश चतुर्देशे।
गंगा यमुना मध्ये पुण्य पुण्यांतरे शुभे॥
चक्रे अग्रोक नगर यत्र शक्रो वंश गतः—१३०॥

अर्थात हरिद्वार से पश्चिम की ओर चौदह कोस दूरी पर गंगा यमुना के बीच अत्यन्त पुण्य स्थान जहाँ पर इन्द्र को वश किया था। राजा ने अग्रोक नगर बसाया था। इस कथा के श्लोक ही कथा की पोल खोल देते हैं। अग्रोहा न तो हरिद्वार से चौदह कोस पर है, न पश्चिम दिशा है, न गंगा यमुना के मध्य है। हरिद्वार से अग्रोहा ४०५ किलोमीटर है। हिरण्यवती व सरस्वती के संगम पर था ऐसे ग्रन्थ को कैसे प्रमाणित माना जा सकता है। अभी और भी अज्ञानता के नमूने पढ़ियों, समझ में नहीं आता कि कई विद्वान ऐसे ग्रन्थ को कैसे आधार मान बैठे।

महालक्ष्मी वृत कथा में श्लोक ११३ में लिखा है कि यह कथा तोग ऋषि ने राजा हरिश्चन्द्र को सुनाई जो कि अयोध्या के राजा थे। इसका तात्पर्य यह हुआ कि अग्रसैन राजा हरिश्चन्द्र से बहुत समय पहले हुए हैं। आगे श्लोक १२०-१२१ में लिखा है कि राजा पाण्डव ने यह व्रत विधि-पूर्वक किया। श्लोक १४७-१४८ में लिखा है कि राजा अग्र कलयुग के १०८ वर्ष बीतने पर हुए। देखिये अज्ञानता की हद कि जब यह कथा राजा हरिश्चन्द्र ने सुनी तो उनका होना भगवान राम से पहले हुआ और

Remove Watermark Now

आगे यह भी लिखा है कि कलयुग के १०८ वर्ष बाद हुए तो यह कैसे तर्क संगत माना जा सकता है।

दुर्गा सप्तसती में लिखा है कि राजा सुरथ व समाधि वैश्य ने चाक्षुष मन्वन्तर में मेधा ऋषि से यह कथासुनी। अतः इससे यह सिद्ध होता है कि समाधि वैश्य और राजा सुरथ चाक्षुष मन्वन्तर में हुए। आगे लिखा है जब सुरथ वैश्य को देवी के मारने के पश्चात् देवताओं की स्तुति पर देवी वरदान देती हुई कहती है कि वह वैवस्वत मन्वन्तर की २८ वीं चतुर्युगी में द्वापर में नन्द गोप के यहाँ जन्म लुँगी। यह बात भी यही सिद्ध करती है कि वैवस्वत मनु के प्रथम राजा सुरथ समाधि वैश्य हुए। अतः समाधि वैश्य के वंश से महाराजा अग्रसैन को मानना किसी प्रकार भी तर्कसंगत नहीं लगता। क्योंकि एक मन्वन्तर से दूसरे मन्वन्तर तक कई प्रलय हो जाती है। जबकि ये तो कई मन्वन्तर पहले का बाकया है।

राम काल में अग्रसैन जी : एक इतिहासकार ने लिखा है कि महाराजा अग्रसैन जी आज से लगभग आठ हजार साल पहले भगवान राम से पहले हुए। इस लेखक ने भाटों के इस दोहे के आधार पर निर्णय किया।

बद मंगसिर शनि त्रेता प्रथम चरण।
अग्रवाल उत्पन्न हुए सुन भारवी शिवकरण।

सही तो यह है कि पुराण एवं काल एक प्रान्त तथा एक समय के लिखे हुए नहीं हैं। भिन्न-२ कालों में भिन्न-२ प्रान्तों में लिखे गये हैं। और युगों की गणना भी ज्योतिष की दिशा गणना अनुसार है। जैसे महादशा, अन्तरदशा, अन्तर्गत दशा इसी प्रकार युगों की काल गणना भी है जैसे महायुग में अन्तर्युग और अन्तर्युग में अन्तर्गत युग अग्रोहा हरियाणा प्रान्त में है और इस स्थान पर नाथ योगियों का उदय स्थान रहा है गोरखनाथ संम्प्रदाय के अनुसार चारों युगों का वर्णन इस प्रकार है।

गांव डेरा कौथ जीन्द के गोरखनाथ प्रश्नोत्तरी हस्तलिखित श्री सुन्दर नाथ जी द्वारा नाथ जी सतयुग में काहे का आसन, काहे का बासन, काहे की सिंग्गी, काहे की मुद्रा, काहे का नाद बजाया नाथ जी ने। सुन अ बधु मिट्टी का आसन, मिट्टी का बासन, मिट्टी की सींगी, मिट्टी की मुद्रा मिट्टी का नाद बजाया नाथ जी ने।

त्रेता में काहे का आसन, काहे का बासन, काहे की सींगी, काहे की मुद्रा, काहे का नाद बजाया नाथ जी ने। सुन अ वधु ताम्र का आसन, ताम्र की मुद्रा, ताम्र का नाद बजाया नाथ जी ने।

द्वापर में काहे का आसन, काहे का बासन, काहे की सींगी, काहे की मुद्रा काहे का नाद बजाया नाथ जी ने। सुन अ वधु रजत का आसन, रजत का बासन, रजत की सींगी, रजत की मुद्रा रजत का नाद बजाया नाथ जी ने।

कलयुग में काहे का आसन, काहे का बासन, काहे की सींगी, काहे की मुद्रा, काहे का नाद बजाया नाथ जी ने। सोने का आसन, सोने का बासन, सोने की सींगी, सोने की मुद्रा, सोने का नाद बजाया नाथ जी ने।

अर्थात जब मिट्टी का प्रयोग होता है उसे सतयुग, ताम्र काल को त्रेता, रजत काल को द्वापर, युग स्वर्ण का जब योगी ज्यादा इस्तेमाल करें उसे कलयुग।

वर्तमान काल में कुछ टीलों की खुदाई से एक हजार ईस्वी पूर्व मिट्टी की ही वस्तुयें प्राप्त होती हैं। ईसा पूर्व ५०० के लगभग ताम्र की वस्तुयें प्राप्त होने लग जाती है। जो गोरख नाथ के कथन की पुष्टि करती हैं।

मनुस्मृति में लिखा है।

कृतं त्रेता युग चैव द्वापर कलिखेच।
राजो वृत्तानि सर्वाणी राजा ही युग मुच्यते।
कलि प्रसुप्तों भवति सजाग्र द्वापर युगंम।
कर्म स्वम्भु धतस्त्रेता विचरस्तु कृत युगम॥

मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ३०१-३०२

अर्थात सतयुग, त्रेता, द्वापर युग सब राजा के वर्ताव अनुसार है। जब राजा अपनी प्रजा को सत्य, तप आदि पर लगाता है तब सतयुग जानो। जब राजा यज्ञों आदि द्वारा अपनी प्रजा को शुभ कर्मों में अनुष्ठानों में लगाता है तब त्रेता युग जानो। जब राजा और प्रजा समभाव से रहें तो द्वापर युग जानो। जब राजा प्रजा की भलाई तथा धर्म से विचलित हो जाता है प्रजा भी मनमानी और मनचाहे अधर्म कार्य करती है उसे कल-युग जानो। अतः जैसा राजा प्रजा का आचरण हो वही युग का नाम होगा।

Remove Watermark Now

अग्रसैन के समय में राजा तथा प्रजा यज्ञों द्वारा विशेष रूप से यज्ञ करती थी इसलिए उनके काल को त्रेता युग माना जाना सम्भव है।

इसी प्रकार भविष्य पुराण में पृथ्वीराज व आल्हा ऊदल के युद्ध को महाभारत कहा गया है तथा द्वापर का अन्त माना है। पुराणकारों ने जब भी भाईयों का आपसी युद्ध हुआ उसे महाभारत की संज्ञा दी।

इतिहासकार सैरिंग एम० ए० बाबू हरिश्चन्द्र जी से साक्षात्कार

इतिहासकार सैरिंग एम० ए० ने श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी से अग्रवाल इतिहास के बारे में साक्षात्कार किया। जिस को उन्होंने हिन्दू ट्राईब्ज एण्ड कास्टस पृष्ठ २८५ भाग एक में इस प्रकार लिखा है कि अग्र-वाल गोदावरी नदी के तट पर रहने वाले हैं। धनपाल की पुत्री मुकटा-यज्ञ वाल्क्य ऋषि को व्याही थी। उसके शिव, अनिल, नल, नन्द, कुन्द, बल्लभ शेखर, पुत्र हुए यह सब शुद्र हो गये। वल्लभ का पुत्र अगर था। वह अपनी पत्नी माधवी सहित अग्रोहा आ गया था इनका गौत्र गर्ग, गोभिल, गरवाल, बंसल, कांसल, सिंहल मंगल, भंदल, जिन्दल, ऐरण, टेरण, तित्तल, मित्तल, बिन्दल, गौहिल, गौन थे।

नोट—ऐसा प्रतीत होता है कि इस साक्षात्कार के समय तक बाबू हरिश्चन्द्र जी के पास महालक्ष्मी व्रत कथा नहीं थी न उन्हें उस की जानकारी थी।

बालचन्द मोदी के अग्रवाल इतिहास परिचय पर विवेचना

अग्रसैन काल त्रेता युग : पृष्ठ १२ पर लिखा है कि अग्रसैन रामचन्द्र के समय हुए। परशुराम जब जनकपुरी जा रहे थे तो अग्रसैन की राजधानी से गुजरे। वहाँ अग्रसैन व परशुराम की लड़ाई हुई। परशुराम हार गये और क्षेत्रीय वंश नाशक परशुराम ने निःसन्तान होने का श्राप दिया।

विवेचना:—परशुराम के स्वभाव से परिचित व्यक्ति के लिए यह कथन निरी कल्पना और आठवाँ आश्चर्य प्रतीत होगा। परशुराम अग्रसैन जी से हार गये को सत्य मान लें तो अग्रसैन जी का व्यक्तित्व महान था भगवान् राम के बराबर था तो रामायण व पुराणों आदि में भगवान्

राम से प्रथम उनकी कीर्ति का वर्णन होता। अतः इसमें कोई सत्य प्रतीत नहीं होता कल्पना मात्र है।

अग्रवाल अग्र की लकड़ी बेचने वाले थे:— पृष्ठ ११० पर लिखा है कि अजमेर अग्रवाल सभा के मन्त्री श्री रामचन्द्र अग्रवाल १८९०-१८९१ व डबल्यु क्रुक टाइवर्स एण्ड मास्टर आफ दी एन डबल्यु पी एण्ड अवध भाग-१ पृष्ठ १४ पर लिखा है कि जो अगर बेचते थे अग्रवाल कहलाए। वैश्य अग्र की लकड़ी जंगलों से लाकर कुरुक्षेत्र हरियांक के ऋषियों को बेचते थे। इसलिए उनको अग्रवाल कहा जाता है।

विवेचना:— यह कोरी गप किसी ब्राह्मण ने जो कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत पहेवा का निवासी था अग्रवालों से धन प्राप्ति न होने या किसी कारण से नाराज होकर लिखा प्रतीत होता है।

डा० परमेश्वरीलाल गुप्त ने अग्रवाल जाति का विकास पुस्तक में लिखा है कि महाराजा अग्रसैन का आस्तित्व नहीं था डा० गुप्त ने जब अग्रवाल जाति के भिन्न-२ लेखकों के भिन्न-२ मत के इतिहास पढ़े और उन पर शोध कार्य किया तो उनको तथ्यहीन कपोल कल्पित पाया। और अग्रवाल भाटों की कार्य किवदन्तियाँ भी तथ्य हीन पाई तब उन्होंने धारणा बनाई कि अग्रसैन नाम का कोई व्यक्ति नहीं हुआ। जैसे यह इतिहास काल्पनिक है उसी प्रकार अग्रसैन नाम भी काल्पनिक है। अग्रोहा के निवासी होने के कारण अग्रवाल कहलाये। इसी धारणा को लेकर उन्होंने शोध होने का कष्ट उठाना स्वीकार न करके अपनी पुस्तक में अग्रसैन के आस्तित्व को स्वीकार करने से इंकार कर दिया। उचित भी है कि जो विद्वान सत्य जानना चाहता हो और इन पुस्तकों पर शोध करने के पश्चात ड०साहब वाली ही धारणा बनायेगा। यह सोचना आवश्यक है कि शताब्दियों से अग्रवाल अपने को महाराजा अग्रसैन का वंशज कहते आ रहे हैं जो वह अग्रोहा के निवासी होने के कारण अग्रवाल कहलाते थे तो वह अग्रसैन के वंशज न कहकर अपनेआपको अग्रोहा का निवासी बताते। इसके लिए शोध को बहुत आवश्यकता थी कि जिस अग्रसैन ने अग्रोहा को राजधानी बनाया अर्थात वही अग्रवालों का पूर्वज होगा। इस ओर डा० साहब ने ध्यान न दिया। पृष्ठ ११२ पर लिखा है कि सन् १९३८ की भारतीय

Remove Watermark Now

पुरातत्व की ओर से अग्रोहा की खुदाई हुई इसमें ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी की कुछ ताम्र मुद्रायें प्राप्त हुई जिनसे ज्ञात होता है कि वहाँ आग्रय नामक जनपद था। पृष्ठ ११३ पर लिखते हैं कि अगाच संस्कृत आग्रय का प्राकृत है।

समझ में नहीं आता कि इतने बड़े विद्वान ने अगाच को आग्रय कैसे मान लिया जब कि मौर्य काल में शिलालेखों में अगाच शब्द लिखा मिलता है। जिसका तात्पर्य महान बनता है उदाहरणार्थ निगलवा ग्राम में प्राचीन स्तम्भ पर लिखा है।

देवानां पियन पिय दसिन लाजिन चौदस वशा
मिसी तैन बुद्धस कोनाय मनष थुबे दतिय वढिते (विसीतेब)
स्वामसितेन च अतन अगाच महिपते
सिलायुवे च उस पापिते।

अर्थात चौदह वर्ष अभिषक्त देशों के प्रियदर्शी राजा ने बुद्ध कनक मुनि का स्तुप दुना बढ़ाया और २० वर्षों से अभिषक्त महान राजा ने स्वयं इस स्थान पर पूजा की और सिला स्तम्भ स्थापित करवाया।

यह सिक्के शुंग्ड नरेश राजा अगद के हैं। इनका अग्रवालों से कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता।

पृष्ठ १४८ पर राजा रसालु व शीला की कथा लिखी है और राजा रसालु को विम कैड फिशस माना है। इतिहास राजस्थान बाई कर्नल टाड जैसलमेर परिच्छेद में लिखा है कि राजा गज जिसने गजनी बसाया उसके पुत्र शालीवाहन ने शालीवाहनपुर अर्थात सियालकोट बसाया उसका लड़का रसालु था इतिहास पटियाया पृष्ठ ६१ पर लिखा है कि शालीवाहन रसालु सियालकोट का राजा था। इसका ६२३ ई० में स्वर्गवास हुआ। इससे आगे रानी कोकिला जो राजा होड़ी झेलम की रानी थी उसकी कथा लिखी है।

उपरोक्त प्रमाणों को देखते हुए राजा रसालु को विम कैड फिसस से जोड़ना कहाँ तक तर्क संगत है। जबकि विम कैड फिशस के शताब्दियों बाद रसालु हुआ। पंजाब में राजा रसालु व कोकिला की कथा प्रसिद्ध है। उसमें कहीं भी शीला का नाम नहीं आता। और न ही हरियाणा के

देहातों में रसालु और शीला के लोक गीत गाये जाते हैं। सत्यकेतू जी विचार करें कि यह भ्रम कैसे हो गया। हरियाणा के अग्रवाल शीला सती के बारे में जानते हैं कि महम के मैहता हरभज शाह की पुत्री थी हरभज शाह भामाशाह का भाई था। रसालु जागीरदार इनका मित्र था। शीला रोहतक बिवाही थी। हरभज शाह से राजा मानसिंह जब वह अफगानिस्तान पर आक्रमण करने जा रहा था महम में कहा सुनी हुई थी वापसी पर मानसिंह ने मसम को लूटा था।

अग्रोदक शब्द की व्याख्या :— पृष्ठ १०६ पर लिखते हैं कि अग्रोदक नाम अग्र के तालाब का बोध कराता है अग्र का गढ़ नहीं।

प्राचीन काल में प्रथा थी और मध्य व वर्तमान काल में भी यही प्रथा है जब नगर व गढ़ निर्माण किये जाते हैं तो किसी विशेष व्यक्ति के नाम से उसका नाम करण किया जाता है। ताकि उस व्यक्ति का बोध कराते रहें। जैसे हस्ती के नाम पर हस्तिनापुर, गज के नाम पर गजनी, लव के नाम पर लवपुर, जयन्त के नाम पर जयन्तप्रस्थ, शाहजाँह के नाम पर शाहजाँहवाद, फिरोजशाह के नाम पर हिसार फिरोजा, संगर के नाम पर संगरुर, भद्रसैन के नाम पर भदौड़, रायपिथौरा के नाम पर पिथौड़ागढ़ इसी प्रकार राजा अग्र के नाम पर अग्रगढ़ (अग्रोदक का नाम) पड़ा।

अग्रोदक का भाषायी अर्थ :— भविष्य पुराण भाग १ पृष्ठ ५७ श्लोक १०३ पर लिखा है कि विकुवर्ण वायू फिरतम का नोदन करने वाला विरोच्युत से उत्पन्न होता है।। विपुल नभ विकुरण विचार नोदन करने वाला उदक (जल) ओदक (जड़) सन्ति (क्षमा की भावना) पुस्कर (दण्ड) उल्क(रिसु) है अर्थात् ओदक और अग्र से अग्रोदक बना अर्थात् अग्र का जड़ पदार्थ (गढ़) है।

अग्रवाल शब्द की व्याख्या

पृष्ठ १०६ पर लिखा है कि अग्रवाल शब्द अग्र तो व्यवसायक बोधक जातिवाचक संज्ञा है। या फिर स्थान बोधक व्यक्तिवाचक संज्ञा है। तात्पर्य यह है कि अग्रवाल शब्द का अर्थ अग्र के निवासी जैसे ओसवाल पालीवाल, खन्डेलवाल आदि स्थान बोधक संज्ञा (निवासी) हैं। यह सत्य

Remove Watermark Now

है परन्तु इस आधार पर यह धारणा करनी कि अग्रवाल १८ गौत्री महाराज अग्रसैन के वंशज नहीं, सही प्रतीत नहीं होती। क्योंकि अग्रवाल, माली, मुसलमान, ब्राह्मण, जाट, राजपूत अनेक जातियों में मिलते हैं। जो अपने आप को अग्रवाल कहते हैं। अपना गौत्र अग्रवाल बताते हैं। तथा अपना निकास अग्रोहा बताते है केवल १८ गौत्र ही अग्रवाल अपने को महाराज अग्रसैन जी का वंशज बताते हैं। या कुछ राजपूत एवं मुसलमान जो कि राजा गोपाल को जिसने पृथ्वीराज व मोहम्मद गौरी के युद्ध में वीरगति पायी थी उसके वंशज हैं। वह अपने पूर्वज राजा गोपाल को अग्रोहा के राजा अग्रसैन का वंशज बताते हैं।

गौत्रों के बारे में अग्रवाल जाति विकास में लिखते हैं कि अग्रवालों के साढ़े सत्रह गौत्रों की बजाय एक सौ दो गौत्र मानते है। परन्तु अब इस वर्ष मार्च १९८१ में अग्रवाल संदेश पत्रिका में डा० साहब ने अपने लेख में ३९ गौत्र माने हैं। अतः इनमें वर्ण वाले अग्रहारियों आदि के गौत्र शामिल करके साढ़े सत्रह के स्थान पर ३९ बना दिये।

पंजाब के सिक्ख ग्रेवाल अग्रवाल हैं :— पृष्ठ १७४ पर लिखा है कि पंजाब के ग्रेवाल सिक्ख हैं। वह अग्रवाल नहीं हैं। और न ही उनका अग्रोहा से ताल्लुक है। अति भ्रान्तिपूर्ण तथ्य है।

श्री परमेश्वरी दास जी का अग्रसैन अस्तित्व किसी भी हाल में न मानने की जिद :—

अग्रवंश शोध संस्थान से मेरा पत्र व्यवहार होने पर पत्र आ या कि श्री डा० साहब ठोस प्रमाण मुद्रा आदि जब तक न मिले तब तक वे अग्रसैन का होना स्वीकार सहीं करते। इस पर अग्रोहा से मिली मुद्रांक के फोटो भेजे गये जब कि डा० साहब मुद्रांओं के बारे में परम विद्वान हैं परन्तु उत्तर आया कि यह अग्रगण की मुद्रांक नही है उन पर लिखे के बारे में कुछ नहीं लिखा गया। जब उन मुद्राओं को मुद्रा परिषद् वाराणसी द्वारा पढ़वाया गया तो वह मुद्राएं राज्ञ राज्ञों अग्रर वरमस देव सिद्ध की निकली जब उनको रिपोर्ट की फोटोस्टेट व मुद्राकों के फोटो भेजे तो उनकी ओर से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ जब शोध पत्र भेजे गये तो उनका पत्र आया।

नकल पत्र

जे १२/१५ R बौलिया बाग, रामकटोरा
वाराणसी २२१ ००२
दि० २५-१२-८२

प्रिय कानूनगो जी,

नमस्कार !

अपनी शोध सामग्री व परिचय भेजने के लिए धन्यवाद ।

मुझमें इतनी योग्यता नहीं है कि मैं आप द्वारा प्रस्तुत शोधों की सराहना कर सकूं । मेरे आपके सोचने समझने के दृष्टिकोण में महान अन्तर है । इतना ही कहना पर्याप्त होगा ।

हस्ताक्षर
परमेश्वरी लाल गुप्ता

इस पत्र के पश्चात् डा० परनेश्वरी लाल गुप्त जी से तर्क वितर्क करने की अग्रवाल इतिहास के बारे में कोई भी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। क्योंकि वह महाराजा अग्रसैन के अस्तित्व को माननेके लिए तैयार ही नहीं है चाहे कितने ही प्रमाण क्यों न उपलब्ध हो ।

अग्रसैन, अग्रोहा, अग्रवाल श्रीमती स्वराजमणि अग्रवाल पर विवेचना :-

पृष्ठ ६ पर लिखा है कि महालक्ष्मी व्रत कथा के बारे में अनेक इतिहास के विद्वानों के मत जिन्होने इसे अप्रमाणित सिद्ध किया पढ़कर जब तक विद्वान कोई ठोस प्रमाण इसके विरोध में प्रस्तुत नहीं करते इस कथा को अप्रमाणित कहना विद्वानों का पूर्वाग्रह है, माना जाएगा। आगे लिखती हैं कि इस कथा में शब्द पुण्यमार्शाष प्राकृत का संस्कृति करण भाषा दसवी शताब्दी के बाद का है अतः यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि यह कथा ११ वीं शताब्दी से पूर्व प्रचलित थी ।

विवेचना :— इस कथा के अप्रमाणित होने का इससे ठोस प्रमाण और क्या होगा कि जिस ग्रन्थ में इस कथा का होना कथाकार ने वर्णन किया है उस ग्रन्थ में इस का वर्णन नहीं । कुछ प्राचीन शब्द कथाकार

Remove Watermark Now

अपनी कपोल कल्पित कथा में लिख दें तो वह इन शब्दों से प्राचीन नहीं मानी जा सकती ।

अग्रसैन, अग्रोहा, अग्रवाल पुस्तक में विद्वान लेखिका ने बड़े परिश्रम व सुन्दर ढंग में लिखा है जिसमें लेखिका ने केवल किवदन्तियों पर आधारित धाराओं की सुन्दर रूप से पुष्टि की हैं । ऐसा प्रतीत होता है इतिहास का शोध कार्य नहीं किया गया ।

अग्रसैन, अग्रोहा, अग्रवाल पुस्तक के पृष्ठ १३ पर लिखा है । उरुचरित्रम् के गौड़ देश की पुष्टि पर अन्य रचनाकार ने यदि गौड़ देश की स्थिति अपनी मति अनुसार गंगा यमुना के मध्य बताई है तो सही बताई होगी । जैन आगमों में धग्धर और सरयू के संगम पर स्वर्गद्वार होने का उल्लेख किया है । आगमों का रचना काल ईस्वी सन् के प्रथम शताब्दी माना जाता है । अतः स्पष्ट है कि दृढ़ता का नाम धग्धर ई० पड़ चुका होगा ।

विद्वान लेखिका ने बहुत सुन्दर ढंग से धग्धर और सरयू के संगम को उत्तर प्रदेश से हरियाणा में दिखाने का प्रयास किया है । और उरुचरित्तम में गौड़ देश का अग्रोहा होने की पुष्टि की है जबकि उत्तर प्रदेश में धग्धर नदी, सरयू नदी का संगम स्वर्गद्वार था । अग्रोहा का प्राचीन नाम अवन्तीपुरी था । तथा दृष्डवती व सरस्वती नदी के संगम पर था ।

वामन पुराण अध्याय ३५ श्लोक ४२ में कुरुक्षेत्र परिक्रमा यात्रा में अग्रोहा का नाम अवन्ती लिखा है वामन पुराण की रचना के बाद इस स्थान का नाम अग्रोहा पड़ा। वामन पुराण का रचना काल पाँचवी ईस्वी का माना जाता है । अतः स्पष्ट है कि अग्रसैन पाँचवीं शताब्दी के बाद हुए ।

पृष्ठ १० पर इसी प्रकार हरिद्वार से १४ कोस पर अग्रोत नगर होने की पुष्टि करते हुए लिखा है कि एक कोस दो मील का अथवा अधिक का भी हो सकता है । किसी भी पुस्तक में या किवदन्ती में एक कोस दो मील से ऊपर होने का वर्णन नही मिलता तब कैसे ४० किलोमीटर का कोस माना जाये । यह तर्क संगत नहीं लगता ।

पृष्ठ १४ पर लिखा है कि कुछ ग्रन्थकारों ने प्रताप नगर का कहीं

pdfelement

उल्लेख प्राप्त न होने पर उन्हें भाव नगर का राजा बताया है। श्री राजा राम शास्त्री ने प्रताप नगर भडौच में अंकलेश्वर के पास तथा बासंदा जिला सूरत के पास बताया है। अग्रोहा से इस स्थान की दूरी अग्रसैन का जन्म स्थान होने के विपक्ष में जाती है। यह कहना कि प्रताप नगर अग्रोहा से दूर होने के कारण अग्रसैन का जन्म स्थान नहीं हो सकता तर्क संगत नहीं है। क्योंकि किसी भी किवदन्ती में अग्रसैन का जन्म अग्रोहा में नहीं बताया गया। उनदा जन्म स्थान प्रताप नगर (गुजरात) में जाता है पैठन का प्राचीन एक प्रताप नगर भी है। अग्रसैन ने गुजरात आने के बाद अग्रोहा को राजधानी बनाया था। अग्रोहा के आस-पास कुरुक्षेत्र व प्रदेश जंगल में कोई भी प्रताप नगर का नाम प्राचीन काल में न था और न ही अब है। यह सब भ्रांतिन्याँ महाराजा अग्रसैन को अति प्राचीन पुराण पुरुष बनाने की और अग्रवालों को अति प्राचीन दिखाने के कारण उत्पन्न हुई। जैसे उदाहरणार्थ जगन्नाथपुरी का मन्दिर स्कन्ध पुराण, उत्तकल खण्ड, अध्याय २८९ में लिखा है कि इन्द्र ध्रुमण नामक राजा ने जिसका जन्म सूर्य वंश में ब्रह्मा की पाँचवी पीढ़ी में सतयुग में हुआ जगन्नाथ मन्दिर बनावया। मन्दिर में काष्टमयी प्रतिमा स्थापित की जबकि यह मन्दिर उत्कल में इन्द्रध्रुम राजा ने ९०० ई० में बनबाया। और काष्ठ की प्रतिमा स्थापित की इसी प्रकार महाभारत युद्ध को हुए लोग ५,००० वर्ष कहते हैं। जबकि पुराणों के अनुसार ईसा पूर्व १४९० वर्ष होते हैं। उदाहणार्थ विष्णु पुराण अंश चतुर्थ अध्याय २४ श्लोक १०४ में राजा परिक्षित के जन्म से लेकर अन्तिम नन्द के राज्यारोहण तक १०५० वर्ष थे। महाभारत युद्ध के कुछ मास बाद परिक्षित का जन्म हुआ था। राजा अन्तिम नन्द ने २० वर्ष राज्य किया। ईस्वी पूर्व ३२० चन्द्रदुप्त मौर्य द्वारा मारा गया अर्थात १०५०+२०+३२०=१४२० बर्ष ईस्वी पूर्व महाभारत युद्ध हुआ। केवल महाभारत ग्रन्थ में विक्रम पूर्व ३००० वर्ष पूर्व लिखा है। ५००० वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध को प्रमाणित कैसे माना जाय। इसी कारण महाभारत ग्रन्थों में यौधेय मुद्रायें आदि अनेक राजवंशों का वर्णन किया है। जो कि उस काल में नहीं थे बहुत बाद में हुए। उनके समय के शिला-लेख आदि भी मिलते हैं तब किस प्रकार उनका महाभारत काल में होना माना जा सकता है। हम किसी भी महापुरुष राजवंश को अति प्राचीन काल में बतादे जिस काल में हुए न हो उस काल में अनेक होने का प्रमाण

Remove Watermark Now

तो उपलब्ध नहीं हो सकता तब शोधकर्त्ता विद्वान लोग उनको काल्पनिक ही बतायेगें।

जैसे डा० परमेश्वरी लालगुप्त ने इन काल्पनिक इतिहासों को पढ़कर ये धारणायें बनाई। जैसे ये कथायें काल्पनिक हैं ऐसे ही अग्रसैन भी काल्पनिक व्यक्ति हैं। जो महाभारत काल में आग्रयगण था तब अग्रसैन महाभारत से पहले होने चाहिए। जबकि लिखते हैं कि अग्रसैन महाभारत युद्ध के १३६ वर्ष बाद हुए। महाभारत ग्रन्थ के वनपर्व अध्याय १६ में आग्रय, योधेय भद्रम रोहतये गणों का मलेच्छ व शूद्र गण लिखा है क्या यह तर्क संगत है कि अग्रवाल मलेच्छ या शूद्र थे। सत्य यह है कि महाराजा अग्रसैन चालुक्य वंश में श्री वल्लभ के पुत्र थे। बड़ौदा से ६ किलोमीटर प्रताप नगर गुजरात में उत्पन्न हुए ये। भडौच के नरेश थे और सन् ईस्वी ६४३ में गुजरात से आकर अग्रोहा को राजधानी बनाया।

पृष्ठ ८२ लिखा है एक स्थान पर बहुत से मिट्टी बर्तन दबे पड़े हैं कहा जाता है कि फकीर के श्राप द्वारा स्वर्ण के बर्तन मिट्टी के बन गये। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि धुंधली नाथ ने श्राप देकर अग्रोहा पर अग्नि वर्षा करवायी। अग्रोहा भस्म हो गया।

अग्रोहा पर अग्नि वर्षा के कोई चिन्ह नहीं हैं जिससे प्रतीत हो कि सारा अग्रोहा सारा अग्रोहा भस्म हो गया हो। कुछ स्थानों पर आग लगने के निशान मिलते हैं ऐसे निशान लगभग हरियाणा और पंजाब के अन्य टीलों पर पाये जाते हैं। अग्नि वर्षा की किवदन्ती का उल्लेख हरियाणा या पंजाब की किसी भी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में नहीं पाया जाता जबकि धुंधली नाथ के श्राप का उल्लेख गुजरात में वल्लभी बारे प्राचीन लेखों व इतिहास की पुस्तकों में पाया जाता है। अग्रोहा से जुड़ी किवदन्ती का ज्यों का त्यों वर्णन गुजरातनों अनेक राजकीय सांस्कृतिक इतिहास मैत्रिक काल पृष्ठ ४३२ व रासमाला गुजरात अनु भाग एक पृष्ठ १७-१८ पर मिला पर लिखा है धुड़नाथ नाथ एक तपस्वी साधु शिष्यों सहित वल्लभी (बादामी) गुजरात आया और इसने चमारड़ी ग्राम के पास निवास किया और गुफा में तपस्या करने लगा। इनके शिष्य नगर में भिक्षा लेने गये। इन्हें भिक्षा नहीं मिली तो शिष्य ने लकड़ी चुन-कर गट्ठा बनाकर नगर में बेचना और उसके बदले आटा सीधा ले

आता। एक कुम्हारिन उसकी रोटी बना देती। इस प्रकार उदर पूर्ति करता। बहुत समय बीतने पर जब गुरु तप से निवृत हुए तो गुरु के पूछने पर शिष्य ने सारी कथा सुनाई। गुरु को वल्लभी के लोगों पर बहुत गुस्सा आया। शिष्य द्वारा कुम्हारिन को बुलाकर कहा कि तूभावनगर की ओर चली जा और पीछे मुड़कर मत देखना। तब साधु ने कमण्डल को उल्टा करके कहा कि यह नगर धनमाल सहित ऊधों हों जा। कुम्हारी ने कोतुहल वश पीछे मुड़कर देखा और वह पत्थर की हो गई। वह अभी भी उसी स्थान पर पत्थर की मूर्ति बनी पड़ी है। लोग इसको रुवा परी के नाम से पूजते हैं। यह घटना सन् ५२४ ईस्वी की है।

सम्भव है कि गुजरात को यह किवदन्ती अग्रवालों के पूर्वज गुजराज से आते हुए साथ लाए हों और अग्रोहा के नष्ट होने के बाद जब दूसरे स्थानों पर स्थानों पर जा कर बस गये तो अग्रोहा से जुड़ गई। श्राप द्वारा स्वर्ण से मिट्टी के वर्तन बनने की बात समझ में नहीं आती। इकट्ठे मिट्टी के वर्तन मिलने की सम्भावना केवल कुम्हार के घर में हो सकती है।

हस्तलिखित अग्रपुराण पर विवेचना

अग्रपुराण का भाटों के पास होना बताया जाता था। हमने इसकी बहुत खोज की जब नहीं मिला तब पुस्तक "अग्रवाल एवं वैश्य वंश इतिहास" को लिख दिया गया। अकस्मात् २४ अगस्त १९८४ को वह भाट जिसके पास अग्र पुराण था हमें मिल गया। हमने अग्र पुराण के कुछ अंशों का फोटो स्टेट करवा लिया है। यह पुराण हिन्दी लिपि में कुछ राजस्थानी भाषा का मिश्रण लिए हुए सतरहवी शताब्दी का लिखा प्रतीत होता है। इसमें राजा अग्रसैन को ईक्षवाकु कुल में राजा अम्बरीष भागीरथ व राम के वंश में सूर्यवश अवतंश लिखा है और साथ ही दूसरी वंशावली भी दी है जो कि ऋषि कुल की है लिखा है कि ब्रह्म का पुत्र भारद्वाज हुआ। भारद्वाज के अनुमत ऋषि, अनुमत के पवन ऋषि, पवन ऋषि के वैश्यपायन ऋषि। इनकी शाखा माधुनी, भारद्वाज गौत्र हुआ। इनसे वैश्य वंश चला। वैश्यपायन के धारा ऋषि, धारा ऋषि के अंगरिष ऋषि, अंगरिष के धूमाचल ऋषि, धूमाचल के धुरधार ऋषि धुरधार

Remove Watermark Now

के कवलनाम ऋषि, कवलनाम के धमि ऋषि, धूमि के सन्तोष मुनि, सन्तोष मुनि के निर्गुण मुनि, निर्गुण के पूर्णचन्द मुनि, पूर्णचन्द के अनल ऋषि अनल ऋषि के श्री पति मुनी, श्रीपती के पुत्र महेश ऋषि हुए। महेश ऋषि के अग्रसैन ऋषि, अग्रसैन ऋषि के अठ्ठारह पुत्र हुए।

१. गर्ग २. गोयल ३. कासल ४. बाँसल ५. मंगल ६. सिंहल ७. मित्तल ८. चित्तल ९. ऐरण १०. टेरण ११. तायल १२. तुंगल १३. बिंदल १४. जिन्दल १५. कुच्छल १६. बाछल १७. गोयन १८. गुणराज

महेश ऋषि के एक कन्या कमोदी थी जो कि अपने पिता के यहाँ रहती थी। उसका पुत्र जसराज था। अग्रसैन ऋषि का विवाह चम्पावती नरेश राजा महीधर की पुत्री देवमणी से हुआ अग्रसैन ने घोर तपस्या द्वारा भगवान शिव से अपनी इच्छा अनुसार दर्शन देने का वरदान प्राप्त किया। एक बार महावन में देवमणी ने राजा से कहा कि हमारे यहां पुत्र नहीं है। अपुत्र प्राणी को पिण्डदान आदि न मिलने के कारण परलोक में कष्ट भोगने पड़ते हैं। अतः हमारे पुत्र होना आवश्यक है। अग्रसैन ने भगवान शिव को याद किया। और अपनी पुत्र की प्राप्ति की इच्छा प्रस्तुत की। भगवान शंकर ने सतरह पुत्र कुशों द्वारा प्रकट करके राजा को दे दिये। जो कि रूप रंग और आयु में एक समान थे। एक बार पुत्रों सहित राजा कुम्भ स्नान के लिए हरिद्वार गये वहाँ पर नारद जी मिले। राजा ने नारद जी से कहा कि मेरे इन पुत्रों के विवाह सम्बन्ध कराइये। नारदजी ने कहा कि आप मेरे साथ वृन्दावन चले। वहाँ पर राजा पद्म नाग की कन्याओं से आपके पुत्रों का विवाह करवाऊँगा। राजा पुत्रों सहित वृन्दावन में कालीहद पर आ गये। नारद जी कालीहद के वीवर द्वारा पाताललोक (नाग लोक) चले गये और पद्मनाग से मिलकर उन की सतरह पुत्रियों का विवाह अग्रसैन के पुत्रों से करवाना निश्चित कर अपने साथ ले आये। विवाह के समय पद्मनाग के एक कन्या और उत्पन्न हो गई। पद्मनाग की इच्छा देखकर राजा ने शिव की आराधना से एक पुत्र प्राप्त किया। इस प्रकार राजा अग्रसैन के १७ पुत्रों का विवाह हुआ। नाग कन्यायें रात को नागिन बन जातीं और दिन में मानवी। राजा बहुत दुखी हुआ। जब नारद जी से पूछा तो उन्होंने कहा कि जब नाग कन्यायें स्नान करने के लिये चोले उतारें तो कोई व्यक्ति उन चोलों

को जला दें। तब ये नागिन नहीं बन सकेगी। इस कार्य को करने का भार जसराज ने अपने ऊपर ले लिया। और नाग पंचमी के दिन उनके चोले जला दिये। अग्रसैन ने अपने १८ पुत्रों के विवाह १८ कन्याओं से भी किये। जिनके नाम इसी पुस्तक पृष्ठ ९४ पर दिये गये हैं। अग्रसैन के १८ के पुत्रों के चार-चार पुत्र हुए। इस प्रकार बहत्तर थोक बने।

विवेचना :— उपरोक्त लेख से स्पष्ट होता है कि महाराजा अग्रसैन सूर्यवंश की अम्बरीष, भागीरथ, राम की शाखा से थे तथा महेश ऋषि उनके गुरू थे। महेश ऋषि की पुत्री कमोदी गुरू शिष्य परम्परा अनुसार अग्रसैन की बहिन हुई। उसी परम्परा अनुसार जसराज को उनका भानजा मानना उचित है। क्योंकि गुरु परम्परा में शिष्यों को गुरु का पुत्र भी माना जाता है।

२. यह पुराण भाटों ने लिखा है और अग्रवाल समाज में अपनी प्रतिष्ठा करवाने के लिए अपने ऋषि कुल की वंशावली में अग्रसैन जी को जोड़कर अपने पूर्वज को उनका भानजा तथा नाग कन्याओं के चोले जलाने के लिए बलिदान देने की काफी बड़ी कथा रचकर लिख दी है।

३. महाराज अग्रसैन का विवाह चम्पावती नरेश राजा महीधर की पुत्री देवमणी से हुआ। चम्पावती नगरी चाक्षु थाना नवई जिला जयपुर राजस्थान में बताते हैं ये सम्भव है।

४. पुत्रों की प्राप्ति की कथा भी कपोल कल्पित प्रतीक होती है। जैसे कि बाल्मीक द्वारा कुशा से कुश को उत्पन्न करना, अग्नि कुल का हवन कुण्ड से उत्पन्न होना, चालुक्य का ब्रह्मा की चलु से उत्पन्न होना ये असम्भव है।

५. नाग (सांप) कभी मनुष्य नहीं बन सकते। और न ही सांपों का मनुष्यों से वैवाहिक सम्बन्ध हो सकता। भारत में नाग नाम की एक जाति थी जिसके समय-समय पर बड़े बड़े राज्य हुए। उसी जाति के नाग राजा पद्म नाग जो कि मथुरा और विदिशा के राजा थे उनकी पुत्रियों से महाराजा अग्रसैन के पुत्रों का विवाह हुआ। जिन राज कन्याओं व राज्यों के नाम जो कि अग्रसैन को विवाही थी के नाम इस पुराण में लिखे हैं। यह राज्य हर्षवर्धन काल के आस पास सामन्तों (ठिकाने) के

Remove Watermark Now

रूप में हरियाणा में अग्रोहा के आस पास थे। महाराजा अग्रसैन के पुत्रों के ऋषियों (गुरुओं) के नाम आश्रमों के नाम पर गाँव व तीर्थ हरियाणा में मिलते हैं।

अग्रपुराण में अन्य पुराणों की तरह कपोल कल्पित कथाएँ लिखी हैं। परन्तु इन पर विचार करने से अनेक सत्य तथ्य सामने आते हैं।

१. महाराजा अग्रसैन सूर्यवंशी थे।

२. उनका विवाह चम्पावती नरेश राजा महीधर की पुत्री देवमणी से हुआ।

३. महावन और गोवर्धन महाराष्ट्र गुजरात का एक भाग है।

४. उनके १८ पुत्र थे।

५. महेश ऋषि महाराजा अग्रसैन के गुरु थे। जिन्होने हरियाणा में १८ ऋषि आश्रमों की स्थापना की।

६. अग्रसैन के १८ पुत्रों का विवाह पदमनाग मथुरा विदिशा नरेश की पुत्रियों से माघ सुदी पंचमी संवत् ६७० में हुआ। तथा १८ सामन्त कन्याओं से भी विवाह हुए। इनके चार-चार पुत्र हुए। इस प्रकार ७२ थोक बने। ७२ थोक गणतन्त्र प्रणाली द्वारा पृथ्वीराज के नाना अनगपाल के समय तक अग्रोहा पर राज्य करते रहे।

७. अग्रोहा राज्य सामन्ती रूप से मोहम्मद गौरी तक चला। इसका अन्तिम राजा धीरपाल था। सन् ११९४ में यह राज्य छिन्न-भिन्न हो गया।

८. अग्रोहा का गढ़ निर्माण कार्य मगसिर कृष्ण पंचमी शनिवार को आरम्भ हुआ तथा ६९९ विक्रमी में राजधानी बनायी।

९. राजा अनंगपाल पृथ्वीराज के नाना के समय अग्रोहा के ठाकुर हेमराज ने अग्रवाल के १८ गौत्रों के ठाकुरों सहित वैसाख कृष्ण चतुर्दशी को संवत् ११६० विक्रमी में देहली का सिंहासन प्राप्त किया तथा अग्रोहा का राज्य सिंहासन चंचलराय को दिया।

अग्र पुराण पृष्ठ ४२ पर लिखा है कि पाण्डु राजा के अर्जुन हुआ। अर्जुन के अभिमन्यु, अभिमन्यु के परीक्षत हुआ। एक बार सुखदेव मुनि

pdfelement

राजा के पास आये। तथा वार्तालाप में कहा गया कि होनहार मिट नहीं सकती। राजा नहीं माना। कहने लगा कि कोई उदाहरण दो। मुनि बोले कि राजन् तेरे घोड़ी आवेगी। वह बछेरा देगी। बछेरे के बड़े होने पर तू सवार होकर जाएगा मार्ग में एक ब्राह्मण पुत्र अपमान करेगा। उसके श्राप द्वारा कुष्ठी होगा। राजा कहने लगा कि मैं यह कार्य कभी नहीं करूंगा मुनि चले गये। कुछ समय बाद एक घोड़ी बेचने वाला आया। जिससे राजा ने एक घोड़ी मोल ली। उसको एक नीले रंग का बछेरा हुआ। राजा उसे बहुत चाहता था। बछेरा बड़ा हो गया। राजा सवारी करने लगा। राजा एक बार शिकार करने जा रहा था। किसी कारणवश एक ब्राह्मण पुत्र पर क्रोधित हो कर खडग का प्रहार किया। ब्राह्मण ने कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। राजा कोढ़ी हो गया। कुछ समय बाद मुनि उसके यहाँ आये। राजा पांव में पड़ गया। मुनि ने कहा कि देख होनहार टलती नहीं है। तू यज्ञ कर। यज्ञ में कोई तुम्हें अग्र पुराण सुनायेगा। तब तुम्हारा रोग दूर होगा। राजा ने यज्ञ किया लोगों को न्योता दिया। अग्रोहा से बहत्तरी थोक आये। तथा गुणपाल भाट भी आया। राजा को अग्र पुराण की कथा सुनाई तब सुनते ही राजा रोग से मुक्त हो गया।

विवेचना :—

१. महाभारत ग्रन्थ व अन्य पुराणों में परीक्षत के श्राप की ऐसी कोई कथा नहीं मिलती। जबकि परीक्षत के बारे व श्राप के बारे में कथाएँ मिलती हैं।

२. इसी पुराण पृष्ठ ९४ पर पदमनाग की कन्याओं से राजा अग्रसैन के पुत्रों का विवाह संवत् ६७० में लिखा है। महाभारत युद्ध उस समय से २२०० वर्ष पूर्व हो चुका था। तब परीक्षत को कैसे यह कथा सुनाई गई। यहाँ भ्रान्ति उत्पन्न होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुणपाल भाट के पास यह पुराण था। जब उसके वंशजों में कई पीढ़ी बाद केशोदास भाट हुआ। उसने गुणपाल द्वारा लिखित पुराण का दूसरी बार लेखन किया। तो उसमें लिखित पाण्डु राजा के वंशज व कथा को महाभारत में वर्णित पाण्डु कुल समझ कर विजयपाल को परीक्षत उपनाम द्वारा वर्णित कर दिया। जिससे महाभारत काल की भ्रान्ति उत्पन्न हो गई।

Remove Watermark Now

दुबकुण्ड शिलालेख जो कि विक्रमी संवत् ११४५ का है उस में लिखा है कि राजा पाण्डु का पुत्र अर्जुन हुआ। अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु हुआ। अभिमन्यु का पुत्र विजयपाल हुआ। विजयपाल ने एक बड़ा यज्ञ किया। यह शिला लेख इसी पुस्तक पृष्ठ १५९ पर दिया गया है। तथा जाति भास्कर में लिखा है कि पद्मावती में एक महान यज्ञ संवत् ११४५ में हुआ जिसमें तमाम लोग आये। अग्रोहा से अग्रवाल भी आये थे।

अर्थात् प्रमाणित होता है कि अग्रपुराण में वर्णित परीक्षत राजा (विजयपाल) था। जिसने संवत् ११४५ में यज्ञ किया। तथा यह कथा भाट गुणपाल ने संवत् ११४५ में यज्ञ में लोगों को अग्रवालों का परिचय देने वास्ते सुनाई। तथा गुणपाल द्वारा हस्तलिखित पोथी की नकल केशोदास ने की। जिसकी हमने फोटों स्टेट कराई है।

सर्ग तृतीय

वर्ण व्यवस्था का जन्म से न होकर कर्म से होना

हिन्दू समाज में यह सबसे बड़ी भ्रान्ति फैली है कि वर्ण (जाति) जन्म से है। इसी धारणा को लेकर बहुत से लोग अग्रवालों को आदि वैश्य व अग्रसैन वैश्य राजा बताते हैं। और प्रमाण में मनु जी का चारों वर्ण बनाने का उदाहरण देते हैं। और यह भी मानते हैं कि मनु जी प्रथम मानव हुए और सभी मानव उनके वंशज हैं। यह ध्यान देने की बात है कि जब सारी मानव जाति मनु से उत्पन्न हुई तो जो वर्ण मनु जी का था वह ही सब का होता। इससे यह सिद्ध होता है कि मनु जी ने चार वर्ण जन्म से न बनाकर कर्म से बनाये। क्योंकि उनके पुत्र जिन २ कर्मों में लगे होंगे उनको वह ही वर्ण दिया होगा। जो हम आधुनिक वैज्ञानिकों की धारणा को लें तो सर्वप्रथम अनेक मानवों का समुदाय जंगली लोगों का था जो कि धीरे-धीरे सभ्य हुए यह मानना पड़ेगा कि मनु जी उन सभ्य मानवों के अस्तिधाता होंगे और उन्होंने मानव समुदाय के चारों वर्णों में कर्म द्वारा बाँटा होगा। अब हम पौराणिक इतिहास को देखे उससे भी विदित होता है कि वर्ण व्यवस्था जिसने भी चलाई जन्म से नहीं कर्म से बताई। पुराणों में अनेक कथायें मिलती हैं। उदाहराणार्थ कुछ लिख रहे हैं, जो सारी कथाएं लिखे तो अलग एक बड़ी पुस्तक बन जाती है। इतिहास साक्षी है कि वर्ण व्यवस्था कई बार समाप्त हो कर दोबारा बनाई गई तब भी वह जन्म से न होकर कर्म से थी केवल मुगलकाल के बाद जन्म वर्ण व्यवस्था अपनाई गई ऐसा प्रतीत होता है।

विष्णु पुराण चतुर्थ अंश अध्याय I श्लोक १७ पृषध्र नामक पुत्र शुद्र हो गया। श्लोक १९ पर लिखा है कि दिष्ट का पुत्र नामाण वैश्य हो गया। श्लोक ६ पर लिखा है इक्षवाकु नृग ध्रष्ट शर्यांति नरिषयन्त,

Remove Watermark Now

प्राशु नाभाग दिष्ट, करुष और पृषध्र नामक दस पुत्र हुए। अध्याय २ श्लोक १० पर लिखा है कि राजा रथीतर के वंशज क्षत्रिय सन्तान होते हुए भी अङ्गिरस कहलाये। ये क्षेत्रोपेत ब्राह्मण हुए। अध्याय ७ श्लोक ३५ जमदग्नि ने इक्षवाकु कुलोधभव कन्या रेणुका से विवाह किया। अध्याय ८ श्लोक ४-६ कुलोद्मव क्षत्र वृद्ध के सुहोत्र नामक पुत्र हुआ और सुहोत्र के के काश्य, काशी, गृतसमद नामक तीन पुत्र हुए। गृत्समद का पुत्र शौनक चातुर्वर्णण्य प्रवर्तक हुआ। श्लोक १८-२१ तक लिखा है कि अलर्क के सन्नति नामक पुत्र हुआ। सन्नति के सुनित, सुनित के सुकेतू, सुकेतू के धर्मकेतु, धर्मकेतु के सत्यकेतु, सत्यकेतु के विभु, विभु के सतभू, सतभू के सुकुमार, सुकुमार के धृष्टकेतु, धृष्टकेतु के बितिहोत्र, बितिहोत्र के भार्ग, भार्ग के भार्गभूमि पुत्र हुआ। इसमें चातुर्ववर्णण्य का प्रसार हुआ।

अध्याय १९ श्लोक २३-२८ गर्ग से शिनी का जन्म हुआ जिससे गार्गय और शैन्य नामक क्षेत्रोपेत ब्राह्मण उत्पन्न हुए। महावीर्य का पुत्र दुरुक्षाय हुआ उसके त्रयारुणि, पुष्करिण्य, कपि नामक तीन पुत्र हुए। ये तीनों पुत्र पीछे ब्राह्मण हो गये थे। बृहत्क्षत्र का पुत्र सुहोत्र, सुहोत्र का पुत्र हस्ती जिसने हस्तिनापुर बसाया। हस्ति, के तीन पुत्र अजभीड़ द्विजभीड़ और पुरुभीड़ हुए। अजमीड़ के कन्नोव व मेधातिथि नामक पुत्र हुए जिससे कन्वायन और मेधातिधि ब्राह्मण हुए।

श्लोक ५९ पर लिखा है दयश्र्व के मुदग्ल, सृजय, बृहदिषु, यवीनर और काम्पिलय नाम के पाँच पुत्र हुए। मुदग्ल से मौदगल्य नामक ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई।

हरिवंश पुराण अध्याय ११ पृष्ठ ४७ श्लोक ८ नाभाग व दिष्ट दो लड़के वैश्य हुए और आगे जाकर उनकी सन्तान ब्राह्मण बन गई। प्रषद्धर की सन्तान शुद्र हुई।

अध्याय २९ श्लोक २-५ पृष्ठ ९३ गृतसमद के शुनक इसके वंशज ब्राह्मण क्षत्री, वैश्या, शुद्र बने।

भविष्य पुराण भाग I प्रति सर्ग वर्ग पर्व अध्याय ६ श्लोक ११-१४ तक कश्यप द्विज मिश्र देश को चले गये। समस्त मलेच्छों को मोहित कर उन्हें द्विजात्मा किया था दस सहस्र नरों का बृन्द था उनमें द्विजन्माओं की

संख्या २ सहस्र थी शेष वैश्य क्षत्री बनाये थे। उनको आर्य देश में सरस्वती के प्रसाद से वहाँ बसा दिया था। भावार्थ कश्यप नाम का ब्राह्मण मिश्र आदि देशों में गया। वहाँ से दस हजार मानवों को वैदिक धर्म उपदेश देकर भारत में लाया। सरस्वती नदी के क्षेत्र (कुरुक्षेत्र) में बसाया और उनके चार वर्ण बनाये। जिनमें २,००० ब्राह्मण शेष में क्षत्री व वैश्य बनाये।

गुजरातनों अने सांस्कृतिक इतिहास पृष्ठ ४०८ पर लिखा है कि जब बोद्ध और जैन धर्म का विस्तार होने के कारण वर्ण व्यवस्था व गौत्र व्यवस्था का उच्छेद हुआ और पुनः ई० पूर्व दूसरी शताब्दी में गुजरातनों अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ २ पृष्ठ २९९ पर लिखा है कि शिव अवतार लुकलिश ने वर्ण व्यवस्था व गौत्र व्यवस्था स्थापित की। इसी प्रकार सांतवी शताब्दी ई० में हर्ष वर्धन ने वर्ण व्यवस्था को चलाने का प्रयास किया जैसा कि उसके ताम्र पत्र जो सोनीपत से प्राप्त हुआ में उसे वर्ण व्यवस्थापक लिखा है।

नोट: – नकल ताम्र पत्र प्लेट I पर देखने का कष्ट करें।

मुगल काल तक भी ब्राह्मण व क्षत्रियों का वैश्य बनना आदि के उदाहरण इसी पुस्तक में सर्ग पर देखें।

महाभारत काल से गुप्त काल तक अग्रयगण नहीं था

अधिकांश अग्रवाल इतिहासकारों ने महाभारत काल में अग्रयगण का होना महाभारत ग्रन्थ वन पर्व अध्याय १६ कर्ण दिग्विजय में लिखे वर्णन से सिद्ध करने का प्रयत्न करते है कि इस श्लोक में कर्ण ने यवन, बर्बर आदि जातियों को जीतकर भद्रय, रोहते, आग्रय मालव, शशक आदि पर आक्रमण किया। परन्तु श्लोक के आगे का हिस्सा जिसमें लिखा है भद्रय, रोहते, आग्रय, मालव शशक आदि मलेच्छ जातियों और नग्नजीत आदि महारथियों को भी जीता। इन विद्वानों ने यह नहीं देखा कि ग्रन्थकार इन जातियों को मलेच्छ लिख रहा है। क्या यह तर्क संगत है कि अग्रवाल मलेच्छ थे। इसी अध्याय योधेयों का अहिक्षत्रा के पास वर्णन किया है। आग्रय, रोहतेय, भद्रय, यौधेय का नाम केवल महाभारत ग्रन्थ में लिखा

Remove Watermark Now

मिलता है जबकि अन्य महाभारतकालीन ग्रन्थ गर्ग संहिता आदि में इन राजाओं के नाम नहीं लिखे मिलते और ग्रन्थों के मिलते हैं। गर्ग संहिता में भगवान कृष्ण के यज्ञ में बलदेव व अनुरुद्ध जी दिग्विजय, कुरु का राजा दुर्योधन व जांगल का राजा सुमेर का नाम लिखा है जो आग्रयगण होता तो कुरु व जांगल के राजा के साथ उसका नाम भी मिलता।

महाभारत ग्रन्थ वारे सत्यार्थ प्रकाश एकादस समुल्लास पृष्ठ १८९ पर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि महाभारत ब्यास देव जी ने ४४०० श्लोकों का बनाया था। उनके शिष्यों ने ५,६०० श्लोक बठाये। कुल दस हजार श्लोकों का महाभारत था महाराजा विक्रमा दित्य के समय २००० श्लोकों का बन गया। और राजा भोज के समय में ३०,००० श्लोकों का हो गया। राजा भोज कहते जो इसी प्रकार श्लोकों का विस्तार होता रहा तो एक समय में एक ऊँट पर बोझा लादने के समान इसका भार हो जावेगा।

इसी काल में शिव व मार्कण्य पुराण की ब्यास देव जी के नाम से पण्डितों ने रचना की। राजा भोज ने इन विद्वानों को हस्तछेदन का दण्ड दिया था। यह वर्णन राजा भोज ने अपनी लिखी सजीवनी नामक पुस्तक में लिखा है वर्तमान में महाभारत ग्रन्थ के एक लाख श्लोक हैं। जिस ग्रन्थ में इतनी ज्यादा मिलावट हो तो उस ग्रन्थ को प्रमाण माना जाना तर्क संगत नहीं लगता।

कुछ विद्वान महाराजा अग्रसैन को महाभारत से ७३६ वर्ष बाद होना स्वीकार करते हैं। समझ में आना कठिन है कि आग्रहगण पहले बन गया महाराजा अग्रसैन बाद में हुए। पुराण कारों की राजाओं के काल को प्राचीन दिखाना ऐसी परम्परा रही होती है।

सकन्ध पुराण उत्कल खण्ड पृष्ठ २५९ पर लिखा है कि इन्द्रद्युमन राजा जिसका जन्म सूर्यवंश में ब्रह्मा की पांचवी पीढ़ी में सतयुग में हुआ था जिसने जगन्नाथ जी का मन्दिर बनवाया था तथा काष्ठ की प्रतिमा स्थापित की। जबकि जगन्नाथ जी का मन्दिर राजा इन्द्रद्युमन जिसकी रानी गुणचण्डा थी ने बनवाया तथा काष्ठ की प्रतिमा सन् ई० ६२२ में स्थापित की।

pdfelement

यह प्राचीन लिपिमाला..... .....पृष्ठ १९२ पर लिखा है मन्दिर में निर्माण शिलालेख भी है। कुछ लोग कहते हैं कि अग्रसैन ने १८ यज्ञ किये और अठारवें यज्ञ में पशुबलि के कारण घृणा उत्पन्न हुई। यज्ञ में पशु बलि बन्द करने का आदेश दिया। महाभारत या पुराणों में जबकि किसी राजा ने एक भी यज्ञ नहीं किया है उसका नाम लिखा है फिर १८ यज्ञ करने वाले राजा का नाम अवश्य आता। अगर पशु बलि महाभारत काल में बन्द होती तो बुद्ध व महावीर काल में भी पशु बलि बन्द रहती। परन्तु पशु बलि के कारण ही बुद्ध व महावीर ने यज्ञों की निन्दा की। अतः यह सत्य है कि महाराजा अग्रसैन महा भारत व उससे पहले नहीं हुए थे।

जैन हरिवंश पुराण में तृतीय सर्ग पृष्ठ २३ पर श्लोक ३-७ पर लिखा है कि भगवान महावीर ने भी वैभव के साथ बिहार कर मध्य काशी, कौशल, कौशल्य कुसन्धरा अस्वसृ, साल्व, त्रिगर्त पंचाल भद्रकार, पटच्चर, मौक, मत्सत्य, कनीय, सूरसैन, वृकार्थक समुद्र तट के कलिंग, कुरुजांगल, कैकय, आत्रेय, कम्बोज, बाल्मीक, यवन, सिन्ध गन्धार, सौवीर, सूर, भीरु दुरोरुवा, वाडवान, भारद्वाज, और क्वाथतोष तथा उत्तर दिशा के तार्ण कार्ण और प्रच्छाल आदि देशों को धर्म से युक्त किया था जो आग्रयगण महावीर काल में होता तो कुरुजांगल के मध्य इसका वर्णन भी अवश्य आता। इससे सिद्ध होता है कि महावीर काल में भी आग्रयगण नहीं था। जो हम आत्रेय को आग्रय का अपभ्रंश मानें तब भी सही नहीं बैठता।

ट्रिबल कोआयंश पृष्ठ १५७ पर लिखा है कि रावी नदी से २० मील दूर तालाम्बा में आत्रेयगण था ऐसा मुद्राओं से सिद्ध होता है।

वामन पुराण के लेखन काल में भी आग्रयगण नहीं था और न ही अग्रोहा नाम का नगर था। वामन पुराण खण्ड प्रथम अध्याय ३५ श्लोक ४२ पर कुरुक्षेत्र परिक्रमा में लिखा है राम हृद से परिक्रमा पथ पर चलते हुए अवन्तिका नगर आता है वहाँ से आगे कामेश्वर शिव धाम आता है वर्तमान में भी अग्रोहा से आठ कि०मी० पर कामेश्वर शिव धाम है। अतः स्पष्ट है कि वामन पुराण काल में अग्रोहा का नान अवन्ती नगर था और यह तीर्थ माना जाता था।

Remove Watermark Now

कई विद्वान अग्रोहा से प्राप्त ई० पूर्व दूसरी शताब्दी के सिक्कों से आग्रयगण होने की पुष्टि करते हैं। इन सिक्कों पर लिखा है कि अगद का अगाच जनपदस्य। समझ में नहीं आता कि यह विद्वान किस प्रकार इन सिक्कों को आग्रयगण का मान रहे हैं। जबकि अगाद शब्द न तो अग्रे है और न ही अगाच को आग्रह कहा जा सकता।

गुप्तकाल में भी आग्रय गण होने का प्रमाण नहीं मिलता। समुद्र गुप्त की प्रयाग प्रशष्ति जिसका अनुवाद डा० परमेश्वरी लाल गुप्त ने प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख पुस्तक में पृष्ठ १५ पर किया है। इस प्रशष्ति में श्लोक १९, २०, २१, २२ में लिख है।

१९. कौसलक महेन्द्र - माह (त) कान्तारकव्याध्रराज - कौशल-कमण्टराज षैष्टपुरक - महेन्द्र गिरि - कौट्टरकर - वामिद तैरण्ड पल्लक-दमन काञ्चेयकविष्णुगोपवमुक्तक —

२०. नीलराज - वैङ्गेयकहस्तिवर्म्म - पालव ककोग्रसैन - दैवराष्ट्र ककुवेर - कौस्थलपुरक - धनञ्जय प्रभृति सर्व्वदक्षिणा पथराज ग्रहण मोक्षानुग्रह - जनित प्रतापोन्तित्र माहाभाग्यस्य।

२१. रुद्रदेव - मतिल - नागदत्त चन्द्रवर्म्भ गणपति नाग नागसैना-च्युत नन्दि - बलवम्भद्यिनेकार्य्यावर्तराज - प्रसयोहूरणोद्वृत प्रभाव महतः परिचारकीकृत - सर्व्वाटविक राजस्य।

२२. समतटडवाक कामरूप नेपाल कतृपुरादि प्रत्यन्त नृपति-भिर्म्मालवार्जुनायन यौधेय माद्रकाभीर प्रार्जुन सनकानीक काक खपरिकादिमिश्च सर्व्वःकर दानाज्ञाकरण प्रणामागमन।

अर्थात् (१९-२०) [जिस का प्रताप] कौशल के [राजा] महेन्द्र महाकान्तार के [राजा] व्याध्रराज कौशल के [राजा] भष्टराज पिष्टपुर के [राजा] महेन्द्रगिरी कोट्टर के [राजा] स्वामिदत्त, एरण्डपल्ल के [राजा] दमन काञ्ची के [राजा] विष्णुगोप अवमुक्त के [राजा] नील-राज, वैंगि के [राजा] हस्तिवर्मा, पालक्य के [राजा] उग्रसेन देवराष्ट्र के]राजा] कुबेर कुलस्थपुर के [राजा] धनंजय आदि दक्षिण भारत के सभी राजाओं को बन्दी बनाकर मुक्त कर देने के परिणाम स्वरूप प्रभाव युक्त हैं।

२१. अनुवाद : जिसने रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मा, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नन्दि, बलवर्मा, आदि आर्यावर्त (देश) के विभिन्न राजाओं को बलपूर्वक उन्मूलन कर अपने प्रताप का विस्तार किया है जिसने समस्त आटविक राजाओं को (जीतकर) अपना सेवक बनाया है।

२२. [जिसने] समतट, डवाक, कामरुप, नैपाल, कर्तृपुर आदि सीमान्त प्रदेश के राजाओं तथा मालव, आर्जुनायन यौधेय मुद्रक आभीर प्रार्जुन, सनकानीक, काकं खर्परिक आदि [जन राज्यों] को सभी प्रकार का कर देने, राजाज्ञा पालन करने [राजधानी में] प्रणाम करने के लिए आने और [अपने] प्रचण्ड शासन [आदेश] को पूर्ण रूप से पालन करने के लिए बाध्य किया है।

इस शिला लेख में भी अर्जुनायन भालव व यौधेयों के मध्य में आग्रयगण का नाम नहीं लिखा मिलता। अतः सपष्ट है कि आग्रयगण गुप्त काल में भी नहीं था। ई० पूर्व दूसरी शताब्दी के शिलालेखों में भी अगाच शब्द मिलता है। जिसका अर्थ महान बनता है।

उदाहरणार्थ :- निगलवा ग्राम में प्राचीन स्तंम्भ पर लिखा है—
देवानां पियन दासिन लजिन चौदस वसा,
भिसि तेन बुद्धस कोनाय मनष थुवे दतियं बढ़िते
(बीस तीष) खाभि सितेन च अतन अगाच महिपते।
(सिला युवे च उस पापिते।)

अर्थात् :- चौदह वर्ष से अभिशक्त देशों में प्रियदर्शी राजा में कनक मुनि का स्तुप दूना बढ़ाया। और २० वर्षों से अभिषक्त महान राजा ने स्वयं इस स्थान पर पूजा की और सिलासतम्भ स्थापित करवाया। जैन शिला लेखों के अनुसार अगद का अर्थ मोहमाया रहित व्यक्ति के लिए आता है।

ये सिक्के शुउंग नरेश राजा अगोद के हैं जिसे पुराणों में उदक लिखा है। कुरुक्षेत्र में अगद नाम के २ टिब्बे और भी हैं। एक टिब्बा ईगरा ग्राम में है उसके बारे में सरकारी बन्दोबस्त रिकार्ड सन् १८६० में कैफियत में लिखा है कि ईगरा राजा अगद ने बसाया था उसकी दो पुत्री थी। एक पुत्री राखी गढ़ी के राजा अर्जुन को और दूसरी रामहृद के

Remove Watermark Now

ऋषि जमदग्नि को बिवाही थी। जमदिग्न के पुत्र ने अपने मासा अर्जुन को मार डाला था। अगद का पुत्र ऋषि बन गया था। और शान्त मुनि के नाम से विख्यात हुआ था। सरकारी बन्दोबस्त प्रथम अकबर काल में हुआ था यह विवरण उस बन्दोबस्त से लिया गया।

अतः सिद्ध होता है कि गुप्त काल तक आग्रयगण का अस्तित्व नहीं था।

भारत पर सिकन्दर का आक्रमण

प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ ८५ से ९६ तक का सारांश सिकन्दर ३३१ ई० पूर्व विजय यात्रा के लिए गोग मेला से चला। सीस्तान, वाह्लीक सिकन्दरया को विजय करता हुआ काबुल नदी तट पर आया और निकाईया (जलालाबाद) के पश्चिम में ठहरा। अपनी सेनाओं के दो भाग किये और अलीसांग कुनार घाटी के अस्पसिओई (संस्कृत के अश्व) जातियों को विजय किया फिर उसने अस्सके नोईयों (संस्कृत में अश्वक) को पराजित किया। इनका दुर्ग मरसग था। यहां पर सिकन्दर को भारी युद्ध करना पड़ा। वह ३२६ ई०पूर्व तक्षशिला आ गया। वहाँ के राजा अम्मी ने सिकन्दर से मित्रता कर ली तथा पोरस पर चढ़ाई कर दी। पोरस को जीतकर सिकन्दर ने ग्लाउसाई (संस्कृत में गलौचकायनक) जाति पर आक्रमण किया। फिर रावी नदी को पार कर प्रिप्रमा (पाणिनी का अरिष्ट) दुर्ग पर अधिकार किया। इसके बाद कठों के महत्वपूर्ण नगर संगल (अमृतसर) पर आक्रमण किया तथा व्यास नदी के तट पर आया।

ऐरियन लिखता है कि एशिया में उस काल में जितनी जातियाँ बसती थी भारतीय उनमें युद्ध की कला में सबसे अग्रगण्य थे सम्भवतः ग्रीको ने पोरस से युद्ध के बाद ऐलान कर दिया था कि उनमें भारतियों से लड़ने की ताकत नही है। तथा व्यास नदी को पार करने से इंकार कर दिया। व्यास की ओर बढ़ते हुए उन्होंने अनेक बातें सुनी कि आगे दूर तफ फैली हुई कष्टकर मरुभूमि है, गहरी तेज बहने वाली नदियाँ विशाल सेनाओं वाली शक्तिशाली एवं समृद्ध जातिया हैं।

कर्टियस ने फेगिअस के मुंह में निम्नलिखित सम्वाद रखा है।

pdfelement

गंगा के उस पार गंगरिदाई और प्रसिआई दो जातियाँ बसती हैं। जिनका राजा अग्रभिस अपने देश की रक्षा के लिए उसकी सीमा पर २०,००० घुड़सवार, २ लाख पदाति, दो हजार चार घोड़ों वाले रथ और सबसे भयानक ३,००० गज सेना प्रस्तुत रखता है ।" इसी प्रकार प्लुतार्क भी कहता है कि गंगरिदाई व प्रेसिआई उनका सामना करने के लिए २०,००० घुड़सवार, दो लाख पदाति, २००० रथ और छः हजार हाथी लिए प्रतिक्षा कर रहे थे।

पृष्ठ ९८ पर लिखा है ब्यास नदी से सिकन्दर की सेनायें ३२६ ई० पूर्व में वापिस लौट गयीं। और सिकन्दर शीघ्र ही झेलम पहुंचा और अपने जीते हुए प्रदेश में से ब्यास से झेलम तक की भूमि पोरस को दी। और झेलम से तक्षशिला तक अम्मी को दी। उसके बाद उरशा (हजारा जिला) के अर्शक को उसका अधीनस्थ सामन्त बनाया। फिर उसने सोफाइटिज (सौभूति) को विजय किया। सौभूति के राज्य में नमक का पहाड़ (खेवड़ा) था। फिर यह रावी व चेनाब के संगम पर पहुंचा सिबोई (संस्कृत शिवि) जाति से मोर्चा लिया फिर अम्लस्सी (अग्रश्रेणी) ४०,००० पदाति, ३,००० घुड़सवार लेकर उसकी प्रतिक्षा कर रहे थे। अगलस्सियों ने वीरता के साथ अपनी अपनी राजधानी की रक्षा की परन्तु जब यह जाना कि कि पराजय अनिवार्य है तो विजेताओं के आगे सिर न झुकाया उन्होंने घरों को आग लगाकर पत्नी व बच्चों समेत आत्मदाह कर लिया।

जिन अम्लसिस्यों को अग्रश्रेणी लिखा है उनका स्थान जानने के लिये हमें भारत के नक्शे व यूनानी इतिहासकारों के लिखे सिकन्दर के आक्रमण की ओर ध्यान देना होगा।

नन्द मौर्य युगिन पृष्ठ २१ पर लिखा है कि पंजाब के उत्तर पश्चिम भाग में अटक के पास काबुल नदी अपनी साहियकाओं, स्वात पंजकोर, कुनार और पंजशिर के साथ इसमें मिलती है। सिंध की सहायक नदियां (युनानी हाईडैस्पीन) अर्थात झेलम सबसे निकट झंग के पास चेनाव में मिलती है चेनाव को चन्द्रभाग (ऐक्सीनीज कहते है। यह झेलम व चेनाब की सम्मिलित धारा में गिर जाती है। रावी के पूर्व में ब्यास (विपासा) नहीं है। (हाईफैसिक युनानी) ! यह भी सतलुज में जा मिलती

Remove Watermark Now

है अगलस्सी रावी व चेनाव के संगम पर या उसका भूगोल से सम्बन्ध नहीं है।

आगरा सम्राट अग्रमीस

प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ ९५ पर इन्वैंशन बाई एलैग्जैडर कर्टियर्स रुफस ९, २, पृष्ठ २२१ के अनुसार लिखते हैं कि ब्यास नदी की ओर बढ़ते समय सिकन्दर की सेना ने डरावनी अफवाहें सुनी कि आगे दूर तक फैली हुई कष्टकर मरभूमि है, गहरी तेज बहने वाली नदियां हैं। विशाल सेनाओं वाली शक्तिशाली और समृद्ध जातियाँ हैं CAM HIS IND, खंड I पृष्ठ ३७२ के अनुसार कर्टियरा ने फेगिअस सम्भवत भगल के मुंह में निम्नलिखित संवाद रखा है। "गंगा के उस पार गंगरिदाई और प्रेसिआई दो जातियाँ बसती हैं। जिनका राजा अग्रभिस अपने देश की रक्षा के लिये सीमा पर २०,००० घुड़सवार, दो लाख पदाति २,००० चार घोड़ों वाले रथ और सबसे अधिक भयानक ३,००० गज सेना प्रस्तुत रखता है।" इसी प्रकार प्लुतार्क भी कहता है कि "गंगरिदाई और प्रेसिआई उनका सामना करने के लिये २०,००० घुड़सवार, दो लाख पदाति, २००० ६,००० हाथी लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। इसमें निश्चय कोई आयुक्ति नहीं थी क्योंकि वे इसके शीघ्र ही बाद एन्द्रोकत्तस ने जो तब तक गद्दी पर बैठ चुका था, सिल्युकस को ५०० हाथी दिये और स्वयं छः लाख सेना के साथ सारे भारत को रौंद डाला। इन कथनों की मूलभूत सत्यता की पुष्टि देशी प्रमाणों से भी हो जाती है। जिसमें गंगरिदाई और प्रेसिआई जातियों के राज नन्द के अनन्तधन और शक्ति की कथा सुरक्षित है।

नन्द मौर्य युगीन भारत पृष्ठ ८ मौक्रिंडल इन्वेजन पृष्ठ २२१-२२ के अनुसार डायोडोरस और प्लुटार्क ने हाथियों की संख्या क्रमशः ४,००० और छः हजार बताई है प्लुटार्क ने गंगा की घाटी के राष्ट्रों का सैन्य बल इस प्रकार बताया है: अस्सी हजार अश्वारोही, दो लाख पैदल सैनिक, आठ हजार संग्राम रथ और छः हजार हाथी।

जिस राजा के पास इतनी विशाल सेना हो वह अगर हिमालय से लेकर गोदावरी अथवा उसके समीपस्थ प्रदेशों का एकराट होने का महत्वाकांक्षी हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। सिकन्दर के

इतिहासकारों ने लिखा है कि ब्यास के पार बसने वाली जातियाँ सबसे शक्तिशाली थी और एक राजा के आधीन थी। उदाहरणार्थ क्यू० कर्टियस रुफस ने लिखा है "इस नदी (हाइफासिस अथवा ब्यास) के पार विस्तृत रेगिस्तान है। इसके बाद गंगा आती है जो भारत की सबसे बड़ी नदी है और जिसके उस किनारे दो राष्ट्र गंगरिदाई प्रेसिआई बसे हुए थे इन पर अग्रमीस राज्य करता था। डायोडोरस ने भी इसी प्रकार का वर्णन किया है। परन्तु उसने राजा का नाम जेन्ड्रेमीस लिखा हैं अग्रेमीस नहीं। प्लुटार्क ने जो कुछ लिखा है अथवा उसके अँग्रेजी अनुवाद का जो तात्पर्य है उससे यह प्रतीत होता है कि गंदरितई (गंग-रिदई) और 'प्रेसिआई' के राजा अलग-२ थे और इन दोनों राष्ट्रों के "राजाओं" के अश्वों, रथों और हाथियों की जो संख्या दी गई है उससे उक्त बात का समर्थन होता है। यह संख्या कर्टियस और डायोडोरस ने अग्रेभीस-जेन्ड्रेभीस के पास अश्वों, रथों और हाथियों की जो संख्या बताई है उससे अधिक है। किन्तु पैदलों की संख्या सभी ने समान बताई है। हाथियों आदि की संख्या का अन्तर विभिन्न परम्पराओं के कारण हो सकता है।

प्लिनी ने लिखा है कि भारत में 'प्रसिआई' की सबसे ज्यादा शक्ति व नाम था। उसकी राजधानी पालिबोथ्रा (पाटलिपुत्र) थी, जिसके नाम पर कुछ लोग वहाँ के निवासियों को ही नही बल्कि गंगा के पूरे क्षेत्र को ही पालिबोथ्रा कहते थे।

नन्द मौर्य युगीन भारत पृष्ठ ६ महाबोधी वंश अनुसार लिखा है कि महापदमपती असीम सेना व अपार धन का स्वामी उग्रसैन नामक राजा था।

पृष्ठ ७ पर बौद्ध परम्पराओं के अनुसार काकवर्ण या काल शोक के राजा के पुत्रों की संख्या दस थी उग्रसैन ने उन्हें अधिकार से वंचित कर दिया था। ऐतरिय, ब्राह्मण ने औग्रसैन्य नामक राजा का उपनाम युद्धा श्रोष्ठिा के पैत्रक नाम के रूप में इस का प्रयोग किया गया है।

प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ ८० पर लिखा है कि चतुर्थशती ई०पू० के प्रायः मध्य में महापद्म नामक एक अज्ञात सामरिक ने शिशुनाग वंश का अन्त कर दिया। पाली ग्रन्थों में वह उग्रसेन कहा गया है।

Remove Watermark Now

पृष्ठ ८२ पर सिकन्दर कालीन बौद्ध, साहित्य धननन्द और ग्रीक उसे अग्रभीस व औग्रसेन कहते हैं।

कर्टियस के अनुसार उसके पास विशाल सेना थी। भगल नामक सामन्त ने सिकन्दर को कहा था कि यदि वह पूर्व की ओर बढ़े तो वह जीत सकता है।

नन्द मौर्य युगिन पृष्ठ २५४ मैगस्थनीज ने अग्रनोमोई नामक गाँवों के एक उच्च वर्ग के अधिकारियों का वर्णन किया है जिनके कर्तव्य प्रायः वे ही हैं जो अभिलेखों में राजूकों के कहे गये हैं।

दक्षिण भारत का इतिहास पृष्ठ ७७-७८ पर लिखा है कि सिंहमुख के पूर्वज मौर्य काल में आगरा के सामन्त रहे। मौर्य साम्राज्य का सौभाग्य सूर्यास्त हो जाने पर पूर्वी दक्षिण में अपना राज्य स्थापित किया और तीस दुर्ग प्राचीरों से घिरे हुए बनबाये तथा प्रतिष्ठान गोदावरी नदी के तट पर राजधानी बनाई।

विदेशी विद्वानों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि सिकन्दर के आक्रमण के समय भारत में दो महान राष्ट्र थे। गंगा के पार गंगरिदेई जिसका राजा अग्रमीस (उग्रसैन-औग्रसैन) था और उस पार प्रेसिआई जिसका राजा जैन्डरमीस (धननन्द) था जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। बहुत से इतिहासकारों ने इन दोनों को एक मानकर नन्द वंश का लिख दिया जबकि दोनों राजा व दो राष्ट्र अलग-अलग थे। अग्रनोमोई (आगरा) का राजुक मौर्यों का सामन्त था। मौर्या का सौभाग्य सूर्यास्त होने पर दक्षिण में प्रतिष्ठान (पैठण) राजधानी बनाकर राज्य स्थापित किया। सम्भवतः इस राजा का नाम श्री मुख (सिमुख) था इसके वंशज सातवाहन कहलाये।

शोध अग्रोहा नरेश अग्रसैन

पंजाब स्टेट गजेटियर्स भाग XVII A पृष्ठ 65 पर लिखा है कि राजा उग्रसैन जिसने अग्रोहा को विक्रमी सम्वत् 699 में राजधानी बनाया यह पैठण के राजा शालीवाहन के पौत्र राजा तान की सातवीं पीढ़ी में था और भडौच नरेश कहलाता था। तथा इस कथन की पुष्टि सौराष्ट्र नों इतिहास पृष्ट 280 से भी होती है। पंजाब कास्टस में पृष्ठ 243 पर लिखा है कि अग्रवालों का निकास गोदावरी नदी के तट (पैंठन) से था।

नोट—इन तीनों की नकल व अनुवाद लिख रहे हैं।

प्रमाण (I)

PATIALA STATE Tribes and Castes PART A P-65

Raja Salvahan of Pattan in Gujarat,

|

Raja Tan (Grandson)

|

Uggar Sain (7th in descent from Tan)

|

Migrated from Agroha in 699 Bikrami and settled in this

|

Part of Punjab becoming King of Buras

|

Raja Gopal (7th in descent from Uggar Sain)

Dhirpal, or Nawab Abul Karim embraced Islam under Shahab-ud-din of Ghor after his victory over Prithwi Raj at tarain (Tara-wari) in Karnal Distrrct in 1193. His tomb is said to be at Banur which is a great Taoni Center for Taonis are numerous in that Tehsil and in Patiala, Rajpura and Ghanaur. The Hindus Taonis hold Bular (In Tehsil Patiala), Lalru, Nagla and Khelan in Tehsil Banur and Dhakansu, Tepla, Banwari, Pabra, and Dhamoli in Raj-pura. They have 12 septs said to be named after the sons of Raja Gopal, Viz. Dhirpali Ambpali, Bhatian, Motian, Rai Ghazi, Jaisi, Sarohd Ajemal, Jhagal and Lagal tha last six being rais

The referece are to ·Punjab Agricultural Proverbs edited by R. Maconachie, B. A; R. C. S.

अनुवाद:—

राजा शालीवाहन (पैठण गुजरात)

↓

राजा तान (पौत्र)

↓

Remove Watermark Now

उग्रसैन (तान की सातवीं पीढ़ी)

699 विक्रमी में स्थानान्तरण करके अग्रोहा (पंजाब में) बसे

भरुच का राजा कहते थे

राजा गोपाल (उग्रसैन से सांतवीं पीढ़ी में)

धीरपाल या नवाब अबुल क्रीम इसने पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गौरी के युद्ध के बाद जो कि तरावड़ी में सन् 1193 में हुआ था इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था। इसका मकबरा बनूर में है जो कि तहसील पटियाला में है। इन्हें तौनिस कहा जाता है। हिन्दू तौनिस भूलर (तहसील पटियाला) लालडू नगला और खेलन (तहसील बनूर) और धकानशू, तिपला, बनवारी, पाबरा ओर धमोली (राजपुरा) ! इनकी 12 शाखाएं राजा गोपाल के 12 लड़कों पर बनी जो निम्न हैं।

धीरपाली, अम्बपाली, भेतियान, भोतियान, रायगाजी जैसी, श्रोद्ध, अजेमल, झगल और लागल !

No. 15 The Taoni are also Bhatti and descendants of Raja Shalvahan whose grandson Raja Tan is their eponymous ancestor One of his discendants Raj Amba is said to have built Ambala. They occupy low hills and sub motane in the North of Ambala district including the Kalsia state and some of the adjoining Paliata territory, The are said to have occupied their present abode for 800 years (Punjab Castes by Denzil Ibbetson Page 161)

प्रमाण (II)

PUNJAB CASTES

RELIGIOUS PROFESSIONAL AND OTHER CASTES P-243

THE DIVISION OF BANYA CASTE

The division of Banya Catte with which we are concerned in Punjab are shown in the margin.

The Agrawals or North eastern Division of Banyas include the immense majority of the castes in every district throughout the province. They have according to Sheering a tradition for distant orgin on Banks of Godavari But the end from which

pdfelement

they take their name in Agroha in the Hissar District, Once the Vaisya Raja Agarsen and when they are said to have spread over Hindustan after taking that place by Shahabu-din-Ghouri in 1195 and ELLIOT points out the fact that the North western provinces the Aggarwal Banyas are supposed to be specially bound to make offerings to Guga Pir. The great saint from the neighbourhood of Agroha bears testimony to the truth of the tradition The eighteen sons of the Agarsen are said to have married the eighteen snake daughters of Raje Basak and Gugapir is the Greatest snake gods.

अनुवाद :— बनिया जाति का विभाजन जिसका वर्णन हमें करना अभीष्ट है। पंजाब की जनसंख्या के आधार पर हम दे रहे हैं। अग्रवाल अर्थात् उत्तर पूर्व के बनियों का यह संभाग इसमें वह बहुसंख्यक जाति सम्मिलित है जो बहुत बड़ी संख्या में पंजाब प्रान्त के प्रत्येक जिले में बसती है। प्रसिद्ध इतिहास लेखक शेरिंग के अनुसार परम्परा के अनुसार इसका मुख्य निकास गोदावरी नदी के किनारे से हुआ है। परन्तु अब वे लोग अग्रोहा के नाम से अपने आप को सम्बन्धित बताते हैं। जो पंजाब के ही जिला हिसार का गाँव है। वहाँ किसी समय वैश्य राजा अग्रसैन राज्य करता था। परन्तु सन् ११९५ में जब यह स्थान अग्रोहा शहाबुद्दीन गौरी ने कब्जे में कर लिया तो लोग वहाँ से निकलकर सारे हिन्दुस्तान में फैल गये। प्रसिद्ध इतिहासकार लेखक इलियट ने विशेषतया यह लिखा है कि उत्तर पश्चिमी प्रान्तों के अग्रवाल बनिये विशेषतया नियमित रूप से गूगा पीर की उपासना करते हैं। जो अग्रोहा के ही पड़ौसी गाँव का महान सन्त बताया जाता है। जो इस सत्य परम्परा का प्रतीक है कि अग्रसैन के १८ पुत्रों ने राजा बास की १८ नाग कन्याओं से विवाह किया था और गूगा पीर नागों का बड़ा देवता माना जाता हैं।

प्रमाण [III]

सौराष्ट्रनों इतिहास ले० शम्भु प्रसाद, हर प्रसाद देसाई [I.A.S.] जूनागढ़ [सौराष्ट्र] पृष्ठ-२८० के लेख का सारांश [गुजराती से]

Remove Watermark Now

इस समय में वायव्य सरहद से सिरसा का वत्सराज कच्छ के मार्ग से सौराष्ट्र में प्रदेशों को जीतता हुआ आया। सौराष्ट्र की सीमा पर सेनापति चूड़ामणि से घोर संग्राम हुआ।

२. जयसलमेर राज्य के एक सम्बन्धी अग्रसैन राव ने वीर निर्वाण सम्वत ११५२ सिरसा के पास पंजाब में एक बड़ी गद्दी [राज्य] स्थापित किया। इस राज्य का अनुगामी कवर वत्सराज था।

इन प्रमाणों के उपलब्ध होने पर यह जानना आवश्यक प्रतीत होता है कि पैरणा में कोई शालीवाहन नाम का राजा हुआ या नहीं जिसका वंशज राजा तान हुआ हो और तान के वंश में भडौच पर किस का राज्य हुआ और उस राज्य का सातवी शताब्दी में पंजाब में कोई आया या नहीं। इस सम्बन्ध में प्रमाण उपलब्ध होने पर ही उपरोक्त की प्रमाणिकता मानी जा सकती है।

शोध राजा शालीवाहन(i) क्षत्रय कालीन गुजरात पृष्ठ ७२ पर जवीऔरिया १९३० पृष्ठ २९ अनुसार गौतमी पुत्र और नहपान के युद्ध का विवरण दिया है कि शालीवाहन प्रतिष्ठान का राजा था। नभोवाहन भरु कच्ज का राजा था अनुमान है कि यह गौतमी पुत्रसातकर्णी और नहपान थे।

२. गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास भाग २ पृष्ठ ३६० पर लिखा है कि सातवाहन ने भरु कच्छ के तीर्थ का जीर्णोद्धार कराया। पादलिप्ता सुरी ने ध्वजदण्ड की स्थापना की। प्राचीन तीर्थ का समुद्धार सिद्धसैन दिवाकर ने किया।

इसी पुस्तक पृष्ठ ५१० पर लिखा है नागार्जुन पादलिप्त सूरी ने प्रतिष्ठान के राजा सातवाहन व उसकी रानी चन्द्रलेखा को स्वर्णसिद्धि व आकाशगामी विद्या दिखाई।

इसी पुस्तक पृष्ठ ४८६ पर राजा शालीवाहन व नमोवाहन के युद्ध का पूरा वृतान्त लिखा है। नभोवाहन की रानी पदमावती थी।

इसी पुस्तक ४८९ पर लिखा है नागार्जुन ने पाली ताणा नगर बसाया। यह ढंकापुरी के संग्रामसिंह क्षत्री व उसकी पत्नी सुव्रता का पुत्र था। इसने पादलिप्ता सूरी का शिष्य बनकर आकाशगामी व स्वर्ण-सिद्धि विद्या प्राप्त की थी।

इसी पुस्तक पृष्ठ ३६१ पर लिखा है कि पादलिप्ता सूरी व नागार्जुन ने पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित की।

इसी पुस्तक पृष्ठ ३७५ टिप्पणी १०८ पर लिखा है कि नागार्जुन व पादलिप्ता सुरी का समय लगभग एक है।

इसी पुस्तक पृष्ठ ३७४ टिप्पणी १०४ पर लिखा है कि सिद्धसेन दिवाकर चौथी शताब्दी ई० में हुआ। चन्द्रगुप्त II ३७५ ई०में गद्दी पर बैठा। ४०१ ई० तक राज्य किया।

सौराष्ट्रनो इतिहास पृष्ठ १६१ पर लिखा है कि ३१३ ई० में बल्लभीपुर में नागार्जुन की अध्यक्षता में एक महा जैन सम्मेलन हुआ। जिसका आलेखन ४६३ ई० में हुआ।

आद्य महाराष्ट्र आणि सातवाहन काल में लिखा है गौतमी पुत्र सात कर्णी की रानी का नाम नागनिका था। रानी नागनिका व सातवाहन की मूर्ति भाजे बिहार में पाई जाती है।

सौराष्ट्रनों इतिहास पृष्ठ २५ पर लिखा है गौतमी पुत्र सातकर्णी ने क्षत्रय नहपान को पराजित किया।

इसी पुस्तक पृष्ठ ५० पर लिखा है सन् १३० ई० में नहपान साधु बन गया। जिसके अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं कि शालीवाहन पैठण का राजा था। उसका भडौच के राजा नभोवाहन से युद्ध हुआ। इसकी रानी का नाम चन्प्रलेखा था। गुरु नागार्जुन सुरी थे। चौथी शताब्दी ई० में मध्य काल इनका समय था। यह सातवाहनवंशी था। गौतमी पुत्र सातकर्णी प्रतिष्ठान का राजा था। सहपानभरूकच्छ का राजा था। गौतमी पुत्र सातकर्णी की पत्नी का नाम नागिनका था। इसने सहपान पर १३० ई० में विजय प्राप्त की थी। अर्थात् गजटियर में वर्णित राजा शालीवाहन सन् ३१३ ई० में था। इसका पौत्र राजा तान हुआ।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि गौतमी पुत्र सातकर्णी एवं शालीवाहन व नभोवाहन अलग २ समयमें अलग २ नाम के राजा हुए हैं।

तान—सैक्सैरज आफ सातवाहन पृष्ठ १५५ पर लिखा है कि सातवाहन कुल की मुख्य शाखा में हरती पुत्र कुटु सातकर्णी हुआ।

पृष्ठ २२१ पर लिखा है कि इसका पूरा नाम विष्णु कदा कोटु कुलानन्द सातकर्णी था इसका विवाह इक्षवाकु कुल के राजा वीर पुरुष दत्त की पुत्री से सन् २६५ ई० में हुआ था। पुत्र पुलभावी

Remove Watermark Now

का पौत्र वीर पुरुषदत्त था। इसी वंश की एक शाखा चालुक्य वंश के नाम से प्रसिद्ध हुई।

सैक्सैसरज आफ सातवाहन पृष्ट ७७ देववर्मन का पुत्र व शालीवाहन का पौत्र तान हुआ।

शोध चालुक्य वंश

चालुक्य वंश दक्षिण भारत का इतिहास पृष्ठ १४२

जयसिंह

↓

रणराग

↓

श्री पृथ्वी वल्लभ पुलकेशिन ५४३ ई० से ५६६ ई० तक

↓

श्री रण विक्रान्त	श्री पृथ्वी वल्लभ	कीर्तिबर्मन	श्री वल्लभ मंगलेश्वर
↑	↓	↓	↓ ५९३ ई० ६१०
पुलकेशिन II	विष्णु वर्धन	जयसिंह II	ध्रुव इन्द्र राजा अग-वर्मन (उगर वर्मन)

सौराष्ट्रनों इतिहास पृष्ठ १२८ पर लिखा है कि गुर्जर नृपति वंश कहलाता है। यह गुर्जर नहीं है गुजरात पर राज्य करने के कारण गुर्जर कहलाये। इनकी राजधानी भड़ौच नन्दीपुर थी फिर यह पंजाब में चले गये : यह निर्विवाद है।

प्राचीन भारत पृष्ठ २८१ पर लिखा है, दी लीडर जुना १९४१ जुनागढ़ के अनुसार श्री पृथ्वी वल्लभ पुलकेशिन ने बादामी विजय के पश्चात् ५४३ ई० में अश्वमेध यज्ञ करके सत्यश्रय की उपाधि धारण की। कीर्तिवर्मन के पश्चात् उसका पुत्र अव्यस्क था अतः उसका चाचा मंगलेश्वर गद्दी पर बैठा। उन्होंने अपने राज्य का विस्तार समुद्र तट से लेकर महाराष्ट्र मालव तक किया मंगलेश्वर अपने पुत्र को राज्य देना चाहते थे। पुलकेशिन II ने विद्रोह किया मंगलेश्वर मारे गये। सन् ६१० ई० में पुलकेशिन ने सभी भाईयों को अलग-अलग राज्यों का राज्यपाल नियुक्त कर दिया।

सौराष्ट्रनों इतिहास पृष्ठ १२४ पर लिखा है कि सन् ६१० ई० में चालुक्य राजा मंगलसेन या मंगलेश्वर ने कलचुरी राजा को पराजित करके मालव देश पर अधिकार कर लिया।

इसी पुस्तक पृष्ठ १२५ पर लिखा है कि हर्षवर्धन ने सन् ६३० ई० में लाट पर चढ़ाई की। नर्मदा नदी के किनारे हर्षवर्धन व मंगलसेन की सेनाओं का युद्ध हुआ। विजय श्री मंगलसेन को मिली। हर्षवर्धन पराजित हुआ।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह शब्द मंगलसेन न हो अग्रसैन है। क्योंकि मंगलेश्वर या मंगलसेन तो ६१० में मारे गये थे। फिर ६३० ई० में में युद्ध कैसे होता। गुजरात में नाम की परम्परा है कि अपने नाम के साथ पिता का नाम पहले जोड़ा जाता है। इस प्रकार मंगलसेन अग्रसैन लिखते हैं। यहां पर लेखक ने केवल प्रथम नाम लिख दिया, अगला नाम देना भूल गया, ऐसा प्रतीत होता है।

सारांश यह है कि सातवाहन वंश अर्थात सूर्यवंश में राजा शालीवाहन पैठण के राजा का पौत्र तान हुआ। आगे इस वंश की एक शाख चालुक्य वंश के नाम से चली। चालुक्य वंश में राजा श्री वल्लभ मंगलेश्वर के पुत्र राजा अग्रसैन हुए जिन्होंने सन् ६३० ई० में हर्षवर्धन को पराजित किया।

अब उन्होंने देखा कि भाईयों में आपसी फूट पड़ने की सम्भावना है तो वह अपना राज्य भाईयों को देकर पंजाब की ओर आ गये और सन् ६४३ ई० में अग्रोहा को राजधानी बनाया। अर्थात गजेटियर का उल्लेख बिल्कुल सही प्रतीत होता है। कुछ प्राचीन रस्मों की भी जानकारी करनी आवश्यक है।

सातवाहन वैश्य:—गुजरात राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास पृष्ठ ६६ पर लिखा है कि सातबाहनों को कलांत वैश्य कहते थे क्योंकि यह लोग राज्य के साथ-साथ व्यापार भी करते थे। इसलिए इनको कलात वैश्य कहा जाता था।

चालुक्य राजा वैश्य राजा कहलाते थे:—चालुक्य आफ बादामी पृष्ठ २५ पर चालुक्य राजाओं के वंशज वीस्से व दस्शा कहलाये।

Remove Watermark Now

सातवाहन सूर्यवंशी हैं:—आध महाराष्ट्र अणि सातवाहन काल पृष्ठ ५४ पर श्री व्ही० एस० बर्कले लिखते है कि सातवाहन शब्दार्थ सूर्य हैं। सात कर्णी का अर्थ भी सूर्य है अर्थात सातवाहन सूर्यवंशी है।

गुजरात राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ २ पृष्ठ २६६ पर लिखा है कि भडौच के दक्षिण पथ मार्ग पर वल्लभी गृह में लक्ष्मी पूजी जाती थी। भडौच के नाग पिटक ग्राम में नागगृह है। आनन्दपुर में यक्षणी और नाग कन्या पूजी जाती है। भृगुकच्छ में अनेक नाग मन्दिर व यक्ष यतन है वहाँ नाग देवता पूजा जाता है।

अग्रवालों में यक्ष व नाग कन्या (मनसा देवी), नाग देवता व लक्ष्मी की उपासना प्राचीन काल से चली आती है। अग्रोहा से यक्षों की व नाग कन्याओं की मूर्तियाँ काफी संख्या में उपलब्ध होती हैं।

किवदन्तियों में भी अग्रसैन को सूर्यवंशी व वैश्य राजा बताया जाता है।

महाराजा अग्रसैन द्वारा निर्माणित दुर्ग

उंग्ग दुर्ग:—गुजरात में प्राचीन काल में उज्जयन्त गिरिगढ़ था। महाराजा उंग्ग सेण ने सातवीं शताब्दी ई० में इस गढ़ का पुनर्उत्थान करके उग्गसेण दुर्ग रखा (यह प्राकृत भाषा का शब्द है) १०४४ ई० में इसी दुर्ग का नाम राजा खगार प्रथम ने बदल कर खगार गढ़ रख दिया। सन् १३५१ ई० में इस का नाम मोहम्मद जुना ने जुनागढ़ रखा।

(१) गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ १ पृष्ठ ३४० विविध तीर्थ कल्प पृष्ठ १० अनुसार लिखा है कि पश्चिमी सौराष्ट्र में उज्जयन्त गिरी की तलहटी में उग्गसेण दुर्ग (खंगारगस) जूनागढ़ है।

(२) गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ १ पृष्ठ ३४४ आरम्भिक इतिहास काल में ऊज्जयन्त गिरी नगर महाक्षत्रप रुद्र दामन प्रथम ई० सन् १८१ से १६७ तक, जुनागढ़ खावा प्याराना लेख में और गुप्तकाल ई० सन् ४५७ के जुनागढ़ शैल लेख में उज्जयन्त गिरी नाम का उल्लेख है।

(३) गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ २ पृष्ठ ५३-५४ पर लिखा है कि तेजन, पुरस्स, पुब्ब, दिसाए, उग्गसेण गढ़ नाम

pdfelement

दुग्ग। तस्स य तिष्णि नाम बिज्जाई, तं जहाँ-उग्ग सेण गढ़ खंगार गढ़ ति वां जुष्ण दुंग ति. वा,

(४) गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ ४ पृष्ठ १३४ पर लिखा है कि उग्गसेण गढ़ को खंगार प्रथम ई० सन् १०४४ में मरम्मत करवा कर खंगार गढ़ नाम रखा।

(५) गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ ५ पृष्ठ ३७ पर लिखा है कि निजामु उल मलक जुना बहादुर तर्क था। इसे सन् १३५१ ई० में जागीर मिली। तब इसने अपने नाम पर उसका नाम जुनागढ़ रखा।

अगर नगर (आगर)

गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ २ पृष्ठ ४३७ पर लिखा है कि अग्री नगर अग्नि ध्वनि से ३५ मील दूर है। इसका प्राचीन नाम श्री पल्ल था जिसे आजकल आगर कहते हैं।

अग्रोहा (हरियाणा)

मौर्य काल में अग्रोहा का नाम अंगुतरापा था। वामन पुराण लेखन काल में इस का नाम अवन्तीनगर था। यह द्रष्द्वती व सरस्वती नदी के संगम पर था और कुरुक्षेत्र का महान तीर्थ माना जाता था। इसके पास ही कामेश्वर शिवधाम था जहाँ लोमस ऋषि निवास करते थे। यह कुरु-क्षेत्र परिक्रमा वामन पुराण में वर्णित है। गुप्त काल में भी इसका यही नाम था।

महाराजा अग्रसैन ने अपनी राजधानी बनाने पर इसका नाम अग-रस्या रखा जैसा कि अबनबतुताने अपनी यात्रा विवरण पृष्ठ १४५ पर लिखा है कि सुनाम से १० फरसख पर अगरस्या (अगरगैया) का खण्डहर पड़ा है। वर्तमान में इसे अग्रोहा कहते हैं।

शोध नाग वंश

पुराणों में आदि शेषनाग का वर्णन आया है। शैया पर भगवान विष्णु योग निन्द्रा में आरुढ़ होते हैं। यह भगवान की तामसी कला कहलाती है। इनको सकर्षण देव भी कहते हैं। अर्थात सारे ब्रह्माण्ड का वर्णन करके प्रभु की शय्या बनती है। सही यह है कि ये निराकार प्रभु के गुणों द्वारा

Remove Watermark Now

भक्तों का नाम रखा है। अर्थात इनका सापों तथा नाग जाति से कोइ सम्बन्ध नहीं है।

(२) नाग (सांप) ये तिर्यक यौनी जीव हैं। ये मनुष्य आदि का रूप धारण नहीं करते।

(३) नाग नाम की जाति प्राचीन काल से चली आती है। इस जाति का प्रथम कबीला तक्षक नाम का महाभारत युद्ध से कुछ प्रथम भारत वर्ष में आया और धोखे से राजा परिच्छित को मारा तथा जन्मेजय ने उनका विनाश किया। जिस कथा को पुराणों में सर्प दमन यज्ञ कथा के नाम से लिखता है। इसके पश्चात बुद्ध से कुछ प्रथम नाग जाति का भारत में आना शुरू हुआ तथा बुद्ध काल में ऋषियों ने जब विशाल सभा में वर्ण व्यवस्था बनाई। उस समय इनको भी वर्णों में सम्मिलित कर लिया। क्योंकि वह आर्य धर्म में परिवर्तित हो गये थे। उस समय उन नाग वंशों के जो वर्ण दिये गये वह निम्नलिखित है। राजतिरंगी पृष्ठ ४० पर लिखा है:—

नाम	वर्ण	नाम	वर्ण
शेष या अनन्त नाग	ब्राह्मण	कम्बल नाग	ब्राह्मण
वासगी नाग	क्षत्री	शंखपाल	क्षत्री
तिक्षक नाग	वैश्य	महापदम	वैश्य
क्रकोटक	शुद्र	पदमनाग	शुद्र

राजतिरंगी कलहन में पृष्ठ ४० पर लिखा है कि आसाम, वर्मा पर वासगी नाग का मन्दिर है उस मूर्ति का शरीर मनुष्य का है और मुँह फन आकार सर्प का भयानक बना हुआ है। राजा शिश नाग वासगी गोत्री था भारत के कई हिस्सों पर समय-समय पर नाग लोगों ने बहुत से राज्य स्थापित किये। इसके बाद दिन्दक नाग आदिवंश भारत में आते रहे तथा आर्यों से मिलकर आर्य बन गये।

(५) भारत में केवल आसाम में ही वासगी नाग की मूर्ति होने का प्रमाण मिलता है।

सैक्सैसज आफ सातवाहन पृष्ठ १४६ से १५० तक लिखा है। गौतमी पुत्र सातकर्णी व वशिष्ठी पुत्र सातकर्णी के समय बसारु नाग व सुरनाग चोल मण्डल के राजा थे। चोक मण्डल का उरगापुर (अरगरु)

pdfelement

का टीला तजोंर के पास वर्तमान में है। सन् ई० १४० में चोल मण्डल दक्षिण का राजा सुरनाग था और उत्तर का राजा वसारु नाग था। वर्ष नाग काची का राजा था। इस वंश के उरगा नाग ने उरगापुर वसाया था। गौतमी पुत्र सातकर्णी की रानी नागिनका भी नाग कन्या थी।

इसी पुस्तक में पृष्ठ १५२ पर लिखा है कि शिव संकन्द गुप्त के समय चौथी शताब्दी ई० में बलारी का राजा संकन्द नाग था।

समुद्र गुप्त सन् ३४० ई० में नागदत्त ग्वालियर का राजा नागसेन मथुरा का राजा नन्दी नागवंशी पली नाग मध्य प्रदेश के राजा थे।

इतिहास में अन्य सैकड़ों नाग राजाओं का वर्णन मिलता हे। गुजरातनों अने सांस्कृतिक इतिहास भाग-३ पृष्ठ १५२ अनुसार सैन्द्रक राजा नागवंशी था। इनका प्रतीक भी नाग था।

दि हिस्ट्री आफ दक्खन पृष्ठ २०९ किर्लोतवर्म सेन्द्रक वंश के राज सेनानन्द की बहिन से बिवाहा था।

इतिहास गुजरातनों मध्यकालीन पृष्ठ ५२९ गुबक प्रथम नाग बसोगी सामन्त था। गुबक सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ था। नाग बासोगी पाटन का राजा था। पाटन अब राजस्थान में है।

जाति भास्कर में लिखा है (पृष्ठ १४६ पर) कि राजा वारांगी ने मेदपाट से ब्राह्मण लाकर वैश्य बनाकर मेवाड़ में बसाये थे। वह भट्ट मेवाडें वैश्य कहलाए।

इससे स्पष्ट सिद्ध होता है नागवंश एक राज्यवंश रहा है। इसी वंश से सातवाहन व चालुक्य वंश के विवाहिक सम्बन्ध होते रहे हैं।

सम्भवत- इसी वासगी नाग की कन्याओं से महाराजा अग्रसैन के पुत्र के विवाह हुए। क्योंकि वासगी के बाद उसके सांमत गुबक ने राज्य पर कब्जा कर लिया।

नाग कन्याओ की कथा की भ्रान्ति—भाटों द्वारा वर्णित नाग कन्याओं की कथा में कहते हैं कि वासगी नाग की कन्याएँ रात्रि को नागिन बन जाती थी प्रातः मानवी बन जाती थी श्री महाराज के भाट ने नाग पंचमी को जब वह अपनी खोर (कांचली) रख कर स्नान कर रही थी तो भाट ने उन खोरों को एकत्र करके अग्नि में कूद कर अपने शरीर

Remove Watermark Now

सहित उनको जला डाला। फिर महाराजा अग्रसन के भानजे ने भाट की ग्रहण की पदवीमानवों के नागों से विवाह सम्बन्धहोना एक अनहोनी सी बात है। वासगी पाटन के राजा नागवंशी थे। भाटों ने इस कथा को रचकर अज्ञानता का पर्दा डालकर अपने आप को अग्रवालों का हितैषी तथा भानजा मनवाकर धन प्राप्त करने के लिये यह प्रपंच रचा। क्योंकि हमारी परम्परा के अनुसार भानजा, दहौता और दामाद का हमारे समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार श्री हनुमानजी जो बानर जाति से थे, बानर बताकर उसका आकार चित्रों पर बानर का बना दिया। दूसरी शताब्दी ई० पूर्व का हनुमानजी का चित्र पटल न० पर देखिये जिस पर हनुमान अशोक वाटिका विध्वंश लिखा हुआ है।

राजतिरंगनी पृष्ठ ४१ पर लिखा है कि जिन्दावेस्ता में कश्मीर को कश्यपपुर (वरुण का देश) लिखा है और चीनी तुर्किस्तान को नाग देश लिखा है। कहते हैं कि गरुड़ जाति ने नाग देश पर आक्रमण करके नागों को पराजित किया। डर कर सर्वप्रथम नाग कश्मीर में आ बसे। बंगाल के नाग महाशयों मेंवासगी नाग गौत्र है। वासगी नाग का प्राचीन स्थान कश्मीर का भद्रवाअंचल में था।

गौत्र व्यवस्था

गुजरातनों अने सांस्कृतिक इतिहास पृष्ठ ४०८ पर लिखा है कि जब प्राचीन क्षत्रियों ने बौद्धधर्म अपनाया तो उनके प्राचीन गौत्र संज्ञा आदि वैदिक धर्म के द्योतक लोप हो गए। जब बौद्ध धर्म का उच्छेद हुआ और पुनः आर्य वैदिक धर्म इन लोगों ने अपनाया तो गुरु के गौत्रों को धारण किया। अर्थात गौत्र गुरु गद्दी के नाम पर हुआ तथा जब शिष्य किसी कारण गुरु बदलता तो गौत्र भी बदल जाता था।

२. सौराष्ट्रनों इतिहास—पृष्ठ २९४ पुष्कर संवत १२४३ सन् ११६८ ई० के शिलालेख में गोहिल वंशी ठाकुर कोलहाबा को गौतम गौत्री लिखा है। मध्यप्रदेश के द्रमोह लेख में विजयसिंह गौहिल का गौत्र वैशम्पायन (वृहत फलायन) लिखा है। अर्थात वृहतफलायन गोत्री गोहिलों ठाकुर कोलहन और विजयसिंह ने अपने गुरु (पुरोहित) बदल लिये। इसी कारण उनका गौत्र भी बदल गया।

३ गुजरातनो अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ २ पृष्ठ २९९ पर लिखा है कि शिव अवतार लकुलिश ई० पूर्व दूसरी शताब्दी में हुए। और

उन्होंने उमापतिश्वर और कपलेश्वर लिंग की प्रतिष्ठा आर्यचार्य, उदिताचार्य, कुशिक पराशर से करवाई। भगवान कपिल के शिष्य उपभित्तना थे। सन् ३८०-८१ ई० में लकुलिश की दसवी पीढ़ी में गुरु आश्रम स्थापित हुए। लकुलिअ के ४ शिष्य कुशिक, गर्ग, भैत्रय, कुरुष थे।

पुराणों में लकुलिश को भगवान कृष्ण के काल में लिखा है परन्तु गुप्त संवत ६१, मथुरा के शिलालेख अनुसार स्पष्ट प्रमाण है कि तीसरी शताब्दी के प्रथम काल में लकुलिश का जन्म हुआ।

"गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ २ पृष्ठ ३०० पर लिखा है कि साधु होना सन्दर्भ में पौत्र का अर्थ गर्ग का शिष्य लिखा है। कुमारपाल के समय के प्रभास पाटन शिला लेख में वृहस्पति, सिंगा कार्तिक ऋषि, वाल्मिकी ऋषि के शिष्य गण्ड, त्रिपुरान्तक शाखा जनई है तो पुरान्तक सोमनाथ मन्दिर में छठा महन्त था।

सौराष्ट्रनों इतिहास—पृष्ठ ४०४, ४०५ पर ताम्रपत्रों और लेखों द्वारा प्राप्त गौत्र लिखे हैं।

१ अत्रेय	११ भारद्वाज	२२ गौतम
२ औसनक	१२ मैत्रय	२३ शाँडिल्य
६ कश्यप	१३ भार्गव	२४ माण्डव
४ कपिष्टल	१४ वत्स	२५ सवत्स
५ कौरण्ड	१५ सातुल्य	२६ गौपालक
६ कुशिक (कोशिक)	१६ शार्कराक्षी	२७ वृहतफलायन
७ गर्गय	१७ सांस्कृतक	२८ .मुदगल
८ जबाली	१८ मालव	२९ नागर
९ दर्मस	१९ लक्ष्मणयश	३० तैतरिय
१९ पाराशर	२९ कौत्श	३१ त्रिपुरान्तक
	२१ हरित	

ये गौत्र ऋषि आश्रम गुजरात के है। देखना कि अग्रवालों के गोत्र किस ऋषि के नाम पर हैं।

१ गर्गय-गर्ग	७ वत्स-बंसल	१३ नागर-नागल
२ गौतम-गोयल	८ वृहतफलायन-बिंदल	१४ अत्रेय-ऐरन
३ मैत्रय-मित्तल	९ तैतरिय-तायल	१५ मुदगल-मधुकुल

Remove Watermark Now

४ शाँडिल्य-सिंगल	१० कुशिक-कुच्छल	१६ भार्गव-भन्दल
५ जबाली-जिन्दल	११ माण्डव-मंगल	१७ त्रिपुरान्तक-तुंगल
६ कश्यप-कांसल	१२ दर्भस-ढालन	१८ गौन-गौतम

उपरोक्त विवरणों द्वारा सिद्ध होता है कि बौद्धधर्म के फैलने के कारण प्राचीन गौत्र व वर्ण व्यवस्था खत्म हो गई थी।

ऋषि आश्रमों का निर्माण गुप्त काल में वैष्णव वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार पर आरम्भ हुआ। और सबसे पहले सन् ३८०ई० में शिव अवतार लुकलिश ने गर्ग आदि आश्रम स्थापित किये। तब से गोंत्रों का निर्माण आरम्भ हुआ। गौत्र गुरु के नाम पर होते थे। तथा सांतवी शताब्दी तक के ३१ गौत्रों के शिलालेखों द्वारा मिलते हैं। जिनमें अग्रवालों के १७ गौत्रों के नाम भी उसी प्रणाली में मिल जाते हैं।

शोधकाष्ठा संघ, लोहाचार्य राजा दिवाकर

काष्ठासंघ की उत्पत्ति का उल्लेख आचार्य देवसेन के दर्शनासार में मिलता है। लिखा है कि गुणभद्राचार्य की मृत्यु के बाद जिस सेनाचार्य के गुरुभाई विनय सेन के दीक्षित शिष्य कुमार सैन द्वारा संवत् ७५३ में नन्दी ग्राम में काष्ठा संघ की उत्पत्ति हुई।

तेण पुणों विच मिच्चु णाउण मुणिस्य विणयसेणस्य।
सिद्धते घोसिता सयं गयं सग्ग लोयस्य॥
आसीकुमार सेणों णंदिबिचडें विणयसेन दिव्ययओ।
चत्तोयं समो रुहो कुट्ठं संघ परुवेदि॥
सो सवण संघ बज्जो कुमारसेणों दुसमय भिच्छती।
सत्तसये तेवण्णे विक्ककमरा यस्स मरणपतस्य॥
णदियडेबरयांमें कट्ठो संघो मुणेयंव्वो। —"दर्शनससार"

जब काष्ठा संघ की उत्पत्ति विक्रमी सं० ७५३ में हुई तो अग्रोहा में इसके पश्चात् ही राजा दिवाकर काष्ठा संघ से दिक्षित हुए होंगे। अर्थात् आंठवीं शताब्दी के लगभग।

लोहाचार्य बारे वर्णन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर शास्त्र भण्डार की समयसार टीका आत्मख्याति की लिपि प्रशस्ति में जो कि सं० १४६३ में लिखी है। काष्ठा संघ के साथ लोहाचार्य का उल्लेख है। स्वस्ती श्री संवत २-१४६३ वर्षे त्रयोदश्यां सोमवासरे अथेय त्री कालपी नगरे समस्त राजावली समलंकृत विनिर्जितारिवली प्रचण्ड महाराजाधिराज सुरताण

pdfelement

महमूदसाहि विजयराज्य प्रवर्तमाने अस्मिन राज्ये श्री काष्ठा संघें माथ-रान्वयें पुष्कर गच्छे लोहार्चायान्वये प्रतिष्ठाचार्य श्री अनन्तकीर्तिदेवा तस्य पट्टनगमणागणे भट्टारक कल्प श्री क्षेमकीर्त्तिदेव तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः तत्शिष्य श्री धर्मचन्द्र देवाः तस्य धर्मोपदेशामृतेन हृदिस्थित घनो-बल्ली खिच्चभामेन रोहितास नगरे वास्तव्य श्री कात्पीनगस्थित अग्रोत-कान्वय मित्तल गोत्रीय पुर्वपुरुष।

इससे सिद्ध होता है कि वि० सं० ७५३ में काष्ठा संघ की स्थापना हुई और लोहाचार्य हुए। जो राजा दिवाकर की किवदन्ती है। अग्रोहा से प्राप्त राज्य मुद्रांक ब्रह्मी लिपि जिस पर देवसिद्ध लिखा है और सूर्य एवं नन्दी का निशान है, लगभग आठवीं शताब्दी का है। सम्भवतः सूर्यवंशी राजा देवसिद्ध जो कि शैव था उसने जैनधर्म अपनाया हो। इस देवसिद्ध को ही किवदन्ती में दिवाकर लिखा गया हो।

श्राप द्वारा अग्रोहा नाश

किवदन्ती है कि धुङ्गनाथ ने श्राप द्वारा अग्रोहा का नाश किया परन्तु यह किवदन्ती हरियाणा की आम जनता की नहीं पता। केवल अग्रवाल ही कहते हैं। और न ही किसी प्राचीन पुस्तक या लेख में लिखी मिलती है। इस किवदन्ती के बिल्कुल समान दन्त कथा बल्लभी बारे गुजरात में मिलती है। जो वहाँ के प्राचीन लेखों व पुस्तकों में लिखी मिलती है। जो इस प्रकार है—

अनुवाद धुङ्गनाथ कथा

रासमाला भाग I पृष्ठ १७ पर लिखा है:—

धुंङ्गनाथ नाम का एक साधु अपने शिष्यों के साथ वल्लभी आया। इस साधु ने वल्लभी के पड़ौस में चमारडी ग्राम की घाटी की की खोह में निवास किया। और तप करने लगा। उसका शिष्य भिक्षा लेने गाँव में जाता परन्तु उसे कोई भिक्षा नहीं देता। वह जंगल से लकड़ी काट कर लाता और उसे बेचकर उनसे मिले पैसों से आटा लेकर आता था। उसे रोटी बनानी नहीं आती थी। एक कुम्हारिन उसकी प्रतिदिन रोटी बनाती रही। कई वर्षों बाद जब महात्मा की समाधि खुली तब महात्मा ने अपने शिष्य से पूछा कि तेरे सिर के बाल उड कर यह निशान कैसे बना। शिष्य ने सारी कथा सुनाई। साधु ने कहा कि आज बड़ा मेला लगा है आज तू भिक्षा लेने जा। वह भिक्षा लेने गया। परन्तु उस

Remove Watermark Now

दिन भी उसे भिक्षा नहीं मिली। केवल उसी कुम्हारिन ने भिक्षा दी। साधु को क्रोध आया। और शिष्य से कहा कि कुम्हारिन को कह कि वह अपने परिवार सहित आये। जब कुम्हारिन अपने पति व बच्चों सहित आई तो साधु ने उससे कहा कि तुम इसी समय नदी की ओर चली जा क्योंकि इस नगर का नाश होगा। और पीछे मुड़ कर मत देखना। कुम्हा-रिन अपने परिवार सहित चल पड़ी। जब काफी दूर चली गई तो कौतूहल वश पीछे मुड़कर देखा, वह पत्थर की मूर्ति हो गई। उधर साधु ने वल्लभी को श्राप दिया कि धनमाल सहित इस नगर का नाश हो। वल्लभी का नाश हो गया। ओर वह कुम्हारिन रूआ परी के नाम से पूजी जाती है।

अग्रोहा के टीले पर ऐसे जलने के कोई निशान नहीं मिलते कि यह टीला अग्निवर्षा से जला हो। अग्रोहा से ८ कि०मी० पर एक टीला किरमारा ग्राम है जो कि अग्निकांड से पूरी तरह भस्म हुआ प्रतीत होता है। उस टीले की मिट्टी को लोग अपने खेतों में खाद के स्थान पर इस्तेमाल करते हैं क्योंकि उस टीले की हर वस्तु जलकर राख बनी हुई है।

इस टीले के बारे में अलबरोनी ने लिखा है कि मोहम्मद गौरी ने सिरसा विजय करने के पश्चात् कुरमाण का बड़ा शस्त्रागार जलाकर राख कर दिया था। इसके बाद हांसी पर आक्रमण किया।

ऐसा प्रतीत होता है कि गुजरात की कथा गुजरात से साथ आई कि हमारे मुल्क का इस प्रकार श्राप द्वारा नाश हुआ था। जब कुरमाण के जलने के बाद अग्रोहा से निकल करलोग दूसरे स्थानों पर जा कर बसे तब ये दोनों कथायें जुड़ कर एक हो गई। और अग्रोहा से सम्बन्धित हो गई। जब कि हमने अपना निवास स्थान केवल अग्रोहा मान लिया है। अर्थात हमारा मुल्क श्राप द्वारा अग्नि वर्षा से नष्ट हुआ।

नोट— लेखक स्वयं वल्लभी गुजरात जाकर देख कर आया है। वल्लभी में १५ ईन्च लम्बी १० ईन्च चौड़ी और ३ इन्च मोटी ईंटें मिलती हैं। और रुआपरी का मन्दिर भावनगर के पास है। जहाँ उसकी पूजा होती है। यहाँ से कुछ दूर लोहागढ़ का टीला है और आसपास में अग्रोहा के पासके ग्रामों से मिलते-जुलते नामों के ग्राम हैं। जैसे बरवाला, आदमपुर, कुम्हारी आदि-आदि। यह भी सम्भव है कि महाराजा अग्रसैन के साथ उनकी सहयोगी जनता भी आई होगी। उन साथ आने वाले लोगों ने

pdfelement

अपने प्राचीन स्थानों की याद रखने के लिये उन्हीं नामों के गाँव यहाँ बसा लिये हों।

वीर पुरुष सन्त गुगाजी

कर्नल टाड ने इतिहास राजस्थान में लिखा है कि महमूदगजनवी ने सन् १०१०-१०२४ तक १२ आक्रमण किये। विख्यात चौहान राजा वाँचा के गुगा नामक एक पुत्र था जिसका राज्य सतलुज से हरियाणा तक जांगल देश पर था। गुगा मैड़ी उसकी राजधानी थी। इसने अपने ६० भतीजों और ४५ पुत्रों सहित गजनवी से युद्ध किया। भतीजे व लड़के वीरगति को प्राप्त हुए। अतः आप भी घायल होकर मरणावस्था को पहुंच गये। घायल अवस्था में श्री गोरखनाथ सम्प्रदा का एक योगी इनको उठाकर ले गया। स्वास्थ लाभ होने पर यह योग की दीक्षा लेकर योगी बन गये। अतः गुगा मैड़ी में समाधि ली। इनकी माता के औलाद नहीं होती थी। गोरखनाथ जी ने आशीर्वाद देकर कहा था कि तेरे यहाँ वासगी नागपुत्र रूप से जन्म लेगा। अतः जनता इनको वासगी का नाग अवतार व शहीद योगी होने के कारण श्रद्धाभाव से पूजती है। इनका एक सिक्का चाँदी का अग्रोहा से प्राप्त हुआ है जो इस काल की पुष्टि करता है।

दूसरी कथा इनके बारे में राजस्थान के प्राचीन इतिहास में लिखी है कि राजगढ़ और हिसार के मध्य दद्रेवा गाँव में एक शिलालेख है जिसमें गोगा का जन्म संवत १२८२ पोष कृष्णा १३ का है। इनके पिता का नाम ठाकुर जेवर था जोकि चौहान वंशी था। उसकी पत्नी का नाम बांसल था गुरु गोरखनाथ जी के आशीर्वाद से इनका जन्म हुआ। संवत् १३५३ के भाद्र बदी नौमी के दिन द्वितीय फीरोजशाह से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

परन्तु इतिहास अनुसार फीरोजशाह द्वितीय संवत् १४४५ में हुआ। तब कैसे संवत १३५३ में इनका युद्ध हो सकता था।

इसलिए उपरोक्त अर्थात् कर्नल टाड का कथन सही प्रतीत होता है। आम जनता में भ्रांति है कि यह महाभारत के आसपास हुए थे।

—※—

Remove Watermark Now

सर्ग - चतुर्थ

सूर्य वंश का कश्मीर पर राज्य

श्रीनारायण
↓
ब्रह्मा जी
↓
कश्यप
विवेस्वान

वेवस्वत मनु की २८वीं चतुर्युगी के प्रथम युग में राजा ईक्षवाकु हुआ। इनसे सूर्यवंश का आरम्भ माना गया। इक्षवाकु से राजा सुदर्शन तक ५७ पीढ़ी हुई थी कि सतयुग समाप्त होकर त्रेता युग आरम्भ हो गया। सुदर्शन की छठी पीढ़ी में राजा कुश हुए। कुश की ५५ पीढ़ी में राजा सुरथ हुए। इस राजा सुरथ ने मेघा मुनी से भगवती दीक्षा ली जिसकी कथा दुर्गा सप्तसती में लिखी है। इनका पुत्र बुद्ध हुआ। बुद्ध को छोड़ कर इस समय शेष सूर्यवंशी वर्णाश्रम धर्म बदल चुके थे। बुद्ध के केवल कन्या हुई जिसका विवाह चन्द्रमा से हुआ। जिससे चन्द्रवंश चला। चन्द्रमा की ६४वीं पीढ़ी में शुक्रहोत्र हुआ जिसको सूर्यवंशी राजा प्रतापेन्द्र ने अपने अधीन करके अयोध्या में राज्य की स्थापना की। इसकी पाँच पीढ़ी ने राज्य किया। अन्तिम राजा धनुदीप्ति पर राजा हस्ती ने आक्रमण किया और इसे पराजित करके हस्तिनापुर नगर बसाया। राजा हस्ती से युधिष्ठिर तक ४६ पीढ़ी हुई।[1]

भगवान राम ने अपने भाई भरत के पुत्रों पुष्कल को पुष्पपुर व कश्मीर का राज्य दिया था। इनका वंश कश्मीर में चला।[2] राजा कंस

1. भविष्य पुराण भाग प्रथक पृष्ठ ३०८
2. भविष्य पुराण भाग प्रथम पृष्ठ २८७

के समय कश्मीर का राजा सूर्यवंशी भौनन्द राज्य करता था। यह मगध नरेश जरासन्ध का मित्र था। इसने जरासन्द के साथ मथुरा पर आक्रमण किया। तथा युद्ध में मारा गया। तब उसका पुत्र दामोदर राजा बना। २० वर्ष पश्चात श्री कृष्ण अपनी यादव सेना के साथ गन्धार जा रहे थे[1]

इसने पिता की हत्या का बदला लेने के लिये यादब सेना पर आक्रमण किया तथा मारा गया। इस समय गौनन्द की स्त्री गर्भवती थी कृष्ण ने काश्मीर का राज्य यशोमती को दिया।[2] उसका पुत्र गौनन्द द्वितीय छोटी आयु का होने के कारण महाभारत में शामिल न किया गया। इसकी ३५ वीं पीढ़ी में सुन्दर देव हुआ।[3] सुन्दर देव के समय भयंकर तूफान आया। समस्त नगर, गाँव व जीव जन्तुओं का विनाश हो गया। इसके काफी समय बाद कश्मीर का राजा निर्वाचन द्वारा सूर्यवंशी लव चुना गया। जिसने लवकोट (लाहौर) बसाया। इसका पुत्र कुश हुआ।[4]

इक्षवाकु कुल के एक राजा के २ पुत्र अग्निगर्भ व अग्निवर्ण थे। अग्निगर्भ अपने भाई से नाराज हो कर कथुआ (जम्बू के पास) बस गया। इसके पुत्र वासुदेव ने तवी नदी के तट पर अपना राज्य स्थापित किया। इसकी छटी पीड़ी में जामू हुआ जिसने जम्बू नामक नगर बसाया और अपनी राजधानी बनाई। इस राजा ने अपने राज्य के दो भाग करके अपने दोनों पुत्र धर्नकर्ण व पूर्णकर्ण को बांट दिये। इनकी १४ वीं पीढ़ी में राजा इन्द्र ने कश्मीर विजय किया। राजा इन्द्र की पांचवीं पीढ़ी में राजा हरिश्चन्द्र भागकर कुरुक्षेत्र चला गया। राजा हरण्याकुल की १४वीं पीढ़ी में राजा बल्लभ हुआ जिसने ई० पूर्व १४१ में कांगड़ा विजय किया। इसी वंश में वर्तमान जम्मु नरेश हुए। अग्निवर्ण के वंश में गौतमबुद्ध, व महावीर कनख सैन हुए।[5]

सम्भव है कि बाबू अमीचन्द ने हिसार गजेटियर में एक वंशावली दी है जिसमें जम्मू के राजा हरिश्चन्द्र (हरिवर्मा) का कुरुक्षेत्र आकर राज्य

१. राजतिरंगनी लेखक कलहन पृष्ठ ६४
२. राजतिरंगनी कलहन कृत पृष्ठ ६४
३. राजतिरंनी कलहन कृत पृष्ठ ६१, ६७, ११७, १२१
४. राजतिरंगनी कलहन कृत पृष्ठ १२१
५. तवारिखकदीम आर्याव्रत पृष्ठ ४६७ से ५०८ तक

Remove Watermark Now

करने का वर्णन है और इसी की वंशावली में आगे चलकर अग्रसैन का नाम दिया है। वह अग्रसैन अग्रणी प्रतीत होता है जो कि सिकन्दर काल में था।[1]

वंशावली इस प्रकार है:—

१. अग्निगृम	१४. शिवप्रकाश	२७. हरिचन्द[2] (हरिवर्मा)
२. वासुदेव	१५. श्याम प्रकाश	२८. सुईनर
३. पुरमित्र	१६. ज्योति प्रकाश	२९. सुधर्म देव
४. वसु देव	१७. पुष्पप्रकाश	३०. कृष्ण वर्मन
५. ख्यात	१८. रतनप्रकाश	३१. वीर वर्मन
६. अर्जुन	१९. भूषण प्रकाश	३२. रनधीर वर्मन
७. बाहुलोचन	२०. ब्रह्म प्रकाश	३३. जगत वर्मन
८. जमुना लोचन	२१. जाम प्रकाश	३४. नरेन्द्र वर्मन
९. दयाकर्ण पुणिकर्ण	२२. किशोर इन्द्र	३५. रुद्रवर्मन
	२३. जयइन्द्र	३६. किरत वर्मन
१०. धर्म कर्ण	२४. राजइन्द्र	३७. आशा वर्मन
११. किरत कर्ण	२५. नरेन्द्र	३८. सुमेर वर्मन
१२. अग्निकर्ण	२६. विजयइन्द्र	३९. अगर वर्मन[3]
१३. शक्ति कर्ण		

जिन्हें पुराणों में आन्ध्र भृत कहा गया है निःसन्देह यह सातवाहन कुल था। सातवाहनों के पूर्वज मौर्यो के सामन्त रहे। अशोक के बाद जब मोर्यो का सौभाग्य सूर्यास्त हुआ। यह उत्तर से दक्षिण चले गये और वहाँ स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया।[4]

आगरा का राजा उग्रसेन महापदम के वंशज मौर्यो के बाद गोदावरी तट पर जा बसे थे।[5]

१. गजेटियर हिसार रिपोर्ट अग्रोहा बाई बाबू अमी चन्म सैटलमैंट कमीश्नर पृष्ठ ६२
२. तवारिख कदीम आर्याव्रत ले० बाबू नगीनाराम कपूरथला पृष्ठ ४९७
३. गजटियर हिसार रिपोर्ट अग्रोहा बाई बाबू अमीचन्द सैटलमैंट कमिश्नर।
४. दक्षिण भारत का इतिहास डा० के० ए० नीलकण्ठ शास्त्री पृष्ठ ७७
५. अर्ली हिस्ट्री आफ दक्खन पार्ट १ VI जी० बाई याजदानी पृष्ठ ६९

pdfelement

आगरा अग्रगाम अग्रमीस के नाम पर था[1]

सिकन्दर लोधी ने अपना महल बनबाने के लिए अग्रमीस के टीले को चुना था और आदेश दिया था कि मेरा महल अग्रमीस के टीले पर बनाया जाये ।[2]

सीमुख सातवाहन

सीमुख को सातवाहन वंश का प्रथम पुरुष माना जाता है इसके पूर्वज मोर्य के सामन्त थे। मौर्य साम्राज्य का सौभाग्य सूर्यास्त हो जाने पर उत्तर से दक्षिण भारत गये। और दक्षिण भारत में गोदावरी नदी के तट पर प्रतिष्ठान को राजधानी बनाकर राज्य स्थापित किया। तथा ३० दुर्ग सुदृढ़ और प्राचीरों से घिरे हुए बनवाए। पिलनी लिखता है कि इनके पास एक लाख पैदल सेना २०,००० घोड़े व एक हजार हाथी थे। सातवाहनों का ई० पूर्व २२० से आरम्भ होकर ई० सन् २३० तक साढ़े चार सौ वर्ष रहा। और अपनी चरमोत्कर्ष के समय साम्राज्य सम्पूर्ण दक्षिण व उत्तर में मगध तक फैला हुआ था।[3]

यह सूर्य वंशी क्षत्री थे कई विदेशी विद्वान इनको ब्राह्मण लिखते हैं। यह तथ्य गौत्रों के भ्रम के कारण लिखा है। क्योंकि इनके गौत्र ब्राह्मण गौत्रों के नाम पर थे[4] कई विद्वान अनार्य लिखते हैं तथा दलील देते है कि इनके नाम के साथ पिता का नाम न आकर माता का नाम आता है जैसे गौतमी पुत्र सातकर्णी आदि इनका यह कथन सही नहीं है क्योंकि राजाओं में कई रानियाँ रखने की प्रथा थी। राजा के वारिस के पिता के नाम को तो जनता जानती थी यह जानने के लिये कौन सी रानी का पुत्र सिंहासन पर बैठा है इस पहचान के लिए माता का नाम साथ लगाया जाता था।[5] माता का नाम लगाना आर्य परम्परा के विरुद्ध नहीं है जैसे भगवान कृष्ण को देवकीनन्दन, बल्देव जी को रोहिणी पुत्र, भगवान राम को कौशल्या नन्दन भरत को कैकयी नन्दन, लक्ष्मण व शत्रुघन को सुमित्रा

१. रिपोर्ट फार दि ईयर १८७१-७२ आगरा बाई ए० सी एल० CARLLEYLE
२. गजटियर आगरा सन् १९१०
३. दक्षिण भारत का इतिहास डा० नीलकण्ठ शास्त्री पृष्ठ ७७-७८
४. आद्य महाराष्ट्र आणि सातवाहन काल रघुनाथ महारुद्र भूसारी पृष्ठ ५४
५. वही पृष्ठ ६१

Remove Watermark Now

नन्दन कहा जाता है। इसलिए माता का नाम लगाया जाता था ताकि पता लगे कि कि कौन सी रानी का पुत्र है यह आर्य संस्कृति के विपरीत नहीं हैं।

सीमुख सातवाहन को क्षत्रियाना ब्रात्य वैश्य लिखा है। जिस का तात्पर्य वह क्षत्री जिन्होंने वैश्य वर्ण अर्थात व्यापार अपनाया।[1] सीमुख ने २३ वर्ष ई० पूर्व २०७ वर्ष तक राज्य किया। पुराणों में सीमुख का नाम नहीं मिलता।[2] परन्तु नाने घाट शिलालेख में मिलता है।[3]

कान्हा या कृष्ण

पुराणों में कृष्ण या कान्हा का नाम नहीं मिलता।[4] परन्तु नासिक शिलालेख में सातवाहन रारा कान्हा का उल्लेख है जिसने १८ वर्ष राज्य किया, इसकी मुद्रा भी मिली है, जिस पर कृष्णस्य लिखा है, तथा त्रिरत्न व स्वातिक का निशान अंकित है।[5] इसका राज्य ई० पूर्व १९७ ई० पू० १७९ तक रहा।

सातकर्णी प्रथम

सातकर्णी प्रथम सीमुख का पुत्र था। इसकी रानी का नाम नागिनका था इसकी मूर्ति ननेघाट की चट्टान पर रानी नागिनका व एक महारथी सहित अंकित है इसने पश्चिम मालव को विजय करके अपने राज्य में मिलाया। रानी के शिलालेख में उसके द्वारा किये गये यज्ञों का वर्णन मिलता है। इसके शिलालेखों में प्रथम धर्म इन्द्र कार्तिकेय, सकर्षण, बासुदेव, सूर्य चन्द्र, यम वरुण, कुबेर, कार्तिकेय, नामोतंर, बेदी, सिरषों, रत्नों शब्द लिखे हैं। इसकी मुद्राओं पर मी स्वास्तिक का निशान है। इसका राज्य ई० पू० १७९ से १६९ तक रहा। इसने अश्वमेघ, राजसुय, अग्याधेय, वाजपाई, दसरात्र आदि यज्ञ किये। दक्षिणा में हजारों हाथी,

१. आद्य महाराष्ट्र आणि सातवाहन काल रघुनाथ रुद्र भुसारी पृष्ठ ६१
२. वही पृष्ठ ६७
३. नाने घाट A. S. W. I. V. P. 60 PI.-LI. IJB. BRS. XIII (1887) P-311 सामवाहन कोआन्ज आई० के० शर्मा पृष्ठ १३
४. आद्य महाराष्ट्र आणि सातवाहन काल रघुनाथ रुद्र भुसारी पृष्ठ ६७
५. P. I. XXX III No. 1 NASIK E. P. IND VII P-93 P.I. VI-22 ASWI. IV. P-98

घोड़े, गाय, ग्राम, स्वर्ण व धन लाखों कार्षापन दिये गये थे। यह वंश राज्य के साथ-साथ व्यापार भी करते थे।[1] इसी कारण इनको वैश्य वृति में लिखा गया है।[2]

पूर्णोत्संग

पूर्णोत्संग ने ई० पू० १६९ से १६१ ई० पूर्व तक राज्य किया इसने वेद श्री मित्रा की उपाधि ग्रहण की।[3]

सातकर्णी II

सातकर्णी द्वितीय ई०पूर्व १६१ पर सिंहासन पर बैठा। इसका राज्य मराठावाड़ा, तेर, पैठण, नेवासे, नासिक, कोल्हापुर-दिदर्भ-मालव, उज्जैन एरण, दिदिशा तक था। खाखेल की हाथी गुम्फाशिला लेख में सातकर्णी का उल्लेख है। इसने शुङ्गों से मालव छीना था कलिंग व बरार के रथिकों व भोजों को परास्त किया था। इसका राज्य १०५ ई० तक रहा।[4] इसकी अनेक मुद्राएं मिलती है। इस की मुद्रा एक हाल में मिली है। जिस पर गजों अभिषक्त लक्ष्मी की मूर्ति है। लक्ष्मी कमल पर खड़ी है।

लम्बोदर

लम्बोदर ने ई० पू० १०५ से ई० पू० ८७ तक राज्य किया।[5]

श्री अपिलक

अपिलक लम्बोदर का पुत्र था। राज्य काल ८७ ई० पू० से ७५ ई० पूर्व तक १२ वर्ष राज्य किया। इसका विरुद शिव श्री अपिलक था[6]

अपिलक के बाद यज्ञ स्वाती ने, यज्ञ स्वाती के बाद स्वाती ने, स्वाती के बाद स्वाती मृगेन्द्र, राजाओं ने राज्य किये। मृगेन्द्र स्वाती के बाद कुन्तल सातकर्णी हुआ।[7]

---

१. दक्षिण भारत का इतिहास डा० नीलकण्ठ शास्त्री पृष्ठ ७८-७९
२. आद्य महाराष्ट्र आणि सातवाहन काल पृष्ठ ६८-६९
३. आद्य महाराष्ट्र अने सातवाहन काल पृष्ठ ७०
४. वही पृष्ठ ७२
५. वही पृष्ठ ७३
६. वही पृष्ठ ७४
७. सातवाहन कोआयन्ज पृष्ठ १५

Remove Watermark Now

कुन्तल सातकर्णी

कुन्तल सातकर्णी ने अपनी मुख्य रानी मलयवती के कारण वात्सायन द्वारा कामसूत्र की रचना करवाई। इसका राज्य ई० पू० ४३ से ई० पू० २८ तक रहा[1] इसके बाद त्रिमुख सातकर्णी राजा हुआ।[2] इसकी उपाधि मुद्राओं पर राये श्री त्रिमुख सातवाहन लिखा है।[3]

पुलमावी प्रथम

पुलमावी प्रथम ई४ पू० ४० पर बैठा ओर ई० प० १९ तक राज्य किया।[4]

गौर कृष्ण

पुलमावी की मृत्यु के बाद गौर कृष्ण ने ई० पू० १६ से ई० पू० ८ तक राज्य किया[5]

हाल

राजा हाल ने ई० पू० ८ से १३ ई० तक राज्य किया। उसने दुर्गा सप्तसती और अनेक ग्रथों के साथ-२ लगभग १५० पुस्तकें लिखी। जिनमें गाथा लीलावती, अभिधान चिंतामणी, देसी नाम माला, सिंहल दिग्विजय आदि थे।[6] इसके पश्चात क्रमांकवार निम्नलिखित हुए।

१.	राजा मतलंक	ई० १३ से ई० १८ तक
२.	राजा पुरेन्द्र सैन	ई० १८ से ई० २३ तक
३.	सुन्दर सातकर्णी	ई० २३ से ई० २४ तक
४.	चकोर सातकर्णी	ई० २४ से ई० २६ तक।
५.	शिव स्वाती सातकर्णी	ई० २६ से ई० ५४ तक

---

१. आद्य महाराष्ट्र अने सातवाहन काल पृष्ठ ७५
२. सातवाहन कोआयनन पृष्ठ १५
३. मुद्रा परिषद वाराणसी की रिपोर्ट १९८१ Volume XL III Part I पृष्ठ ५४-५५
४. आद्य महाराष्ट्र आणि सातवाहन काल पृष्ठ ७५
५. वही पृष्ठ ७५
६. वही पृष्ठ ७७
७. कोआयन्ज आफ दी सातवाहन पृष्ठ १७

गौतमी पुत्र सातकर्णी

राजा हाल के बाद ४ उत्तराधिकारियों का शाशन काल स्वलप था। कुल मिलाकर १२ वर्षों से कम था। इस बात का यह सूचक है कि यह समय शान्ति प्रिय नहीं था। लगभग उसी समय पश्चिमी मंगलेश्वर (शक) प्रभुता प्राप्त करने लगे थे। भुमक उनमें सब से प्रारम्भिक राजा था। नहपान सबसे बड़ा विजयी था। उस का शासन गुजरात, कठियावाड़, महाराष्ट्र का उत्तरी भाग कोंकन और कुछ समय तक दक्षिणी महाराष्ट्र के कुछ भाग्रों में फैला हुआ था।

पेरिपल्स का कहना है कि नहपान के राज्य एरिकरण से भरुकच्छ (भड़ौच) की ओर मोड़ दिये जाते थे। नहपान की राजधानी मिन्नागढ़ (दोहद) थी वह भड़ौच व उज्जैन के मध्य थी शकों की शक्ति का विस्तार ४० ई० से ८० ई० तक हुआ। यह समय पेरिपल्स का था। ऐसे समय में गौतमी पुत्र सातकर्णी ने ई०सन् ८० से १०४ तक राज्य किया। और सातवाहनों को सत्ता का पुनर्उदय हुआ। गौतमी पुत्र ने शको, पल्लवों, यवनों का विनाश किया। उसने नहपान को जड़ से उखाड़ फैंका। शकों से मालवा और पश्चिमी राजपूताना, उत्तरी महाराष्ट्र और कोकन नर्मदा घाटी और सौराष्ट्र छीन लिये, उसका राज्य विदर्भ (बरार) और बनवासी तक फैला था। उसके राज्य की सीमा कलिंग को स्पर्श करती थी। उसकी माता गोतमी बाला श्री के नासिक में खुदे एक शिलालेख से पता चलता है।[1] गोतमी पुत्र सातकर्णी ने सन् ई० ८० से १०४ ई० तक राज्य किया।[2] जब इसका पुत्र पुलभावी १९ वष का था। तब उसका स्वर्गवास हुआ। गौतमी पुत्र सातकर्णी की माता का पूरा नाम गौतमी बाला श्री था।[3]

गौतमी पुत्र सातकर्णी

गौतमी बाला श्री ने अपने शिलालेख में एक शूर, एक धनुर्धर परसुराम, राम, केशव, अर्जुन, भीमसेन तुल्य पराक्रमी और नहुष जनभेजय, सगर, ययाती, अंबरीष जैसा तेजस्वी भूप था।[4] यह लेख श्री शैल

१. दक्षिण भारत का इतिहास पृष्ठ ८०
२. गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ २ पृष्ठ ४९०
३. दक्षिण भारत का इतिहास डा० नीलकण्ठ शास्त्री पृष्ठ ८०
४. आद्य महाराष्ट्र अणि सातवाहन काल पृष्ठ ८०

Remove Watermark Now

(आन्ध्र प्रदेश) में है। गौतमी पुत्र सातकर्णी की मुद्राओं पर स्वास्तिक व तारे का निशान है और राणा गौतमी पुत्स श्री सात कंसा बनकोट (Bana-Kutakat) स्वामी लिखा है।[1] सातवाहन राजा भागवत धर्मी थे तथा लक्ष्मी ईष्ट देवता थी। परन्तु सभी देवताओं व पंथों का आदर करते थे। तथा मन्दिर बनवाते थे। बुद्ध के अनेक मंदिर, स्तूप तालाव कुए आदि बनवाए। सातवाहन राज्य सुविस्तृत तथा उसकी राज्य शासन प्रणाली सरल थी। गौतमी पुत्र सातकर्णी की मुद्रा पर स्वास्तिक व तारे का निशान है और ट्राई एंगल हैंड बना है। सातवाहन की राज्य प्रणाली में उसके वंश के व्यक्तियों को ही प्रान्तों का राज्यपाल नियुक्त करके प्रान्तो में भेजा जाता था। शेष रहे सातवाहन वंशी देश विदेश में व्यापार द्वारा धन अर्जित करते थे। तथा राज्य की समृद्धि एवं पुण्य कार्यो में खर्च करते थे।[2]

लकुलिश शिव अवतार

शिव अवतार लकुलिश का जन्म काया बरोहन (कारवन) में विश्व रुप ब्राह्मण की पत्नी सुदर्शना से हुआ। सूर्य ग्रहण पर विश्वरुप कुरुक्षेत्र गया था वहाँ पर उसने दान, स्नान, यज्ञ आदि किये थे। उन यज्ञों आदि के प्रभाव से लकुलिश का जन्म हुआ।[3]

राजा शंख व राजा विक्रमादित्य संवत् प्रवर्तक

राजा शंख कुटुम्ब में गौतमी पुत्र सातकर्णी के भाई लगते थे। तथा उज्जैन के राज्य पर आरुढ़ थे। राजा शंख उस समय के एक जैन संत कालकाचार्य की बहिन सरस्वती पर आशक्त हो गये तथा उसका हरण कर लिया। कालकाचार्य ने बहुत बुरा माना तथा पंजाब के आक्रमणकारी विदेशी शक शासकों से मिलकर तथा अपने जैन शिष्यों की साहयता से राजा शंख को मरवा डाला तथा शकों का उज्जैन पर अधिकार हो गया। कालकाचार्य ने अपने ग्रन्थों में शंख को गर्द भिल्ल लिखा है अर्थात् (गधों

१. सामवाहन कोआयन्ज पृष्ठ १७-E.P. IND VIII P 73 PI. II 5 A.S.W. 9 IV P-105 PI-L III I o. 14
२. दक्षिण भारत का इतिहास पृष्ठ ८१
३. महा कारवण महात्म दुर्गा शंकर शास्त्री शैव धर्मनो संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ ४३

का सिर ताज)। जब इसके पुत्र विक्रमादित्य को पता चला तो वह प्रतिष्ठान (पैठण) से बहुत बड़ी सेना लेकर आया तथा शकों को मार भगाया था। और शकारी कहलाया। इन्होंने विक्रमी संवत की स्थापना की। इनका गौत्र कश्यप था। महाकालेश्वर मन्दिर भी विक्रमादित्य ने बनवाया।[1]

शंका होती है कि कालकाचार्य ने देशद्रोह किया अपनी बहिन के वास्ते तो उनके जैन शिष्यों का भी हाथ होगा। उनके बिना यह कार्य नहीं हो सकता था। जब शकों ने अपने स्वभाव के कारण हर मत वालों को तंग किया तो जैनियों को अपनी भूल याद आई होगी तथा शकों को बाहर निकालने में विक्रमादित्य की साहयता अवश्य की होगी। जिससे उनका लांछन खत्म हो गया।[2]

कई विद्वान विक्रमादित्य को गन्धर्व सेन प्रमार का पुत्र मानते हैं। और शकारी विक्रम बताते हैं। परन्तु भविष्य पुराण में सपष्ट लिखा है कि गन्धर्व सेन प्रमार कलयुग संवत ३७१० में हुए। और कलयुग संवत विक्रम से ३००० वर्ष पुर्व चला था। अर्थात संवत विक्रम ७१० में गन्धर्व सेन प्रमार हुआ सो विक्रमादित्य गन्धर्व सेन का पुत्र लिखना किसी भी प्रकार उचित प्रतीत नहीं होता।[3]

वसिष्ठो पुत्र पुलभावी द्वितीय

यह अपने पिता समान सुप्रसिद्ध था। इसके लगभग ८ शिलालेख प्राप्त हुए है। इसकी उपाधि दक्षिण पथेश्वर था।[4] इसका राज्य सन् ई० ८८ से ११६ ई० तक रहा।[5] इसके वंश की दूसरी शाख में चान्तुमल हुआ जिसने सन् ई० २४० में इक्षवाकु वंश चला।

शिव श्री शिव सकद

पुलभावी द्वितीय का पुत्र शिव सकंद सिंहासन पर बैठा तथा इसका

---

१. उज्जैनी दर्शन पृष्ठ ६-७
२. उज्जैनी दर्शन
३. भविष्य पुराण भाग १ पृष्ठ ३३७
४. आणि सातवाहन काल ,, ८१
५. कोआयन्ज सातवाहन ,, २७४

Remove Watermark Now

चष्टन पुत्र जय दामन से युद्ध हुआ। जय दामन मारा गया। यह आक्रमण सन् ई० १३० में हुआ था।

वसिष्ठी पुत्र सातकर्णी

वसिष्ठो पुत्र सातकर्णी ने सन् ई० ११६ से १४५ ई० तक राज्य किया[1] इसके शिलालेख जूनागढ़ से प्राप्त जिसमें दक्षिण पति सातकर्णी लिखा है।[2] जो कि १५० ई० का है।

वशिष्ठी पुत्र शिव श्री पुलभावी

वसिष्ठी पुत्र शिव श्री पुलभावी का राज्यकाल १४५ ई० से १५२ तक रहा।[3]

वसिष्ठी पुत्र शिव सकन्द सातकर्णी

वसिष्ठी पुत्र शिव सकन्द सातकर्णी का राज्य सन् ई० १५२ से १६५ ईस्वी तक रहा।[4]

गौतमी पुत्र यज्ञन श्री सातकर्णी

गौतमी पुत्र यज्ञन श्री सातकर्णी का राज्य ई० १६५ से १९४ तक रहा।[5] इसके पश्चात सातवाहन राजा दुर्बल हो गये बोध पंडित नागार्जुन यज्ञन श्री सातकर्णी का मित्र था। यज्ञश्री को समुद्राधिपती कहा जाता था इसकी मुद्रा गोआ से मिली।[6]

यज्ञन सातकर्णी की दूसरी शाख में हरतीपुत्र विष्णु कदा कुलानन्द सातकर्णी हुआ जिससे कदम्व चालुक्य व शालकायन आदि वंश चले।[7]

---

१. कोआयन्ज सातवाहन पृष्ठ २७८
२. आणि सातवाहन ,, ८३
३. कोआयन्ज आफ सातवाहन ,, २८०
४. ,, ,, ,, ,, २८१
५. ,, ,, ,, ,, २८२
६. आणि सातवाहन ,, ८५
७. सक्सैसरज आफ सातवाहन ,, २६५

pdfelement

विजय श्री सातकर्णी

यज्ञ श्री सातकर्णी के पश्चात श्री विजय सातकर्णी राजा हुआ इस की मुद्राएँ प्राप्त नहीं हुई। एक शिलालेख जो आन्ध्र प्रदेश में नागर्जुन कोंडा से प्राप्त हुआ है जिससे इसके राज्य की जानकारी होती है।

१. नमों भगवतों अगापोगल्स
२. रणों गौतमी पुत्तस सिरी विजयसात कूण्णिस
३. सब ६ गोप ४ दिव वेसाख पुर्णिमा[1]

चन्द्र श्री सातकर्णी

विजय श्री सातकर्णी के पश्चात चन्द्र श्री सातकर्णी राजा हुआ इसका शिला लेख कोडु बोलु ग्राम आन्ध्र प्रदेश से हुआ है। इस का राज्य-काल सन ई० २०० से २१० माना गया है।[2]

पुलभावी तृतीय

पुलभावी तीसरा सन ई० २१० पर सिंहासन पर बैठा २१८ ई० तक राज्य किया। इसके कुल चार सिक्के बलारी तालुका से मिले हैं। इसका सैनापति खण्ड नाग था। उसने धोखे से कब्जा कर लिया। प्रताप शाली-वाहन की मुख्य शाख का राज्य समाप्त हो गया। परन्तु सातवाहन वंश की अन्य शाखाओं के अनेक राज्यों व वंशों का उदय हुआ।[3]

सातवाहन साम्राज्य का अन्त

सातवाहन वंश का प्रभावशाली घराना जिसने साढ़े चार सौ वर्ष एक छत्र राज्य किया। मोर्यों, शुंग के राज घरानों तथा कलिंग वेदी, उत्तर वावव्य भारत के यवनों, शकों, कुषाण, पल्लवों को पिछाड़ा। अपने राज्य निवासियों को हर प्रकार से सुखी रखा महान् यज्ञ आदि किये। देवालय, तालाब, बाँध, गुफाओं का निर्माथ कार्य करवाया। अपनी जनता को धर्मपरायण तथा पुरुषार्थी बनाया। राज्य संचालन के लिए एक पुत्र को राज देकर अन्य पुत्रों को ब्यापार में लगाया। देश-विदेशों से व्यापार

---

१. आणि सातवाहन पृष्ठ ८५
२. ,, ,, ,, ८६
३. ,, ,, ,, ८६

Remove Watermark Now

कर धन अर्जित कर के जन सेवा में लगाया। यह पता नहीं चलता कि ऐसे साम्राज्य का अन्त क्यों हुआ। परन्तु इस बढ़े साम्राज्य की अन्य अनेक शाखायें अन्य नामों से राज्य सत्ता को प्राप्त हुई। इक्ष्वाकु, आनन्द वृहतफलायन, शालकायन (शालीवाहन) वाकाल विष्नुकुन्दी पल्लव चालुक्य कदम्ब चतुर्वंश, सौलंकी वल्लभी आदि अनेक शक्तिशाली राज्य घराने हुए। राज्य प्रणाली गणतन्त्र थी।

नोट— इस राज्य घराने का इतिहास में मुद्राओं द्वारा केवल ई० २२५ तक राज्यकाल लिखा है परन्तु प्रतिष्ठान के विद्वानों का मत है कि प्रतिष्ठान पर इस घराने का राज्य २५० ई० तक रहा हैं। इसके पश्चात् राज्य का रहना तो प्रतिष्ठान के खनन द्वारा ही हो सकता है। हमने प्रतिष्ठान (पैठण) जाकर देखा जहाँ पर गोदावरी तट पर राजा शाली-वाहन का महल था। वह स्थान अब भी है। जो प्रतीत होता हैं कि यह स्थान वास्तव में समृद्धशाली रहा है।

सातवाहन वंश की शाखायें

आभीर वंश:—यह वंश माधरी पुत्र ईश्वरसैन से चला। यह शिव दत्त का पुत्र था। ईश्वर सैन ने सन् ई० २५० में एक नया संवत् चलाया। इस वंश के राजा आसा ने आसीरगढ़ का निर्माण करवाया था।

इक्षवाकु वंश.—यह वंश वसिष्ठी पुत्र चान्तमूल से सन् ई० २२३ में चला। इसकी उपाधि महातलवार थी। चान्तभूल ने बाजपाई व अश्व-मेध यज्ञ किये। इनको श्रीपर्वताधिपती भी कहा जाता था। इसका राज्य गंटुर क्षेत्र में था। इस वंश के सात के लगभग शक्तिशाली राजा हुए। इसका पुत्र वीर पुरुष दत्ता के काल को बौद्ध धर्म का स्वर्ण युग कहा जाता है। वीर पुरुष दत्ता की एक बहिन चतुवंश के राजकुमार से विवाही थी। दूसरी बहिन कुटु कुलानन्द सातकर्णी से विवाही थी। चान्तमुल का विवाह उज्जैन के शक परिवार में हुआ था। इस वंश के अंतिम राजा ईहुबल चान्तमुल ने लंका में सिंहली बौद्ध बिहार बनवाया था। इसका राज्य रायपुर, बिलासपुर, गोदावरी का किनारा जिसे ये मुलक कहते थे, था।

वंशावली

चान्तमुल (२२३-२४० ई०)

|

वीरपुरुष दत्ता २४०-२६५ ई०

↓

इहुबल चान्तमुल

वीर पुरुष दत्ता के समय १८ गणराज्य थे जिनमें एक गणराज्य अग्र क्षत्री व दूसरा व्याघ्र क्षत्री नाम का था।

वृहतफलायन: – अभी तक वृहतफलायन राजाओं का केवल ताम्र-पत्र मिला है जो कि जयसिह वर्म्मन का है। यह वंश तीसरी शताब्दी ई० में चला। इनका राज्य तानली तालुका पर था।

आनन्दकुल:—आनन्दवंश हस्ती बर्म्मन से चौथी शताब्दी ई० में चला। यह कुन्दरा के राजा कहलाते थे। इसमें केवल हस्ती बर्म्मन और उसके पुत्र दामोदर बर्म्मन के लेख मिलते हैं।

शाल कनोई (शाली वाहन)–यह वंश शालीवाहन से २३० ई० में चला इसका राज चिन्ह नन्दी बैल था। इस वंश का रक्षक देवता सूर्य था। अराध्यदेवता लक्ष्मी थी। इसका राज्य विलासपुर, सादीपुर, पिस्तापुर, गोदावरी तट पर था।

देवबर्म्मन का शिलालेज मिला है।[1] इन्होंने सांकलयन गौत्र धारण किया। अनेक यज्ञ किये। इनके प्रवर, भृगु, भारद्वाज, अंगरिश, वृहस्पति, सनेही, गर्ग, विश्वामित्र, कौशिक थे। सालवाहन का मानव गौत्र था।[2] यह वंश हरती पुत्र कुटु कुलानन्द की शाख है।

वंशावली

हरितीपुत्र सालवाहन ३०० से ३१० ई०

|

देववर्म्मन ३२०-३४५ ई०

१ सक्सैसरज आफ सातवाहन पृष्ठ ७७

२ वही पृष्ड ६३, ६५, ७०, ७३, ८२, ८३

३ वही पृष्ठ ८८

Remove Watermark Now

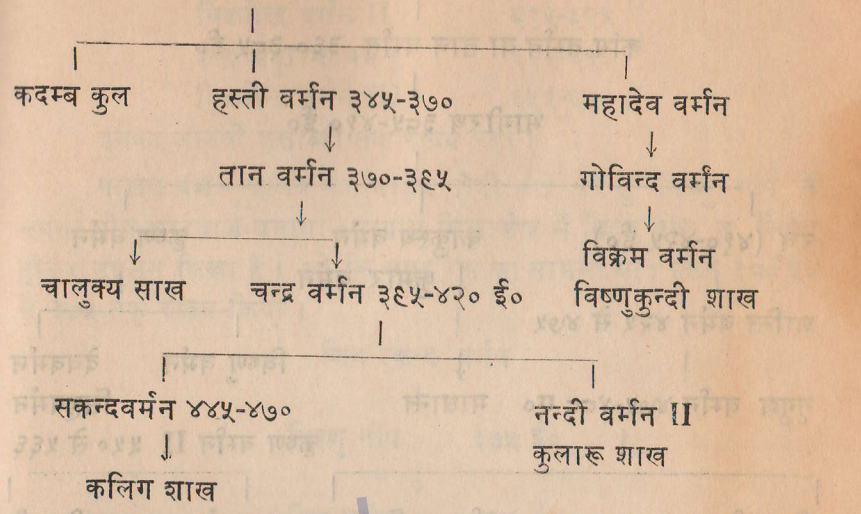

वाकाटक:—यह शाख परवर सैन प्रथम से सन् २७५ ई० में चली।

वंशावली

परवर सैन I	२७५-३०० ई० तक
गौतमी पुत्र	३००-३२० तक
रुद्रसैन I	३२०-३३० तक
पृथ्वीसैन I	३३०-३७५ तक
रुद्रसैन II	३७५-४१४ तक

रुद्रसैन II का प्रभावती गुप्ता पुत्री चन्द्रगुप्त सम्राट से विवाह हुआ।

कदम्बकुल—यह कुल हरितीपुत्रकुटु कुलानन्द के वंश की एक शाख है। इसका आरम्भ सन् ३४५ ई० में मयुर वर्म्मन से हुआ। इस वंश में रघु काकस्थ भागीरथ नामक अलग २ शाखायें चलीं। काकुस्थ का सम्बन्ध गुप्त वंश के कुमार गुप्त मे था। कृष्ण वर्म्मन II की पुत्री ध्रववन्ती का विवाह जयसिमां चालुक्य से हुआ। जो वातापी के राजा थे[1]। कृष्णवर्म्मन की दूसरी पुत्री गंग वंश में विवाही थी।

वंशावली

|

म्यूरवर्म्मन (३४५ ३६० ई०)

१ "सक्सैसरज आफ सातवाहन पृष्ठ ३०२"

कांग वर्मन या तान वर्मन ३६०-३८५ ई०

भागीरथ ३८५-४१० ई०

रघु (४१०-४२५ ई०) — काकुस्थ वर्मन — कृष्ण वर्मन

शान्ति वर्मन ४२५ से ४७५ — कुमार वर्मन

मृगुश वर्मन ४७५-४८८ ए० — माधान्त — विष्णु वर्मन — देववर्मन — सिंहवर्मन

कृष्ण वर्मन II ५५० से ५६६

रवि वर्मन ४८८-५३८ — भानु वर्मन — शिवरथ — अजवर्मन — ध्रुववन्ती पुत्री

हरिवर्मन ५३८-५५०

ध्रुववन्ती जय सींमा चालुक्य से विवाही थी।

विष्णुकुन्दी:—यह शाख भी हस्ती पुत्र कुटु कुलानन्द सातकर्णी से है :—

इस शाखा का महादेव वर्मन प्रथम काकाटक की राजकुमारी से विवाहा था। यह पांचवी शताब्दी में अलग हुए थे।

वंशावली

विक्रमेन्द्र वर्मन I ५००-५२० ई०

गोविन्द वर्मन ५२०-५३५ ''

महादैव वर्मन I ५३५-५८५ ''

महादैव वर्मन II ५८५-६१५ ''

Remove Watermark Now

विक्रमेन्द्र वर्मन II ६१५-६२५ ''

इन्द्र भट्टारक वर्मन ६२५-६५५ ''

विक्रमेन्द्र वर्मन III ६५५-६७० ''

इनका आठवी शताब्दी तक राज्य रहा।

पल्लव वंश—पल्लव वंश मानव गौत्री था परन्तु विष्णु गौप ने अपना गौत्र भारद्वाज बनाया। प्रयाग शिलालेख में विष्णु गोप न लिखा होकर उग्रसेन लिखा हैं। जो कि समुद्र गुप्त का सामन्त था। इसने ३८० ई० से ३७५ तक राज्य किया।

शिव स्कन्द वर्मन

विष्णु गौप ३७५ ई०

सिंह वर्मन ४३४ ''

सिंह विष्णु ५७५ ''

महेन्द्र वर्मन ६३० ''

नरसिंह वर्मन ६६८ ''

महेन्द्र वर्मन ६७० ''

प्रमेश्वर वर्मन ६९५ ''

नरसिंह वर्मन ७२२ ''

नन्दी वर्मन ८०० ''

नपमित्र वर्मन ८४४ ''

नन्दी वर्मन III ८६६ ''

pdfelement

नृप तुंग वर्मन ८९५ "
अपराजीत वर्मन ८९७ "

पल्लव राजाओं ने एलोरा का कैलाश मन्दिर व शेर मन्दिर कांशी का बैकुण्ठ पैरुभल मन्दिर अनन्त शयन- भैरव कोण्ड गुहा मन्दिर, दस मण्डप. आठ रथ, महात्रयी, बाराह, पाँच पांडव, पिण्डारक आदि अनेक मन्दिर बनवाये।

नोट—सातवाहन वंश की सभी शाखायें वशिष्ठी पुत्र व हरिती पुत्र से चली। सबका प्रथम मानव गौत्र था। बाद में यज्ञों द्वारा दीक्षित होने पर गौत्र बदलते रहे।

हरतीं पुत्र कुटु कुलानन्द सातकर्णी

यज्ञन सातकर्णी के पश्चात सातवाहन कुल की एक शाखा कुन्तल नाम से चली। इस शाखा का मुख्य संस्थापक हरती पुत्र विष्णु कदा कुटु कुलानन्द सातकर्णी हुआ।[1] कन्हैरी शिलालेख पर लिखा है कि वशिष्ठ पुत्र पुलमावी के नाम के बाद का भाग पढ़ा नहीं गया है। यह लेख कुटु कुलानन्द सातकर्णी के राज्य के १२वें वर्ष में लिखा गया है। और अन्त में हरती पुत्र विष्णु कदा कुटु कुलानन्द सातकर्णी मानव गौत्र विजयन्ती अधिपति[2] कुटु कुलानन्द सातकर्णी का विवाह वीर पुरुष दत्ता ईक्षवाकु कुल की पुत्री से सन् २४५ ई० में हुआ।[3]

कन्हैरी शिलालेख से यह प्रतीत होता है कि कुटु कुलानन्द सातकर्णी की पुत्री मुलानिका का विवाह नाग राजा महारथी महाभोज से हुआ था। जिसका पुत्र सकन्द नाग था।[4]

कदम्ब वंश:—कुटु सातकर्णी के वंश में राजा म्यूर वर्मन हुआ जिस से ३४० ई० में कदम्ब वंश चला। और ३३० में शालकनोई (शालीवाहन) वंश चला।[6]

1. सक्सैरज आफ सातवाहन पृष्ठ O.P.C.T.PPXXI-iiXIII
2. वही पृष्ठ 251 E.P. CARN. VIII-2
3. वही "
4. वही " RAPSON-OP-CIT.P. i-iii
5. सक्सैरज आप-सातवाहन पृष्ठ 223
6. वही पृष्ठ 63-83

Remove Watermark Now

राजा शालीवाहन

कुटु कुतानन्द सातकर्णी शालीवाहन (सालवाहन) गद्दी पर बैठा। उस समय भरु कच्छ का राजा नभोवाहन था। विदेशी व्यापार के लिए भरुच बन्दरगाह का विजय करना वैश्य राजाओं के लिए बहुत आवश्यक था। सालवाहन ने कई बार भरु कक्ष पर चढ़ाई की थी परन्तु सफलता न मिली। एक दिन अपने मन्त्रियों को बिचार विमर्श के लिये बुलाया कि नभोवाहन को किस प्रकार विजय किया जावे। मन्त्रियों ने कहा कि किसी अपने विशेष व्यक्ति को नभोवाहन का मन्त्री बनाया जाय जो कि उसका अथाह खजाना धर्म कार्यों में लगा सके। जब धन की कमी हो जावे तो हमें सूचना दे दे और हम आक्रमण कर दें। तभी सफलता प्राप्त हो सकती है। एक विश्वास पात्र महामन्त्री ने यह कार्य करने का वीणा उठाया तथा षड़यन्त्र रच कर उसे देशद्रोही घोषित करके देश से निकाल दिया। वह मन्त्री भरु कच्छ के मन्दिर में अपने परिवार सहित रहने लगा। यह बात सारी जगह फैल गई कि शालीवाहन ने अपने महामंत्री को निकाल दिया है और वह भरु कच्छ के मन्दिर में ठहरा है। जब नभोवाहन को पता चला तो उसने महामन्त्री को अपने अधिकारियों द्वारा मिलने का सन्देश भेजा। मन्त्री के मिलने पर सब जानकारी प्राप्त करके उसे अपना मन्त्री बनाना चाहा। पहले महामन्त्री टालता रहा परन्तु आग्रह करने पर नभोवाहन का मन्त्री पद स्वीकार कर लिया। फिर धीरे-धीरे राजा व राजकुटुम्ब पर अपना विश्वास जमा लिया। और राजा नभीवाहन व उसके सम्बन्धियों को पुण्य कार्य के लिए प्रेरित करने लगा और राजकोष के धन से मन्दिर, गुहा, स्तुप, तालाब, कुए, बावड़ी आदि का निर्माण कार्य आरम्भ करवाता रहा। भरु कक्ष की प्रजा राजा तथा मन्त्री की प्रशंसा करती थी। जब कोष लगभग समाप्त हो गया तो मन्त्री ने गुप्त रूप से शालीवाहन को सूचना दे दी। शालीवाहन ने आक्रमण करके नभोवाहन को पराजित कर दिया क्योंकि नभोवाहन के पास पैसों की कमी होने के कारण सैना आदि का प्रबन्ध न कर सका। भरुकच्छ पर शालीवाहन का राज्य हो गया।[1]

शालीवाहन की रानी का नाम चन्द्र लेखा था। इस के गुरू नागा-

१. आवश्यक चुर्णी भाग-२ पृष्ठ २००-२०१

र्जुनचार्य थे। नागार्जुनचार्य आकाशगामी विद्या व स्वर्ण बनाने की विद्या के पारंगत थे।[१] नभोवाहन के पिता का नाम ईश्वर सैन था।[२]

सिद्धयोगी नागार्जुनचार्य:— राजपुत्र रणसिंह की भोपला नाम की पुत्री से नागराज वासुकी का प्रेम हुआ। उस से नागार्जुन का जन्म हुआ। वासुकी ने स्नेह वश बहुत प्रकार की औषधियां सिद्धियां ताम्र से स्वर्ण बनाने की विधि व आकाश गामी वन्त्र बनाने की विधि सिखलाई। नागार्जुन शालीवाहन व उसकी रानी चन्द्र लेखा का राजगुरु नियुक्त हुआ। नागार्जुन के गुरु पादलिप्ताचार्य थे। उसने अपने गुरु के कहने से महावीर स्वामी की प्रतिमा पालो ताणा में स्थापित की।[३] नागार्जुनचार्य की अध्यक्षता में बल्लभी में एक महासभा सन् ३१३ ई० में हुई, जिसमें जैन धर्म की विचार धारा पर प्रकाश डाला गया।[४]

राजा तान:—राजा तान ने सन् ई० ३७० से ३९५ तक राज्य किया। यह हस्ती वर्मन का पुत्र देववर्मन का पौत्र व शालीवाहन का पडपौत्र था। तान के दो पुत्र हुए। एक से चालुक्य शाख व दूसरे से कलिंग राज व कुलारु शाख चली।[५]

चालुक्य वंश बादामी (बीजापुर)

चालुक्ल वंश का संस्थापक जयसिमां वर्मन था। यह कुल सातवाहन बंश के हरतीपुत्र विष्णु कदा कुदु कुलानन्द सातकर्णी के वंशजों में सालवाहन के परपौत्र राजा तान के वंश से चला[६]। जयसींमा वर्मन का विवाह ध्रुववन्ती से हुआ। जयसींमा बातापी (बीजापुर) का राजा था।[७] जयसींमा का गौतम गौत्र था। यह वीसा वैश्य कहलाते थे।[८]

१ गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास पृष्ठ-१२५
२. गजटियर भरुच पृष्ठ ५५
३. प्रभाव चरित्र पादलिप्ताचार्य सूरी प्रबन्ध पृष्ठ-९२ नागार्जुनचार्य प्रबन्ध पृष्ठ-९१
४. सौराष्ट्रनो इतिहास पृष्ठ १९१
५. सक्सैसरज आफ सातवाहन पृष्ठ-६३ से ८३ तक।
६. सक्सैसरज आफ सातवाहन पृष्ठ ७७
७. दक्षिण भारत का इतिहास पृष्ठ-२३
८. चालुक्ल बंश आफ बादामी पृष्ठ २५

Remove Watermark Now

जयसींमा का एक तामपत्र मिला है इसमें इसको वैश्य तथा गौत्र गौतम लिखा है।[१] एक अन्य ताम्रपत्र में हरती पुत्र मानव गौत्र लिखा है। इस की उपाधि श्री पृथ्वी वल्लभ थी। इसका पुत्र रणराग था।

चालुक्यों के बारे में दंत कथा है कि ब्रह्मा जी से मनु हुए। इस वंश के ५९ पूर्वजों ने अयोध्या पर राजा उदियन तक राज्य किया। इन के १६ राज्य दक्षिण पथ में हुए। इनको दक्षिणाधिपती भी कहा जाता है।[२]

रणराग:—रणराग जयसींमा श्री पृथ्वी वल्लभ का पुत्र था।

पुलकेशिन प्रथम:—पुलिकेशिन प्रथम श्री पृथ्वी वल्लभ रणराग का पुत्र था। इसका विवाह बपुरा वंश के राजा की पुत्री दुर्लभ देवी से हुआ। पुलकेशिन का अर्थ महान शेर अर्थात सिंहों का सिंह है। इसने सत्यश्रेय श्री पृथ्वी वल्लभ की उपाधि धारण की। इसने बातापी को सुन्दर व सुदृढ़ बनाया।[३] पुलकेशिन का राज्य सन् ५४३ ई० से ५६६ तक रहा।[४] पुलकेशिन के दो पुत्र कीर्तिवर्मन व मंगलेश्वर हुए।

कीर्तिवर्मन—कीर्तिवर्मन ने ५६६ से ५९८ तक राज्य किया। इसकी उपाधि सत्यश्रय श्री राम विक्रम रण विक्रन्ता श्री पुराण प्रकरण श्री श्री वल्लभ परम भागवत थी। यह चारों वेद व शास्त्र व अठारह पुराणों के ज्ञाता थे। और बड़े-२ यज्ञों के करने में लगे रहते थे।[५] इसका विवाह सेंदरक वंश के राजा श्री वल्लभ सेनानन्द की पुत्री से हुआ।[६] इन्होंने अश्वमेघ बाजपाई, हिरण्यगर्भा, रांजसूय, अग्निहोग विष्णु, महाविष्णु तथा अनेक यज्ञों जो शास्त्रों में वर्णित है किये। महाकूट शिलालेख द्वारा पता चलता है कि इनका राज्य महाराष्ट्र, गुजरात, अंग वंग, कलिंग, वत्स, मगध केरल, गंग मुशक, पाण्डेय, धामला, वैजयन्ती तक था।[७] इनका भाई मंगलसैन

१. सक्सैसरज आफ सातवाहन पृष्ठ ३४०
२. चालुक्य आफ बादामी पृष्ठ २१
३. दि हिस्ट्री आफ दक्कन पृष्ठ २०७
४. दक्षिण भारत का इतिहास पृष्ठ १४२
५. दि हिस्ट्री आफ दक्खन पृष्ठ २०८
६. वही पृष्ठ २०९
७. वही पृष्ठ २०७

pdfelement

अपनी सेना को साथ लेकर राज्यों को विजय करता और अपने भाई के चरणों में यज्ञों के उपहार के रूप में अर्पण कर देता। किर्तीवर्मन की राज्य सीमा समुद्र मे जयपुर व वस्तर तक थी।[1]

मंगलेश्वर या मंगलसेन:— मंगलेश्वर राजा पुलकेशिन के पुत्र किर्तीवर्मन के छोटे भाई थे। इस की उपाधि रण विक्रन्ता श्री वल्लभ थी। इन्होंने चालुक्य राज्यों का विस्तार किया। कदम्बों मोर्यों, कलचरियों, शंकरगणों आदि नरेशों पर विजय प्राप्त की तथा अपने आधीन किया। ५९० ई० में कोनकन के राजा ध्रुब इन्द्र वर्मन ने विद्रोह किया उसे विजय किया।[2] किर्तीवर्मन के स्वर्गवास के वाद सन् ५९८ ई० में इसकी पुत्र की कम आयु होने के कारण मंगलेश्वर गद्दी पर दैठे। सन् ई० ६०२ में भरु कच्छ पर आक्रमण करके बुद्धिराजा कोर पराजित किया। यह युद्ध एक वर्ष तक चला।[3]

मंगलेश्यर वैसाख पूर्णिम (१२ अप्रैल ५९८) को सिंहासन पर बैठा।[4] इसने महा कटेश्वर महाविष्णु गृह मन्दिर बनवाये। मंगलेश्वर ने अपने पुत्र को युवराज पद दिया जिस पर किर्तीवर्मन के पुत्र पुलकेशिन II ने विद्रोह किया। भयंकर युद्ध हुआ। ६१० ई० में मंगलेश्वर मारे गये। पुलकेशिन राजा बना। इसका नाम लक्ष्मेश्वर था।

अगर वर्मन (उगा वर्मन)

महाराजा श्री बल्लभ मंगलेश्वर परम भागवत के ग्रह में सन् ५८० ई० में इन्द्र बर्मन ने जन्म लिया। प्यार से उसे उगा नाम से सम्बोधित करते थे। उगा वर्मन के ताऊ किर्तीवर्मन हर समय किसी यज्ञ में दक्षित रहते थे। उस समय यज्ञों में पशु बलि देने का विधान था। किर्तीवर्मन ने सन् ५९५ ई० में यज्ञों व पशु बलि निषेद्ध कर दी। किर्तीबर्मन के स्बर्गवास के बाद श्री बल्लभ मंगलेश्वर गद्दी पर बैठा तब उगा वर्मन को राज्यपाल नियुक्त करके भेजा। उगा वर्मन ने ताम्र पत्र द्वारा

१ वही पृ० २०८
२. वही पृ० २०९
३. भरुच गजटियर पृ० ६३
४. दि हिस्ट्री आफ दक्खन पृ० २०९

Remove Watermark Now

दो गाँव भगवान बाराह देव मन्दिर को दान दिये।[1] सन् ६०२ में बुद्धि राजा शंकर गण भरुच पर आक्रमण करके विजय किया। तव इनको सत्य-श्रय ध्रुव राजा इन्द्रवर्मन की उपाधि से विभूषित किया[2] ५ जनवरी ६१० को इन्होंने दो गाँव शिवराय मन्दिर को दिए। इन ताम्रपत्रों से पता चलता है कि ये वैश्य मण्डल के अधिपती ये।[3] मंगलेश्वर ने अपने पुत्र को युवराज पद दिया। इस पर किर्तीवर्मन के पुत्र लकेशिन ने विद्रोह किया, तथा भयंकर गृह युद्ध हुआ। मंगलेश्वर मारे गये। पुलकेशिन II विजयी हुआ। मंगलेश्वर के पौत्र अग्र वमन के पास भरुच का राज्य रहा, सन् ६३८ में अपने भाई को राज्य देकर उत्तरी भारत चले गये। अगर-वर्मन के पास भरु कच्छ रह गया।[4] अगर वर्मन ने अपने पुत्रों का विवाह आगरा मथुरा के नाग पदम की पुत्रियों से किया।[5] वल्लभी तालुका पर ६१८ से ६३८ ई० तक तान वंश का राज्य था इस काल में अरबों ने गुजरात पर आक्रमण किये।[6]

इन्होंने उगसेणगढ़ (जुनागढ़) व आगरा के किले बनबाये।[7] गृह कलह की बढ़ोत्तरी देखते हुए वह लोधखा (जैसलमेर) आ गषे और वहाँ से आकर नया राज्य स्थापित किया।

अग्रोहा राज्य का निर्माण

अग्रसैनने पंजाबमें कुरुक्षेत्रके आस-पासका भाग विजय किया। दृष्द्दती व सरस्वतीके संगम पर एक स्थान उजाड़ पड़ा था जिसे चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा विवरण में लिखा है कि मैं थानेश्वर में हर्षवर्धन से मिल-कर झांसी होकर सरस्वती नगर जा रहा था। मार्ग में एक बड़ा खण्डहर पड़ा था। ह्वेनसांग ६३० ई० पूर्व में हाँसी व सिरसा आया है अर्थात यह

१. प्रोग्रैस रिपोर्ट आफ RR इन कोलम्बो 941-46 P.P 128, 19 A RIF 1949-50 P-P, RI, E, I—Vol XXXII P-293-298
२. गजटियर भरुच पृ० ६३
३. ताम्र प्लेट JBBRAS-VolXPP 348-367
४. सौराष्ट्रनों इतिहास पृ० १२५
५. गुजरातनों मध्यकालीन इतिहास पृ० ५२५
६. गुजरातनों अने राजकीय सांस्कृतिक इतिहास पृ०
७. रासमाला भाग १ I पृ० २१

pdfelement

स्थान अग्रोहा ही है जो कि ६३० ई० में वीरान पड़ा था।[1] इस स्थान पर अग्रसैन ने अपनी राजधानी बनाई। अर्थात विक्रमी संवत ६९९ तदनुसार सन् ई० ६४३ में राजधानी बनाई। तथा अपने साथ गुजरातसे आये बन्धुओं व मित्रों व सेना व सामन्तों को बसाया। ऐसा प्रतीत होता है कि साथ आने वाले सामन्तों ने अपने गुजरात के नामों पर ही अपने पंजाब के नये स्थानों जहां पर वे बसे अपने नाम रख लिये। गुजरात के दौरे से पता चलता है कि आसिका, कण्डेला, आदमपुर, पाली नन्दगढ़, दुर्जनपुर, लोहपुर, कुम्हारियां, पण्डारक आदि अनेक गांव,आश्रम व तीर्थों के नाम मिलते हैं। देखने में भी गुजरात के प्राचीन, बाद में बसे लगते हैं।[3] जो ऋषि पुरोहित रूप में आये थे उनके नाम पर आश्रम भी बने तथा उनको ही अपने पुत्रों का पुरोहित नियुक्त किया।[4] राज्य को समृद्ध व शक्तिशाली बनाने हेतु यह नियम बनाया कि जो व्यक्ति नया आये उसे गाँव का हर व्यक्ति एक मुद्रा व एक ईंट भेंट स्वरूप दें ताकि आने वाला व्यक्ति बराबर का हो जावे और दान न देकर भेंट से उस में दीन भावना न आये।

अपितु सोचे कि मुझे सम्मानित किया गया है। राज्य की शासन व्यवस्था भी गणतन्त्र थी। राज्य मन्त्रियों की नियुक्ति चुनाव प्रणाली द्वारा होती थी राज्य का हर व्यक्ति राज्य के प्रति उत्तरदायी था। शान्तिकाल में अपने स्वभावक कार्य करते थे। सम्भवतः सभी व्यक्ति ऐसे राजा को अपना पिता मानते हो।[5] राजा अग्रसैन के पुत्रों ने सांमन्तों राजाओं की पुत्रियों से विवाह किये।[6] उनका विवरण निम्न हैं:—

राजकुमारों व वासगी नाग पुत्रियां

राजकुमार	नागकन्या	राजकुमार	नागकन्या
१. पुष्पदेव	पहनावती	९, रणवार	लक्ष्मी

१. सफनामा ह्वेनसांग उर्दू पृ० २४५
२. फुलकिया स्टेट गजेटियर पृ०
३. इसी पुस्तक के पृ० ९५ पर देखें
४. तालिका ऋषि आश्रमों व स्थान इसी पुस्तक पृ० पर देखें।
५. किवदन्ती पर आधारित
६ प्राचीन हस्त लिखित लेख से

Remove Watermark Now

राजकुमार	नाग कन्या	राजकुमार	नागकन्या
२. भीमदेव	तम्बोली देवी	१०. शिवजीभान	विष्णुदेवी
३. देवभागसिद्ध	शशीदेवी	११. वालकृष्ण	पाली
४. वसुदेव	शिशुमती	१२. कोलदेव	मानदेवी
५. अर्जुन	गोमती	१३. रणकृत	गोमती
६ धर्मनाभ	केशोदेवी	१४. गुप्तनाभ	अमरावती
७. केशव देव	लड्डूवती	१५. वासगी	रामावती
८. वशुभान	आशावती	१६. भुजभान	अचलादेवी
		१७. शिवजीसर्वा	नौरंगदेवी

राज कन्याओं से विवाह इन १७ पुत्रों का १७ राजाओं की कन्याओं से हुए जो निम्न हैं:—

राजकुमार का नाम	राजकन्या	पिता का नाम	राजधानी	वर्तमान नाम
१. पुष्पदेव	पोपनिद्रा	साधुवान	सिंहलदीप	सिंघाना
२. भीमदेव	चन्द्रावती	चन्द्रसेन	अवतार गढ़	अवतारगढ़
३. देवभाग	सिन्धुवती	सिन्धुराज	मांडुगढ़	माण्डू
४. शिवजीभान	हंसावती	अमरजीत	रक्षागढ़	राखी
५. बालकृष्ण	आशावती	मचुकन्द	अगदगढ़	इगराह
६. वसुदेव	चन्द्रावती	विजयचन्द	जयगढ़	जयपुर
७. कोलदेव	रतिबामा	मकरसैन	वैश्यगढ़	वसादाखेड़ा
८. रणकृत	सोमावती	सैनचन्द	रंगपुर	
९. रणवीर	पुष्पमित्रा	महेश्वर	भ्रान्तपुर	भानपुरा
१०. अर्जुन	पुष्पावती	अमरसैन	अमरावती	अम्बाला
११. गुप्तनाभ	साधुवती	इन्द्रसैन	हीरा नगर	हीरानगर
१२. धर्मनाभ	बामा	शैल्य	भीमपुर	भम्भेवा
१३. केशवदेव	नौरंगदेवी	मनेन्द्र	सरदार गढ़	सरदारगढ़
१४. भुजभान	बसन्ती	यादवधर	पालनगर	पाली
१५. वंशुमान	मोरदेवी	राजा मणीधर	तारानगर	धरोन्दखेड़ा
१६. वासगी	गोमती	राजाकृष्ण	राजपुर	राजपुरा
१७. शिवजीसर्वा	शैलवती	विरोचन	रामपुर	रामपुरा

उन ऋषियों के नाम तथा आश्रम इस प्रकार थे।

ऋषियों के नाम	आश्रम	स्थान	वर्तमान नाम
१. गर्गाचार्य	गर्गाश्रम	गोभवन	गोभवन
२. गौतमाचार्य	गौतम आश्रम	व्यास स्थली	व्यासतीर्थ
३. वशिष्ठ	वशिष्ठाश्रम	वंशभुल	बरसोला
४. कौशिकाचार्य	कौशलाश्रम	काम्यक	कमोद
५. जमदग्नि	जमदगन्याश्रम	रामहृद	रामराये
६. मैत्रेय	विश्वमित्राश्रम	बारहवर्ण	बहरगांव
७. मंगलाचार्य	मधुकुलाश्रम	मानुष मधुवन	मानस
८. बिन्दलाचार्य	पांतजलाश्रम	पंचतरणी मुंजवट	इगराही देवी स्थान
९. अरुणाचार्य	अत्रीआश्रम	अरुणाय	अरुणाय
१०. पायलाचार्य	शुकुलमनि आश्रम	शतकुंभा	कुंभा
११. शांडिल्य	शांडिल्याश्रम	शालुकी	शीला खेड़ी
१२. कछलाचार्य	कौशकाश्रम	कृतशौच	डीन्डु सर
१३. तुंगलाचार्य	तुंगलाश्रम	सुतीर्थ	सुथ
१४. तेत्रर्याचायं	पुण्डरीकाश्रम	पुण्डरीक क्षेत्र	पुण्डरी
१५. ढालाचायं	पारापर आश्रम	पांच नन्द	पाजु
१६. मधुकुलाचार्य	भारद्वाज आश्रम	मधुबन	मधुवन
१७. कश्यपाचार्य	कश्यपाश्रम	कपीस्थल	कैथल

"अग्रसैन के पुत्र व पुत्रवधुओं के नामों की सूची पृष्ठ २३ के अनुसार:—

क्र०	गौत्र	पुत्र का नाम	नागकन्या का नाम	राजकन्या का नाम	राज्य का नाम
१.	गर्ग	पुष्पदेव	नागगौरी	पोपनिद्रा	सिहल सिंह (सिंधाना)
२.	गोयल	भीमदेव	नागकन्या	चम्पावती	रोहतक गढ़ (रोहतक)
३.	कंसल	वासुदेव	कनक केसरी	सिन्धुवती	माण्डुगढ़
४.	बंसल	देवसिद्ध	सावलनागनी	यशोबली	दरयावखेड़ा (दरयावाल)

Remove Watermark Now

क्र०	गौत्र	पुत्र का नाम	नाग कन्या का नाम	राजकन्या का नाम	राज्य का नाम
५.	मंगल	धर्मनाम	श्यामरतनी	आपावती	भानखेढ़ा
६.	सिहल	बालकृष्ण	श्यामरेखा	हरसैनी	तारा नगर (राजस्थान)
७.	मित्तल	भुजमान	समुदरेखा	बसन्ती देवी	लालनगर (लालकोट)
८.	चित्तल	वासुदेव	चित्ररेखा	श्यामदेवी	रंगपुर
९.	ऐरण	गुप्तनाम	गौरेजा	अमरदेवी	उजीन
१०.	टेरण	धर्मनाम	करंमावती	गौमती	तारानगर
११.	तायल	शिवजीभान	इन्द्रकवरी	नौणादेवी	सरबगढ़
१२.	तुंगल	रणकृत	गुणमाल	चन्द्रावती	भ्रान्तपुर (भानपुर)
१३.	जिन्दल	अर्जुन	शोभावती	फूलनवती	,,
१४.	बिन्दल	केशवदेव	सौभारूप	शीलवन्ती	दामणपुर
१५.	कुच्छल	कंवलदेव	सपबंदरी	माधोवन्ती	जीयंतपुर (जीन्द)
१६.	बाछिल	वासगी	कलावती	लोकनिन्द्रा	,,
१७.	गोयन	शिवजी	मनभावती	मोहनदेवी	भीमसुर
१८.	गुणराज	गुणराज	गौमती	तारादेवी	हेरम्बपुर

गौत्र समीक्षा

अग्रपुराण अनुसार १८ गौत्रों के नाम निम्नलिखित हैं।

१. गर्ग	२. गोयल	३. कंसल	४. बंसल	५. मित्तल
६. सिंहल	७. चित्तल	८. ऐरण	९. टेरण	१०. तायल
११. तुंगल	१२. मंगल	१३. जिन्दल	१४. बिन्दल	१५. कुच्छल,
१६. बाछिल,	१७. गोयन	१८. गुणराज		

संवत ११६१ में राजा अनंतपाल के समय बाछिल व गुणराज गौत्र पुरोहित (गुरु) बदलने के कारण ढालन व ढाकल १७½ गौत्रों में परिवर्तित हो गया।

इन गौत्रों के नाम निम्नलिखित हुए।

गर्ग, गोयल, कंसल, बंसल, मित्तल, सिगल, चित्तल, ऐरण, टेरण, तायल, तुगल, मगल, जिन्दल, बिन्दल, कुच्छल, ढालन, ढाकल, गोयन।

ढाकल गोत्र अग्रोहा से जाकर ढोसी बन गया तथा ढूसर कहलाया। जिसमें महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य हुआ चित्तल गौत्र के लोगों ने वैश्य वर्ण नहो अपनाया तथा वह क्षत्री रहे। जिसका वर्णन "पंजाब कास्टस" पृष्ठ १२३ पर इस प्रकार लिखा है:—

No-21. The Chahil appear to be one of the largest Jat Tribes in the province They are found in the greatest number in Patiala, but are very numerous in Ambala and Ludhiana. Amritsar and Gurdaspur and extend all among under the hills as far as west at Gujrawala and Sialkot. It is said that Raja Aggersain Surjabansi had four sons, Chahil, Chima, China and Sahi and that four Jat Tribes who bear these name are sprung from them. Their original home Malwa, whence they migratd to Punjab, according to another story their ancestor was a tunwar Rajput called a Raja Rikh who came from the Daccan and settled at Kahlor. His son Birsi marrida Jat woman, settled at metti in the Malwa about the time of Akbar and founded the tribe

महाराजा अग्रसेन की अग्रोहा राज्यावली

(हस्तलिखित अग्रपुराण के अनुसार)

पृष्ठ ५०

अग्रसैन

(विक्रमी सम्वत् ६९९, मंगसिर कृष्ण पंचमी शनिवार को अग्रोहा का निर्माण आरम्भ करवाया।)

↓

पुष्पदेव

एवं सरारह पुत्र (पुत्रों के विवाह मथुरा के राजा पदमनाग की कन्याओं से साका सम्वत् ५७० माघ सुदी पंचमी को हुआ।)

Remove Watermark Now

गोविन्द राये	सुरजमल	धमोर राये	बनबीर राये
↓	↓	↓	↓
जोहरमल	हरसुन्दर	रघुनन्दन	मुकुटसी
↓	↓	↓	↓
गोहरमल	हर सहाय	अर्जुन	आनन्दराये
↓	↓		
महीजन	सावलराय		
महीराम			
सावतदेव			

श्री पती	बलबोर	धनपत

छनलसी इन १९ राजाओं ने भाईचारा परम्परा अनुसार १९२ वर्ष राज्य

गुणपात किया। गुणपाल शक संवत ७५० में विक्रमाजीत तौमर का

गणपतराये दीवान बना। भविष्य पुराण प्रथम खंड पृष्ठ ३३६ श्लोक

गुणगंभीर ७ प्रमर राज्य कलयुग सम्वत ३७१० में आरम्भ हुआ।

प्राक्रमराये अर्थात विक्रमी सम्वत ७१० में प्रभर हुआ। तथा इस वंशावली

मुतकेश में राजा तौमर विक्रमाजीत विक्रमी सम्वत् ७७७ में सिहासन

महेशपाल पर बैठा। (पृष्ठ ५५) हेमराज ने १८ गौत्री ठाकुरों सहित

मेघराज राजा अनंग पाल के समय सन् १११० ई० सम्वत ११६०, वैशाख

|

दुल्हाराये कृष्ण चर्तुदशी को देहली के राज्य सिंहासन पर बैठा।

|

सीताराम चंचलराये अग्रोहा के सिंहासन पर बैठा। चंचलराये के

|

सूरजमल वंश में अग्रोहा का अन्तिम राजा धीरपाल संवत १२५०

|

भारमल सन् ११९३ में मोहम्मद गौरी से हार गया। सम्वत् ११६१

|

हेमराज विक्रमी में बाछिल व गुणराज गौत्रियों ने अपना पुरोहित बदलकर भार्गव ऋषि को गुरु बनाया और उन्हें ढालन व ढाकलगौत्र मिला।

अग्रसैन सन्तती

(हस्तलिखित अग्र पुराण से)

	१	२	३	४
१.	गर्ग	गोविन्द	सूरजमल	धमीरराये	बनवीरराये
२.	गोयल	गोकुल	दुजोधन	बहितसी	तैजसी
३.	बंसल	बिरसल	वत्सराज	तेजसी	ब्रह्मराज
४.	कंसल	केसरीमल	रावलमल		
५.	मंगल	यशोधर	माणिकराये	गिरधर	गंभीरमल
६.	सिंहल	श्रीधर	जंगमराये	ज्योन्सी	चामुण्डराये
७.	मित्तल	भीष्णदेव	दुर्जनराये	रायमल	पूर्णचन्द
८.	मित्तल	चाहिल	मोधुकल	त्रिलोकराये	हरवंश
९.	ऐरण	अरमल	परमल	इन्द्रभान	बलराम
१०.	तायल	तरहल	मनरूप	तेजपाल	मनराये
११.	टेरण	ढालन	पालनराये	कंवलसी	साँवलराये
१२.	तुंगल	तुरहन	लाखनसिंह	हरपाल	भारमल
१३.	जिन्दल	जगपाल	गुणराज	जालिभराये	ज्योण्डसी
१४.	बिन्दल	कनकराये	जसपाल	धवलसी	करणसी
१५.	कुच्छल				

Remove Watermark Now

	१	२	३	४
१६.	बाछल	बलवन्तराये	किसालचन्द	वनमाली	वीरसिंह
१७.	गोयन	तोयण	अरधनराज	गोवर्धन	हरसहाये
१८.	गुणराज	गुणपाल	गोणकर	भान जी	सेठ उत्तमचन्द

अग्रोहा पर सिकन्दर रूमी का आक्रमण तथा बारह हजार सती होना

विक्रमी संवत् ७५९ में अग्रोहा पर राजा पुष्पदेव का राज्य था जो कि महाराज अग्रसेन के पुत्र थे। उस समय अग्रोहा राज्य की जनसंख्या एक लाख पच्चीस हजार घरों की थी। और राज्य से आंसी (हांसी) धर्मगढ़ (धरोड़ खेड़ा) रक्षागढ़ (राखी) मान्डोगढ़ (भाण्डो) अंगदगढ़ (ईगराह) जैयन्तगढ़ (जींद) बाराहगढ़ (बरवाला) आदि १२ गढ़ थे। जीन्द का भाग बहत्तर का इलाका कहा जाता था। वर्तमान में भी बहातरा कहते हैं। बहतरे का मुखिया रतनसेन गोकुलचन्द थे। इस काल में बगदाद में खलीफा बलीद ग्यारहवां का शासन था। तथा अरब में बादशाह सिकन्दर रूमी शासन करता था। इसने भारत पर आक्रमण किया और भटनेर (हनुमानगढ़) को विजय करके वहाँ से दक्षिण की ओर दुन्दसार नगर को नष्ट करके अग्रोहा पर आक्रमण किया।[1] उसके साथ तौमर, राजपूत राजा समरजीत भी था। वह अग्रोहा को अपने आधीन करना चाहता था। सिकन्दर ने अग्रोहा को घेर लिया परन्तु कई बार आक्रमण करने के पश्चात् भी सफलता नहीं मिली। तब सन्धि के लिये दूत के द्वारा एक पत्र गढ़ में समरजीत ने भेजा। तथा कहा कि अपने लिए दूसरा गढ़ बनवालो मैं वापिस चला जाता हूँ। जब दूत पत्र लेकर राजा नन्द के पास पहुंचा तों राजा अमृत-सेन ने कंवर इन्द्रसेन को आदेश दिया कि पत्र सभा में पढ़ कर सुनाया जावे। पत्र सुनकर सेनापति तथा सदस्यों ने क्रोधित हो कर कहा कि हम क्षत्री हैं। मर मिटेंगे परन्तु अपनी राजधानी नहीं देंगे। दूत ने वापिस जाकर सारा हाल सिकन्दर को कहा कि वहां का बच्चा२ मरने को तैयार है परन्तु गढ़ नहीं देना चाहते। और सभा में बहतरे के मुखिया रतनसेन, गोकुलचन्द नहीं थे। उनकी राजा से अनबन प्रतीत होती है।

शाह सिकन्दर ने अग्रोहा के निवासियों में फूट डालने का षड़यन्त्र

---

१. इतिहास राजस्थान भाई कर्नलटाड परिच्छेद-५१ पृष्ठ ५४२

रचा और रतनसेन को पत्र लिखा कि तुम मुझ से मिलकर मेरी मदद करो तो अग्रोहा राज्य तुम्हें दे दूंगा। दूत द्वारा रतन सेन को पत्र भेजा तब रतनसेन ने पत्र पढ़ा तो क्रोधित हुआ और दूत को फटकार कर निकाल दिया। दूत को वापिस जाते हुए गोकुलचन्द मिल गया। दूत ने पत्र गोकुलचन्द को दिया। गोकुलचन्द ने दूत को आश्वासन दिया कि मैं रतनसेन को समझा कर शाह के पास लाऊँगा। तथा रतनसेन को समझाया कि हम शाह के साथ मिल जाते है। तो तमाम राज्य अपना हो चाएगा। रतनसेन मान गया तथा रात्रि में शाह से मिले। शाह ने अग्रोहा देने का वायदा किया। परन्तु तुम्हारा विश्वास तब करूँगा जब तुम कलमा पढ़लो और मेरे साथ प्याला पी लो। कहीं तुम धोखा देकर मेरी ही सेना की सफाई न कर दो। तब उन्होंने कलमा पढ़ा तथा शाह के साथ खाना खाया लालच में अपना धर्म ईमान खो दिया। षड़यन्त्रअनुसार रात्रि के समय गोकुलचन्द रतनसेन अपने साथियों के साथ द्वारपाल के पास आकर कहने लगा कि हम रात्रिको शाह की सेना पर आक्रमण करेंगे, दरवाजा खोल दो। दरवाजा खुलने के बाद ज़ाकर शाह से मिले और उसकी सेना को अपने पीछे लगा कर वापिस आये। और द्वारपाल से कहने लगे कि दरवाजा खोलो, शाह की सेना हमें मारती आ रही है। जब गोकुल चन्द व रतनसैन अपने साथियों सहित गढ़ में प्रवेश कर गये तब अग्रोहा की सेना ने जल्दी से द्वार बन्द कर दिया। शाह की सेना अन्दर न आ सकी। शाह ने सैनापति विलियम से कहा कि किसी प्रकार गढ़ का द्वार तोड़ा जाये। सैनापति ने हाथियों द्वारा द्वार तोड़ दिया और आक्रमण कर दिया। रतनसेन ने जाकर मेंगनीज को आग लगा दी तथा साथ में आप भी जल गया। राजा अमृतसेन व दोनों कंवर वीर गति को प्राप्त हुए। अमृतसेन के पौत्र इन्द्रसेन के पुत्र उत्तमचन्द ने गोकुलचन्द को मार डाला। इस युद्ध में अनेकों वीर वीरगति को प्राप्त हुए। जब रानी लक्ष्मी ने यह हाल देखा तो समरजीत को कहलाया कि तुम भी क्षत्रिय हो। अब गढ़ पर तुमने विजय प्राप्त कर ली है, हम सती होना चाहती हैं। हमें अपने पतियों के शवों के साथ सती होने दो। शाह और समरजीत ने सेना को रण से हटा लिया। तथा १२,००० महिलाओं ने अपने पतियों के शव ढूँढ़कर सती होने की तैयारी की। राजा समरजीत ने रानी से कहा—माँ में तुम्हारे पौत्र उत्तमचन्द को यहाँ का राजा वनाता

Remove Watermark Now

हूँ। तथा मैं अग्रोहा विजय नहीं कर सकता था। यह काय रतनसेन व गोकुलचन्द के कारण ही हुआ है। रतनसेन के पुत्रों से कहा कि जब तुम अपने कुटुम्ब के नहीं हुए तो किसी और के भी नहीं हो सकते। सती रानी ने कहा कि रतनसेन तथा गोकुलचन्द के २९ साथियों के साथ किसी प्रकार का खानपान आदि न रखें। १२,००० महिलाएं सती हो गईं। तथा रतनसेन, गोकुलचन्द्र के २९ साथियों को अग्रोहा से निकाल दिया। ये लोग दक्षिण तथा पश्चिम की ओर चले गये। इनके भाभड़ें, सिरालिये, कज्जवाले तीन विभाग हो गये।[1]

नोट—उपरोक्त कथा भाटों की बही में लिखी कविता का सारांश है। इसकी पुष्टि अभी हाल में अग्रोहा में सती के मन्दिर के निर्माण हेतु नींव की खुदाई पर सतियों के अवशेषों के दर्शन प्राप्त होने से होती है। यह अवशेष चार एकड़ में फैले हुए है।

अग्रोहा के राजकुंवर वत्सराज का गुजरात पर आक्रमण

अग्रोहा के राजकुंवर वत्सराज ने गुजरात विजय करने की इच्छा से सेना समेत कच्छ के मार्ग से गुजरात पर आक्रमण किया और अपना राज्य स्थापित किया। अन्त में चूड़ामणी के हाथों मारा गया।[2]

शकेएबबद शतेषु सप्तम दिशा पच्चोतरे युतरां
पातिन्द्रा युद्ध नाम्नि कृष्ण नृपतों श्री वल्लभे दक्षिणाम्
पुर्वाक्षी भदवन्ति भु-भृति नृपे वत्साधिराजेएपरा-
सोर्यानाभधि मण्डले जययुते वीरे बराहऽवति।[3]

अग्रोहावासियों का जैनधर्म अपनाना:—अग्रोहा के राजा दिवाकर ने काष्ठासंघ के लोहाचार्य से जैनधर्म की दीक्षा ली। काष्ठा संघ की गुणभद्राचार्य के भाई विनयसेन के शिष्य कुमारसेन ने शक संवत् ७५३ में नन्दी ग्राम में स्थापना की थी। अतः लोहाचार्य इसके बाद ही पट्टावली

---

१. विष्णु अग्रसेन पुराण पृष्ठ ४०

२. सौराष्ट्रनों इतिहास पृष्ठ २८०

३. ताम्र पत्र E. O. 15 141

आए। अर्थात दिवाकर ने जैनधर्म सन् नौवी शताब्दी में धारण किया होगा।[1]

अग्रोहा पर दिल्लीपति विजयपाल तोमर का आक्रमण

सन् ८७६ ई० में दिल्ली के राजा विजयपाल तौमर ने अग्रोहा व इसके आसपास के इलाकों पर आक्रमण किया तथा विजय किये।[2] ऐसा प्रतीत होता है कि इस विजयपाल तोमर को ही भाटों ने किवदन्ति में समरजीत कहा हो और अग्रोहा राज्य तोमर राज्य के अधीनस्थ हो गया हो। जैसे कहानी सुनी जाती है कि अग्रोहा का राजा दिल्ली गया। पीछे से कोई यात्री आया और उसने पूछा कि यहाँ का राजा कौन है तो उसे उत्तर मिला:—

"मुंग मोठ में कौन बडाला
अग्रोहा में सब ठकुराला"

अर्थात् अग्रोहा में सब ठाकुर राजा है। इस कथन से सिद्ध होता है क उस समय अग्रोहा दिल्ली के तौमर का कर दाता राज्य था तथा उसमें गणतन्त्र प्रणाली लागू थी।[3]

अग्रवालों का देहली पर राज्य

(हस्तलिखित अग्रपुराण पृ० ५४ से ६१)

बल्लभी सम्वत् ७९१ विक्रमी सम्वत् ११५९ में एक घोडों का ब्यापारी काबुल से अग्रोहा आया और सुन्दर घोड़े लाया। उस समय हेमचन्द अग्रोहा का मुखिया था। सभी भाईयों में एकता व समता थी। यहाँ तक परम्परा थी कि जो वस्तु एक भाई लाता वह वस्तु सभी भाईयों को भी मिलती थी। हेमराज ने सभी के लिए घोड़े सभी के लिये मंगवाये। एक दिन सभी भाईयों का देहली घूमने का विचार बना। १८ गोत्रों के १८ मुख्य ठाकुर तथा ७२ थोक के भाईयों ने मिलकर देहली की ओर प्रस्थान किया।

यह सेना हास्य विनोद करती हुई मार्ग में पड़ाव डालते हुए देहली पहुँची। रास्ते में लोग बहुत हैरान थे कि यह सेना बिना किसी को हानि पहुंचाये देहली की ओर क्यों जा रही है। जबकि अन्य सेनाएं तो लूटमार

१. इसी पुस्तक पृष्ठ ६४ पर देखें
२. हिसार गजटियर पृष्ठ ७८
३. किवदन्ति पर आधारित

Remove Watermark Now

करती हुई जाती हैं। इस बात को जानकर देहली वालों ने बाजार आदि बन्द नहीं किये। ये लोग देहली के बाजारों को देखते हुए अन्त में राजदरबार में पहुंच गये। राजा अनन्गपाल तख्त छोड़कर रनवास में भाग गया। जब अग्रवालों ने तख्त खाली देखा तो सभी भाई बारी-२ तख्त पर बैठने लगे और बारी-२ उठने लगे। इस प्रकार काफी समय बीत गया। राजा अनंगपाल ने सोचा कि जो मैं इनसे युद्ध करूंगा तो विजय नहीं कर सकुंगा। इनसे मित्रता करनी चाहिए। तथा दरबार में आ कर बोला, भाईया आप कौन हैं ? कहाँ से आये है ? मैं आपसे मित्रता करना चाहता हुँ। हेमराज जी बोले कि हम अग्रोहा के ठाकुर हैं। देहली देखने आये थे। तख्त खाली देखकर सभी भाई तख्त पर बैठने का आनन्द ले रहे हैं। हमें तख्त की चाह नहीं है। हमारे यहां सभी बराबर हैं। हम न तो परतन्त्र रहना चाहते हैं और न ही किसी को परतन्त्र करना चाहते हैं। अनंगपाल ने कहा कि आप जब देहली आये हैं तो कुछ दिवस हमारे यहाँ पर रहें तथा मुझे अपना मित्र मानें और कुछ दिन यहाँ का राज्य भार भी सम्भालें उन्होंने तीन मास बारी-२ देहली पर राज्य किया तथा राजा अनंगपाल से अग्रोहा आने का वचन लेकर अग्रोहा वापस आ गये। राजा अनंगपाल ने छत्र त्रंवर व निशान भेंट स्वरूप दिये।

राजा अनंगपाल का अग्रोहा आना:—राजा अनंगपाल ने विचार किया कि ये लोग आदर्शवादी है। इनमें एकता व समता है। जब कभी भी इनको ध्यान आ गया तो ये किसी भी राज्य को अपने आधीन कर सकते हैं। कोई ऐसी चाल चलनी चाहिए जिससे ये अलग-२ हो जाए। और वे कमजोर हो जायेंगे। यह सोचकर अनंतपाल ने अग्रोहा जाने का विचार किया। जब अनंगपाल अग्रोहा पहुंचा तो उसका भव्य स्वागत हुआ। कुछ मास ठहरने के बाद राजा ने देहली वापस जाना चाहा तब अग्रोहा वालों ने अनंतपाल को नजराना देना चाहा। राजा बोला कि मुझे नजराना देना चाहते हो तो मुझे वचन दो। हेमराज ने वचन दिया। तब राजा ने कहा कि अग्रोहा हमें दे दो। और आप अपनी अलग अलग जागीर ले लो। वचन से बंधे होने के कारण उनको राजा अनंगपाल का कहा मानना पड़ा। और अग्रोहा छोड़कर अपने-२ ठिकानों पर चले गये। बाद में राजा अनंगपाल के चित्तल गौत्रि चंचलराये को अग्रोहा वापिस दे दिया। यहाँ से भाईयों में आपसी फूट के बीज उत्पन्न हो गये।

pdfelement

अग्रवाल सतियों के नाम (सम्वत ११६५ से)

गौत्र	सती का नाम (हस्तलिखित अग्रपुराण से)
१. गर्ग	अर्पणा सती
२. सिंगल	सुषभामा सती
३. कांसल	स्थोरामा सती
४. ऐरण	
५. टेरण	चेनीसती
६. तायल	आशासती
७. मंगल	जैनासती
८. तुंगल	
९. बिंदल	पदमासती
१०. गोयल	सोरामा व अणवे सती
११. चित्तल	रूपासती
१२. मित्तल	पुरेन्द्ररी व परधणरीसती
१३. गोयन	मानसी सती
१४. जिन्दल	रूपमती व पदमावती सती
१५. बाछल (ढालन)	क्षमासती
१६. काछल	दक्षाणी सती
१७. गुण (ढाकल)	ओमावती सती
१८. बंसल	गंगासती

ये सतियाँ अग्रोहा से निकास से प्रथम हुई। अन्य सतियाँ विक्रमी सम्वत १२५० के बाद हुई हैं।

राजा अनंगपाल के समय विक्रमी सम्वत ११६० में अग्रोहा के १८ ठाकुर जो कि देहली सिंहासन पर बैठे।

(हस्तलिखित अग्रपुराण से)

१.	गर्ग	हेमराज	१०.	टेरण	रघुपती
२.	गोयल	दुर्जनराये	११.	तायल	धीरजमल
३.	कांसल	परमसुखराये	१२.	जिन्दल	जोरावरसी
४.	बंसल	बलरामराये	१३.	कुच्छल	रायवर्षानु
५.	मंगल	महीपतीराये	१४.	वाछिल	सेठ उत्तमचंद

Remove Watermark Now

६.	सिंहल	सुखरामराये	१५.	तुगल	तनसुखराये
७.	मित्तल	मनधारी	१६.	बिन्दल	वीदाराय
८.	चित्तल	नीरपत	१७.	गोयन	धनराज
९.	ऐरण	हरसहाये	१८.	गुणराज	टोडरमल

राजा अनंगपाल ने हर गौत्र को एक-एक ठिकाना दिया जिनका विवरण निम्न है।

गौत्र	ठिकाने	गौत्र	ठिकाने	गौत्र	ठिकाने
गर्ग	सीसर	मंगल	तालुका	तुंगल	मेरठ
गोयल	हाँसी	जिन्दल	डींग	टेरण	जीन्द
सिंगल	महम	तायल	कैथल	चित्तल	पानीपत
मित्तल	रोहतक	कुच्छल	नगर	बिच्छल	अम्बाला
बंसल	नारनौल	ऐरण	करनाल	गुणराज (गौण)	दीप (अम्बाला)
कंसल	सिरसा	गोयन	सारण (अम्बाला)	बिन्दल	दिल्ली के पास

मसुद गजनवी का आक्रमण

महमुद गजनवी के पुत्र मसुद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किया। यह भटनेर (हनुमान गढ़) से चलकर सरस्वती नगर सिरसा पहुँचा। सरस्वती नगर को लूटकर १ जनवरी सन् १०३९ को हांसी पहुँचा। सरस्वती नगर में बच्चों को, बुढ़ों को लूटा तथा मारा तथा गुलाम बनवाया।[१] सन् १०४९ ई० में महीपाल ने देहली, हाँसी व थानेश्वर के इलाके गजनवी के सुबेदार से छीन लिये।[२]

सम्भव है अग्रोहा के राजा मसुद को धन दिया हो और आक्रमण से अग्रोहा बचा लिया हो। क्योंकि फरदोसी शाहनामा में और अलबरोनी अपनी यात्रा में सरस्वती नगर के बाद हांसी पर आक्रमण लिखते हैं। अग्रोहा का नाम नहीं लिखा है जबकि यह मार्ग में पड़ता था।

अग्रोहा पर राजा चंपक सेन का राज्य :- सन् ११०५ ई० में अग्रोहा का राजा चंपक सेन था, तथा ११३९ में इसका पुत्र मेधमल (मेधसेन) राज्य पर बैठा। मेधसेन का दिवान मयाचन्द था। मयाचन्द अपने तान परिवार के ५२५ क्षत्री घरों सहित श्री जिनदत्त सूरी से जैन धर्म से

---

१. शाहनामा फरदोसी पृष्ठ १६३ व सफरनाटा अलबरोनी पृष्ठ १४५

२. दिल्ली सल्तनत ७११ से १५२६ स्पुनन्दन सरकार पृष्ठ ६५

pdfelement

दिक्षित हुआ, जिनदत्त सुरी ने इनको महतान अर्थात महान तान कहा और इनके गौत्र वह ही रखे जो कि इनके पहले थे। इसी महतान से महत्ता शब्द बना। इसी वंश में सेठ हरभजशाह महता हुए। तथा शीला सती को महती सती के नाम से पुकारा जाता है।[1] तथा यह स्पष्ट होता है कि सन् ११३६ तक ये लोग तान नाम से प्रसिद्ध थे। मयाचन्द का निवास स्थान उस समय महम था।

सन् ११३४ में अग्रोहा के राज्य परिवार की शाखा ने बिजनोर के पास मण्डावर गाँव बसाया था।[2]

अग्रोहा पर मोहम्मद गौरी का आक्रमण

मोहम्मद गौरी व पृथ्वीराज का तरावड़ी (तराईन) में युद्ध हुआ। उसमें राजा दलवाहन का पुत्र राजा गोपाल व देवकी का प्रिय अंगद दस हजार सेना लेकर शामिल हुआ।[3] तथा वीरगति पाई।[4] तराईन के युद्ध के बाद मोहम्मद गौरी ने सन् ११६४ में सरस्वती नगर (सिरसा) व कुरमाण (किरमारा) के शस्त्रागार को जलाया।[5] अग्रोहा के अन्तिम राजा धीरपाल को बन्दी बनाकर ले गया। धीरपाल ने ईस्लाम कबूल कर लिया। तथा उसे बनुर का राज्य दिया।[6] मोहम्मद गौरी ने अग्रोहा व इसके आसपास का क्षेत्र जंसलमेर के भीमबल को दिया, जिन के वंशज वर्तमान पटियाला जीन्द के राजा हैं।[7] पृथ्वीराज का सलाहकार प्रताप सिंह श्री माल था। और हांसी का गुजारेदार जसराज भट्ट था। महामन्त्री कैवास दहिया था।[8]

सन् ११६७ में अग्रोहा :- सन् ११६७ में एक पारसी यात्री अग्रोहा

---

१. खरतर गच्छ के प्रतिवन्धित गौत्र व जातियाँ पृष्ठ ५
२. विष्णु अग्रसेन पुराण ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी पृष्ठ ८७
३. भविष्य पुराण भाग २ पृष्ठ १३०
४. पंजाब गजटियर ,, ६५
५. दिल्ली सल्तनत ७११ से १५२६ सयुनाथ सरकार पृष्ठ ६५
६. पंजाव गजटियर पृष्ठ ६५
७. तारिख जीन्द दुलीचन्द पृष्ठ १५ रियासत जीन्द पृष्ट १५
८. पृथ्वीराज रासोचन्द्र वरदाई पृष्ठ १२५

Remove Watermark Now

पहुँचा। यह हस्तिनापुर से चला। हस्तिनापुर से सरस्वती नगर सिरसा के मार्ग पर ११५ मील पर एक बहुत बड़ा नगर मिला, जिसमें कोई मनुष्य नहीं था। हर मकान में कुछ न कुछ समान अवश्य पड़ा था और दीवारों पर गोलों के निशान थे। ऐसा प्रतीत होता था कि किसी बादशाह ने चढ़ाई करके इसे नष्ट किया हो।[1]

अग्रोहा सन् १३४५ में

सन् १३४५ में एक यात्री अबनबतुता भारत आया। यह भटनेर से चलकर सिरसा पहुँचा। वहाँ से अगर सैया होता हुआ सुनाम पहुंचा। अगरसैया से सुनाम १० फरसख (४० मील) था यह नगर खण्डहर था। वहाँ के लोग अकाल के कारण वहाँ से चले गये थे। वहाँ पर केवल एक वृद्ध औरत व आदमी थे। इसने रात उनके पास गुजारी अगले दिन हाँसी पहुंचा। यह नगर खुबसूरत था।[2]

अग्रोहा फिरोजशाह तुगलक काल में :- फिरोजशाह तुगलक सन् १३५१ में गद्दी पर बैठा। और १३८८ तक राज्य किया। इस ने हिसार फरोजा बनवाया तथा हिसार में पानी पहुँचाने के लिए नहर बनवाई। हिसार फरोजा व अपने गुजरी महल व मस्जिद के लिए तमाम ईंट व पत्थर अग्रोहा के भवनों व मन्दिरों को गिराकर मंगवाया व निर्माण में लगवाया।[3] गुजरी महल के सतंम्भ व नाग देवी की मुर्तियाँ व अन्य सामग्री इसकी साक्षी है।

मुगल बादशाह अकबर काल में अग्रोहा :- आईन-ए-अकबरी में लिखा है कि अग्रोहा विश्वा शिकार खूब अस्तक्याम, खसुसन, शिकार गाह।

अर्थात अग्रोहा की जमीन की मालिक सरकार है, यहाँ शिकार खूब मिलता है। बादशाह खासतौर से शिकार खेलने आता है। उसके लिए शिकार गाह बना रखी है।[4]

---

१. मुसाफिर नामा की नकल विष्णु अग्रसैन वंश पुराण पृष्ठ ५६
२. सफरनामा अबन बतुता उर्दू पृष्ठ ११५
३. तारिख फिरोजशाही पृष्ठ ३८५
४. आईन-ए-अकबरी भाग २ पृष्ठ १४२

Agroha is an ancient Town in the Fatehabad Tehsil of Hissar Distt. in the Punjab and is situated in 29/20 North and 70/°38 East thirteen miles north west of Hissar on the Delhi Sirsa Road.

Agroha is said to be the original seat of Agarwal Banias. The ruins of a fort said to have been built by Aggarsen are still visible about half a mile from the existing near the village, there is a large mound. These debris show that at one time Agroha was certainly a large and important city. It was wealthy and prosperous settelment of Banias from eastern Rajputana at the time that the Ghaggar was a perenial river. It does now excavation made in the Agroho mound in 1889 brought to light fragments of sculpture and images. Bricks and coins of all sizes have also been found there. In one place the walls of a substantials house have been laid bare, while a large depression near the mound in which excellent crops are now raised. Aggarsen's fort which dates from before the begining of Christian era is a modern Constructive when compared with these remains.

Agroha was captured by Mohammed Ghori in 1194 or 1195 AD Since that time Aggarwal Banias have been scattered over the whole peninsula. The Emperor Ferozshah Tuglak who reigned from 1351 to 1358. A.D. made Hissar his capital instead of Delhi. When he built new forts and palaces, the material of these royal buildings was brought from the old Hindu Temples but the large quantities were brought from site of Agroha which had lost much of its former importance. During the rise of sikh power Raja Amar Singh of Patiala built a fort on the mound of Agroha in 1774. A.D.

Gazetterers of Punjab and Hissar Distt.)

Remove Watermark Now

सेठ हरभजशाह का अग्रोहा पुनः निर्माण करना:—सन् १५६० में अकबर के समय महम में सेठ हरभजशाह हुए। ये देवीशाह के पुत्र थे। देवीशाह राजा शेखावाटी के दीवान थे। शेखावाटी के राजा ने अपने छोटे भाई को निकाल दिया। तथा देवीशाह को भी निकाल दिया। ये महम आ गए। सेठ हरभजशाह की मित्रता रसालु मलेरकोटले के राजा से थी। हरभजशाह की मित्रता से हरभजशाह महम में मकान बनवा रहे थे। इन्हीं दिनों कश्मीर के व्यापारी के केसर से लदे ऊँट देहली गए। परन्तु बिक्री न होने के कारण वापिस कश्मीर जा रहे थे। महम के पास सौदागर के नौकर आपस में बातचीत करते हुए कह रहे थे कि हिन्दुस्तान में कोई अमीर नहीं रहा जो केसर खरीद सके। हरभजशाह ने इस बात को सुन लिया। और वह केसर खरीद कर मकान में लगने वाले चूने में गिरवा दिया। यह किस्सा नौकरों ने कश्मीर के सौदागरों को सुनाया। तो उसने हरभजशाह को पत्र भेजा कि इतनी बात पर मिट्टी में केसर मिलाया कोई शान नहीं है। तुम्हारा नगर उजाड़ पड़ा है उसे बसाओ तो बात शान की है वरन् कितनी ही शान दिखाओ अधूरी ही रहेगी। इस पत्र को पढ़कर हरभजशाह ने अग्रोहा बसाने का निश्चय किया। तथा अपने मित्रों से मदद मांग कर निर्माण कार्य आरम्भ किया। जिस स्थान पर वर्तमान मीरपुर गाँव बसा है। राजा रसालु भी आने लगा। राजा रसालु ने हरभजशाह की पुत्री शीला को देखा जो रोहतक बिवाही थी। उस पर मोहित होकर कुचेष्टा करने लगा। बश न चला तो अपनी अंगुठी दूती द्वारा शीला के शयन कक्ष में रखवा दी जब कि उसका पति उसको विदा कराने आया हुआ था इसी भ्रम में वह पागल हो गया। शीला अपने पिता के घर ही रही। राजा रसालु से अनबन तो होती ही थी। कार्य रुक गया। यह राजा रसालु भदौड़[1] के राजा भद्रसैन की पत्नी पर भी मोहित था। राजा भदौड़ ने चालाकी से राजा रसालु तथा अपनी रानी व महल सहित जलवा दिया। यह घटना शीला के पति के कानों में पड़ने के बाद वह इसी अवस्था में अग्रोहा की ओर आ गये तथा खण्डहरात में घूमते हुए प्राण त्याग दिए।

---

१. इतिहास भदौड़

जब शीला को पता लगा तो वह अपने पति के साथ सती हो गई। शीला के सती होने के बाद हरभजशाह दुःखी होकर महम वापिस आगये।

महम पर आक्रमण:—अकबर के सेनापति मानसिंह अफगानों को विजय करने के लिए जा रहे थे मार्ग में उन्होंने मदद मांगी। मदद न मिलने पर वापसी में महम पर आक्रमण करके लूटमार की। कई बड़े घरों को आग लगाई। जिसमें केसर से बनी हरभजशाह की हवेली भी थी। भामाशाह भी हरभज के चचीय भाई थे।

महम पर दुर्गादास राठौर का आक्रमण: औरंगजेब के काल में दुर्गादास राठौर ने महम पर आक्रमण किया तथा लूटा। इस लूट के पश्चात् महम के काफी निवासी और स्थानों पर जा बसे।

नाहरसिंह का अग्रोहा में आबाद होना::—कुछ डोंगर राजपूत[1] फैजलपुर से यहाँ पर आये और आबाद हो गये। इसके बाद कुछ भट्टी राजपूत भी यहाँ आकर आबाद हो गये। इस प्रकार २१ घर आबाद हो गये। १६ घर डोगर राजपूतों के, ५ घर भट्टी राजपूतों के। इसके बाद नाहरसिंह राजपूत अपने भाइयों से नाराज हो कर अपने साथियों सहित यहाँ आया और कुछ समय पश्चात् वह भी चला गया। परन्तु उसके साथ आये ८२ घर यहाँ आबाद हुए। सन् १७६१ में १०३ घर आबाद थे।

अग्रोहा का किला व कामेश्वर मन्दिर का निर्माण:—सन् १७८० में महाराजा अमरसिंह पटियाला व उनके दिवान नानुमल व महाराजा जीन्द भागसिंह व उनके दीवान ठण्डीराम ने सलाह करके इन राजाओं को अपने पूर्वजों की राजधानी[2] बसाने तथा मन्दिर निर्माण हेतु प्रेरित किया तथा निर्माण कार्य शुरू हुआ परन्तु कारणवश पूरा न हुआ।

सन् १८४४ में अंग्रेजों ने पटियाला स्टेट से अग्रोहा को ले लिया। १८५७ के स्वतन्त्रता संग्रामके समय अग्रोहा निवासियों ने अंग्रेजों को मारा तथा अंग्रेजों ने अग्रोहा गाँव को वरबाद किया। १८६० में अपने पक्ष के लोगों के नाम जमीन जायदाद बिना पैसे करदी जो कि अभी तक चल रही है।

१. वन्दोबस्त अग्रोहा १८६६-१९१०

२. समशीर-ए-खालसा व इतिहास जीन्द व वन्दोवस्त अग्रोहा १८६६

Remove Watermark Now

नारायणी सती:—इनका इतिहास कर्मठगुरु पत्रिका लाखमपुरखेड़ा से विदित हुआ। इन्हें महारानी सती भी कहते हैं। इनका जन्म हांसी निवासी श्री गुरुसामल के घर संवत् १६३८ में हुआ[1]। इनका विवाह हिसार निवासी सेठ जालीरामजी के पुत्र श्री तनधनदास जी से हुआ। एक घोड़ी को लेकर तनधनदास जी और नवाब में दुश्मनी हो गई थी। जालीराम जी डर कर झुंझनू चले गये थे। जब श्री तनधनदास जी मुकलावा करने गये तो नवाब ने अपनी सैना को कहा कि इनको मार कर इनकी स्त्री को छीन लाओ। जब डोली लेकर झुंझनू की ओर चले, अवसर देखकर नवाब की सैना ने मंगाली गांव के ऊपर आक्रमण कर दिया। मंगाली में इनके सभी साथी रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुए। उस समय नारायणी देवी ने रणचण्डी का रूप धारण कर लिया तथा डोली से उतर कर संहार करने लगी और अकेली ने यवन सैना का विनाश कर दिया। किसी कार्यवश राजा झुंझनू भी इस ओर आ गया। इस घटना को देख सती को माथा नवाया तथा आदेश मांगा। आदेश पाकर चिता तैयार करवाई और रानी सतीपति का सिर गोद में लेकर चौधरीवासमें सं. १६५२ में अग्नि में प्रवेश कर गई। भस्मी का ढेर होने के पश्चात् राणा को त्रिशूल लिये हुए दर्शन दिये। तथा भस्म को लेकर चले जाने का आदेश दिया और कहा जहाँ पर भारी हो जाए, उस स्थान पर मन्दिर बनवाना रानी सती नारायणी जहाँगीर काल में संवत् १६६२ सन् १५६५ में सती हुई थी।

गौत्र निर्माण बारे भ्रान्ति:—कई अग्रवाल लेखकों ने गौत्रों बारे प्रचार किया कि गौत्रमहाराजा अग्रसैन के पुत्रों के नाम से है। और गौत्रों के नाम से मिलते-जुलते अग्रसैन के पुत्रों के नाम रखकर इससे गौत्र सिद्ध करने की कोशिश की। इसमें मुख्य हस्त श्री मामचन्दजी हैदरावाद वाले का है। उन्होंने महाराजा अग्रसैनजी के चित्र पर भी मनगड़ंत नाम लिखे हैं। गौत्रों के साथ इसका कारण यह विदित होता है कि ये मुसलमान सभ्यता के अधिक नजदीक थे। तथा विदेशियों अनार्यों में गौत्रों के नाम पिता के नामों पर रखे जाते थे। उदाहरणार्थ बाईबल[1] में लिखा है कि इसरायल के १३ पुत्र थे, उनके नाम पर साढ़े वारह गौत्र वने। एक

१. राजस्थान का प्राचीन इतिहास (देवकी नन्दन खण्डेलवाल) पृष्ठ ६०

१. बाइबल इतिहास प्रकरण पृष्ठ ५८-५-५८६-६१

pdfelement

पुत्र ने अपनी माता से मुँह काला किया था। उसको अपना गौत्र दिया था। परन्तु आर्यों में आदिकाल से गौत्र अपने गुरु (ऋषि) के नाम पर होते थे। इससे भगवान राम का गौत्र वशिष्ठ था और भगवान कृष्ण का गर्ग। कोई कारण नहीं कि अग्रपुत्र अपने गौत्र अनार्यों के अनुसार रखते।

२. अग्रवालों के जो गौत्रहैं वे सब ब्राह्मणों से मिलते। अतः जो पुत्रों के नाम पर गौत्र होते तो इन गौत्रों वाले ब्राह्मण भी क्या अग्रसैन की सन्तान हैं? अतः भ्रम दूर हो जाता है कि अग्रवालों के गौत्र ऋषियों के नाम पर रखे गए हैं।

३. कई उदाहरण देते है कि जाटों में भी गौत्र पूर्वजों के नाम पर है। क्या वे अनार्य हैं? जाटों के गौत्र हरिजनों, चमारों तथा ब्राह्मणों, राजपूतों व अग्रवालों के नाम भी पाये जाते हैं। इसका कारण है कि प्रथम तो योधेय जाट अनार्य आर्यों के वर्ण शंकर थे। बाद में किसी भी व्यक्ति को किसी जाति से निकाला गया, वह जाटों में शामिल हो गया। परन्तु अपने गौत्र का अस्तित्व रख कर ही इनसे सम्बन्ध रखा। उदाहरणार्थ भविष्य पुराण में लिखा है शहाबुदीन गौरी से हार कर जो वर्ण-शंकर को प्राप्त हुए। वह जाट बन गए। और उन जाटों में से जिसने निम्न कार्य आरम्भ किया, उन्हें निकाला गया। वे निम्न जाति में चले गए।

दूसरे जाटों में गौत्र, गौत्र न होकर आल (ब्योम) हैं। जैसे पटियाला नाभा के राजे सिधु की औलाद होने के कारण अपना गौत्र सिधु मानने लगे। किसी प्रकार का संशय नहीं कि अग्रवालों के गौत्र ऋषियों के नामों पर हैं। तथा कुछ अग्रवाल गौत्रों के उपगौत्र जिन्हे प्रवर आचार्य कहते हैं वह भी लिखने लगे इस कारण १८ गौत्रों से ऊपर जो कोई गौत्र सामने आता है वह गौत्र न होकर प्रवर होता है।

अग्रवाल वंश के ऋषि गौत्र वेद शाखा प्रवर सूत्र का विवरण:-

गौत्र	वास्तविक नाम	ऋषि	वेद	शाखा	सुत्र	प्रवर
गर्गेय	गर्गस्य	गर्गाचार्य	यजुर्वेदी	माधुनी	कात्यायनी	गर्ग अंगरिश वार्हस्पत्य भारद्वाज, शौनक

Remove Watermark Now

गौत्र	वास्तविक नाम	ऋषि	वेद	शाखा	सुत्र	प्रवर
गोयल	गोमिल	गौतम	यजुर्वेदी	माधुनी	कात्यायनी	गौभिल असित, देवल
कच्छल	कश्यप	कुश	शामवेदी	कोसमी	कोमाल	कश्यप असित देवल
मंगल	माण्डव	मुद्गल	ऋगवेद	साकल्य	असुसाई	कोशिक देवराज अध्यवर्ग
विन्दल	वशिष्ट	ववस्य	यजुर्वेद	माधुनी	कात्यायनी	वशिष्ठ चयवन, आप्रवान
टेरन	धान्यास	भारवार	यजुर्वेद	माधुनो	कात्यायनी	धोम्यदातायण अंगरिश
सिंगल	शाण्डल्य	श्रंगी	सामवेद	कौथूमीं	गोभिल	शांण्डल्य, असित देवल
जिन्दल	जैमिनी	वृहस्पति	यजुर्वेद	माध्या-दिनी	कात्यायिनी	जैमिनी, सावेदास, वेतहव्य
मित्तल	मैत्रेय	विश्वामित्र	यजुर्वेद	माध्यादिनी	कात्यायनी	मैत्रेय रैभ्य, आवत्सारा
तुंगल	ताण्डव	शांण्डिल्य	यजुर्वेद	मध्यादिनी	कात्यायनी	ताण्डव दर्दुर जमदग्नि
कांसल	कौशिक	कौशिक	यजुर्वे	माध्यादिनी	कात्यायनी	तैतरेय दिग्पाल गोपाण
तायल	तैतिरेय	साकल	यजुर्वेद	माध्यादिनी	कात्यायानी	तत्स-चव्यन, और्वअत्यवान, जमदग्नि
वांसल	वतस्य	वशिष्ठ	सामवेद	कौथूमी	गौभिल	अगस्त दातव्य धारणर्स
नागिल	नागेन्द्र	कौंडल्य	सामवेद	कौथूमी	असलाईन	नागेन्द्र संख पाल
मुदगल	मुद्गल	आश्वलायन	ऋगवेद	साकल्य	असलाईन	मांडव्य,चव्यन आप्रवान

भदंल	धौम्य	भारद्वाज	यजुर्वेद	माध्यादिनी	कात्यायानी भार्गव चव्यन आप्रवान
गोईन	गौतम	पुरोहित	यजुर्वेद	माध्यादिनी	कात्यायानी मुद्गल अंगरिश चामयश्र्व
ऐरन	और्व	अत्री	यजुर्वेद	माध्यादिनी	कात्यायानीं गौतम अंगरिश बृहस्पति

ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी के लेख अनुसार—

वैवाहिक सम्बन्ध परम्परा:—अग्रवाल समाज में इस किवदन्ती के आधार पर एक बड़ी भ्रान्ती फैली हुई है कि महाराजा अग्रसैन के पुत्रों ने आपसी वैवाहिक सम्बन्ध की परम्परा चलाई यह कदापि नहीं हो सकता कि मुसलमानों की तरह कि चाचा ताऊ के पुत्रों व पुत्रियों में वैवाहिक सम्बन्ध करते, और न ही भारत में उस समय ऐसी परम्परा थी, न ही मुसलमानों का आक्रमण हुआ था। महाराजा अग्रसैन के १८ पुत्रों के गौत्र अवश्य १८ बन गये थे। लेकिन आपसी वैवाहिक सम्बन्ध मोहम्मद गौरी के अग्रोहा पर आक्रमण के बाद आरम्भ हुए। जब राज्य की समाप्ति पर व्यापार आदि करने लगे। अन्य क्षत्रियो ने वैवाहिक सम्बन्ध करने से इंकार कर दिया। तथा निम्न कोटि में वैवाहिक सम्बन्ध उचित न समझ कर महाराजा अग्रसैन को वंश धर मान कर अलग घटक बनाकर आपसी वैवाहिक सम्बन्ध करने की परम्परा चालू की। यह परम्परा वैदिक मर्यादा पर आधारित थी। प्राचीन वैदिक परम्परा अनुसार, छठी पीढ़ी के बाद नया वंश निर्माण करके गौत्र छोड़कर वैवाहिक सम्बन्ध हो सकते थे। इसके लिए एक वंशधर यज्ञ करना होता था। ऐसा प्रथम भी हुआ है। जैसे सातवाहन वंश में अनेक शाखायें बनी और उन शाखाओं में आपसी वैवाहिक सम्बन्ध हुए। ईक्षवाकु वंश वीर पुरुषदत्ता, कुटुकूलानन्द सातकर्णी, जयसींमा, चालुक्य कदम्ब कुल, भातपुरा व वाकाटक कुल, यह सभी सातवाहन वंशी होते हुए आपसी वैवाहिक सम्बन्ध करते थे। यही प्राचीन परम्परा अग्रवालों ने अपनाई।

नागवंशी व राजवंशी में भेद:←कुछ इतिहासकार यह कहते हैं कि

Remove Watermark Now

महाराजा अग्रसैन एक आदर्श महान राजा थे। उनके पुत्रों का दासियों अर्थात पराई स्त्रीयों से सम्बन्ध होना जचता नहीं है। अतः उनका विचार बिल्कुल सही तथा महत्वपूर्ण मानने योग्य है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी अनेक प्रमाण है कि राजा लोग एक या अधिक रानियाँ रख सकते थे। परंतु प्रथम रानी ही महारानी या पटरानी कहलाती थी। इसी प्रकार वासुगी नाग की कन्याओं से जो पुत्र उत्पन्न हुए वह नागवंशी तथा जो राजाओं की कन्याओं से पुत्र उत्पन्न हुए वह राजवंशी कहलाए। यही राजवंशी आगे चल कर अग्रोहा से किन्ही कारणों से दूसरे देशों में चले गये और अलग-२ वंश चलाकर रहने लगे। उनका नाम तो बदल गया परन्तु गौत्र नहीं बदला। इसी कारण अग्रवालों के गौत्र दूसरे वंशों अर्थात राजपूत व मालवों में मिल जाते हैं। जैसे नरवर का राजा सिंहल गौत्री था। पृथ्वीराज के समय में जो लोग वर्ण शंकर हो गए, उनमें से जो मुसलमान बन गए उनको मेव तथा जो हिन्दू रहे उनको जाट और जटड़ा कहा गया। इसी कारण अग्रवालों के कई गौत्र राजपूतों में भी मिलते है।

लक्खी सरोवर:—लखी तलाब के बारे में जो कहते हैं कि यह लखी वंन्जारे ने बनबाया था, यह सही नहीं है। पदम पुराण में भी लक्ष्मी सरोवर का वर्णन आता है। हरियाणवी भाषा में लक्ष्मी देवी को लछी देवी या लखी देवी कहा जाता है। गुजरात में भी लक्ष्मी को लखी कहा जाता है। इसी प्रकार अग्रोहा में लक्ष्मी सरोवर के होने से उसका देहाती नाम लखी तलाब पड़ गया। प्रमाण यह है कि जीन्द के चार कोस दूर पर रामराय के पास भगवती लक्ष्मी जी का मन्दिर तथा सरोवर है उसे भी लखी देवीजी के नाम से पुकारा जाता है। यह तो ठीक है कि लखी नाम के बंजारे ने कुछ खुदाई आदि करवाई हो। परन्तु यह तीर्थ स्थान लक्ष्मी सरोवर के नाम से ही विख्यात था।

छत्र का महत्व:—प्राचीन काल में छत्र केवल राजा जो राजसुय अश्वमेघ यज्ञ करते थे वे ही लगाते थे या देवताओं से भगवती शक्ति लक्ष्मी पर या भगवान राम या भगवान कृष्ण पर लगता था। राजपूत काल में भी कुछ विशेष राजपूत सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी छत्र लगाते थे। उसके बाद मुसलमान बादशाह भी छत्र लगाने लगे। उसके बाद यह नियम बना कि जो वंश छत्रपति रहे वह विवाह के अवसर पर छत्र लगा सकते थे। अग्रवालों को छत्र लगाने का पूर्ण अधिकार प्रत्येक राज्यों में रहा। एक

pdfelement

समय उदयपुर और जोधपुर के राजाओं ने अपने राज्यों में अग्रवालों को भी छत्रलगाने की मना ही की तब वहाँ के अग्रवालों ने राजाओं को अर्जी दी तथा यह सिद्ध किया कि हम सूर्यवंशी महाराजा अग्रसैन के बंशज हैं, इस पर राजाओं ने उन्हें छत्र लगाने की आज्ञा दे दी थी

प्रसिद्ध वंशों की उत्पत्ति के पौराणिक किवदन्तियां

अग्निकुल की उत्पत्ति— अग्नि कुल की ४ शाखाओं चौहान, प्रमार, तुवंर आदि ने उत्पत्ति कथा अग्नि कुण्ड से इस प्रकार बताई कि जब असुरों का बहुत जोर हो गया तव ऋषियों ने आबू पर्वत पर एक महान यज्ञ किया। उस यज्ञ में आहुति देने से ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्र के अंश से चार पुरुष उत्पन्न हुए, जिन्होंने वैदिक धर्म की रक्षा की। उनसे यह चारों अग्नि वंश चले।[1]

अग्रवालों की उत्पत्ति:— ब्रह्म के उरु (जाघों) से भलन्दन हुए उनकी भरुतवती स्त्री थी। उससे वत्स प्रीति पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके छः पुत्र हुए, प्रमर्दन के कोई पुत्र न था। इसने अपनी पत्नी चन्द्रसैना सहित बद्रिका आश्रम में जाकर तप किया। शिवजी के वरदान द्वारा यज्ञ करने पर हवन कुण्ड से अग्रवाल व रैवियार क्षत्री उत्पन्न हुए।[2]

गन्धवाणिक (गांधी):— जब शिवजी का विवाह हुआ तब ब्रह्मा जी बोले कि गन्ध (इत्र) के बिना विवाह कार्य नहीं हो सकता तब शिवजी ने अपने चरणों से एक पुरुष उत्पन्न किया। जिसका नाम पद्ममोत्पन रखा। उसने कमलों से गन्ध (इत्र) बनाया। उसकी सन्तान गाँधी कहलाई।[3]

चालुक्य:— जब असुरों ने उत्पात मचाया तब ब्रह्माजी सागर तट पर संध्या कर रहे थे। दैवता लोग वहाँ पहुँचे। ब्रह्माजी ने चलु में पानी लिया तब उनकी चलु से एक पुरुष उत्पन्न हुआ। जिस का नाम चालुक्य रखा। उसने असुरों को संहार करके वैदिक धर्म का उत्थान किया। उसके वंशज चालुक्य कहलाये।[4]

वात्सायन वंश:— बाण भट्ट अपने वंश की उत्पत्ति के बारे में कथा

१. भविष्य पुराण पृष्ठ ३३७
२. जातिभास्कर पृष्ठ १४२
३. जाति भास्कर पृष्ठ १४३
४. गुजरातनों अने राजकीय सांस्कृतिक इतिहास पृष्ठ

Remove Watermark Now

बताता है कि एक बार ब्रह्माजी की सभा में ऋषि सामगान कर रहे थे ऋषि मदनपाल व दुर्वासा का विवाह हो गया। दुर्वासा क्रोध में साम-वेद का गलत उच्चारण करने लगे। उनके श्राप से डर कर कोई नहीं बोला। सरस्वती जी हंस पड़ीं। दुर्वासा ने क्रोध में सरस्वती को मृत्युलोक में जाने का श्राप दिया। श्राप निवारण का उपाय पुत्र की प्राप्ति बताई। सरस्वती मृत्युलोक में आ गई तथा सूर्य उस पर आसक्त हुए। उससे सर-स्वती के पुत्र उत्पन्न हुआ। उस पुत्र के वंशज वात्सायन हैं। वाणभट्ट भी उसी वंश में हुआ।[1]

इस प्रकार वंशों की उत्पत्ति के बारे में पुराणों व अन्य पुस्तकों में अनेक किवदन्तियाँ लिखी हैं, यदि सब लिखा जाय तो एक अलग ग्रन्थ बन जाता है। यह सब कपोल कल्पित है। ऐसी कल्पनाओं की उड़ान पर इतिहास रचने वाले अग्रवाल विद्वानों को सम्भव है कि इस ओर ध्यान नहीं गया, ध्यान जाता तो अग्रवाल नेता जो राजनीति से पिटकर समाज सेवा की ओर आये हैं और वैश्य समाज के सारे घटकों को एक करने के प्रयास इतिहास को झुठला कर भाषणों में कहते हैं कि सारे वैश्य समुदाय के घटकों का अग्रवालों से व अग्रोहा से निकास है उनको सह-लियत हो जाती। तथा किवदन्तियां अनेक न बनती। अग्निकुल आदि की तरह एक ही किवदन्ती रहती।

—

१ हर्ष चरित्तम महावती बाणभट्ट पृष्ठ १७

सर्ग पंचम

गौ भुज वैश्य:—सकन्द पुराण में कथा है कि भगवान विष्णु ने धर्मारण्य में कामधेनु से खुरों द्वारा पृथ्वी विदिर्ण व कामधेनु ने हुंकार शब्द किया। उस विवर से ३६,००० वैश्य उत्पन्न हुए। ब्रह्माजी ने कहा कि तुम गौ के हश्त रूप चरण से उत्पन्न हुए हो। तुम्हारा नाम गौभुज होगा तथा तुम्हारा काय ब्राह्मणों की सेवा करना।[१]

पुराणों की कहानियाँ अलकांरित रूपी है। जैसे अग्नि कुल का अग्नि से प्रकट होना, चालुक्यों का ब्रह्माजी की चलु से, ऐसे ही यह कथा लिखी प्रतीत होती है कि जव वर्ण व्यवस्था बनाई उस समय वैश्य वर्ण अपनाने वाले ३६,००० व्यक्ति थे। उन्हें गौभुज, गौ अर्थात पृथ्वी की भुजायें कहा।

क्षत्री वंशों से ब्राह्मण व वैश्य:—मनु का पुत्र नाभाग था। उसका पुत्र रिष्ट, रिष्ट के दो पुत्र वैश्य बने। आगे चल कर इस की सन्तान ब्राह्ण बन गई।[२]

राजा क्षत्रवद्ध का पुत्र सुनहोत्र हुआ। सुनहोत्र के तीन पुत्र काश, शल, गृत्समद हुए। गृत्समद के शुनक, शुनक से शौनक नामक ब्राह्मण वंश चला और अन्य वैश्य व क्षत्री हो गये।[३]

---

१. स्कंद पुराण ब्रह्म खण्ड अध्याय १८५
२. हरिवंश पुराण अध्याय १७ श्लोक ८ पृ० ४७
३. वही अध्याय २९ श्लोक २०५ पृ० ९३

Remove Watermark Now

ऋचेसु राजा हुआ। उसका पुत्र मतीनार हुआ। मतीनार के तीन पुत्र हुए, तन्सु,कण्ब, प्रतिरथ, कण्व से कण्वयान ब्राह्मण हुए। तन्सुने क्षत्री वर्ण अपनाया, प्रतिरथ वैश्य हुआ।[१] राजा वत्स मुनि के भार्ग हुआ। भार्ग के वंशज भार्गव ब्राह्मण कहलाये व वत्स के अन्य वंशजों से क्षत्री व वैश्यों के अनेक कुल चले।[२]

पुराणों में ऐसे अनेक प्रमाण हैं कि क्षत्री राजाओं की सन्तान वर्ण बदलती रही है।

अडाडडा महोड़ वैश्य:—गौभुज वैश्यों में से कुछ ने नास्तिक धर्म अपना लिया। इस कारण महौड़ के ब्राह्मणों ने उनको नगर से निकाल दिया। वह लोग महोड़ छोड़कर अठ्ठाल पर जा वसे। कुछ समय पश्चात फिर वैष्णव बन गये। यह लोग अडाडजा वैश्य कहलाये।[३]

महौड मण्डीलये वैश्य:—भगवान राम तीर्थ यात्रा करते धर्मारण्य गये। मार्ग में मण्लीपुर ठहरे। मण्डलीपुर के वैश्यों ने सेवा की तथा साथ में धर्मारण्ड गये। भगवानराम ने उनको तलवार, छत्र व चंवर दिया तथा ग्राम दिये। ये महौड़ वैश्य कहलाये।[४]

मधुवर वैश्य:—गौभुज वैश्यों में से जो लोग व्यापार हेतु सागर पार के देशों में गये वह लोग दीव, ऊना, काठियावाड़ में बसे। वह मधुवर वैश्य कहलाए।[५]

रैनियार वश्य:—ब्रह्मा की उरु से भलन्दन हुए। उसका पुत्र प्रीति हुआ। प्रीति के मोय, प्रमोद, प्रांशु, वाल, मोदन, प्रमोदन, शंकु कर्ण पुत्र हुए। प्रमोदन के औलाद न होती थी। वह वद्रिका आश्रम जाकर तप करने चला गया। शिवजी के वरदान द्वारा अग्नि कुण्ड से तीन पुत्र हुए।[६] (अग्रवाल, रैनियार व खत्री)

---

१. वही अध्याय ३२ पृ० १०१
२. वही " ३२ " १०२
३. जाति भास्कर पृ० १४६
४. वही पृ० १४६
५. वही पृ० १४६
६. वही पृ० १४२

pdfelement

अग्नि कुण्डा त्समुद भूता स्त्रप पुत्राः सुधार्भिका।
अग्रवालेति खत्री च रैनियारेति संज्ञका॥

सूर्यवंशी वैश्य:—त्रेता युग के तृतीय चरण में राजा सुरथ के पुत्र बुद्ध को छोड़कर शेष सूर्यवंशियों ने क्षत्री धर्म छोड़कर वैश्य वर्ण अपना लिया था।[1]

कश्यप द्वारा बनाये गये वैश्य:—महाभारत के बाद जल प्रलय के कारण भारतवासी मिश्र आदि देशों में चले गये थे। तब कश्यप नामक कश्मीर के ब्राह्मण दस हजार प्राचीन भारतियों को वैदिक धर्म से दिक्षित करके वापिस लाये। तथा उनमें से दो हजार को ब्राह्मण बनाकर उनके दस गौत्र बनाए शेष को क्षत्री व वैश्य बना कर सिन्धु व सरस्वती नदी पर बसाया।[2]

श्री श्रीमाल-श्रीमाल व प्राग्वाट वैश्य:-स्वयं प्रभसुरी श्रीमाल(गुजरात) नगर में सन् ७४४ ई० में पहुंचे तथा वहाँ के ब्राह्मण श्री माल जाति के व अन्य लोगों ने जैन धर्म अपनाया। स्वयं प्रभ सुरि ने ब्राह्मणों के श्री श्रीमाल व अन्यों को श्रीमाल कहा। जो पूर्वी दरबाजा की ओर बसते थे वह प्राग्वाट कहलाये यह उपकेश गच्छ और श्रीमालों के ७९ गौत्र व प्राग्वाट के १६६ गौत्र हुए।[3] कुछ गौत्र व पैढ का विवरण इस प्रकार है।

गौत्र	पैढ	गौत्र	पैढ
१. भण्साली	सौलंकी	९. बामेचा	परमार
२. आभू	सौलंकी	१०. साऊलखा	परमार
३. षडपाली	देवडा	११. गंगी	कानजोत
४. कांकरिया	भाटी	१२. रांका	सेठिया
५. करमदिया	अकोलया	१३. खुयड़ा	सेठिया
६. मण हड़ा	श्रीपन्ना	१४. कुक्कड	परमार
७. नऊलखा	साहथी	१५. गणछूर	कायस्थ हिसारी
८. छाजहड़ा	राठौर	१६. पितलिया	कायस्थ हिसारी

१. भविष्य पुराण खण्ड प्रथम अध्याय ५ श्लोक ५० से ५४
२. भविष्य पुराण प्रतिसर्ग वर्ग अध्याय ६२ श्लोक १२ से १५
" " " " " १० " ३७, ३८, ३९
३. गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास भाग-३ पृ० ४०२

Remove Watermark Now

श्रीमालों के १३५ गौत्र

१, अंगरीष	२८. गूजरियाँ	५५. तुरक्या	८२. फोफलिया
२. आकोडूपड़	२९. गूजर	५६. वुसाज	८३. बहापुरिया
३. उबरा	३०. घेवरिया	५७. घनालिया	८५. बरड़ा
४. कटारिया	३१. घीघड़ियां	५८. धूपड़	८५. बलदिया
५ कहूधिया	३२. घूवारियाँ	५९. घूवना	८६. बाहकटे
६. काठ	३३. चरर	६०. ध्याधीया	८७. बंदूबी
७. काल	३४. चांडी	६१. तावी	७८. वारीगौत
८. कालेटा	३५. चुगल	६२. तरट	८९. वाईसज
९. कादइये	३६. चडिया	६३. दक्षिणत	९०. वायड़ा
१०. कुराडिक	३७. चन्देरीवाल	६४. नाचण	९१. बिमनालक
११. कुठारिया	३८. चकड़िया	६५. नांदरिवाल	९२. बीचढ़
१२. कूकड़ा	३९. छालिया	६६. निरदुम	९३. वौहलिया
१३. काडिया	३०. जलकट	६७. निवहरिया	९४. भद्रसवाल
१४. कौफगढ़	४१. जाट	६८. निवहेडिया	९५. भालौटी
१५. कंचौतिया	४२. जूंडीवाल	६९. परिमाण	९६. भांडिया
१६. कुंचलिया	४३. जूंड	७०. पचौसलिया	९७. भंडारिया
१७. खगल	४४. झामचूर	७१. पडवाडिया	९८. भाडूगा
१८. खारेड़	४५. टांक	७२ पलहौट	९९. भूवर
१९. खौर	४६. टांकरिया	७३. फाफू	१००. महिमवाल
२०. खौचड़िया	४७. ठींगड	७४. पसरेण	१०१. भऊठिया
२१. खौसडिया	४८. डहरा	७५. पंचासिया	१०२. मरदुला
२२. गदउड़घा	४९. डागट	७६. पंचौभू	१०३ महतियान
२३. गलकड़े	५०. डूंगरिया	७७. पापडगौत्र	१०४. महकुले
२४. गपताणियाँ	५१. ढोंढा	७८. पाताणि	१०५. मरहठी
२५. गदइया	५२. ढौर	७९. पूरवियाँ	१०६. मसूरिया
२६. गिलाहला	५३. तबल	८०. फलवधिया	१०७. मथुरिया
२७. गीदौड़या	५४. ताडिया	८१. फूसफाण	१०८. मालवी

१०९. माथरपुरी	११६. भौगा	१२३. सागरिप	१३०. सौठिया
११०. मारुमहटा	११७. राकियाण	१२४. सागिया	१३१. हाडीगण
१११. मादौरिया	११८. राडिका	१२५. साभडती	१३२. हेडाऊ
११२. मुरारी	११९. रीहालीय	१२६. सीधुड़	१३३. हीडौटया
११३. मूसल	१२०. लवाहल	१२७. सुद्राड़ा	१३४. बोहोरा
११४. मूंदड़िया	१२१. लड़ारूप	१२८ सौठिया	१३५. सांगरिया
११५. मौथा	१२२. लड़वाला	१२९ सौहू	

श्री माल वैश्यों में बाद में १२ भेद हुए। उनमें से एक सौनी कहलाये त्रागड़ ब्राह्मणों के जौ अठारह गौत्र कहे हैं उसमें पहले तीन गौत्र वाली शूद्र की कन्याके साथ विवाह किया,पिछले चार गौत्र अमरसिंहने भ्रष्ट किये श्राद्ध में सूत्र धारण करना, खेती ध्यापार करना, सोनीपन करना, उनका काम है। इनकी कुलदेवी व्याघ्रेश्वरी है। त्रागड़ों के गौत्र ही उनके गौत्र हैं यह सोनी लोग दसे बीसे के भेद से पाटणी, सूरती, अग्रमदावादी, खभाती आदि भेदवाले हैं। इनमें बीसा श्रीमाली श्रावकधर्मी दसे श्री मालियों में कितने एक श्री सम्पन्न हैं। प्रागवाड़, गुर्जर और पदवास, नाम वाले हैं। प्राग्वाट, पोरवालभि, दसा, वीसा के भेद से दो प्रकार के है। पोरवालों में से एक गुर्जर नामक जाति भेद प्रकट हुआ है। वस्त्र देने के निमित्त जो पटुआ जाति उत्पन्न हुई। वह भी उस समय एक प्रकार के वैश्य थे। कर्मभृष्ट होने से शुद्र हुए। यह महाराष्ट्र देश के जानकीपुर, बालापुर, सूरत आदि देशों में विख्यात हैं। दूसरे गाटे और हलवाई मेद वाले हैं। गाटे बनिये ही पहले श्रीमाली बनिए थे। परन्पु शूद्र स्त्री के साथ विवाह करने से जो वंश बढ़ा वह गाटे बनिये कहलाये उनपर श्रीमाली ब्राह्मणों का जो कर है। वह श्रीमाली पौरवालों से आधा है। इन गाटों में जो और भी भृष्ट हुए सो हलवाई और छीपी जाति वाले कहलाये। वह आधी जाति कहीं जाती है। इस प्रकार श्री माली ब्राह्मणों की साढ़े छः न्यात की वृति कहलाती है। दसे बीसा भेद की एक यह भी कहावत है कि एक धनवान श्रीमाली वैश्य को कन्या विधवा हो गई, उसने शास्त्र विद्या उल्लघंन करके देशान्तर में उस कन्या का विवाह किया और फिर अपने गांव में आया। जातिवालों ने उसके साथ भौजन व्यवहार बन्द कर दिया। जो उसके पक्ष में रहे वह दसे श्रीमाली पोरवाल कहलाये और इस विवाह

Remove Watermark Now

को अयोग्य कहने वाले श्रीमाली पोरवाल कहलाये। पीछे यह वीसा जैनी हो गये। पीछे बल्लभाचार्य के समय में बहुत से बैष्णव हो गये, शेष आज तक जैनी हैं।

खडायत वैश्योत्पत्ति—खड़ायत ब्राह्मणों की सेवा में शंकर की आज्ञा से रहने वाले वैश्य खड़ायत कहलाये। उनके गुंदाणु, नांदोंलु मिंदियाणु, नानु, नरसाणु, वैश्याणु, मेर्वाणु भटस्याणु, साचेलाणु सालिस्याणु, कागराणु और कल्याण, यह बारह गौत्र हैं।

लाडवणिकोत्पत्ति—लाड जातिका वैश्य राजा वेणुवत्स का मन्त्री था इसने खेडावाल ब्राह्मणों से कहा हम पूर्वी लाट देश के रहने वाले क्षत्रिय हैं, उसी ग्राम के नाम से हम लाड़ कहलाते। क्षत्रिय धर्म से भ्रष्ट होकर वैश्य हो गये।

हरसौलेवणिकः—यह गुजरात में हरसौले ग्राम में निबास करने से हरसौले कहलाये। इनके मलियाणु, भोरियाणु, शशिथाणु, शियाणु, गदियाणु, गजेन्द्र, यज्ञाणु, पीपलाणु कश्याणु आदि बारह गौत्र हैं। गांधी, मेहता, शाहा आदि प्रत्येक गौत्रके अंबटक है।

भार्गववैश्योत्पत्तिः—भृगु कच्छ (भरौच) जो भार्गव ब्राह्मणों की सेवा करने को विश्वकर्मा ने ३६ हजार वैश्य उत्पन्न किये। वह भार्गव वैश्य कहलाये। यह दूसर भी कहे जाते है।

झालोरा वणिकादिकी की उत्पत्तिः—इन ब्राह्मणों के सेवक वैश्यवृति वाले वैश्य कहलाये। इनको ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर अपनी कन्या विवाह दी थी। जो ब्राह्मणों के गौत्र ही इनके गौत्र हैं यह आबू क्षेत्र में रहते हैं।[1]

ओसवाल वैश्यः आठवी शताब्दी ई० में ओसनगर (राजस्थान) में श्री रतन प्रभ सूरि जैन आचार्य पधारे। इसके साथ इनके २४ शिष्य भी थे। उस समय ओस का राजा उपलदेव पंवार था। राजा ने जैनधर्म अपनाया तथा ओस के निवासियों ने भी जैनधर्म अपना लिया। इस समय ओस में १८ क्षत्रियों की शाखाएं थीं।

१. पंवार	२. शिशोदिया	३. सिंगला	४ रणथम्भा	
५. राठौर	६. बचाला	७. रूपा	८. भाटी	९. सौनगरा

१. जाति भास्कर पृष्ठ १४५, १४६, १४७

१०. कछवाहा ११. धनगौडे १२. जादम १३. भाला
१४. जीन्दया १५. खरदरा पाट १६. चौहान १७. तौमर
१८, सोलंकी। कुछ समय बाद यह सब वैश्य बन गये।[1] इनके ६२ गौत्र निम्नलिखित हैं।

१. छाकेढ़	१३. सांड	२५. खाव्या	३७. पुनमिया	४९. गौडपांडया
२. डांगी	१४. पामेचा	२६. भीलमाल	३८. नावेडा	५०. पटवा
३. धाकड़	१५. पोकरन	२७. गोखरू	३९. हींगन	५१. गाँग
४. दुंगड	१६. मरडया सौनी	६८. सेठिया	४०. लूनिया	५२. दुघेडिया
५. धूपिया	१७. बरडिया	६९. नपा-वल्या	४१. आलावत	५३. संगवी
६. पिपाड़ा	१८. बरड़	३०. सांखला	४२. पालावत	५४. सांडल
७. नवलक्खा	१९. चोर बडिया	३१. सुर-पुरिया	४३. थरावत्	५५. साड़
८. आसापुरा	२०. आमदेव	३२. सक-लेया	४४. मोहीवाल	५६. सियाल
९. कुक्कड़	२१. गदिया	३३. बापना	४५. खुडिया	५७. सालेचा
१० चीप्पड़	२२. गोलचा	३४ बौल्या	४६. टोडरवाल	५८. पूनमैया
११. गगध	२३. पार्क	३५ दक-सियाल	४७. माधोटिया	५९ पंचौली
१२. चौपड़ा	२४. मट्टा	३६. सालेचा	४८. गडिया	६०. बावेल[2].
६१. संगवी				
६२. मुसजनी				
६३. तांतेठ				

संवत १५२० सन् १४६३ ई० में हेमचन्द्रसूरि ओसिया गया। उस समय राजा सिन्धुराव सौलंकी था। उसने जैनधर्म की दीक्षा ली। उसे तातेठ गौत्र दिया।

---

१ टाऊन एण्ड सिटीज राजस्थान पृष्ठ १३३

२ जाति भाष्कर पृष्ठ १३१

Remove Watermark Now

बघेरवाल वैश्य:—दसवीं शताब्दी में बघेरवाल गाँव का राजा वृद्धसेन था। वह नगर निवासियों सहित जैनधर्म से दीक्षित हुआ। उनके ५२ गौत्र बने। वे बावन गौत्र निम्नलिखित हैं।[1]

अवेपुरा	धनौत्या	सौमन्या	देहतौड़ा
कटास्था	भाड़ाच्या	सखागन्या	पापल्या
कोटिया	जिठालीवाण	वनवाडंया	भूगरवाल
खटवड़	सथून्या	घौल्या	सुरलाया
लावावास	जोगिया	पगाच्या	गंवाल
साखुन्या	निगौत्या	बौरखंडया	ठगगौत
सावधरा	कावरिया	दीवडया	सौराया
बाघन्या	ठाइया	वरमूड़ंया	केतग्या
सीघडातौड	कुचीलिया	तातहड़या	बहरिया
बाँगडयां	मादलिया	भंडाया	सीलौस
हरसौरा	सेठिया	बालदचार	खरडंग्या
सादूला	भुइवाल	पीतल्या	चमांच्यां
भूच्या	अविदित	दगौच्या	साबुन्या

खन्डेलवाल वैश्य:—खडेंला (राजस्थान) में बबर राजा राज्य करता था। माघ सुदी पंचमी सन् १०४९ को ५०७ जैन मुनियों के साथ जैनसेनाचार्य खण्डेला पधारे। इस राज्य के ८४ गाँव थे। उस समय वहाँ महामारी फैल रही थी। प्रजा ने मन्त्री से प्रार्थना की। देवयोग से महामारी समाप्त हो गई तथा वहाँ की प्रजा ने जैनधर्म अपना लिया और भगवान का मन्दिर बनवाया। ८२ क्षत्री कुलों व २ सुनार कुल जैनधर्म से दीक्षित हुए। तथा राजा को शाह गौत्र दिया। इस प्रकार खण्डेलवालों के ८४ गौत्र हुए।

वे गौत्र निम्नलिखित हैं।

गौत्र	वेश	गौत्र	वेश
बोहोरा	सोटा	साह	चोहाणा
दोसी	राठौर	सेठी	मोरवंशी
पाटणी	तुंवर	पापडीवा	चौहाण

---

१. जाति भास्कर पृष्ठ ३४१

pdfelement

गौत्र	वेश	गौत्र	वेश
भौसा	चौहान	लोहाग्या	सौरई
चादिवार	चन्देल	लुहाबया	मौरवंशी
मौठा	ठीमर	भड़साली	सौलंकी
नरपत्था	सीरई	दुगंडया	सौलंकी
गाधा	गौड़	चौधरी	तुबंर
आजमेरा	गौड़	पोडल्या	गहलौत
दरद्योजा	चौहाण	दगंडया	सौठा
गदिया	चौहणा	साबुण्या	सौढा
पाहच्या	चौहाण	नौपड़ा	चन्देल
भूंछ	सौरईसूर्य	मूलराज्य	कुरावंशी
वज्र	सुनाल	निगोत्या	गौड़
रारांराऊ	राठोर	पिंगलया	चौहाण
वज्रमहराया	सुनार	भर्लण्या	चौहाण
पटोदी	तुंवर	वनमाल्या	चौहाण
गंगवाल	कछवाह	अरड़का	चौहाण
पांडचा	चौहाण	रावल्या	ठीमरठोस
वीलाला	टीमर	मोदी	टीमरसोव
विनाईका	गहलौत	कोकरोज्या	कुरुवंशी
वीरलाल	कुरुवंशी	छोहड़या	कुरुवंशी
वाफलीवाल	मोहल	राजराज्या	कुरुवंशी
सौनी	सोरइ	टुकड़ंया	बुसलवंशी
कासलीवाल	सोहिल	गौतमवंशो	दुजली
पापल्या	साराई	वारेषड़ंया	दूजली
सौगाणी	कोटसू	सरपत्या	गोहिल
झाझरी	कछाहा	चरकण्या	चौहाण
पाला	कुरुवंशीज्ञा	सावड़	गौड
वेद	सौरई	नगोद्या	गौड
टुंग्या	पवार	निरपौल्या	गौड
फाला	कुरवंशी	पितल्या	चौहाण
छावरा	चौहाण	कलभान	दूजिन्ल
		कंडुवाग	गौड

Remove Watermark Now

गौत्र	वेश	गौत्र	वेश
सौभसा	चौहाण	भांगडया	टीमर
हलप्या	मोहिल	वहाड़या	मौरवंशी
सोमगद्या	गहिलौत	खेत्रपाल्या	वीजौल
वेष	सौढा	राजभड़या	कछाबाह
चौवोस्या	चौहाण	जमवीजा	कछाबाह
राजहंस्या	सौढा	जलवीजा	कछाबाह
अहंकाच्या	सौढा	बेनाडिया	दीपर
भुसावरी	कुरुवंशी	कठीवाल	सोठा[1]
मोलससा	साडा		

महेश्वरी वैश्य उत्पत्ति:-बारहवो सताब्दी ई० में सूर्यवंशी चौहान खडक सेन राजा खंडेला (राजस्थान) का था।[2] उसके पुत्र न होने पर उसने १६ वर्ष तक शंकर की तपस्या को तथा ऋषियों के कहने पर उसने सूर्यकुण्ड पर यज्ञ किया। शंकर जी के वरदान से उसकी रानी चम्पावती को पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम सुजान कंवर रखा गया। इस राजा की २४ रानिया थी। सुजान कंवर जब १४ वर्ष का था तो एक जैन मुनि के संपर्क में आ गया तथा दूसरे मतों के विरुद्ध हो गया। जहाँ कहीं भी यज्ञ आदि होता देखता तो यज्ञ विध्वंश करवा देता। एक समय सूर्यकुण्ड पर पाराशर तथा गौतम ऋषि यज्ञ कर रहे थे। वहां पर अपने ७२ साथियों के साथ जा कर उनके यज्ञ का विध्वंश कर दिया। ऋषियों ने क्रोधित होकर श्राप दिया कि पाषाण वत हो जाओ। वह वैसे ही हो गये। जव राजा को पता चला तो प्राण त्याग दिये और १६ रानियाँ साथ में सती हो गईं। शेष रानियाँ तथा अमराव आदि ऋषियों की शरण में गये। और उनके आदेशानुसार भगवान शंकर की उपासना की। भगवान शंकर प्रकट हुए और वर माँगने के लिए कहा। उन्होंने अपने पुत्रों के ठीक होने का वरदान माँगा! भगवान शंकर ने कहा ये ठीक तो हो जायेंगे परन्तु ये छत्रीय नहीं रहेंगे क्योंकि इन्होंने स्वधर्म का त्याग किया है। अब ये तलवार छोड़कर तराजू पक-

---

१. जाति भास्कर पुष्ठ १३४

२. टाउन एण्ढ सिटीज पृष्ठ ५६६

ड़गे। वह लड़के ठीक हो गये। उन छः ऋषियों ने १२-१२ लड़कों को अपना शिष्य बनाया। कुछ समय बाद ये लोग खण्डेला छोड़कर डिडवाना जा बसे। ७२ खांप के उमराव वह डीडु महेश्वरी कहलाये। इसी प्रकार के कथानक अग्निवंश का अग्निकुण्ड से उत्पन्न होना, चालुक्य का ब्रह्म की चलु से उत्पन्न होना, अग्रवाल व रैनियारों का हवन कुण्ड से उत्पन्न होना आदि अनेक कथाएं लिखी हैं।

परन्तु सत्यता यह है कि जैन साधुओं द्वारा जैन धर्म के प्रचार से बहुत से क्षत्री लोगों ने जैन धर्म अपनाया। जैन धर्म के नियमानुसार अहिंसा अपनाने से हथियार छोड़ बैठे। राज्य समाप्त हो गये। वैश्य व्यापार आदि करने लगे। शेष क्षत्री राजपूतों ने विवाह सम्बन्ध इनसे करने छोड़ दिए। इन्होंने अपने अलग-२ घर बनाकर आपसी विवाह संम्बन्ध करने शुरू कर दिये। जब दोबारा वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ तो बाकी लोग वापिस वैष्णव धर्म में आ गये।

ब्योंग	पेढ	गौत्र
सौमी	सौनग्रा	माडलयास
सोमानी	सौलंकी	आसोफा

झाबर, सोमानी, झांवरा से सोभपाल जी अपने नाना जाजान जी की गोद गये। इनसे ५ खाँप चली। जाखेटा जालमसिंह के वंशज यादव, गौत्र, सिलांस यह सन् १४४४ में कमला पति जी आखोटिया होतानी भवानीवाल।

ब्योग	नाम	पेढ	गौत्र
सोढानी	सौढाजी	सोहंड़	संढास
हुरकट	हीरोजी	देवड़ा	कश्यप
न्याती	नानसी	निरवाण	नानसेन
हेड़ा	हीरोजी	देवड़ा	धनांश
करवा	कुवर जी	कछवा	करवास
कांकनी	कुंकाजी	जौया	गौतम
मालु	मलोजी	पंवार	सलांस
सारड़ा	सिंह जी	पंवार	थोयाडंस

Remove Watermark Now

ब्योग	नाम	पेढ	गौतम
काहला	काहो जी	कछवा	कांमायश
गिलड़ा	गागजी	गहलोट	गौतम
जाजु	जूजोजी	सांखला	बालांस

जाजुजी की आठवी पीढ़ी में जांगलों में समदानी जी थे। उस समय जंगलों तथा गनायतों का परस्पर बैर था। यह लोग कैशों जी सामन्त के पास गये और कहा कि हमारी गनायतों से रक्षा करो। सामन्त ने कहा कि उनके पास काफी सेना है। हम उन्हें छल से ही मार सकते हैं। इन्होंने गनायतों से जाकर कहा कि हमारी ३५० कन्याएं हैं हम स्वयंवर कर रहे हैं। तुम लोग आकर डोले ले जाओ। जब वे बारात सजाकर चले और जहाँ उनके डेरे लगवाये गये थे उनके नीचे बारूदी सुरंगें बिछा दी गई। रात को आग लगवा दी गई। जिससे सारे मारे गये। जब जांगलों की कन्याओं को पता लगा तो कहने लगी जब वे बारात लेकर आये तो वे हमारे पति थे, हम उनके साथ सती होंगी और वे उनके साथ सती हो गई। उन सतियों ने केशोजी को श्राप दिया कि तुम्हारा कुटुम्ब नष्ट हो जाय। परन्तु यह श्राप आर्शीबाद होकर लगा। उसका परिवार बढ़ गया। गूजर, गौड, सिसाया, जांगला, उपाध्याय, कांचिया, थोरी, पिर-पलिया, बोसल जी, बीसलिया, भोजग आदि हुए।

ब्योंग	नाम	पेढ	गौत्र
गदईया	गौरोजी	गोयल	गोरांश
गंगरानी	गंगासिंह	गहलोट	कश्यप
खटवड़	खडगलसिंह	सांखला	मुगांश
लखोटया	लोकासिंह	पंवार	फाफठास
असावा	आसपाल	दाहिया	बालांस
चेचानी	चन्द्रसेन	दहिया	सिलांस
भानुधन्या	मोहनसिंह	मोहिला	गैसलानी
मुंदड़ा	माधोसिंह	मोहिल	गौवाँश
चोखड़ा	चौखासिंह	सिदल	चन्द्रांस
चेंडक	चौपसिंह	चौहान	चन्द्रांस
बलदवा	बाघोजी	पंवार	वालांस

pdfelement

ब्योंग	नाम	पेढ	गौत्र
वालदी	बालोजी	बडगुजर	लौरस
बूब	बाथोजी	पंवार	वच्छस
बांगड	बाघसिंह	बडजर	चुंडांस
मंडावेरा	माडोंजी	परीहार	बाच्छास
तोतला	तोलोजी	चौहान	कपिल
आगीवाल	आगोजी	भाटी	चन्द्रांस
आवसुंग	अगरोजी	तुवंर	कश्यप
परतानी	पुरोजी	पंवार	कश्यप
नावधर	नवनीतसिंह	निरवाण	बुरदालभ्य
नवाल	नानसी	निरवाण	नाननांस
सलोड	पालोजी	परिहार	सांडास
तापड़िया	तेजपाल	चौहान	विश्लान
मिनियार	मोवनजी	मौहल	कौशिक
दूत	धुरीसिंहजी	धांधला	फाफणांस
धुपड़	धीरसिंह	धांधला	सीर्शष
भोदानी	माधोजी	मौहाल	राढांस
पोरवाल	पुरोजी	परिहार	नानांस
देवपुरा	दीपोजी	दहिमा	पारस

ये पृथ्वीराज के समय दिल्ली आ बसे। जब राजा बाई ईथल का विवाह हुआ तब उन्होंने दहेज में दीपकुल भान दीवान को मांगा। तब दीवान को दिया। और दीवान की युक्ति द्वारा अनेक मलेच्छों को नष्ट किया तथा देवपुरा को जीत लिया। इनकी देवपुरा छाप हुई। भामाशाह इसी वंश से था।

ब्योंग	नाम	पेढ	गौत्र
बोहती	बेहड़सिंह	निखाण	गोपलास
विदादा	बृजसिंह	सोढा	गंजास
बिहानी	बिहारी जी	पंवार	भंजाग
बजाज	बिजोजी	भाटी	मनसानी
कलंत्री	कालुजी	कछवा	कश्यप

Remove Watermark Now

ब्योग	नाम	पेढ	गौत्र
कासट	केवाटजी	परिहार	आत्रेय
कच्चोलिया	कंवरजी	तुंवर	सिलांस
कलानी	कलोजी	कछवा	धौलांस
धांवर	आझरजी	यादव	झुमनांस
कंवरा	कुम्भोजो	गहलोट	उचितरांस
डाड	डुगोंजी	दहिया	आमरांस
डागा	डुगांजी	पंवार	राजहंस
गटानी	गुरजी	गहलोट	ढालांस
राठी	रिडकल जी	पंवार	बालांश
बिडहला	बेहड़ सिंह	खांची	हरीदास
दरक	तेजसी	चौहान	कौशिक
तोसलीवाल	अजौजी	चौहान	मांनाश
अजमेरा	भंडलसिंह	कछवा	कौशिक
भंडारी	छाछपाली	सांखला	कौशिक
छापरवाल	भेरुजी	भाटी	भटियास
भरड़	दुर्गाजी	पंवार	कपिलांस
बूतड़ा	मुरसिंह	सांखलाँ	अलसाँस
बंग	बागसिंह	परिहार	सौढास
अटल	अटलसिंह	गहलोट	गौतम
इनानी	इन्द्रसिंह	इन्दा	ससांस
भुराडिया	भुरसिंह	चौहान	अचिल
भन्साली	भावसिंह	बांस	भन्साली
लढा	लोहड़सिंह	पंवार	सिलांस
मालपाणी	मालदेजी	भाटी	भटियास
सिकची	शंकरजी	पंवार	कश्यप
लाहोटी	लाभदे	तुंवर	कगास
मन्त्री	मानोजी	पंवार	कंवलाय

माघ सुदी पंचमी को शाह चौथ जी राठी ने ओशिया में वैश्य सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में ८४ गावों के महेश्वरी बुलाये गये तथा

pdfelement

अपने मित्र ओसवाल धर्मपाल की भी बुलाया जो चौपड़ा ग्राम का रहने वाला था और उसने महेश्वरी बनने के लिए कहा। पंचों की सहमति ले कर उसका जैन धर्म छुड़ाकर वैष्णव धर्मधारण करवायी और उसे मन्त्री पद दिया। अतः उसका मंत्री ब्योंग प्रचलित हुआ।

नौलखा नौलसिंह यादव कश्यप

इसके अलावा धाकड़ महेश्वरी खंढेलवाल महेश्वरी मेहतावाल महेश्वरी महाजन महेश्वरी डिडु महेश्वरियों से कट कर बने में।

वर्णवाल

शुंभकर को जाति व नगर से निकाल दिया था। यह कांचनपुर के राजा शंखपाल का मन्त्री बन गया। राजा ने किसी बात पर प्रसन्न हो कर अपनी पुत्री चन्द्रावती से इस का विवाह कर दिया। इसका पुत्र तेन्दुमल हुआ। तेन्दुमल का पुत्र वाराक्ष, वाराक्ष का पुत्र वर्ण हुआ। उसकी सन्तान वर्णवाल कहलाई। इनके सात गौत्र व ३६ कुल हुए। मौहम्मद कासिम के समय अपना घर छोड़कर उत्तर प्रदेश व बिहार में बसे। गौत्र वात्सल, गोइल, गोवील, अगर-सगर, काश्यप हैं। उनके ३६ कुल निम्नलिखित हैं।

वदउया	खेलाजन	लेखरिया	खरवसया
ववुकनसिया	काकरिया	कासाजिया	रूपीहा
मालहन	बजाज	चौधरिया	मीरीचीया
वेरीया	ठेलरिया	कठारिया	नमलीन
पठसरिय	मनहरिया	पंचलोखरिया	आद
मनीया	सरोतन	कुलीनभुरत	बटराट
सेठ	सिमरियां	टेकमनीया	बरनबार
नागर	जखरियां	मकरियाँ	ढीगा
नेरचैया	सोनपुरयां	जैरफूरीया	नागर[1]

गहोई— यह गोदावरी नदी ने तट पर रहने वाले हैं वाद में बुन्देल-खण्ड में रहने लगे। पिण्डारियों के डर से बुन्देलखण्ड छोड़ कर वेश के अन्य भागों में जा बसे। इनके १२ गौत्र व १०२ ब्योंग हैं—वासिल, गोयल गगल, बदंल, जैतल, काछिल, वार्धिल, सिंगल, भुटल, कश्यप व पटिया बारह गौत्र हैं।

१. जातु भास्कर पृष्ठ १४१

Remove Watermark Now

अग्रहारी :— अग्रवालस्य वीर्यण संजात विप्र पोषिता,

अग्रहारी कस्त्र वानी माहुरी सुप्रतिष्ठित वर्ण विवेक चन्द्रिका।

यह श्लोक वर्ण विवेक चन्द्रमा में लिखा है। परन्तु शेरिंग लिखता है कि यह गोदावरी तट के रहने वाले क्षत्री पिता व ब्राह्मण माता की सन्तान थे। इनके आठ गौत्र हैं।

उत्तरा, पछवा, बनारसी, तानचरा, पालमन, माहुलिया, अयोध्या-वासी, चानव। अग्रहारी का अर्थ महाराष्ट्र में जमींदार है। अर्थात् अग्रहार (ग्रामों) के मालिक। अनेक ताम्र पत्रों पर अग्रहार दान (ग्राम दान) का उल्लेख है।

धुसर :— धुसर धुसीग्राम (नारनौल में) निवास करने के कारण कहलाये। इनका भार्गव गौत्र है। इन्हें अग्रोहा से सिकन्दर रुमी के अग्रोहा पर आक्रमण करने के समय गद्दारी करने के कारण निकाला था। इसी वंश में महाराजा हेमचन्द्र हुआ।

सहरालिये :— सहरालियों के पूर्वजों को अग्रोहा से सिकन्दर रुमी के आक्रमण के समय निकाला गया था। यह सहराला जा कर बस गये। इसलिये सहरालिये कहलाए।

रोहतगी :— यह अपना निवास रोहतक (हरियाणा) में बताते हैं।

महाजन :— यह अग्रोहा निवासी महीजन के वंशज हैं। इन को भी अग्रोहा से निकाला गया और ये हिमाचल व जम्मु प्रान्त में जा बसे। इनके गौत्र बलौत्रा, गलौत्रा, आदि हैं।

नोट :— महीजन की मुद्रांक अग्रोहा से प्राप्त हुई हैं।[1]

रस्तोगी :— यह अपने को राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित का वंशज बताते हैं। इनका निकास रोहतास गढ़ (बिहार) में हुआ। इनके गौत्र अमेठी, इन्द्रपति, मनीहारियां हैं।[2]

राजा बरादरी :— राजा रतन चन्द को फसरख शिमर बादशाह देहली ने राजा की उपाधि दी थी। राजा रत्नचन्द अग्रवाल थे। उनके वंशज राजा बरादरी कहलाये।[3]

१. मुद्रांक पृष्ठ प्लेट पर देखें
२. हिन्दु ट्राइब्ज एण्ड कास्टज शैरिंग भाग १ पृष्ठ २९२
३. ,, ,, ,, ,, ,, २८७

आयरवाल:—संवत ११९८ सन् ११४१ में श्री जिनदत्त सुरी सिन्धु देश में गये। वहाँ का १ हजार गाँव का राजा अभयसिंह भाटी शिकार खेलने जा रहा था। उसने मुनि के देशन आश्रम मानकर मुनि को अपशब्द कहे। राजा कों रक्तपुष्पी रोग हो गया। राजा ने क्षमा याचना की तथा दस हजार भाटियों सहित जैनधर्म अपनाया, राजा को गौत्र (आयरया) आयरवाल दिया। अन्यों के प्राचीन गौत्र चले।[1]

आघरिया आइरवाल:—सिंध का राजा गौशल सिंध भाटी राजपूत था। उसका परिवार १५०० घर का था। संवत १२१४ में नर मणि मण्डित, भाल स्थल, खोडिया क्षेत्रपाल सेवित सरतर गच्छाधिपती जैनाचार्य श्री जिनदत्तचन्द्र सूरि ने जैनधर्म का उपदेश देकर वैश्य बनाया व महाजन वंश व आधरिया व आईर गौत्र दिया।[2]

नाहटा:—मालवा को धार में क्षत्री पंवार पृथ्वीधर राजा के सोलहवें वंश पट पर जीवन व सच्चु राजकुमार हुए। यह धार छोड़कर मारवाड़ आये। जालौर के राजा के साथ युद्ध हुआ। सच्चु और जीवा के ३८ पुत्र हुए। जिनका सावंत वीर बडा था। उसका पुत्र जयपाल पृथ्वी राज का सेनापति हुआ। उसने छः बार काबुल पर चढ़ाई की। पृथ्वीराज ने संग्राम से न हठने के कारण नाहटा दिया।[3]

नोट:—इसकी शाखा यें खरतर गच्छ प्रतिबोधित गौत्र पृष्ठ ४० पर देखें।

महतिपान वैश्य: - श्री जिनदत्त सूरि ने संवत १२०५ में अर्थात सन् ११४७ में आचार्य पद प्राप्त किया। इसके पश्चात् जैनधर्म के प्रचार के लिए यात्रा की। सबसे पहले महम (पंजाब) आये। और अग्रोह के राजा मेधसेन व उसके दीवान मयाचन्द तान क्षत्रियों को ५२५ घरोंसहित जैनधर्म से दीक्षित किया। उनको महितान की उपाधि दी। उनके गौत्र प्राचीन ही रखे तथा चतुरभुज पचाघा जो २०० घरों का सरदार था उसे भी जैन बनाया। उन्हें चौपड़ा होने के कारण चौपड़ा गौत्र दिया। इसके

१. खरतर गच्छ के प्रतिबोधित गौत्र पृष्ठ ४१
२. ,, ,, पृष्ठ ४६
३. ,, ,, पृष्ठ ४६

Remove Watermark Now

बाद सहारनपुर(उत्तरप्रदेश)गये। वहां के सुन्दरदास,श्यामदास और शंकर दास सोनी क्षत्रिय थे। उनको जैन बनाया तथा सपेला गौत्र दिया। फिर राजपुर गये। वहां पर रामेचन्द, रतनचन्द, टीडमल समचन्द २५ घरों सहित जैन बनाया। उनको रोहदिया गौत्र दिया फिर काण्योड् गये। वहाँ करमचन्द व कान्हचन्द २५ घरों के चौधरी थे उनको जैन वनाकर काडें गौत्र दिया। नारनौल में नेतसी को नान्हडे गौत्र दिया। फिर वापिस महम आ गये। मनुजी को १५ घरों सहित जैन बनाया। उनको मुड़तेड़ गौत्र दिया। फिर माघवपुर गये। वहाँ पर माणिकचन्द को जैन वनाया और भीनयानी गौत्र दिया। कान्हचन्द, करनाल के खत्री परिवार को १० घरों सहित जैन बनाया। फिर पानीपत में १० घर जैन बनाये। मयाराम क्षत्री पानीपत के परिवार को महचे गौत्र दिया। गिरधरदास खत्री २० परिवारों सहित घांघ जैन हुआ। उसे घांघ गौत्र दिया। फिर करनाल वापस गये। वहाँ पर २० घर को कपाणी गौत्र दिया। मोहनदास क्षत्री के २० घरों को मोहन तनपाल व सोनी गौत्र दिया। फिर सीवन गये। वहाँ जैनी बनाये उनको चौधरी गौत्र दिया। इस प्रकार ८४ गोत्रों का निर्माण किया। कुछ समय बाद यह सब कुल वैश्य बन गये।[1]

लौहाना वैश्य:—लौहाना वैश्य, आज सामान्य रीते लौहाना वैश्य वर्ष में गिने जाते हैं। परन्तु यह क्षत्री हैं। यह सिंध में से सौराष्ट्र में आये। ७१२ ई० में मौहम्मद जिन कासिम ने सिन्ध पर चढ़ाई की। उस समय दाहर के राज्य में लौहाना अधिकारी था। अरवाये या अक्षाय नाम था। महारथी लौहाना जौर मुसद्दी ब्राह्मणवाद को मानने वाला था। ये लाखा क्षत्री थे। ब्राह्मणों ने सभा करके इनका बहिष्कार किया परन्तु इन्होंने अपना धर्म सुरक्षित रखा तथा सिन्ध में एक व्यापारी जाति की तरह व्यापार करने लगे और मुलतान के पास लौहानपुर में रहने लगे। वहाँ से सौराष्ट्र में आ बसे। १०१४ से १०२१ ई० में महमूद गजनवी के समय में सौराष्ट्र में आये.[2]

भाटिया:—यह सिन्ध में भाटिया नगर के रहने वाले थे। तथा महमूद गजनवी ने सन् ई० १००४ में भाटिया नगर पर चढ़ाई की तथा।

१, खरतर गच्छ के प्रतिबोधित गौत्र व जातियाँ पृष्ठ ५
२. सीराष्ट्रनों इतिहास शम्भुप्रसाद पृष्ठ ३२८

इस धनाड्य नगर को लूटा। भाटिया अन्य प्रदेशों में जा बसे। यह क्षत्री धर्म मानते थे। सौराष्ट्र में आकर व्यापार क्षेत्र में पड़े और वैश्य बने।[1]

उगावाल:—वल्लभी वंशी शिलादित्य सातवां का पुत्र धरसेन, धरसेन का पुत्र वृतकेतु, वृतकेतु का पुत्र उग्रासिंह के वंशज उगावाल कहलाये। उग्रसिहँ सन् १०५५ में था।[2]

प्रागवाट वैश्य:—वस्तुपाल तेजपाल भाई अन्हिल पाटण में रहते थे। वह श्वेताम्बर मूर्ति पुजक जैन थे। आबु पर्वत पर जैन मन्दिर बनवाया। सन् १२३२ में गिरनार व शत्रुंज्य पर्बत पर मन्दिर बनवायो।[3]

(शिलालेख गिरनाद मन्दिर सं० १२८८ व १३०५)

ठाकुरी वैश्य :— नेपाल में आठवी शताब्दी में अंशुमान मन्त्री ने वहाँ के लिच्छती राजा को मार कर आप राज्य सम्भाल लिया था। और लिच्छती राजा की पुत्री से विवाह कर लिया। अंशुमन के पुत्रों ने नये राजवंश की स्थापना जो बाद में ठाकुरी वैश्य कहलाये। अंशुवर्मन वैश्य वृती क्षत्री शाखा से था।

नागर वैश्य :— गर्त तीर्थ में ब्राह्मण रहते थे वे नागर कहलाते थे अकबर बादशाह का दरबारी तानसेन ने एक बार दीपक राग गलत गा दिया, जिसके कारण वह शरीर की गर्मी के रोग से पीड़ित हो गया। बहुत उपचार से भी ठीक न हुआ। वह तीर्थ भ्रमण व वैद्यों की खोज में चल पड़ा। जब वह बङ्ग नगर पहुँचा वहाँ की नागर ब्राह्मण स्त्रियाँ जो मल्लहार राग गाने में प्रवीण थी उन्होंने मल्लहार राग गाकर उसके रोग को दूर कर दिया। तानसेन ने बादशाह अकबर के सामने उनकी गान विद्या की सराहना की। बादशाह ने उनकी गान विद्या व सुन्दरता के बारे में सुनकर अपनी सभा में बुलाया। परन्तु उन्होंने आने से इन्कार कर दिया, बादशाह ने अपनी सेना भेजकर वड नगर का विद्धवंश कर दिया, और जो भी जनेऊधारी मिला उसे मार दिया। ७४५० ब्राह्मण शुद्रों का भेस

---

१ सौराष्ट्रनो इतिहास शम्भुप्रसाद पृष्ठ ४२८

२ ,, ,, पृष्ट ४२६

३ ,, ,, पृष्ठ २८६

Remove Watermark Now

बना कर नगर से निकल गये। और बाद में वैश्य वृति अपना ली। इनमें से २,००० सिद्धपुर पाटन में बसे। वह पाटनी कहलाये। १४५० प्रभाष पाटन (सोमनाथ) में जा बसे। यह बारह गावों में आबाद हुए इनके १२ गाँवों के नाम पर १२ गौत्र बने। दो हजार चित्तौड़ जा कर बसे। वह चित्तौड़े नागर कहलाए। यह सभी अपनी चिठ्ठी पत्री पर ७४५० का अंक डालते हैं।

नाग देह वैश्य :— मेदपाट के कुछ ब्राह्मणों ने वैश्य धर्म अपना कर नाग देह पुर नागदा में आ कर निवास किया। वह नाग देह वैश्य कहलाये।

भट्ट मेवाड़ें वैश्य:—राजा वासुकी ने छठी शताब्दी के अन्त में मेद पाट से कुछ ब्राह्मणों को ला कर मेवाड़ में बसाया। वह लोग वाणिज्य व्यापार करने लगे। वह भट्ट मेवाड़े वैश्य कहलाये।

बन्दरवार वैश्य :— यह वैश्य बन्दरगाहों (सागर की गोदी) में रहने वाले हैं। इनकी ३६ शाख हैं। इनमें सात शाख मुख्य हैं। सोनरियां, सेनीवार, चन्द्रमा, सोमपुरिया, रूपा मदन बन्धु जी, धुनक-वैश्य।

पटेल :— यह गुजरात की वैश्य जाति है। इनकी तीन शाख हैं। पटेल, वसुआ, सोनी।

महोडिया :— यह वैश्य कानपुर में काफी संख्या हैं। इनका गौत्र MATAL है।

लोहिया :— यह बनारस, इलाहाबाद, आगरा आदि में हैं। इनका गौत्र कश्यप है।

जाति :— यह जैनधर्मी है। इनका गौत्र TAEL है।

जायसवाल :— यह उज्जैन, मथुरा, आगरा में हैं। इनका गौत्र सिंघल है। इनका शासन पत्र लेख दु० कुण्ड जैन मन्दिर में हैं।

बाराह श्रेणी :— इन का निकास राजा नवलाल सेन के समय हुआ। उस समय वैश्य जाति की केवल चौदह श्रेणी थी। इनका गौत्र गर्ग व अनेक ब्योंग है।

बन्धुमती वैश्य :— इनका गौत्र भुरल है। यह पहले बौद्ध थे बाद में जैन बन गये।

खेरिलीवाल:—खेरिलीवाल वैश्यों का गौत्र अमरीयां हैं। यह जैन धर्मावलम्बी हैं।

केसरवानी:—इनकी तीन शाखायें हैं। कश्मीरी, पुर्वीया व आलाबारी। इनका विशेष निवास स्थान जौनपुर, फतेहपुर व वाराणसी है।

उमर:—उमर वैश्यों की तीन शाख हैं। तेल उमर, धीर उमर, ढुसर उमर।

कसोधन:—इनकी दो शाख हैं। पुर्वीया और पश्चिमी।

कुसता:—इनकी तीन शाख हैं। दक्खनी, बनारसी व पटवा एक पटवा जाति अलग भी है।

आगरी वैश्य:—

क्षत्रात्करण कन्यायां राजपुत्रे व भुवह ॥
राजपुत्रयास्तु करणदा गरीति प्रकीर्ति ॥२४५॥ ११०

क्षत्री से निम्न जाति की कन्या से पुत्र हुआ। वह आगरी कहलाये।[1]

आगली वैश्य:—राजा ययाति के वंश में बकिन्द्र राजा हुआ। उसकी स्त्री का नाम आगिलका था उसके पुत्र को आगला कहते थे। इनके वंशज आगली कहलाये। इनके दो थोक हैं। मीठा आगली व ढोल आगली। अब यह भी आगरी कहलाते है।[2]

सिलवाल वैश्य:—राजपूतों की तीसरी श्रेणी के राजपूतों को खसिया राजपूत कहा जाता है। उनके तीन थोक अयरवाल, सिलवाल व मटकोला वैश्य कहलाये।[3]

वैश्य घटकों की सूची

(अ)

अग्रवाल	आसुंड	आगरावाल	अग्रहारी
आगवाल	अमेठी	अढय	अमरवाल
आईरवाल			

१. जाति भास्कर पृष्ठ १६७
२. जाति " " २०४
३. जाति " " ११३

Remove Watermark Now

(इ)

इन्द्रपति

(उ)

उनिया २० गौत्र	उदौरा
उनाया	उरवाल
उसमार	उमर
उजवला	उखट

(औ)

ओसवाल	ओजक
अयोध्यावासी	औरचवाल

(क)

कसुधन	कुसता
कोजटीवाल	कोटरावाल
कोमटी	कसौधा
कानसर	कलहार
कोलड़ी	काकड़ा
कुंवरवैश्य	केसरवानी
कान्ह	काण
कमललिया	कगवणिया
कमाठी	कपाडिया
कुरुवार	कपोला
कमबड़िया	

(ख)

खन्डेलवाल	खोरटा
खेसो	खुरबरा
खेदरवाल	खेतरवाल

(ग)

गौरी	गुडिया
गौरतवाल	गन्धवणिक
गहोई	गुजरवाल
गौभुज	गाटे

(घ)

घोसीवाल

(च)

चितौड़ा

(ज)

जयसवाल	जाटी
जैलवाल	जाहरा
जोटन	जैमवार

(ट)

टोलीवाल	टकोरटा
टोपरा	टीलोटा

(ड)

डगाली	डिडुय्या

(ढ)

ढोलीवाल	ढुसर
ढीहु	

(द)

देसवाल	दसा
दुखरवाल	दरवनी
द्वादस श्रेणी	

(ध)

धुनक

(प)

पुरवाल	पालीवाल
पटेल	पोरवाल
पटवा	पंचाल
पदमौरा	पुतलीबगाल
पटोलिया	पंचमवाल
पुष्करवाल	

(ब)

बन्दरवाल	विष्णोई

pdfelement

बरुआ	वरोटी
बहोरा	वैद्य
बम्बरवाल	बदनौरा
बाहुहर	ब्राह्मणियां
बघेरवाल	वीरपाल
बन्धुमती	

(भ)

भिरजा	भोनगिरावाल
भाटिया	भट्टमेवाड़ा
भग्गलवाल	भीमवाल

(म)

मोहरी	महेश्वरी
मिन्टवाल	माड़
मारवाड़ी	मधुकर
मिसरी	मेवाड़ा
म्हौड़	म्हौड़ माण्डलिया
मनगौरा	मौहरवाल
महुलिया	महोरिया
मोध	मेड़तावाल
महतान	महाजन

(र)

रैनियार	रस्तोगी
राजवंशी	श्रीमाल
राजाबरादरी	

(ल)

लोहिया	लाट
लाई	लाडियाना
लौहाना	लाड
लाटकमल	

(व)

वर्णवाल	

(स)

सोजक	सोरड़ा
सरकारियां	सोखी
सरगौरा	सौनिया
साध	सौराठिया
सौनी	सरूरवाल
सोहरवाल	सोरया
सरालिया	

(श्री)

श्रीमाल	श्री श्रीमाल

(न)

नागर	जगरोज
भरमन गौरा	नरौरा
नुकड़	

(ह)

हरसरु	हुनरवाल
हरसौरा	

(क्षु)

क्षेत्रपाल	उगावाल
आगली	आगरी
सिलवाल	

१. जाति भास्कर पृष्ठ १२० से १४७
२. हिन्दु ट्राईब्ज एण्ड कास्टज
३. वर्ण विवेक चन्द्रिका

सर्ग षष्ठम

ताम्र पत्र शिलालेख

तराई स्तंभाभिलेख;—

रुम्भिनदेई स्तभाभिलेख

१. देवान पियेन पियदसिन लाजिन वीसति वसाभिसीतेन !
२. अतन आगाच महीयिते हिद बुधे जाते सक्य मुनि ति [।]
३. सिला विगड़ भीचा कांलापित सिलाथमे च उस पापिते [।]
४. हिद भगंव जाते तिजुंमिनिगामे उबलिके कटे ।
५. अठ भागिये च [।]

अर्थातः—बीस वर्षों से अभिषिक्त देवो के प्रिय प्रियदर्शी राजा ने स्वयं आकर [इस स्थान] की पूजा । क्योंकि यहाँ बुद्ध (शाक्य मुनि) उत्पन्न हुए थे ।

[उसने] उसे पत्थर की विशाल दीवार से घिरवाया और शिला-स्तम्भ स्थापित कराया (यह दिखलाने के लिए) कि यहाँ भगवान उत्पन्न हुए थे ।

(उसने) लुंबिनीग्राम को उदबलिक (धार्मिक कर से मुक्त) और (केवल आष्टभागिक (आंठवां भाग देने वाला) कर दिया ।

निगलीवा (निगलीसागर) स्तंभाभिलेख

१. देवानं पियेन पियदसिन लाजिन चौदस वसाभिसितेन

१. इसकी एक प्रतिलिपि पुरी (उड़ीसा) भुवनेश्वर के निकठ मिली है ।

Remove Watermark Now
pdfelement

२. बुधस कोना कमनस थुबे दुतियं वढ़िते । (।)
३. (बीसति व)[1] सभिसितेन च अतन अगाच महीयते
४. (सिलोथभे च उस पापिते((।)[2]

अर्थात:—चौदह वर्ष से अभिषत्त देवो के प्रिय प्रियदर्शी राजा ने बुद्ध कनक मुनि का स्तूप दूना बढ़ाया (बढ़ाकर पहले से दुगुना किया) और बीस वर्षों से अभिषक्त (राजा ने) स्वयं आकर (इस स्थान) की पूजा की और शिलास्तम्भ स्थापित कराया ।[3]

प्रयाग प्रशस्तिः— भाषा संस्कृत लिपी ब्राह्मी

१. ··· ········ कुल्यैः (?) ····················· स्वै ·· ।तस ·· ········
२. (यस्य ?) ········· (।।) (१)
३. ···········मु (?) व ·· ·······
४. (स्फु) रद्व (?) ·········· क्षः स्फुटोद्धसित ··· ·· ··· प्रवितत (।।) (२)
५. यस्य प्र (ज्ञानु) षङ्गोचित सुख मनसः शास्त्र त (त्व) त्र्थभर्तुः स्तब्धो ˘ — — ˘ नि ˘ ˘ ˘ ˘ ˘ — नोच्छृ — ˘ ˘ — — (।)
६. (स) त्काव्य-श्री-विरोधा न्बध-गुणित गुणा ज्ञाहतानेव कृत्या (वि) द्वल्लोके-(ऽ) वि (नाशि) स्फुटबहु कविता कीर्ति राज्यं भुनक्ति (।।)(३)
७. (ए) (हो) होत्युपगुह्य भाव पिशुनैरुत्कर्णितै रोमभिः सभ्येषूच्छसितेषु तुल्य कुलज म्लानाननो द्वीक्षि (तः) (।)
८. (स्ने) ह व्योलुलितेन बाष्प गुरुणा तत्वेक्षिणा चक्षुषा यः पित्राभिहितो नि (रीक्ष्य) निखि (लां) (पाह्येव मुर्वी) मिति । (४)
९. (दृ) ष्टवा कर्माण्यनेकान्य मनुज सदृशान्य द्भुनोद्भिन्त हर्षा भ (।) वैरा स्वादय (न्तः) ˘ ˘ ˘ ˘ — — ˘ — — ˘ (के) चित (।)

1. रिक्त स्थान की भुलहर द्वारा अनुमानित पूर्ति
2. रुम्मन देई स्तम्भ लेख के आधार पर अनुमानित पूर्ति
3. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख डा० परमेश्वरीलाल पृष्ठ ७६-८०

Remove Watermark Now

१०. वीर्योत्ताप्ताश्च केच्छिर भुगपता यस्य वृते (ऽ) प्रणामे (ऽ) प्य [ति ?] (गुरुत्तेषु) — — — ˘ ˘ ˘ ˘ ˘ ˘ — — ˘ ˘ [।] [५] ˘
११. संग्रामेषु स्व भुज विजिता नित्य भुच्चापकाराः श्व श्वो मानप्र ˘ ˘ ˘ ˘ — — ˘ — ˘ — — (१)
१२. तोषोतुङ्गैः स्फुट बहु रस स्नेह फुल्लैर्म्मनोभिः पश्चातांप व ˘ ˘ ˘ ˘ ˘ — ˘ म [?] स्य [ा] द्वसन्त [म ?] (।।) (६)
१३. उद्वेलोदित बाहुवीर्य्य रमसादे केन येन क्षदुणान्मूल्याच्युत नागसेनग ˘ ˘ — — ˘ — ˘ — ˘ — (।)
१४. दण्डे ग्रहियंतेव कौतकुलंज पुष्पाह्वये क्रिडता सुर्य्ये(?) नित्य(?) ˘ ˘ — ˘ ˘ तट ˘ ˘ ˘ ˘ — ˘ ˘ — (।।) (७)
१५. धर्म्म प्राचीर बन्धःशशिर शुचयः कीर्तय स प्रदाना वेदुष्यं तत्व भेदी प्रशम ˘ ˘ ˘ कु-व ˘ मु — ˘ तात्र्थम् ? (।)
१६. (अद्ध्येय) सूक्त मार्ग्गः कवि मति विभोत्सांरणं चापि काव्यं को नु स्याद्यो (ऽ) स्य न स्याद गुण मति [वि] दुषां ध्यानपात्र य एक (।।) [८]
१७. तस्य विविध समर शतावरण दक्षस्य स्वभुज बल प्रकाम्मेकबन्धो प्रक्रमांकस्य परसु शर शंङ्क शक्ति प्रसासि तोमर
१८. भिन्दीपाल-न [ा] च वैतस्तिकाधनेक प्रहरणविरुढाकूल वर्ण शतांङ्क शोभा समुदपयोचित कान्ततर वर्ष्मणः
१९. कौशलक महेन्द्रमाह [ा] कान्तारक व्याघ्रराज कौरालकमण्टराजये ष्ट पुरक महेन्द्रगिरी कोट्टरक स्वामिदत्तैरण्डपल्लकदमन- काञ्चेयेक विष्णु गोप व मुक्तक-
२०. नीलराज वैङ्गेयकहस्तिवर्म्म पालक्कोग्रेसेन दैवराष्ट्र ककुबेर कौस्थल पुरक धनंञ्जय प्रभृति सर्व्व दक्षिणापथ राजग्रहण मोक्षानुग्रह जनित प्रतापोन्मिश्र महाभागस्य
२१. रुद्रदेव मत्तिल नागदत्तचन्द्रवर्म्म गणपति नाग नागसेनाच्युतनन्दि बल्ल वर्म्माधिनेकार्य्यावर्तराज-प्रसमोद्धरणोद्वृत-प्रभाव महतः प्रचारकीकृत सर्व्वाकटविक राजस्य ।

pdfelement

२२. समतटडवाक कामरूप नेपाल कतूपुरादि प्रत्यन्त नृपति भिम्मालवानुं-
नायन यौधेय माद्रकाभीर प्रार्जु न सनकानिक काक खरपरिकादिभिश्च
सर्व्व कर दानाज्ञाकरण प्रणामागमन्-
२३. परितोषित प्रचण्ड शासनस्य अनेक भ्रष्टराज्योत्सन्न राजवंश प्रतिष्ठा
पनोदभूत निखिल भु [व] न [विचरण-शा] न्त यशस: देव पुत्राषाहि-
षाहा-नुषाहि-शकमुरुण्डै: सैहलकादिभिश्च
२४. सर्वदीप वासिभिरात्मनिवेदन कन्योपायदान-गुरुत्मदंङ्कस्वविषयभुवित-
शासन-[य] T चनाद्युपाय सेवा कृत बाहु वीर्य प्रसर धरणि बन्धस्य
प्रिथिव्यामप्रतिरथस्य
२५. सुचरितशतालङ-कृतानेक गुण गणोत्सिवितभिश्चरण तल प्रभ्रष्टा-
न्यनर-पति कीर्तेः साद्ध्वसाधुदय प्रलय हेतु पुरुषाचिन्तिस्य भक्तपा-
वनति-मात्र ग्राह्य भृदुहृदस्यानुकम्पावतो (ऽ) नेक गौ-शतसहस्त्र
प्रदायिन [:]
२६. [कृप]ण-दीनानाथातुर जनोद्धरण सत्र दीक्षाभ्युपगत मनसः समिद्धस्य
विग्रहवतो लोकानुग्रहस्य धनदं वरुणेन्द्रान्तक समस्वस्यभुज बल-
विजितानेक नरपति विभव प्रत्यार्पणानित्यव्यापृतायुक्तपुरुषस्य
२७. निशितविदग्धमति गान्धर्वललितैव्रीडित त्रिदसपतिगुर तुम्बु रुनारदा
देर्विद्वज्जनोपजीव्यानेक काव्यक्रियाभिः प्रतिष्ठित कविराज शब्दस्य
सुचिर स्तोतव्यानेकाद्भुतोदार चरितस्य
२८. लोकसमय क्रियानुविधान मात्र मानुषस्य लोक धाम्नो देवस्य महाराज
श्री गुप्त प्रपौत्रस्य महाराज श्रीघटोत्कचपौत्रस्य महाराजाधिराज
श्री चन्द्रगुप्त पुत्रस्य
२९. लिच्छवि-दौहित्रस्य महादेव्यां कुमार देव्याभुत्पन्नस्य महाराजाधि-
राज श्री समुद्रगुप्तस्य सर्व्व पृथिवी विजय जानितोदय व्याप्त निखि-
लावनितालं कीर्तिमितस्त्रिदशपति
३०. भवन गमनावाप्त ललित सुख-विचरणा भाचक्षाण इव भुवो बाहुरय-
मुच्छितः स्तम्भः (१) यस्य
प्रदान भुजविक्क्रम-प्रथम शास्त्रवाक्योदयै-
रुपर्य्युपरिसञ्च योच्छ्रितभनेक मार्ग्ग यशः (१)
३१. पुनाति भुवनत्रयं पशुपतेर्ज्जटान्तर्गुहा-
निरोध-परिमोक्ष शीघ्रमिव पाण्डु गांग [पय.] ॥

Remove Watermark Now

एतच्च काव्यमेषा मेव भट्टारक पादानां दासस्य समीप परि-
सर्प्पाणानुग्रहोंन्मीलित मते:
३२. खाद्यटपाकि कस्य महादण्डनायक-ध्रुवभूति-पुत्रस्य सान्धिविग्रहिक-
कुमारामात्य-म [हादण्डनाय] क हारिषेणस्य सर्व्व भत हित
सुखायास्तु ।
३३. अनुष्ठित च परम भट्टारक पादानुध्यातेन महादण्ड नायक तिल
भट्टकेन ।

मथुरा स्तम्भ लेख वर्ष ६१ राज्य वर्ष ५

१. सिद्धम (I) भट्टारक-महाराज-[राजाधिराज] श्री समुद्रगुप्त स-
२. [त्पु]त्रस्य भट्टारक[महाराजा-राजाधि] राज श्री चन्द्रगुप्त
३. स्य विजय-राज्य संवत्स [रे] [प] चमे [५] कालानुवर्तमान-सं-
४. वत्सरे एकषष्ठे ६०(+)१ [आषाढ़-मासे प्र] थमे शुक्लदिवसे पं-
५. चम्यां (I) अस्यां पूर्व्वा (यां) [भ] गव [त्कु] शिकाद्देश मेन भगव-
६. त्पराशराच्चतुर्थेन [भगवत्क] पि [ल] विमल शि-
७. ष्य-शिष्येण भगव [दुपमित्त] विमल शिष्येण
८. आर्य्योदि [ता] चायर्ये [ण] [स्व] पु [ण्या] प्यानन निमितं
९. गुरुणां च कीर्त्य [र्थमुपतिमेश्वर] कपिलेश्वरी
१०. गुर्व्वायतने गुरु ....प्रतिष्ठापितो (I) नै—
११. तत्ख्यात्यर्थमभिलि [ख्यते] (i) [अथ] माहेश्वराणाँ वि—
१२. ज्ञप्तिक्रियते सम्बोधनं च (i) यथाका [ले] नाचार्या—
१३. णां परिग्रहमिति मत्वा विशंङ्क [पू] जा-पुर—
१४. स्कारं परिग्रह-पारिपाल्यं [कुर्य्या] दिति विज्ञप्तिरिति (i)
१५. यञ्च कीर्त्यभिद्रोहं कुर्य्याध [श्चा] भि लिखित [मुप] र्य्यं थो
१६. वा [स] पंचभिर्महा पातकै रूपपातकैश्च संयुक्तस्स्यात (i)
१७. ज्यति च भगवा [नण्ड:] रुद्रदण्डों (ऽ) ग्र [ना] यको नित्यं (ii)

अनुवादः—सिद्धि हो ! भट्टारक महाराजाधिराज समुद्रगुप्त के सत्पुत्र भट्टारक महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त के विजय राज्य के वर्ष

---

१. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख डा० परमेश्वरी लाल गुप्त
(गुप्तकाल) पृष्ठ १० से १३

पाँच कालक्रम में वर्तमान संवत ६१ [आषाढ़] के शुक्ल पक्ष की पंचमी का दिन।

इस पूर्व [कथित दिन को] भगवत कुशिक के [क्रम में] दसवें भगवत पराशर के [क्रममें] चौथे भगवत कपिल विमल के शिष्य भगवत उपमित के शिष्य आर्य उदिताचार्य ने अपने पुण्य एवं गुरु की कीर्ति के निमित गुर्व्वायितन (गुरु का निवास स्थान) में गुरु — — उपमितेश्वर एवं कपिलेश्वर [नाम से प्रतिमा या लिंग] का प्रतिष्ठापन किया।

[इस लेख को मैं] अपनी ख्याति के लिए नहीं लिख रहा हूँ। [वरन्] माहेश्वरों (शिव के उपासकों) को सम्बोधित कर [बताने के लिए] विज्ञापित कर रहा हूँ। समय २ पर जो भी आचार्य हो वे शंका रहित होकर इनकी पूजा पुरस्कार (भोग प्रसाद) और परिग्रह (सेवा) करें। वे इस [आदेश] का परिपालन करे। इसलिए यह विज्ञप्ति है। जो इस कीर्ति के प्रति द्रोह करेगा अथवा इस विज्ञप्ति के आदेश को ऊपर नीचे करेगा (उल्ट फेर करेगा) (अर्थात विपरीत आचरण करेगा) उसे पंचमहापातक और उपपातक लगेंगे।

अग्रनायक अण्डरूप भगवान रुद्रखण्ड (शिव) की सदा जय हो[1]।

मथुरा का स्तम्भ लेख धार्मिक क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है। जिस स्तम्भ पर लेख अंकित है उस पर एक खड़ी मनुष्याकार आकृति खुदी है। जिसके हाथ में दण्ड है। चूँकि यह अभिलेख शैव मत से सम्बन्धित है, अतएव उस आकृति को पाशुपत मत के प्रवर्तक लकुलीश का चित्र मानते हैं। कुषाण नरेश हुविष्क के सिक्के पर हाथ में दण्ड लिए लकुलीश की आकृति दीख पड़ती। अतः मथुरा स्तम्भ पर भी खुदी आकृति उसी लकुलीश की मानी गई। इस लेख में "भगवत्कुशिकात दशमेन' वाक्य का प्रयोग विशेष अर्थ में किया हैं। दशमेन शब्द यह व्यक्त करता है कि उदित्ताचार्य कुशिक की परम्परा है दसवें शिष्य थे। जिन्होंने दो शिव प्रतिमा कपिलेश्वर तथा उपमितेश्वर की स्थापना की।[2]

गुप्तवंशी क्षत्री थे

चन्द्रान्वयैक तिलक: खलु चन्द्रगुप्त: राजख्यया पृथुगुण: प्रथित:

१. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग-२ पृष्ठ ४८

२. गुप्त अभिलेख डा० वासुदेव उपाध्याय पृष्ठ २७६

Remove Watermark Now

पृथिव्याम (ए० इ० भा० ११ पृष्ठ १९०) इस उल्लेख से यह स्पष्ट है कि गुप्तवंशी नरेश क्षत्रिय थे। गुप्तवंशी सम्राटों ने अपनी जाति का कहीं उल्लेख नहीं किया है। परन्तु सौभाग्यबश उत्तर गुप्तवंश (Later Gupta Kings) के वंशजों के विषय में (जाति सम्बन्धी) कुछ ज्ञातव्य बातें मिली हैं। मध्यप्रदेश के शासक महाशिवगुप्त को सिरपुर प्रशस्ति में क्षत्रिय कहा गवा है।[1]

ताम्रपत्र देवगिरि (जिला धारवाड़) संस्कृत

सिद्धम् ज्यत्यर्हंस्त्रिलोकेश: सर्वभूतहिते रत:
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्ताज्ञानदृगीश्वर:

स्वस्ति बिजयवैजयन्त्यां स्वामिमहासेनमातृगणानुद्धयाताभिषिक्ता-नां मानव्य सगोत्राणां हारितीपुत्राणं (णां) अङ्गिरसां प्रतिकृतस्वाध्याय-चर्च्चकानां सद्धर्म्मसदम्बानां कदम्बानां अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुल-पुण्यस्कन्धः आहवार्जितपरमरुचिरदृढ़सत्व; विशुद्धान्वयप्रकृत्यानेकपुरुषपर मपरागते जगत्प्रदीप भूते महत्यदितोदिते काकुस्थान्वये श्रीशान्तिवर्म्मतनय: श्रीमृगेश्वर वर्मा आत्मन: राजस्य तृतीय वर्ष पौष संवत्सरे कार्तिकमासे बहुले पक्षे दशम्यां तिथौ उत्तरा भाद्रपदे नक्षत्रे वृहत्परलूरे (?) त्रिदश-मुकुट परिधृष्ट चारचरणेभ्य: परमार्हद्देवेभ्य: संमार्जनोपलेपनाभ्यर्च्च-न-नभग्नसंस्कारमहिमार्थग्रामापरदिग्विभागसीमाभ्यन्तरे राजमानेन चत्वारि शन्निवर्तनं कृष्णभूमि क्षेत्रं चत्वारि क्षेत्रन्निवर्त्तनं च चैत्यालयम्य बहि:, एकं निवतनं पुष्पार्थं देव कुलस्यांगनञ्च एक निवर्त्तनमेव सर्वपरिहारयुक्तं दत्तवान महाराजः। लोभादधर्माद्वा योस्या भिहर्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्यामिरक्षिता स तत्पुण्यफल भाग्भवप्ति। उक्तञ्च—

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि:।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम्
स्वदत्तां परदंत्तां वा यो ह·त वसुन्धरां।
षष्टि वर्षसहस्त्राणि नरके पच्यते तु स:॥
अद्भिर्दत्तं त्रिभिमुर्क्तं सद्भिश्च परिपालितम्।
एतानि, न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च॥

३ वही पृष्ठ ३

स्वं दातुं सुमहच्छकुयं दुःखमन्यार्थपालनं ।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम ॥

परमधार्मिकेण दामकीर्ति भोजकेन लिखितेयं पट्टिका इति सिद्धिरस्तु[1] ॥

POLAMURU GRANT OF JAYASIMHA. I

L. 1. Savsti [11+) Sri - Vijya Skandhavarat Matr-gana Parriraksitanam Manavya-S gotrnam.

L. 2. 1. Hariti-putranam Asvamedha-Yajinam. Calukyanam Kula-jala-nidhi

L. 3. Samutpanna-raja-ratnasya sakala - bhuvana - Mandala-Mandita-Kirttih Sri

L. 4. Kirttivarmmanah Pautrah anekasamara-samghatta vijayina [h [para nara.

Lr 5. Pati-makuta - mani-Mayukh - avadata-Carana - yugalasya Sri Visnuvardhana.

L, 6. Maharajasya Priya - tanayah, prauardhamana pratapopanata Samasta.

2nd Plate : I Side.

L. 7. S [a] manta - ma [n] dalah Sva-bahu bala · Par - [akram - O] parjjita-sa [Kala [- yaso,

L. 8. Vibhinna - dig - antarah sva - sakati traya - trisul - avabhinna - para - narapati

L. 9. Sakala - bala - cetanah Brahaspatir=iva nayafno Manur =iva Vinaya

१. जैन शिलालेख संग्रह द्वितीय भाग पृष्ठ ५७

Remove Watermark Now

L. 10. Jnah Zudhisthira iva dharma parayanah Arjunavad= apara - nara.

L. 11. Patibhir=anabhilamghita - paurusyah aneka sastrattha - tattvajanah para.

L. 12. ma brahmanya mata pitr - pad anudhyatah Sri Pridhi - vi - Jayasingha - va.

2nd Plate 2nd Side

L. 13. LLabha maharajah Guddavadi - Visaya - Mahatta [ran= adhi] kara - pu.

L. 14. rusams=ca Imam=arttham=ajnapayaty=astu viditam asti vo yath=asmabhih—

L. 15 il Guddavadi - visaye - Polubumra - nnama gramah veda vedamga.

K. 16. Vido Damasarmmanah Pautraya sva pitur=adhika-guna-gan-adhi—

L. 17. Vasasya Sivasarmmanah Putraya Taittirika sabrahmacarine veda=

L. 18. dvay - alamkrta - sariraya Gautama - sagotraya sva [ka] rmm=a [nusthana].

3rd Plate : Ist Side

L. 19. P araya Purvv - agraharika Rudrasatmmane=Asanapura - sthana - vastavy of a

L. 20. Sri Safvvsiddhi- datya sarvva kara pariharen=agrahari - krtya samprattah]II]

L. 21 Tatha bhavadbhir=anyais=ca dharmmadhisata - buddhi-bhih Paripalamyah.

L. 22. Na kais=cid=vadha Karamya [II+] Ajnaptir=atra Hasti-kosa - Virakosa [II] Bya.

L. 23 Sa - gitah Bahudhirv=vasudha datta bahu—bhis=C—anupalita [I+] yasya yasya.

L. 24. Yada bhumis=tasya tasya tadaphalam=iti [ii] Sam 1/5/ gi 8/di 3.

1. Successors of Satvahan Page 340-42

pdfelement

अल्तेम का लेख

अल्तेम (जिला कोल्हापुर) संस्कृत

[शक ४११—४८८ ई०]

पहला पत्र

स्वस्ति ॥ जयत्यनन्तसंसारपारावारैकसेतवः ।
महावीरार्हतः पूताश्चरणाम्बुजरेणवः ॥

श्री मतां विश्व--विश्वम्भराभि संस्तूयमान मानव्य सगोत्राणां हारीति पुत्राणां सप्तलोकमातृभिस्सप्तमातृभिस्तमि वर्द्धिताना कार्ति-केयपरिक्षणप्राप्त कल्याणपरम्पराणां भगवन्नारायण प्रसाद समासादित-वराहलाञ्छनेक्षणक्षण वशीकृता शेष मही भृतानां(भृताम्)चालुकयानां कुल-मंल करिष्णोः ॥ स्वभुजोपा ज्जितव सुन्धरेस्य य निजयशश्चवणमात्रेणै-वावनराजकस्य कीतिपताकावभासितदिगन्तरालस्य जहसिहस्य राजसिंहस्य (?) सूनुस्सूनृत-वागनवरतदानार्द्रीकृतकरस्सुरगज इव प्रशमनिधिस्त पोनि-धिरिव हप्तवैरिषु प्राप्त रणरागो रणरागो अभवत् [॥] तस्य चात्मजे श्रमेधनाव (० मेघाव) भूत (थ) स्नानवित्रीकृतगात्रे प्रणतपरनृपतिमकुट-तटधरितहटन्मणिगण किरणवार्द्ध राघौत चारुचरणकमलयेगले चित्रकण्ठा-भिधानुतुरङ्ग कण्ठीरवेणोत्सारितारातिस्तम्भेरभमण्डले वर्णाश्रमधर्म्म-परिपालनपरे गङ्गांसेत् (?) मध्यवर्ती देशाधीश्वरे शक्तित्रय प्रवर्द्धित्पाज्य-साम्राज्य गंङ्गा यमुनापालि-

दूसरा पत्र पहली ओर

ध्वजदड क्कादिपञ्चमहाशब्दचिन्हे करदीकृत चोल-चेर-केरल सिंहल कलिंग भूपाले दण्डितपाण्डयादिमण्डि (ण्ड) लिके अप्रतिशासने "सत्या-श्रय"—श्री पुलकेश्यभिधान पृथ्वीवल्लभः महाराजाधिराजे पृथ्वीमेकांत पत्रं शासति सति[॥]राजा रुन्द्रनील सैन्द्रक वंशशशांकायमान;प्रचण्डमण्डित मण्डलाग्रो गोण्डनामासीत[॥]अय नय विनय सम्पन्नस्तनयोऽस्य समररसर सिकस्सिवाराख्यया ख्यात; [॥] पुत्रोडस्य भूता (तो) धात्रितिलकायमानः

Remove Watermark Now

पराक्रमाक्रान्तवैरि निकुरुम्बः अवार्य्यवीर्यं समन्वितः कार्य्याकार्य्यं निपुणः हनूमा नव रामस्याभिरामस्य यस्य भृत्यस्सत्यसन्धो धार्मिक स्सामियार-स्सभभूत [॥] स तत्प्रसादसमासादितकुहुण्डीविषयस्तं परिपा [ल] यं [यन्] तदन्तर्भूं तालक्त काभिधाननगर्य्याग्रामसप्तशतराजधान्यमशेषविषयविशेष-कायमानायंशालिव्रीहीक्षुवणचणकप्रियङ्गविरकोदारकश्यामाकगोघूमाद्यनेक-धान्यसमृद्धायां तद्देशविलासिनीमुखकमलविव विरोजमानायां धनधान्य-परिपूर्णक्रृषिवलप्रायायाम् ॥

ऐन्द्या दिशि महेन्द्राभ :प्रासादं प्रवरम्भहट् जिनेन्द्रा—

[दूसरा पत्र] दूसरी ओर

यत भक्त्याकारयत सुमनोहरम् ।
प्रोत्तुंग-प्रासादं त्रिभुवनतिलकं जिनालयं प्रवरं
नानास्तम्मसमुद्धृत विराजमानं चिरं जगति ॥

शक नृपाब्देष्वेकादशोत्तरेषु चतुष्षेषृषु व्यतीतेषु विभबसंवत्सरे प्रवर्त्तमाने ॥ कृते च जिनालये ।

वैशाखोदितपूर्णपुण्यदिवसे राहो [दौ] विधौ [घोर्] मण्डलं श्लेष्टे-न्देर्टियक्रनज्जनादुपगतं स्नेहाद् ग्रहं भूभुजंमां श्रो सत्याश्रय माश्रयं गुणवतां त्रिज्ञा यामास स तज्जेनालयपूजनाचितनुतक्षेत्राय धर्म्मप्रियः ॥

आयुर्ज्जन्मवतामिदं ननु तदि (डि) त् सन्ध्रेयन्द्रा (न्द्र) चपोपमं
ज्ञात्वा धर्म्मम (ध) नार्ज्जन बुद्ध जनैर्म्मार्त्यं (र्त्यैं) फलं मन्यते ।

इत्येवं प्रबिबोध्य सभ्यजनतां सत्यश्रयो वल्लभो
भक्तया तज्जिनमन्दिरोपमक्रिये क्षेत्रं ददौ शासनम् ॥
वैशाखपौर्णिमास्यां राहौ विधुमण्डलं प्रविष्टवति
सत्याश्रयनृपतिस्त्रिभुवनतिलकाय दत्तवान क्षेत्रम ॥
कनकोपलसम्भूतवृक्षमूलगुण (णा) न्वये
भूतस्समग्राद्धान्तस्सिद्धनन्दिमुनीश्वरः ॥

तस्यासोत् प्रथमशिष्यों देवताविनुतक्रमः शिष्यै पञ्चशतैर्युक्त—

तीसरा पत्र पहली ओर

श्री मत्काकोपलाम्नाये ख्यातकीर्तिर्बहुश्रुतः

pdfelement

लक्ष्मीवान्नागदेव्याख्याश्चितकाचार्य्यंदीक्षित: ॥
नागदेवगुरोश्शिष्य: प्रभूतगुणवारिधि: ।
समस्तशास्त्रसम्बोधि (धी) जिननन्दि प्रकीर्तित: ॥

श्री मद्विविध राजेन्द्र प्रस्फुरन्भकुटालिभि: ।
निधृष्टचरणाब्जाय प्रभवे जननन्दिने ।

जिननन्द्याचार्य्यसूर्य्याय दुश्चरतपोविशेषकषोपलभूताय समधिसर्व्व-शास्त्राय नगरांशतलभोगाश्च प्रददौ (॥) तत्र तलभोगसीमान्याह (।) चैत्यालयाद् वायव्यां दिशि तटांक तटो ऋजुसूत्रक्रमेण पश्चिमाभि मुखं गत्वा प्रवाहं तस्यं (स्य) मध्ये निखातपाषाणं पूर्वाभिमुखमं गत्वा तिन्त्रिणी-कबृक्षं यावत् तस्मादुत्त राभिमुखं गत्वा पूर्व्वोक्त तडांक । यावत् स्थितं एतन्नगरनिवेश क्षेत्रम् (॥) तत्र तलभोग क्षेत्र सीमान्याह(।)नगरस्य दक्षिण-स्यां दिशि सेतुबन्धात् प्रमृत्यजु जलवाहलं पूर्व्वाभिमुखं गत्वा यावदौञ्छि-कक्षेत्रं तत्पश्चिमसीम्नि निखातपाषाणं यावत्तस्मादनुसीमोतंराभिमुखं गत्वा यावच्छमीबल्मीकं तस्मात्पुन: पूर्ण्वाभिमुखं गत्वा यावत स्थलगिरी तस्मात्पुनरनुगिर्य्यंत्त राभिप्रखं गत्वा यावद्गिरेरुञ्चप्रदेशं तस्मात् पश्चि-माभिमुखं गत्वा यावत्स्थलगिरी तस्माद् दक्षिणाभिमुखं गत्वा यावतसेतू बन्धन (नं) स्थितं राजमनेन पञ्चाषट सदुत्त रनिवृत्त शतं तलभौगक्षेत्रं चतु-स्सीमाविरुद्धम् ॥ नरिदन्कग्रामे नैर्ऋत्यां दिशि नरिन्दक सामरिवाद (ड) ग्रामपथि मध्यवृतिसिगंतेगतटाकाद् ऋजुसूत्रक्रमेण नरिन्दकग्रामपथम् याव-तावत्स्थितं चत्वारिशतं नि (सन्नि) वर्तन क्षेत्रं दक्षिणादिशि राजमानेन ॥ किणयिगेनामग्रामे: पूर्व्वस्याँ दिशि अशितिनिवर्तनं क्षेत्रं राजमानेनं पिशा-चारांमं नेर्ऋत्यां दिशि यावच्छमीझाटबल्मीकं तस्मात् पूर्वाभिमुखं गत्वा यावच्छमी झाटबल्मीकं स्थितं चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥ पान्तिगणगे नामग्रामे यावच्छमी झाटबल्मीकं स्थित चतुंस्सीमा विरुद्धम्

चतुर्थ पत्र [पहली ओर]

नैर्ऋत्यां दिशि मान्यस्य क्षेत्रं उत्तरस्याँ दिशि चत्वारिशन्निवर्तनं क्षेत्रं राजमानेन पश्चिमस्याँ दिशि स्थलगिरि तस्मादनुसीमं पूर्व्वाभिमुखं गत्वा यावच्छमीबल्मीकं तस्माद्दक्षिणाभिमुखंगत्वा कोमरञ्चे-ग्राम-सीम तस्मात्पूर्व्वाभिमुखमनुसीमं गत्वा यावज्जल वाहलं तस्मादुत्तराभि-

Remove Watermark Now

मुखमनु कोत्तारकोडि (टि) तस्माद्दक्षिणाभिमुखं नुस्थलगिरि गत्वा यावत्तावत्स्थितं चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥

मंगलीनामग्राम पश्चिमदिशि राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रं तस्य सीमान्याह स्वलगिरे: पश्चिमाभिमुखमनुपथं गत्वा यावद्रू विक-ग्रामसीम तस्मादुत्तराभिमुखमनुसीम गत्वा यावत स्थलगीरि तस्मात्पू-र्व्वाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावत्स्थल गिरि तस्माद्दक्षिणाभिमुखमनु स्थलगिरि गत्वा स्थिति चतुस्सीभाव (वि) रुद्धम् ॥ करण्डिगे नाम ग्रामे प-

चतुर्थ पत्र दूसरी ओर

श्चिमस्यां दिशिचन्दवुर-पन्दङ्गवल्लिनामग्राममार्गमद्येभअश्वत्थ तटाकाद् वायव्यां दिशि राजमानेन पंञ्चविशतिनिवर्तनं क्षेत्रम् ॥ दावनवल्लिनाम-ग्रामे पश्चिमस्यां दिशि अलक्तकनगर कुम्बयिज नाम ग्राम मार्ग्गमध्ये बिम्बा-लयपिशाचारात्पश्चिमे राजमानेन चत्वारिशंन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ पुनरपि तस्मिन्नैव ग्रामे दक्षिणस्या दिशि हिङ्ग तटकादुत्तरसमीपस्थं राजमानेन शतं नि (शत-नि) वर्तनं क्षेत्रम् ॥ नन्दिणिगेनामग्रामे पूर्व्वस्यां दिशिबरवु-लिकसी श्रीपुरमार्गम्ध्ये राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तनं क्षेत्रं ॥ सिरिपत्ति नामग्रामे पश्चिमस्यां दिशि श्री पुरमार्ग्गतो दक्षिणतो राजमानेन चत्वारिशं-न्निवर्तनं क्षेत्रम् । अर्जुनवाद (ड) नाम ग्रामे पश्चिमस्य दिशि पुरभार्ग्गतो उत्तरतो राजमानेन पञ्चाशन्निवर्तनम् क्षेत्रम् ग्रामनामान्याह ॥ कुम्बयिज-द्वादशस्यो (स्या) न्त: रुविकोनाम ।

पाँचवां पत्र

ग्राम: प्रथम: ॥ सामरिवादो (डो) नाम ग्राम: द्वितीय ॥ बढमाले द्वादशस्यान्त: लह्विवादों (डो) नाम ग्राम: तृतीय: ॥ श्री पुरद्वादशस्य मध्ये पेल्लिदकोनामग्राम: चतुर्थ ॥ इत्येते चत्वारोग्रामा: चतु स्सीमाव(वि) रुद्ध-क्षेत्र: (त्रा:) सोदङ्ग: स (सो) परिकरा: अचाट भटप्रवेश्या: (॥) तदागामि-भिरस्मद्वश्यैरन्यैश्च राजभिरायुरैश्य्यर्यादीनां विलसितमच्छिराशुचञ्चलमवगव गच्छद्भिराचन्द्राक्कर्धिराण्णवस्थितिसमकालं यशश्चिचचीशुभि: स्वदत्ति निर्व्विशेषं परिहालनीयमुक्त च मन्बादिभि: ॥

वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि-
र्यस्य यस्य यदा भूमि: तस्य तस्य तदा फलम्

१. जैन शिलालेख संग्रह द्वितीय भाग पृष्ठ ८५-९०

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनं
दानं वा पालनं श्रेयो श्रेयो दानस्य पालनम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम ।
षष्टि वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

सारांशः—

कोल्हापुर [संस्कृत]

शक संवत् ४११ तदनुसार ४८८ ई०

चन्द्रग्रहण वैसाख पूर्णिमा शक सम्वत् ४११ कि रणराग का पुत्र और जयसिंहा का पौत्र पुलकेशिन जो कि सेन्द्रका परिवार का सम्बन्धी था और खोंदी जिला का राज्यपाल था जिसने अलकारक नगर के जैन मन्दिर बनवाये, और कुछ ग्राम दान दिये।

(JRAS Vol. V. P. 343 K : IA Vol. VII P. P. 209–217.

आडूर [जिला-धारवाड] : संस्कृत तथा कन्नड़ भग्न

पूर्ववर्ती चालुक्य कीर्तिवर्म्मा प्रथम का शिलालेख

(१) ……जयत्यनेकधा विश्वं विवृण्वन्नंशुभानिव……
श्री ……वर्द्धमान देवे……
(२) …… ……न् (?) यप-दुः प्रबाधनः (॥)
प्रभास (?) ति भुवं भूयो ……
(३) …… ……प्रताप क्षत ……ति……ित ……
(४) ……कु (?) र (?) तेजसा वैजय
……र……
(५) ……त्याशभृद्विषमों यमः चितं बा मानसं सत्यं स्थितं …… ……(॥) तेनेप (?) ……
(६) गामुण्ड निर्म्मापितजिनालयदानशालादिसंवृद्धयै विद्धयै विज्ञप्तेसन यशस्विना (।) पञ्चवि
(७) शति संख्यान निवर्त्तन-कृत प्रमं-क्षेत्रं राजमानेन दतं त्वहित-रक्षणं (।) (वि)
(८) श्राव्य साक्षिणः कृत्वा उञ्छोरिन्द प्रधानकानन्यैरपि च राजन्यै रक्षणायं स……(॥)

Remove Watermark Now

९. उक्तं च [।] स्वदत्तां परदत्तां वा या हरेत् वसुन्धराम् पष्टि वर्ष-सहस्राणि विष्टाय (ा) म् [जाय]-
१०. ते कृमिः [॥] स्वं दातुं समुच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनं दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रे [योडनु] —
११. पालनम् [॥] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिसगरादिभि [:] यस्य यस्य यदा भूमिस [तस्य त]
१२. स्य तदा फलम् [॥]आसीद विनयतन्दीति परलूरगणा ग्रणीरिन्द्र भूतिरिव धरात् वत …… [सं]
१३. धंसहतेः [॥] तस्यान्ते वसन्नासीत वासुदेवो गुरुर्गुरुः तस्य शिष्य [:] प्रभा …… (॥)
१४. शिष्य [:] श्री पाल नामास्य धर्म्मगाभुण्ड पुत्रजः प्रतिष्ठिपच्छिलापट्ट स्थेयादाचन्द्र (तारकं) [॥]

दूसरा लेख

१५. स्वस्ति श्रीमत् प्रि (पृ) थु (थि) वीवल्लभराजाधिराज परमेश्वर कीर्ति-वम्मरस पृथु (थु) विर् [ज्यं- गे]
१६. ये सिन्दरसरग्ग (? ग्गा,? ग्गं) गि (? धि) पाण्डीपुरमानाले परमेश्वरं माधवत्तियरसरग्गे वि (ज्ञापनं-गे)
१७. य्दु दोणगामुण्डरु एलगामुडरु मल्लेयरु उञ्छराढा (?वाँ) सवेर्रेयरु …… ह ……
१८. करण सहितमागि हविरक्षतगन्धपुष्पादिगन्धे कर्म्मगलूय पडुवणम ……
१९. य केलगे एण्टु मत्तल्गदे राममान जिनेन्द्र भवनक्कित्तोरि दानाशट सलिप्पोर (व)
२०. तें धर्म्ममारारिदा (न) किडिप्पोरवर्तपाय (म्) (॥) परलूरा चेदि-यद वलि प्रभाचन्द्र-गुरावर्पडेदा (र्) (॥)

एहोल (जिला-कलदगी) संस्कृत

(शक सं० ५५६—६३४ ई०)

चालुक्य वंशोद्भूत श्री पुलकेशी का शिलालेख

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो (वी) तज (रा-म) रणजन्मनोयस्य ।
ज्ञान समुन्द्रान्तर्गतमरिवलं जगदन्तरीपमिव ॥१॥

तदनु चिरमपरिचेयश्चालुक्य कुलविपुल जलनिधिर्जयति ।
पृथिवीमौलिललामो यः प्रभवः पुरुषरत्नोम ॥
शूरे विदुषि च विभजन्दानं च युगपदेकत्र ।
अविहितयाथात्यों जयति च सत्याश्रयः सुचिरम ॥३॥

पृथिवीवल्लभ शब्दो येषामन्वयर्थता चिर जातः ।
तद्वं शे (श्ये) षु जिगीषुषु तेषु बहुष्यतीतेषु ॥४॥

नानाहेतिषतामि धातपतितभ्रान्ताश्वपत्तिद्विपे
नृत्यद्भीमकबन्धखड्ग किरण ज्वालासहस्रे रणे ।
लक्ष्मीर्मावितचापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसा-
द्राजासीज्जयसिंहबल्लभ इति ख्यातश्चुलु क्यान्वयः ॥५॥

तदात्मजोऽभूद्रणरागनामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः ।
अमानुषत्वं किल यस्य लोकः सुप्तस्य जानाति वपुप्रकर्षात ॥६॥

तस्याभक्त नूज पुलकेशी यः श्रितेन्दुकान्तिरपि ।
श्री वल्लभोऽप्ययासीद्वातापिपुरीवधूवरताम् ॥७॥

यत्त्रिवर्गपदवीमलं क्षितौ नानुगन्तु मघुनापि राजकम् ।
भूश्च येन ह्यमेधयाजिना प्रापितावभृथमज्जना बमौ ॥८॥

नलमौर्य कदम्ब कालरात्रिस्तनयमस्यतत्य वभूवकीर्तिवर्मा ।
परदारविवृत चित्त वृतेरपि घीर्यस्य रिपुश्रियानु कृष्टा ॥९॥

रणपराक्रमलब्धजयश्रिया सपदि येन विरुग्णमशेषतः ।
नृपतिगन्ध गजसेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम ॥१०॥

तस्मिनसुरेश्वर विभूतिगताभिलाषे
राजाभवत्तानुजः किल भङ्गलीश ।
यः पूर्वपश्चिम समुद्रतयेषिताश्वः
सेनारजः पठविनिर्मितदिग्वता ॥११॥

स्फुरन्मयूखैरसिदिपका शतैर्व्युदस्य भानङ्गतमिस्रसंचयम् ।
आवाप्तवान् यो रणरङ्ग मन्दिरे कुलच्चुरि श्रीललनापरिग्रहम् ॥१२॥

पुनरपि च जिधृक्षोः सैन्यमाक्रान्तसालं
रुचिरबहुपताकं रेवतीद्वीपभाशु ।

---

१. जैन शिलालेख संग्रह भाग द्वितीय पृष्ठ ९१-९२

Remove Watermark Now

सपदि महदुदन्वत्तोय संक्रान्तबिम्बं
वरुणबलविभूदांगतं यस्य वाचा ॥१३॥

तस्याग्रस्य तनये नहुषानुभावे
लक्ष्म्या किलाभिलषिते पुलकेशिनाम्नि ।
सासूयमात्मनि भवन्तमतः पितृव्यं
ज्ञात्वावरुद्धचरिव्यवसाय बुद्धौ ॥१४॥

स यदुपचितमन्त्रोत्साहशक्तिप्रयोग-
क्षपितबलविशेषो मङ्गलीशः समन्नात ।
खततयगतराज्यारम्भयत्ने न सार्ध
निजमतनु च राज्यं जीवितं चोज्झति स्मः ॥१५॥

तावत्ताछत्रभंगे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्धं
यस्यासह्यप्रतापद्यु तिततिभिरिवाराक्रान्तभासीत्प्रभातम् ।
नृत्यद्विद्यु त्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्णपर्यन्त भागै-
र्गर्जद्भिर्वारि वाहैरलिकुल मलिनं व्योम (वा) तं कदा वा ॥१६॥

pdfelement

लब्ध्वा कालं भुवभुपगते जेतुमाप्यायिकारव्ये
गोविन्दे च द्विरदनिकरैरुत्तशम्भोधिरथ्याः ।
यस्यानीकैर्यु धि भयर सज्ञत्वमेकः प्रयात-
स्तत्रावाप्तं फलमुपकृतस्यापरेणापि सद्यः ॥१७॥

वरदातुङ्गतरंग विलसद्धं सानदी मेखलां ।
वनवासीमवमृद्नत सुरपुर स्पर्धिनी संपदा ।
महता यस्य बलार्णवेन परितः छादितोर्वीतलं
स्थलदुर्ग जलदुर्गतामिव गतं मत्तत्क्षणे पश्यताम ॥
गंगाम्बु पीत्वा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्जितसंपदोऽपि
यस्यानुगावोपनताः सदासन्नासन्नसेवामृतपानशौण्डा ॥१९॥

कोङ्कणेषु यद्वादिष्ट चण्डदण्डाम्बुवीचिभिः ।
उदस्तास्तरसा मौर्य पल्लवाम्बुसमृद्धयः ॥२०॥

अपर जलंध्रेर्लक्ष्मीं यस्मिनपुरी पुरभित्प्रभे
मदगजधटाकारैर्नावां शतैरवमृद्नति ।
जलनिधिर व व्योम व्योम्नः समोऽभवदम्बुधिः ॥२१॥

प्रतापोपनता यस्य लाटमालबगुर्जराः ।
दण्डोपनतसामन्तचर्या वर्या इवा भवन् ॥२२॥
अपरिमितवभूतिस्फीत सामन्तसेना—
मुकुटमणि मयूरवाक्रान्तपादारविन्दः ।
युधि पतितगजेन्द्रा नीक बीभत्सभूतो
भवविगलितहर्षो येन चाकारि हर्षः ॥२३॥
भनमुरुभिरनीकैः शासतो यस्य रेवा
विविधपुलिनशोभावन्ध्यविन्ध्ययोपकण्ठा ।
अधिकतरभराजतस्वेन तेजोमहिम्ना ।
शिखरिभिरिभवर्ज्या वर्ष्मणां स्पर्धयेव ॥२४॥
विधिवदुपचिताभिः शक्तिभिः शक कल्प-
स्तिसृभिरपि गुणौधैः स्वैश्च माहाकुलाद्यैः ।
अनमंदधिपतित्वं यो महाराष्ट्रकाणां
नवनवतिसहस्रग्रामभाजां त्रयाणाम ॥२५॥
गृहिणां स्वगुणैस्त्रिविर्गतुंगा विहितान्यक्षितिपालभानभंगा ।
अभवन्नुपजातमीतिलिगा यदनीकेन सतोसलाः कलिगा ॥२६॥
पिष्टं पिष्टपुरं येनं जातं दुर्गमदुर्गमम ।
चित्र यस्य कलेर्वृत्तं जातं दुर्गमदुर्गमम ॥२७॥
उद्भूतामल चामरध्वजशतच्छत्रान्धकारैर्बलैः
शौर्योत्साहर सोद्धितारिमथ नैर्मौलिदिभिः षड्विधैः
आक्रान्तात्मबलोन्नतिं बलराजः स्रछन्नकाञ्चीपुरः
प्राकारन्तरितप्रतापकरोध- पल्लवानां पतिम ॥२९॥
कावेरी द्रुतशफरीविलोलनेत्रा चोला नां सपदि ज्योद्यतस्तस
प्रश्चयोतन्मदगजसेतुरुद्धनीरा संस्पर्श परिहरित स्मरत्नराशेः
चोल केर लपाण्ड्यानां योऽभूत्तत्रमहर्द्धये ।
पल्लवानीकनीहारतुहिनेतरदीधितिः ॥३१॥
उत्साह प्रभुमन्त्रशक्ति सहिते यस्मिन्सगन्तद्दिशो
जित्वा भूमिपतीन्वि सृज्य महितानाराध्य देवद्विजाः ।
वातापीं नगरी प्रविश्य नगरीभेकाभिवोर्वीमिमाँ
चञ्चन्नीरधिनीरनीलपरिखाँ सत्याश्रये शासति ॥३२॥

१. जैनशिलालेख संग्रह द्वितीय भाग पृष्ठ ९३-९८

Remove Watermark Now

त्रिशत्सु त्रिसहस्त्रेषु श (ग) तेष्वब्देष पञ्चसु (३७३५) ॥३३॥[1]
पञ्चाशत्सु कलौ काले षटस पञ्चशताषु च (६५६) ।
समासु समतीताषु शकानां मपि भूभुजाम ॥३४॥
तस्याम्बुधित्रयनिवारितशासनस्य
सत्याश्रयस्य प्रमात्तवता प्रसादम् ।
शैलं जिनेन्द्र भवनं भवनं महिम्नां
निर्मापितं मतिमता रवि मार्तिनेदम् ॥३५॥
प्रशस्तेर्वसतेश्चास्या जिनस्य त्रिजगद्गुरोः
कर्ता कारयिता चापि रविकीर्तिः कृति स्वयम् ।,३६॥
येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विलेकिना जिनवेश्म
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित कालीदास भारविकीर्ति[1]
॥३७॥

लक्ष्मेश्वेर संस्कृत ।

—[?]—

जयत्यतिशयजि नैर्व्भासुरस्सुर वन्दितः ।
श्रीमाञ्जि नपतिस्सृष्ठेरादेः कर्ता दयोदयः ॥
देहहिसरि (इहहि स्वास्ति) ॥
चालुक्य पृथ्वीवल्लभकुलतिलकेषु बहुष्वतीषु रणपराक्रमाँक महाराजो भवत्तद्राज तनयः राजितनयो विवर्द्धितैश्वेर्यश्चतुस्समुद्रान्तस्नात तुरंगेभपदातिसेनासमूहः एरेंय्यनामधेयः श्रीमानः ॥
अपि च ॥
शासतीमां समुद्रान्तां वसुधां वसुधाधिपे ।
सत्याश्रय महाराजे राजत्सत्य समन्विते ॥
भुजगेन्द्रान्वयसेन्द्रावनीन्द्रसन्ततौ अनेकनृप संत्तमेश्वतीतेषु तत्कुल गगन चन्द्रमाः बहुसमरविजयलब्ध पताका व भासितदिगन्तरालवलयः विजयशंर्क्तिन्नमि नृपतिर्ब्बभूव [II] तत्सूनुरुदिततरुणदिवाकरकरसमसमप्रभः (शौ) र्य्य धैर्य्य सत्व-गुणोपपन्नः साभन्तबृ (बृ०) न्दमौलिमालवीढचरणः कुन्दशर्क्तिन्नाम राजाभूत तस्यप्रियतनयः ॥ अद्वितीयपुरुषकार सम्पन्नः धर्म्मार्थकामप्रधानः अनेकरणविजयवीर पताका ग्रहणोद्धत-

१. जैन शिलालेख संग्रह द्वितीय भाग पृष्ठ ९९-१००

कीर्तिः [II] तेन दुर्गशक्ति नामधेयेन शङ्खजिनेन्द्र चैत्यनित्यपूजार्थं पुण्याभिवृद्धये च पुलिगेरे-नामनगरस्योत्तरपार्श्वे पञ्चाशन्निवर्तन परिमाणक्षेत्रं दत्ताम् ।। तस्य सीमा समाख्यायते [I] पूर्व्वतः किन्नरी क्षेत्रम् । पावकदिशि ज्येष्ठलिङ्ग भूमि. । दक्षिणतः धटिकाक्षेत्रम् । नैर्ऋत्यां दिशि दं (? पं) डीस (श) श्रेष्ठभूमिः । पश्चिभतः रामेश्वर क्षेत्रम वायव्यां होनेश्वर क्षेत्रम् । उत्तरतः सिन्देश्वर क्षेत्रम् ई (ए) शान्यां दिशि भट्टारी क्षेत्रम् तद्दक्षिणत. पूब्वोंक्तकिन्नरीक्षेत्रम् ।।

देवस्वं विषं लोके न विषम् न (?) विषभुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र पौत्रिकम ।।१।।

चालुक्य वल्लेश्वर का बादामी शिलालेख

बीजापुर दक्षिणी संस्कृतः—

साका संवत ४६५ में चालुक्य वल्लभेश्वर पुलकेशियन ने जिसने हिरण्यगर्भ, अश्वमेध और अन्य यज्ञ किये, उसने पृथ्वी की खुशहाली के लिये वातापी को राजधानी बनाया और शिलालेख लिखवाया ।

संवत् ४६५ तदनुमार ५४३ ई०.

KL Vol. II No. 2 P P 4-6. EL Vol. XXVIII P.P. 4.9 SIVOL I P. 482.

अमिनभावी शिलालेख

धारवाड़:— सूर्यग्रहण बुद्धवार का चन्द्रमा बैसाख सर्वजीत सरवत्सारा शाका ४८८ सत्यश्रय पुलकेशिन ने काली देवी मन्दिर के साहयातार्थ (कुंदर) अग्रहारा दिया ।

सन् ई० ५६७-६८.

EIL कर्नाटक देश शिलालेख Vol. I 612. B. O. Vol. I P II P358.

1. A. Vol. XXX. P. 209 धारवाड़ गजेटियर P.P. 59-60

तोरमल कोल्हापुर शिलालेख

संस्कृत दक्षिणी कथन छठी शताब्दी ई०

कार्तिक पुर्णिमा तिथि १२ राजा रन विक्रन्ता धर्म महाराजा पुलकेशिन के प्रिय पुत्र किर्तीवर्मन ने चालुक्य परिवार की कीर्तियार्थ

१. जैन शिला लेख संग्रह द्वितीय भाग पृष्ठ ११ १००.

Remove Watermark Now

नुलगोला ग्राम ब्रह्मा के मन्दिर को दान स्वरूप (उपहार स्वरूप) दिया ।

JUB Vol. V. F. 165. F. Prabuddha Karnatka-Vol. XXIII P. 25 F. E1. Vol. XXVIII P. P. 59.62.

बादामी गुफा शिलालेख (सारांश)

बीजापुर (संस्कृत)

कार्तिक पुर्णिमा शाका ५०० महाराजा किर्तीवर्मन और मंगलेश्वर, (कीर्तीवर्मत का छोटा भाई) ने विष्णु मन्दिर की चार दीवारी बनवाई ।

1. A Vol III P. P. 305-06 BiD Vol. X PP. 57-60.

गुफा शिला लेख (सारांश)

बादामी (बीजापुर) बिना तिथि

पुरानी कन्नड़ भाषा

मंगलेश्वर द्वारा बनाये गये लन्जीगेरश्वर मन्दिर के लिए वीशा आधा ग्राम दान दिया ।

1 A Vol. X PP. 59-60

मंगल राजा का नेरर ताम्रपत्र (सारांश)

कुदाल (रत्नगिरी),

संस्कृत दक्षिणी ब्राह्मी

कार्तिक मास की द्वादसी तिथि

राजा मंगलेश वल्लभ के पुत्र ने बुद्ध राजा शंकर गण के पुत्र को विजय किया और-उपरोक्त तिथि को ग्राम कुन्दी प्रिय स्वामी भगवान बिष्णु के मन्दिर को उपहार स्वरूप दिया ।

JBBRAS-Vol. III P· 203 L-i-A Vol VII P. P. 161-63

मुधोल ताम्रपत्र (सारांश)

बीजापुर दक्षिण में ब्राह्मी लिपी में लिखा छठी शताब्दी के चौथ चरण का अनिश्चित तिथि का मिला हैं। इसमें उग्रवर्मन पुत्र श्री पृथ्वीबल्लभ का ग्राम मालाव केटक बारह देव मन्दिर को दैने का विवरण है । उग वर्मन को एलन पुत्र वर्मन पढ़ता है और I.N.S. बाजपाई यज्ञ वर्मन पढ़ता है ।

प्रोग्रेस रिपोर्ट आफ R. R. in BOMBAY-1941-46 P.P. 12819 ARIE 1949-50 P.P. 28 11, E. 1. Vol. XXX II P.P. 293-298.

pdfelement

गोआ ताम्रपत्र (सारांश)

गोआ (दक्षिण) में ब्रह्मी में लिखा ताम्रपत्र मिला है जो कि माघ पुर्णिमा शक संवत् ५३२ में महाराजा श्री पृथ्वी बल्लभ मंगलेश्वर की अनुमती से सत्यथय, राजा ध्रुव इन्द्रवर्मन अधिपती वैश्य मण्डल रेवती द्वीप ने ग्राम केरो लका व खेतर देश शिवार्य को शासन पत्र, शंकर के पुत्र दुर्गनाग द्वारा लिखा कर दिया गया।

नोट (i) शक संवत् ५३२ तदनुसार ५ जनवरी, सन् ६१० (ii) उनवर्मन जव गोआ के राज्यपाल नियुक्त हुए तो उन्हें ध्रुव राजा ईन्द्र-वर्मन की उपाधि मिली थी।

JBBRAS-Vol 1. X P P. 348-67

मंगलेश का महाकुट-सतम्भ शिला लेख (साराँश)

बादामी (बीजापुर) संस्कृत और दक्षिणी कथन

बैसाखी पुर्णिमा सिद्धार्थ संवत ५१४ मंगलेश ने अपनी माता दुर्लभ-देवी (वापुरा) के बनाये महाकूटेश्वर नाथ मन्दिर की सहायता को बढ़ा कर दस ग्राम उपहार में दिये। राजा मंगलेश ने उत्तरी भारत को विजय किया। और भागीरथी नदी तट पर विजय स्तम्भ स्थापित किया।

नोट—उपरोक्त लेख से प्रतीत होता है कि संवत् ५९४ में मंगलेश के पुत्र ईन्द्र वर्मन ने उत्तरी भारत का कुछ भाग विजय किया, भागीरथी (गंगा) तट पर विजय स्तम्भ स्थापित किया। क्योंकि मंगलेश जीवित थे इस कारण महाकुट के शिलालेख में दस ग्रामों का दान देने में मंगलेश का नाम लिखा गया।

I A Vol XIX PP 7-20

दुबकुण्ड स्तम्भ पर संस्कृत (काष्ठासंघ)

[संवत् ११५२=१०९५ ई०]

संवत् ११५२—बैशाख सुदि पञ्चम्यां ॥

श्री काष्ठासंघ महाचार्यवर्य श्री देवसेन पादुका युगलम्।

[स्पष्ट है]

[A Cunningham Reports XX, P. 102.]

दुबुकुण्ड-संस्कृत संवत् ११४५=१०८८ ई० (जायसवाल)

[दुबकुण्ड ग्राम में स्थित जिन मन्दिर का शासनपत्र]

Remove Watermark Now

पं० १. ओं ॥ [ओं] न [मो] वीतरागाय ॥ आ..... द्रष्टि-
v v टना-[द्यत्पा] दपींठ लुठन्म [दा] रसगमं [द] गुज [द] लि
[म] न्निष्ठयत सांराविणम। [त]

२. [त्पा] v v वद्ध [च] : v रमु [तां] स v f ..... ोद्वे [ग]
मिवाकरोत्स ऋषभस्वामी श्रियेस्तात्सता [म्] ॥ (वि) भ्रा—

३. ["णों] गुण [सं] ह [ति] हततमस्तापो निजज्योतिषा। [यु]
क्तात्मापि जगंति संगतजय [क्ष] क्रे सरागाणि यः। उन्माद्यन्मकर[ध्व]
जोर्जितग जग्रासोल्लसत्केसरी।

१०. ति ख्या [ति] जगाम जयतु सु [श्रुत] देवता सा ॥
आसीत्कच्छपघात वंशतिलकस्त्रै लोक्यनिअर्यशः पांडु श्रीयुवराज सूतर।

११. समद्यद्भोम सेनायुगः श्री मा [न] र्जुन भूपति पतिरपाम प्याम
यत्तुल्यतां नो गामीर्यगुणेन निर्जित जग [द्ध] न्वी धनु—

१२. र्व्विद्यया ॥ श्री विद्याधरदेव कार्य निरतः श्रीराज्यपालं हठात्कंठास्थि-
च्छिदनेक वाणनिवहैर्हत्वा भहत्याहवे।

३२. ब्यावर्ण्यमान विपणिव्यवहारसारम् ॥ ० ॥ आसीज्जायस पूर्व्विनि-
र्ग्गतवणिग्वंशावं (ब) राभीशुभान् जासूक [प्रकटाक्षतां]—

४९. साधुः दाहडः सद्विवेकश्च [कू] के कः सूर्पट सुकृते पटुः ॥
तथा देवधरः शृद्ध धर्मकर्म धुरन्धर। च [द्रा] लिखि—

५०. तनाकश्च महीचन्द्रः शुर्भार्जनात्। गुणिनः क्षणनाशि-श्री कलादान-
विचक्षणाः। अन्येपि श्रावकाः केचिद—

५१. कृते [धन] पाव काः। किं च लक्ष्मणसज्ञोंभूद हरदेवस्य मातुलः।
गोष्ठिको जिन भक्तश्च सर्व्वशास्त्र—

५२. विचक्षणः ॥शृंगाग्रोल्लिखितां ब (ब) रं वारसुधासांद्र-द्रवापांडुर
सार्थश्री जिनमन्दिर त्रियजदानं प्रदं सुं—

५९. स्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलमिति स्मृति वचनान्निजमपि
श्रेयः प्रयोजनं मन्ययाने सकलैरपि

६०. भाविभिर्भूमिपालै प्रतिभालनीय मिति ॥०॥ लिलेदवोदयराजो यां प्रश
(श) स्ति शुवधीरियाम्। उत्कीर्णवा—

६१. नं शिलाकूटस्तील्हणस्तां सदक्षराम ॥ संवत् ॥४५॥
भाद्रपद सुदि ३ सोम दिने ॥ मंङ्गल महाश्रीः ॥

युवराज विक्रमसिंह के वर्णन (पं० १० ३२) में ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है।

कच्छपघात (कछवाहा) वंश में

१. पांडु श्रीयुवराज (?) हुए। उनके बाद उनके लड़के—
२. अर्जुन हुए, जिन्होंने विद्याधरदेव के कार्य से युद्ध में राज्यपाल को मारा। उनके पुत्र—
३. अभिमन्यु हुए जिनके पराक्रम की प्रशंसा राजा भोज ने की थी। उनके पुत्र—
४. विजयपाल हुए और फिर उनके पुत्र—
५. विक्रमसिंह हुए। जिनके काल की तिथि यह शिलालेख सम्वत् ११४५ भाद्रपद सुदी ३ सोमवार बतलाता है।

दूसरे विभाग के लेख का सार यह है कि विक्रमसिंह के नगर का नाम चदोंभा था। यह चदोंभा बर्तमान दुबकुण्ड ही होना चाहिए और उस समय यह एक बड़ा भारी व्यापारिक केन्द्र रहा होगा। ३२-३९ की पंक्तियों के श्लोकों में उस समय के दो प्रसिद्ध जैन व्यापारियों का नाम ऋषि और दाहड़ दिया हुआ है। विक्रमसिंह ने उन्हें श्रेष्ठि की पदवी दी थी। और इनमें से एक साधु दाहाड के मन्दिर के संस्थापकों में से हैं। ऋषि और दाहड़ दौनों ही जयदेव और उसकी पत्नी यशोमती के पुत्र तथा श्रेष्ठी जासुक के नाती थे। जासुक जयसवालवंश के थे जो जायस (एक शहर) से निकला था।

[E. Kielhorn. ॥ n° XV॥ (P. 237-240)]

हुम्मच-कन्नड़ (महोग्रवंश)

[शक ९८७=१०६५ ई०]

[हुम्मच में, चन्द्रप्रभ वस्तिकी बाहरी दीवाल पर] भद्रमस्तु जिन सा (शा) ······स्वस्ति समस्त भुवनाश्रय श्री पृथिवी वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परक भट्टारकं सत्याश्रय-कुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत-त्रैलोक्यमल्लदेवइ धतुस्समुद्र-पर्य्यन्त-पृथ्वी राज्यानुष्ठानविनिरे तत्पादपद्योपजीवि। स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरनुक्तर मथुराधीश्वर पट्टि पोम्बुर्च्चं पुर-वरेश्वरं मग्रोहवंश ललामँ पद्मावती लब्ध वर-प्रसादासादित-विपुल तुलापुरुष महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज-विराजित राजमान मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं:

बहु कला कीर्ण्ण सान्तरांदित्यं सकल जन स्तुष्यं कीर्ति नारायण सौय्य परायणं जिन-पदाराधकं रिपु-बल-साधकं निति-सास्त्रज्ञ: विरुद सर्व्वज्ञ नामादि समस्त प्रशस्ति-सहितं श्रीमत त्रैलोक्यमल्ल भुजबल-शान्तर-देवं शान्तलिगे-सांसिरम निरर्द्दायादवूं निराकुल माडि राज्यं गेंय्युक्तिव्दु स (श) क-वर्ष ९८७ नेय विश्वावसुसम्वत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे निजान्वय-राजधानि-पोम्बुंञ्चदोल भुजवल-शा-न्तर जिनालयक्के माघ मासद सुद्र-पञ्चमी-सोमवारमु मुत्तारायण-संक्रमणदन्दु तम्म गुरु गल कनकणन्दि देवर्गे धारा पूर्व्वकं माड़िहरवरियं बिट्टम।

प्रशस्तियां

जयपुर के जैन मन्दिर के शिला लेख पर यह लिखा हैं।

खडेंलवालान्वय: सं० १२५० श्रीमूल संघे सा० राजदड़े सा० जगमाहा पुत्र हरिपनि बैसाख सुदी १ शुक्ल।[1]

यह शिलालेख इस समय दिल्ली किले के संग्रहालय में (बी-६) के नाम से सुरक्षित है। इसकी प्रतिलिपि इस प्रकार है:—

स्वस्ति सर्वाभीष्ट फलं यस्या पराराधन तत्परा।
लभन्ते मनु जास्तस्मै गणाधिपतये नम: ॥ १ ॥
सत्यले नाम वः पातु सांतवन्यां वया सह
प्रसादाघस्य देवस्य भक्ता: स्यु: सौख्यभाजनम् ॥ २ ॥
देशोस्ति हारियानास्य पृथिव्यां स्वर्गासिनम:
टिल्लिकाख्यापुरी तत्र तौमरैरास्ति निर्मिता ॥ ३ ॥
तोमरानन्तरं यस्या राज्यं निहत कंटकं
चाहमाना नृपाक्ष्वकु: प्रजापालन तत्परा: ॥ ४ ॥
अथ प्रताप दहनदग्धारी कुलकानन:
मलेच्छ सहावदीनस्तां बलेन जगृहे पुरी ॥ ५ ॥
तत: प्रभृति मुक्ता सा तुरष्टकैयविद्यपु:
श्री मंहमद शादिस्तां याति संप्रति भूपति: ॥ ६ ॥ अपि च
तस्यां पुर्यस्ति वणिजाभग्रोतक निवासितां
वंश श्री साचदेवाख्य साधुस्तत्रादपद्यत: ॥ ७ ॥

1. Ancient Cities And Towers of Rajsthan Page. 503

लक्ष्मीघरस्तत्रनयों वभूव लक्ष्मीधरांह्रिद्वग पद्म भृंग
देवद्विराधन निष्टचित्तः समस्त भूतावन लब्ध कीर्ति ॥ ८ ॥
लक्ष्मीधरस्तनयों कलिकालवाह्मकास्ताभुमों महिमवारिनिधि सुरुपी
माहामिधो निपुण बुद्धिमूतदाद्योंधीकारण्यउत्तमयशा अनुजस्य तस्य ।६।
महाख्यस्या भवत्पुत्रो मेल्हा नाम मनोहरः
देवद्विज गुरुणां यः सदाराधन तत्परः ॥ १० ॥
श्रीघरस्यात्मजां वीरो नाम्नी भर्तृपरायणं ।
धीका विवह्मामास तस्या मास्तामुभौ ॥ ११ ॥
ज्येष्ठस्तयो खेतल नामधेयः साधुत्व पाथोधिरनतशीलः
पैतुक नामा च लधुः समस्त गुरुद्विजाराधन सीलचितः ॥१३॥
अथै तयो खेतल पैतलाख्यसाध्वीः सदाकीर्तन कर्मबुद्धाः
द्वयं शुभाभा सारबलाभिधानग्रामाँत भूरध्यवतस्तस्य चितै ॥१३॥
पितृणाम क्षयस्वर्ग प्रष्यै सन्तान वृद्धये
षेतल पैतलश्चैनं कारयाभासुतः प्रह्नि ॥ १४ ॥
वेदवस्वग्नि चन्द्रांक संख्येद्वे विक्रभाक्कंतः
पंचम्या फाल्गुनसिते लिखितम् भौमवासरे ॥ १५ ॥
इन्द्रप्रस्थ प्रतिगणे ग्रामे सारवलेष्तु
चिरं तिष्ठतु कूपोयं कारकश्च संबाछ्व ॥ १६ ॥
सम्वत् १३८४ फाल्गुन शुदि ५ भोग दिने १

—एपीग्रिभिका झण्डिका भाग I पृ० ६३-६४

सम्वत्सरेस्मिन श्री विक्रमादित्य गताब्दा सम्वत १३६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि गुरुवासरे अद्येह श्री योगिनीपुरे समसूराजाबलि शिरो मुकुट माणिक्य खचितनरवरस्मों सुरत्राण श्री महम्मदसाहि गाम्नि महि विभ्रति सति अस्मिन राज्य योगिनीपुर स्थिताअग्रोतकान्वय शशाँक सा० महिपाल पुत्रः जिन चरण कमल चंचरीक सा० सेतु झेराँ पुत्र बीधा हेमराज एतेः धर्म कर्म्मणि सदोद्यमपरेः ज्ञानावरणीकर्मक्षयाय भव्यजनघानाँ पठनाय उत्तर-पुराण पुस्तकं लिखापितं लिखितं गोडान्वय कायस्थ पण्डित गन्धर्व पुत्र बाहड़ राजदेवेन।[2] (प्रशस्ति सं० पृ० १२)

१. अग्रवाल जाति का विकास पृष्ठ १०३-१०४
२. अग्रवालों की उत्पत्ति पृष्ठ ६

Remove Watermark Now

सन् १३६६ फाल्गुन सुदी पंचम शुक्रवासरे श्री योगिनीपुरे सुरत्राण श्री मन्महंद साहि राज्य प्रवर्तमाने काष्टासघें त्रयोदसविधि चरित्र (धारक) भट्टारक नयसेन तस्य शिष्यः भट्टारक दुर्लभसेन तस्याध्यय-नाम पुस्तकमिदं प्रतिक्रमणरते लिखापयित्वा दरबार चेत्यालय समीप स्थित अग्रोतकान्यवक परमश्रावक तिगिया इति पूर्व पुरुप सज्ञकेन पाटण वास्तव्य सा० पाणा भार्याहिलो अनयो पुत्रो दिउप पूना नामादो सा० पूना भार्या वीक्षा अतयो पुत्रेण दरबार चेत्यालये पचभ्युद्यापनाय संकलसंघ माकार्य देव शास्त्र गुरुणां महामहं विधाय संघपूजा वस्त्रा-आहारादिभिः कृता शास्त्रदान प्रस्तावे पंच पुस्तकानि ददानि ।[1]

(प्रशस्तिसंग्रह पृ० ६७)

सम्वत् १४१६ वर्षे भाद्रवा सुदी १३ दिने गुरौ श्री मद्योगिनी पुरे सकल राज्य शिरोमुकुटमणिक्य मरीचिकृत चरणकमलपादपीठस्य श्रीमत् पेरोजाशाहे सकल साभ्राज्यपुरां त्रिभ्राणस्य समय वर्तमाने श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये मूलसघें सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक रत्नकीर्ति तरुणतरुणित्वमुर्वी कुर्वाणां श्रीप्रभाचन्द्राणाँ तस्य शिष्य ब्रह्मनाथ पठनार्थ अग्रोत्त कान्वये गोहिल गौत्रे भर (मर) थल वास्तव्य परमश्रावक साधुसाड़ भार्यावीरो तयो पुत्र साधु उधस भार्यालोथा ही भरहपाल भार्या लोथा ही श्रीभरपाल लिखापितं कर्मक्षयार्थै। कनकदेव पण्डित खिखित। शुभं भूयात

(जैन शास्त्र भण्डार ठोलियों का मन्दिर)

सम्वत् १४८६ वर्षे पोषबदी ६ रवौ दिने श्री गोपगिरेः तोमरवंश महाराजाधिराज श्रीमत डोंगरसीदेव राज्य प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासघें माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्ति देवास्तदगुरुशिष्य श्रीमद कोर्तिदेवाः तस्य शिष्य श्री वादीन्द्र चूडामणो महासिद्धान्ती श्री ब्रह्मा-सीराख्य नाम देवा। अग्रोतकान्वेय मीतल गौत्रे साधु श्री गल्हा भार्या खेभा तयो पुत्रः भोणी एक पक्षा। द्वितीय पक्षा अग्रोत कान्वेय गर्ग साधु श्री क्षेमधरा भार्या हरे तयोः पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र देखलु द्वितीय बील्हाः तृतीय आल्हा चतुर्थ भरया। देखलु भार्यारूपा वील्हा

१. अग्रवालों की उत्पत्ति पृष्ठ ६

भार्या ना थी, साधु नाल्हाभार्या था नी, तयोः पुत्राश्चत्वारः साधु श्रीचन्द्रा साधु हरिश्चन्द्र सा० रता ।० साल्हा ।[1]

तिजारा में मिला शिलालेख

१५५४ वर्षे वैसाख सुदी ३ बुधवारि काष्ठासघें भ० श्री मलयकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री गुणभ्रदेण गजायरु त्रिणद त्रिलोकचन्द एतेषां (गोयल गौत्रे मदन सी ला० होलाही) मध्ये सतोलण तलई चन्द्रप्रतीमा स्थापिता ।

पंचास्तिकाय टीका ले० अमृतचन्द्र सूरि संवत् १५९९ वर्षे अश्विन वदि नवमी बुधवारे लिखितं तिजारास्थने अल्लावलखान राज्ये प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे मथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये अग्रवालान्वये सीतल गोत्रे सा० महादास तत्पुत्र सा० घीपलतेनेदं पंचास्तिकायं पुस्तकं लिखाप्य पंडित श्रीसाधारणाय पठनार्थं दंत ।[2]

The poet named Govinda of the Aggarwal caste wrote the Purusharthanusasana at Sripathapuri (Bayana) in the fifteenth century A D,[3]

संवत् १४११ मइसाभीकऊं कीयउरवाणु तुमपज्जुन पायऊ अग्रवाल की मेरी जात पुर अग्रोए मुंहिउत्पाति ॥ निरवाणु । सुधाणु जणनी गुणवई उर यारिऊ साह महाराज करह अवतरिम एरद्द नजर बसते जाणि सुनिउ चरित मइ रचिउ पुराणि ॥[4]

जैन मन्दिर जयपुर का शिलालेख

संवत् १७१६ वर्षे चैत्र वदी ६ सोमे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीचन्द्रकीर्ति भ० श्री देवेन्द्र कीर्तिस्तपट्टे भ० श्री नरेन्द्रकीर्तिस्तदाभनाये अग्रवालन्वये गर्गगौत्रे सा समर्थ तदभार्या पनोत पु० सा केशोदे भार्यां परिमला तत्पुत्र सा नन्दराम

१. वही ,, पृष्ठ ६
2. Ancient Cities and Towers of Rajsthan Page 613
3. ,, ,, ,, ,, Page 563
४. अग्रसैन, अग्रोहा, अग्रबाल पृ० ३०३

Remove Watermark Now

तदभार्या सहोदरा तयो पुत्रास्यय प्रथम दयासी तत भा० भगवती द्वितीय पुत्र संगही जगसिंह तत भार्या निरमला तयोः पुत्र चिरंजीव जीवदास तृतीय पुत्र सा० हरीसिंह तत भार्या जनकवरी एतेषां मध्ये संघाधिपति श्री जगतसिंहेन अंबावत्या जतुर्विधसघेन हस्तिनापुरमध्ये नित्वप्रतिष्ठापिता संधाधिपति श्री जगसिंहं नित्यं प्रणमति ।

यन्त्र का लेख [चौदरिश मन्दिर जयपुर]

संवत् १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये भेलवालान्वये ग्रध्रवालगौत्रे संधट्टी श्री नरहरदास सुखानंद तथा आमेर वास्तव्ये साह श्री घासीराम तस्य स्त्री घोटभदे तयौः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र पादौराय तस्य स्त्री जोणोदे द्वितीय पुत्र रायकरण एते प्रतिष्ठा सम्मेद सहले कारिता ।[1]

[जम्बूस्वामि चरित राजमल्ल]

अथ संवत्सरेस्मिन श्री नृप विक्रमादित्यगताब्द संवत् १६३२ वर्षे चैत्र सुदि ८ वासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री अर्गलपुर दुर्गे श्री पातिसाहिज लालदीन अकबर साहि प्रवर्तमाने श्रीमत्काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ० श्रीमलयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तत्पट्टे भ० श्रीभानुकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ० श्री कुमार सेनानामधेयास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये भटानिया कोलवास्तव्यसाधुश्रीनन्दन ऐतेषां मध्ये परमसुश्रावक साधु श्री टोडरेन जंबूस्वामि चरित्रं करापितं ॥[3]

भुगिल गौत्र प्रशस्ति—पुष्पदत्त कृत आदि पुराण (अपभ्रंश काव्य) की एक प्रति तेरापंथी बड़ा दिगम्बर जैन मन्दिर जयपुर में है। यह प्रति संवत् १६५३ ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया बृहस्पतिवार को संग्रामपुर में राजाधिराज महाराज श्री मानसिंह जी के राज्यकाल में पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्री मूलसंघ नन्दि अम्नाय बलात्कार गण, सरस्वती गच्छ, कुन्दकुंदान्वय के भट्टारक पद्मनन्दि, उनके शिष्य शुभचन्द्र, उनके शिष्य जिनचन्द्र, उनके

1. Ancient Cities And Towers of Rajsthan Page 615
२. अग्रसैन, अग्रोहा, अग्रवाल पृष्ठ ३२२.

शिष्य प्रभाचन्द, उनके शिष्य चन्द्रकिर्ती उनके अम्नावर्ती, अग्रोत कान्वय के भूगिल गौत्र में लिखी गई थी ।

गूजर पुत्रीबाई मीसो की प्रशस्ति—उक्त रइधू कवि कृत प्राकृत भाषा का 'सिधान्त सार' नामक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की जयपुर के बाबा दुलीचन्द के भण्डार वाली प्रति की अन्त प्रशस्ति में कहा गया है कि वह प्रति अग्रोत कान्वय के गर्गगौत्र के कुटुम्ब की गूजर पुत्री वाई मीसों ने अपने कर्मों के क्षय के लिए लिखवाई थी। इस प्रति का लेखन काल माह सुदि पंचम सोमवार सं० १८६४ है।

गौहिल गौत्र पुष्पिकायें—उक्त रइधूकृत पार्श्वनाथ पुराण (अपभ्रंश काव्य) की एक प्रति फरुखनगर के जैन भण्डार में है। जिसका लेखनकाल संवत् १५४८ चैत्र बदि एकादश शुक्रवार है। यह प्रति भट्टारक हेमचन्द्रदेव की आम्नाय वाले अग्रोतकान्वय के गोहिल गौत्र के आशीवाल सराफ के कुटुम्ब वालों ने लिखाई थी।[1]

अथ संवत्सरेस्मिन श्री नपति विक्रमादित्य राज्ये सवतु सत्रह सत सम्पूर्ण १७०० फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां रविवासरे श्री साहिजा राज्ये पर्वतमाने श्री काष्ठासघे मथुरान्वये पुष्करगणे श्री लोहाचार्यन्वय भट्टारक श्री यश:कीर्तिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्रीगुणचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलचन्द्रे तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रसेण तदाम्नाये हिसारीवास्तव्यं अग्रोतकान्वय गर्गगौत्रे सेठी पारस तस्य भार्या सेठाणी परोज तस्य पुत्र द्वौ ज्येष्ट पुत्र सेठी सुखनन्द तस्य भार्या सेठाणी धनो, तस्य पुत्र युग्म प्रथम ताराचन्द द्वि पुत्र जगरूप सेठी पार्शव पुत्री शीलतोतपरिगणा विनय वागश्वरी जीवणी अपर अग्रोतकान्वय गोयल गौत्रे आसीवाल चौधरी वुनु तस्य भार्या सा० वसो तस्य पुत्र अर्जुन तस्य भागिनी शीलतोय तरंगिणी दानगुणे रेवती साधर्म्मिणी दयालीतेन द्वौ सार्धम्मिणी दशलखिणी व्रत उद्यापनार्थ मृगांक लेखा चरित्रं लिखापितं हिसार नगरे वारवद्धमान

१. अग्रवाल जाति का विकास पृष्ठ १६७-६८-६६

चेत्यालये पंचगोष्ठे तत्रस्थिति अबोधजीव सबोधिनी बाई माथुरी जाग्य धरापित: ।[1]

प्रशस्ति

साहु नट्ठल के पिता का नाम आल्हण था इनका वंश अग्रवाल था। इनकी माता का नाम मेमडिय था। साहु नट्ठल के दो ज्येष्ठ भाई और भी थे। राघव और सोढल। सोढल परदोषों के प्रकाशन से विरक्त, रत्नत्रय से विभूषित और चतुर्विध संघ को दान देने में तैयार रहता था। उस समय दिल्ली के जैनियों में प्रमुख था। साहु नट्ठल उच्च कोटि के कुशल व्यापारी भी थे। उस समय उनका व्यापार अंग,बंग,कलिंग,कर्नाटक,नेपाल, भोट, पांचाल, केरल, गुर्जर, सोरठ और हरियाणा आदि नगरों और देशों में चलरहा था। नट्ठल साहु तोमरवंशी अनङ्गपाल (तृतीय)के अमात्य थे। नट्ठल साहु ने उस समय दिल्ली में आदिनाथ का एक प्रसिद्ध जिन मन्दिर बनवाया था। जो अत्यन्त सुन्दर था।[2]

नकल बन्दोवस्त अग्रोहा

नकल कैफीयत बरसीजरा नसब बन्दोबस्ती साल १६०६—१६१० मौजा अग्रोहा नं० ५४ तहसील फतेहाबाद, जिला हिसार बुनियाद हसुल हकीयत व हाल तकसीम, औलीन जमीन

पहले किसी जमाने में राजा उग्रसेन ने यह गांव आवाद किया था, फिर गैर आबाद हो गया, फिर किसी वक्त में मालकान कोम डोगर के बुजुर्ग ईलाका फसलपुर से चले आए और गैर आबाद जंगल व खेड़ा देखकर आबाद हो गए और बुजर्ग मालकान कौम पचादा राजपूत भट्टी के ईलाका जैसलमेर से इस तरफ चले आए और इत्तफाक से इकट्ठे हो गए और इस गैर आबाद जंगल व खेड़े को देखकर आबाद हो गए। पहले बिना तमीज या हिस्से के आबाद व काविज रहे और पांच घर राजपूत भट्टी और सोलह घर अकवाम डोगरान जुमला इक्कीश घर इकट्ठे आबाद

१. जैन प्रशस्ति सँग्रह पृ० १५६

२. जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह पृ० ८४

Remove Watermark Now

हुए। इसके बाद नाहर जी टाकुर अपने बरादरान से नाराज होकर यहां चला आया और देहहजा पर आबाद हो गया। फिर वह कहीं और चला गया। इसके हमरा के यहाँ से बुजर्ग अकवाम हिन्दू राजपूतान यहां रह गए और उनको भी कुछ जमीन बतौर मालकान कब्जा यहाँ दी गई और कुछ लोग बजरिए खरीद मालिक हुए। बाद में कौम डोगरान, कौम पचादा यानि राजपूत भट्टी का भी बिल मुकाबल हिस्सा मसकूरा के कम वेस होगया और उस पर खेवट मालकान काबज हो गए। इस तरह अब भी कब्जा है।

(ब) बुनयाद देह व वजा तसमीया साब का खेड़ा उग्रसेन वाला पर गांव आबाद है इस पर नाम अग्रोहा पर मशहूर हो गया और वही नाम रहा फिर कभी गैर आबाद नहीं हुआ।

(ज) [दस्तूर बसूली मुआमला अयाम मालकान सल्फ व बायाम सरकार] पहले यह गाँव महाराजा पटियाला की रियासत में था और थेह के ऊपर किला है। उसको दीवान नानुमल ने बनवाया था। राजासाहब के अहद में मवेशियान पर भाली होकर दिया जाता था मगर उसकी तादाद मालूम नहीं है। बादमें यह इलाका सरकार अंग्रेजीके तसल्लुत में आगया। बन्दोबस्त सरसरी में बन्दोबस्त सन् १८२३ व बन्दोवस्त शानि साल १८६३ बन्दोबस्त सन् १८६०-६१ जमा मुकरर हुए।

द० सैटलमैंट कमीश्नर द० गिरदावर द० पटवारी अग्रोहा[1]

२३ सितम्बर १६१०

१. बन्दोबस्त सरकारी अग्रोहा

Remove Watermark Now

राजगान पंजाब अग्रोहा

महाराजा अमरसिंह ने फतेहाबाद रानियां सिरसा विजय करके अपने राज्य में मिलाया था। सन् १७८३ में अकाल के कारण यह इलाके विरान हो गए। सन् १८०४ में फतेहाबाद के छियालीस गांव थे। पच्चीस रियासत पटियाला के जिन में अग्रोहा एक था। इक्कीस रियासत कैथल के थे। सन् १८११ में अंग्रेजों ने यह कहकर कि तुम लोगों ने सन् १७८३ में इन पर कब्जा छोड़ दिया था, अब यह हमारे कब्जे में हैं।[1]

१. राजगान पंजाब पृष्ठ २२६

सर्ग सप्तम

लेखक का वंश परिचय

मौहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद लेखक के वंश के पूर्वज अग्रोहा से निकल कर अपनी जागीर हरिताब गगोंवां (वर्तमान हिसार जिस स्थान पर बसा है ।) के ग्राम हरिता में आ बसे । फिरोजशाह तुगलक ने हिसार बनाने वास्ते स्थान लेकर हरिता के पास का इलाका दे दिया । तैमुर लंग के आक्रमण के समय भाग्यवश श्री भूरामल जी बच गये । जबकि काफी परिवार भाई बन्धु मारे गये । भूरामल जीं का गौत्र सिंहल था । तैमुर के बाद भट्टी राजपूत की लूट आदि से तंग आकर रामपुर(निर्जन) जिला जीन्द आ बसे । भूरामलजी के पुत्र बसावामल हुए । बसावामल के दो पुत्र केशोराम व भवानीदास हुए । भवानीदास के छः पुत्र हुए । पांच पुत्रशेरगढ़ (जिला अम्बाला) जा बसे और वह शेरगढ़िये कहलाये । इसका बड़ा पुत्र मेधुमल (मेघराज) था । इसके वंशज मघान कहलाये । केशोराम जी के चार पुत्र हुए । मथुरादास. दयालदास, दुर्गदास, व जोशीदास : दयालदास, दुर्गदास व जोगीदास झुंझु वाला जा बसे । वह घुंझु कहलाये । बाद में लुधियाना आ बसे । इसके वंशज लुधियाना हैं । मथुरादास जीं को कानुन्गोई का पद मिला । इनके वंशज कानुनगो कहलाये । इनका विवाह जीन्द के खानदान उदियान की पुत्री से हुआ था । जीन्व के चार प्रसिद्ध खानदान उदियान, धनोरिया, भुजान, सिंधान प्रसिद्ध थे । इन खानदानों के पूर्वजों ने योहम्मद-गौरी के आक्रमण के बाद अग्रोहा से आकर जीन्द आवाद किया था ।

नोटः—अग्रवाल शब्द कब प्रारम्भ हुआ का पता लेने के लिए हम ने प्रयास किया तव केवल १५५७ के सरकारी व पुरोहितों के रिकार्ड

Remove Watermark Now

में मेधोमल जी के आगे अग्रवाल बनिया लिखा है । अन्यथा कहीं भी अग्रवाल शब्द नहीं आया । शेरगढ़िये झुझु वाले मघान व कानुनगो गौश सिगल लिखा मिला । प्रतीत होता है कि अग्रवाल शब्द को छुपाया गया हैं उसके स्थान पर गौत्र व बनिया या महाजन लिखवाया गया है । अग्रवाल शब्द का लिखना १८५७ ई० के बाद प्रारम्भ हुआ । ऐसा ही और खानदानों के विषय में भी पाया जाता है । इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि मुगलों को अग्रवालों से खास दुशमनी थी अतः अग्रवाल शब्द को छुपाया गया है ।

कानुनगोई विभाग का निर्माणः—बादशाह अकबर ने विस्सेदारी कानून बनाए जिसके अनुसार इलाके को विभागों में वितरित किया । सूबे (प्रान्त) चकले (डिवीजन) परगने (जिला) । सुबे का अधिकारी सुवेदारः चकले का चकलेदार, परगने का अधिकारी कानुनगो कहा गया । कानुनगो का कार्य अपने क्षेत्र का प्रबन्ध करना, टैक्स लगाना व वसुल करना, मुकदमों का निबटारा करना, जिसमें जुर्माना व कैद की सजा के अधिकार भी थे तथा मृत्यु दण्ड देने के लिये काजियों की कौसल की प्रधानता और बादशाही सेना वास्ते घोड़े, बैल व सेना की भरती का इन्तजाम करना था । विशेष कानुन बनाने में हुकूमत की सहायता करना । कानुनगो के फैसले की अपील सुबेदार के यहाँ होती थी । जीन्द परगना का चकला हिसार व सुबा अकवराबाद (आगरा) था ।

मथुरादास के कानुनगोई का पदः—बादशाह अकबर ने जीन्द सन्देश भेजा कि कानूनगोई के पद के लिये कोई फारसी व अरबी का विशेष जानकार हो तो यह शाही सन्दश जीन्द के चारों खानदानों के पास पहूँचा । इन खानदानों में कोई भी अरबी फारसी का विद्वान न था । खानदान उदियान ने अपने दयौहत्त मथुरादास का नाम लिखा । पर पहले ही अकबराबाद में कानुनी विशेषज्ञः व सलाहकार थे । अकवर ने इनको जीन्द का कानुनगोई का पद दिया । इन्होने दोनों पदों को सम्भाला इनके दो पुत्र, मुकन्ददास व पृथ्वीदास हुए । मुकन्ददास जीन्द के कानुनगोई पद पर रहे व पृथ्वीदास आगरा में रहे । मथुरादास के स्वर्गवास के बाद जहाँगीर के समय कानुनगोई मुकन्ददासजी के नाम हुई।

तथा मुकन्ददासजी ने निर्जन से जीन्द निवास स्थान बनाया। मुसलमानों से हवेलियाँ खरीदी। एक हवेली ऊँचाई पर थी दूसरी पृथ्वीदास वास्ते निचाई पर, मुकन्ददास के वंशज ऊँचाई वाली हवेली के कारण उपराई वाले व पृथ्वीदास के वंशज निचाई वाली हवेली के कारण तहलाई वाले कहलाये। हवेलियों के बाद दो मोहल्ले वस गये। मौहल्ला कानुनगो या उपराई व मौहल्ला कानुनगो तहलाई कहलाये। मुकन्ददास जी ने तालाब, कुए, बाग व शिवालय आदि बनवाये। मुकन्ददास के छः पुत्र हुए। इनके एक के बाद इनके तीन विवाह हुए। इन तीनों विवाहों से दो-दो पुत्र हुए। और हर पत्नी का छोटा पुत्र मर गया। इस प्रकार वह तीनपुत्र, मोहनदास धर्मदास, व किशोरदास बचे। पृथ्वीदास के भी तीन, पुत्र हुए। इस प्रकार उपराई के तीन थाबों, मोहनदास, धर्मदास, किशोरदास व तहलाई के तीन थांबें मुरलीधर, अनुपराये, शौप्रसाद के नाम से बने।

कानुनगोई का पद पीढ़ी दर पीढ़ी मिलना:—मोहनदासजी को बादशाह औरङ्गजेब ने सन् १०६५ फसलीं मेंनबाव सैयुद अली खाँ के द्वारा कानुनगोई का तांम्रपत्र पीढ़ी दर पीढ़ी तीफलबाद तीफल (अर्थात बड़े लड़के के बाद बड़ा लड़का) पद पर बैठता था। तथा एक भाई या विशेष व्यक्ति मुगल दरबार (दूत के रूप में) में उपस्थित रहेगा। धर्मदास शाहजहाँबाद (देहली) दरबार में रहते थे। मोहन दास के दो पुत्र रामसिंह व सुजानसिंह हुए।

रामसिंह को गुरु तेग बहादुर ने अपनी खड्ग उपहार में दी :—

सन् ई० १६६६, सन जलुस औरंगजेब ३८ श्री रामसिंहजी को कानुनगोई पद मिला। गुरु तेगबहादुर ओरंगजेब के बुलाने पर देहली गये तो मार्ग में जीन्द ठहरे थे। रामसिंह जी की सेवा व श्रद्धा से प्रसन्न होकर अपनी खड्ग उपहार स्वरूप रामसिंहजी को दी। इनका पुत्र गरीबदास हुआ। गरीबदास कानुनगोई की गद्दी पर सन् जलुस ४६ मोहम्मदशाह सन् ११४२ फसली में बैठे। मोहम्मदशाह बादशाह ने इन से ११ हजार स्वर्ण मुद्रायें कर्ज लीं। इनके दो पुत्र ठण्डीराम व गिरधारीलाल हुए।

जीन्द में हिन्दु राज्य की स्थापना:—ठण्डीरामजी सन् जलुस ४ सन्

Remove Watermark Now

फसली ११७० में कानुनगोई पद पर बैठे। शाह आलम ने पाँच जलुस ११७१ को मुला इमदाद खाँ के बहकावे में आकर गरीबदास के गाँव व कानुनगोई जब्त करली और इमदाद खाँ के बेटे महमुद खा को अधिकार सौंप दिये।

महमूद खां हिन्दुओं को तंग करने तगा। तब ठण्डीराम ने शाहजहाँ सिंह से मिलकर जीन्द पर कब्जा करवा दिया। महमूद खाँ बचकर भाग गया। देहली पहुंच कर शाहीं सेना लेकर जीन्द की ओर चला जब शाही सेना की खबर शहजादा सिंह को मिली तो वह राज्य छोड़ कर भाग गया। उसी समय ठण्डीराम ने अमरनाथ ब्राह्मण को सरदार राजपतसिंह के पास करनाल भेजा और उसको बुलाकर जीन्द कां राजा घोषित कर दिया। व आप रोहतक पहुँच कर शाही सेनापति को अपने हक में किया। व वापिस देहली की ओर भेज दिया। देहली जाकर बादशाह को नजराना व वार्षिक कर लगवा कर गजपतसिंह को जीन्द का राजा की सनद दिलवाई। और अपने एक बन्धु लाहौरीमल को मुगल सेना का सेनापति बनवाया। इन कार्यों में अपना अथाहधन खर्च करके हिन्दु राज्य की स्थापना की और जब्ती की वापिसी का शाहीपत्र निकलवाया। यह कानुनगोई के साथ २ राजा गजपतसिंह के खास मशीर व मुन्तजिम रहे। मशीरे खास का पद मन्त्री मण्डल के ऊपर होता था राजा गजपतसिंह ने अपने रियासत के गाँवों से नजराने लेने के अपनी रियासत के हरगाँव से एक रुपया हर छःमाही ठण्डीराम को नजराना देने का भी फरमाण निकाला अर्थात् छमाही नजराना लेना शुरु कर दिया। इनका एक पुत्र दौलतराम हुआ। ठण्डीराम ने महाराजा अमरसिँह पटियाला व दीवान नानुमल से मिलकर अग्रोहा को आबाद करने का विचार किया : वहाँ पर किला बनवाना शुरु किया। परन्तु राजाओं की आपसी फूट के कारण यह किर्वाण कार्य रुक गया। तो दौलतराम ने जो धन अपने पिता ठण्डीराने अग्रोहा के लिए रखा था। जीन्द में किला बनाकर राजा को भेंट किया। दौलतराम का केवल एक पुत्र पद्मसिंह हुआ। राजाओं को जब भी धन की आवश्यकता होती थी तब इनसे ऋण पर धन लेते थे। महाराजा रणजीतसिंह इनकी बहुत कदर करते थे राजा संगतसिंह व महाराजा रणजीत सिंह शेर पंजाब व साहिबसिंह इकट्ठे तीर्थयात्रा पर जाते थे, इनके कहने से ज्वालादेवी मन्दिर पर

स्वर्ण पत्र चढ़ाया गया था। महाराजा रणजीतसिंह ने इनको जागीर तोहफे के रूप में दी थी। इनके पुत्र सन्तसिंह थे जो बाद में सन्तलाल कहलाये।

(श्री सन्तलालजी)

सन्तलाल का फिरंगियों पर आक्रमणः—सन् १८३३ ई० में एक फिरंगी सेना जनरल टालवेस्ट की कमान में जीन्द के मार्ग से पंजाब जा रही थी। सन्तलाल ने महाराजा संगतसिंह को सलाह दी कि इस सेना

Remove Watermark Now

को रोकना चाहिये। यह फिरंगी राज्यों में आपसी फूट डालकर आप लाभ उठायेंगे। और सारे देश पर कब्जा करके लोगों का धर्म नाश भी कर देंगे। और सेना के साथ फिरंगी टुकड़ी पर आक्रमण करवा दिया। किसी प्रकार टालबेस्ट बच कर भाग गया। दलवाली सिंह ने राजा के कान भरे। कहा कि एक लड़के की सलाह से आपको ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए नहीं तो आपका राज्य जाता रहेगा। आप पर इस काण्ड की जिम्मेवारी डाल देंगे और फिरंगियों से समझौता कर लो। राजा ने ऐसा ही किया। सन्तलाल को देश निकाला का शाही संदेश निकाला। और आप संतब उन्हें मारने वास्ते चल पड़ा। सन्तलाल इस समय गढ़ी निडानी में थे। उनको पता लगते अपनी एकमात्र बाल-विधवा बूआ को साथ लेकर चल पड़े। मार्ग में एक स्थान पर पड़ाव डाला व स्वयं साधु का वेश बनाकर राजा व उसके आदमियों से बचे। अन्त में वह पुण्डरी में अपने नाना के यहाँ पहुंचे। एक रात मामी ने उनके स्वर्ण व जवाहरात छुपाकर शोर मचा दिया कि चोर ले गये। खाली हाथ अम्बाला पहुंचा। उन दिनों अम्बाला में रेजीडेन्सी थी। वहाँ जाकर अर्जी लिखने का कार्य आरम्भ किया। प्रथम अर्जी लिखी थी। जब पेश हुई तो रजीडेन्सी का रीडर (Reader) पढ़ न सका। अधिकारी ने इसको बुलाया। इन्होंने डरते-डरते कहा कि मैंने लिखी है। यह इस कारण घबरा गये कि हमने हमेशा हुक्म लिखे हैं। कहीं कोई गलत बात न लिखी गई हो। अधिकारी ने कहा कि तुम कल से हमारे रीडर हुए और पहले रीडर को मुन्सी (क्लर्क) बना दिया। इन्होंने अपना नाम सन्तलाल बताया। अपने कार्य से अधिकारी को प्रसन्न कर लिया। वह अपना कार्य समाप्त करके दफ्तर में ही माला फेरने लगते थे। एक दिन अधिकारी बोला कि तुम दफ्तर में माला क्यों फेरते हो। इन्होंने कहा कि साहिब मेरे कार्य में कोई गलती हुई है या काम अधूरा रहा हो तो बतायें। कहने लगे नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। तब मैं खाली समय बरबाद न करके भगवान का स्मरण करूँ तो क्या हानि है। अधिकारी खुश हो गया। फिर कभी उसको नहीं टोका। एक बार यह अधिकारी बहुत उदास था। सन्तलाल ने इसका कारण पूछा। कहने लगा कि मैं अपने देश जाना चाहता हूँ। परन्तु आर्डर नहीं मिलता। तुम ही भगवान से कह कर यह कार्य करवा दो। हमारा ईशु तो

हमारी सुनता ही नहीं। वह बोले साहिब, भगवान तो हमारा और आपका एक ही है। मैं आपकी ओर से अर्जी लिखता हूं। आप कलकत्ता भिजवा दें। भगवान् की कृपा से यह कार्य हो जायगा। अधिकारी बोला कि यदि मुझे विलायत जाने का हुक्म मिला तो अपना यह पद मैं तुम्हें दे जाऊँगा। उस अर्जी पर उस अधिकारी को विलायत जाने का हुक्म मिल गया। पता लगते ही वह अधिकारी स्वयं ही सन्तलाल के निवास स्थान पर पहुँचा। आपसी मित्रता की कड़ी आरम्भ हुई। संतलाल ने उसे विश्वास में लेकर सारी आप बीती सुनाई कि किस प्रकार चाचा दलवालीसिंह और राजा संगतसिंह के कारण उन पर मुसीबत पडी। मुझे मेरी जब्ती वापिस दिलवाएँ। उस अधिकारी ने वादा किया कि मैं लन्दन में कोशिश करूँगा। और उससे प्रार्थना पत्र लिखवा लिया। और उन्हें अपने स्थान पर लगाकर विलायत चला गया। गवर्नर जनरल को कह कर कि इनका टालवेस्ट की सेना मारने में हाथ नहीं था। चाचा की गद्दारी थी। परन्तु प्रीवरी कोंसिल ने उस अर्जी पर हुक्म दिया कि हमने रियासत के मामलों में दखल न देने की शर्त मंजूर की है। इस पर हम हुक्मनही लिख सकते। राजा संगतसिंह लावल्द मर गया। उनके हकदार, उनकी रानी व महाराजा नाभा व पटियाला व सरदार बडुखां सरूपसिंह उठे और वह मुकदमा इनकी अदालत में चला। सरदार सरूपसिंह ने जब्ती वापिस करने का वादा किया। आर्डर मिलने से पूर्व उसे बुला कर लिख कर देने को कहा तो वह इन्कार कर गया। उसने सोचा कि आर्डर लिखा जा चुका है। तब उन्होंने गवर्नर जनरल को कहा कि लुधियाना आदि इलाके बहुत महत्वपूर्ण हैं और सरूपसिंह को केवल गजपतसिंह के विजित स्थान का राज्य देकर शेष जो इनको महाराजा रणजीतसिँह से मिला है वह ले लिया जावे। लुधियाना, गोहाना कलानौर, जण्डयाला आदि का इलाका अँग्रेजों के नियन्त्रण में चला गया। जीन्द सफीदों संगरूर यह महाराजा सरूपसिंह को मिला। जब राजा सरूपसिँह गद्दी पर बैठा तब किशोरदास के थाम्बे के श्री मयाराम ने सरूपसिंह से चुगली की कि शेष कानुनगोयों ने रानी सूरवां की तरफदारी करके आपसे विश्वासघात किया। इन सबको अपनी रियासत से निकाल देना चाहिए। कुछ समय बाद राजा ने दलवालीसिँह को राज्य से निकाल कर जब्ती के आदेश दे दिये। और दलवालीसिँह को

Remove Watermark Now

कैद कर लिया। बाकी कानुनगोओं को भी देश निकालो का आदेश जारी कर दिया। केवल कानुन्गोओं में मयाराम ही जीन्द में रह गया बाकी सभी रियासत छोड़ कर चले गये थे। सन्तलाल का विवाह सन्नौर (पटियाला) के ला० हून्नामल की पुत्री किसनदेवी से हुआ था। सन्तलाल के तीन पुत्र रघुनाथदास निरभाराम व बालमुकुन्द हुए।

लाला रघुनाथदास:—इनका जन्म सन् १८५२ में हुआ। रघुनाथदास जी अपने पिता सन्तलाल जी के स्थान पर नियुक्त हुए। महाराजा जीन्द (रघुबीर सिँह) ने इनको जीन्द दरबार में अव्वल दर्जे की कुर्सी व दरबार बसन्त व दशहरे के अवसर पर दोशाला व पौशाक व कानुन्गोई की उपाधि, उपाधि की पैन्शन (जागीर) ३० रुपये मासिक, जमीन का का लगान, मुआफी ब सरदार ग्रामें की उपाधि से विभूषित किया और रियासत के हरगाँव से छःमाही नजराना एक रुपया प्रतिगाँव के हिसाब से दिलवाया जाने लगा व चौधरी शहर का पद दिया तथा इनकी ओर से अदालत में दो क्लर्क जिनकी तनख्वाह रियासत देती थी रखे गये (बतौर नुमांयंदा) व विवाह सम्बन्ध आदि पर भाईचारा सम्बन्ध स्थापित किये गये। राजा रनवीर सिंहजी के जन्म पर स्वर्ण के कड़े व दौशाला अम्बाला रघुनाथदासजी के वास्ते भेजे। और उनसे कहा गया कि आप जीन्द अपने नगर वापिस आ जावे तो गाँव भी वापिस दिये जायेंगे। वह जिद्द पर अड़े रहे कि हम जीन्द आपके राज्य में नहीं रहते। रघुनाथजी का विवाह शाहबाद मारकण्डा के सेठ रामजीदास सर्राफ की पुत्री गंगादेवी से हुआ। रामजीदास के पौत्र सेठ सुदर्शन पंजाब के स्वतन्त्रता सेनानी व महान नेता हुए। सेठ रामजी दास के पुत्र गंगाराम भारत के माने हुए इन्जीनियर थे और डा० धनपत राये पंजाब के प्रसिद्ध डा० हुए। सन् १९०८ में रघुनाथदासजी का स्वर्गवास हुआ। इनके सात पुत्र थे। श्रीकृष्णदास, बृजवासी लाल, यह ही इनकी मृत्यु के समय दो पुत्र थे। बाकी प्लेग के कारण मर गये थे। इनकी एक पुत्री लक्ष्मी देवी थी जो कि पटियाला के खजान्ची खानदान में विवाही थी। उनके पति का प्लेग के कारण देहान्त हो गया था। उस बीमारी में इनका सारा खानदान नष्ट हो गया। बृजवासीलाल का विवाह होशियारपुर के आर्य परिवार लाला आत्माराम जी की लड़की लक्ष्मी देवी से हुआ और लक्ष्मीदेवी ने आर्यसमाज मन्दिर

pdfelement

में काफी दान दिया जिसमें बाग व कमरे आदि बनवाये गये थे। यह एकादशी को पूजन करते हुये बैकुण्ठ धाम चले गये थे। श्योलाल की पत्नी का नाम पन्नीदेवी था। उसने अम्बाला जैन मन्दिर को एक मकान दान दिया।

(श्री कृष्णदासजी)

श्रीकृष्णदासजी:—श्रीकृष्णदासजी का जन्म अम्बाला में सन् १९०१ में हुआ। वे एकाउन्टेन्ट गवर्नर (पंजाव) लगे। और लाहौर रहने लगे। वे सामाजिक कार्यों में रुचि लेते थे। वे आल इण्डिया अग्रवाल सभा के महामन्त्री रहे। लाहौर से अग्रवाल सेवक पत्रिका का प्रकाशन किया। इनका विवाह श्री मुंशीराम जो कि दुघला के राजा के पौत्र थे, जिनकी जागीर सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में जब्त हुई थी, उनकी पुत्री चमेलीदेवी से हुआ। लाला मुंशीराम साहिया जिला देहरादून जाकर व्यापार करने लग गये थे। श्रीकृष्णदास के विवाह को बारह वर्ष हो चुके थे परन्तु इनके सन्तान न हुई और न ही इनके भाईयों के सन्तान हुई। लाहौर के नगर सेठ लालचन्द कपूरजी का स्वर्गवास हो गया था। उनकी पत्नी श्रीरामरक्खीजी घोर तपस्या करने लगीं तथा फिर उनके पास श्री इकवालनाथजी की धर्मपत्नी श्री केसरा देवीजी भी आ गईं और दोनों ने मिलकर तपस्या द्वारा महान् उत्तम पदवीं प्राप्त की। उनके यहाँ हर समय दान व भण्डारा आदि चलते रहते थे। इनको माताजी भैनजी

Remove Watermark Now

के नाम से पुकारा जाता था। लोग इनको नरनारायण का अवतार मानते हैं। श्रीकृष्णदास जी माता गंगादेवीजी व बहिन लक्ष्मीदेवी जी बताया करती थीं कि हमने कई बार माता जी भैनजी को भगवान विष्णु और लक्ष्मी के रूप में देखा है। माताजी भैनजी के वाक्य द्वारा श्रीकृष्ण-दासजी के यहाँ दो पुत्र उत्पन्न हुए। यह कथा विस्तारपूर्वक सतीजी के ग्रन्थ में लिखी हुई है। सन् १९४७ में लाहौर का पाकिस्तान में जाने के वाद इनके तपोवन मन्दिर अमृतसर, हरिद्वार, देहली गाँधी नगर में बने हैं। हरिद्वार का तपोवन मन्दिर सेठ लच्छेशाह अग्रवाल लाहौर वालों ने बनवाया। श्रीकृष्ण दास जी का स्वर्गवास सन् १९३५ में लाहौर में हो गया। इनके दो पुत्र वृन्दावन व वेदप्रकाश हुए। श्रीकृष्णदास जी का दूसरा विवाह लुधियाना के गोयल परिवार के लाला चाननमल की पुत्री लाजवन्ती से हुआ।

सती लाजवन्ती:—लाजवन्ती जी का जन्म लुधियाना के गोयल गौत्री परिवार जो कि प्राचीन गाँव हावड़ी (कैथल) का परिवार था में लाला चाननमल जी के यहाँ सन् १९१३ में हुआ। इनका विवाह लाला श्री कृष्णदासजी कानुनगो लाहौर वालों से सन् १९३३ में हुआ। सन् १९३५ में इनके पति का स्वर्गवास हो गया। इनका विचार पति से साथ सती होने का हुआ। इन्होंने अपनी ननद लछमीदेवी जी से सती होने का विचार प्रकट किया। उन्होंने समझाया कि यह तो आत्महत्या है। दूसरे तेरे पति के दो बच्चे हैं। इनकी जिम्मेवारी तुझे निभानी है। और अपना कर्त्तव्य निभाते हुए भगवान में मन लगाने और पति का ध्यान करने के लिए कहा। मेरे साथ भी तेरे जैसी घटना हुई। और मैं पुत्री के लिए अपने कर्तव्य का पालन कर रही हूँ। और श्री माताजी भैन-जी का भी यही आदेश है। उन्होंने तप द्वारा भगवत स्थान पाया। लाजवन्ती जी ने यह उपदेश मान लिया। क्रिया कर्म सम्पन्न होने के बाद इनकी सास गंगादेवी जी ने कहा कि मैं तुमको रखने में असमर्थ हूं क्योंकि संसार में राक्षसवृत्ति के लोग अधिक हैं। तुम खूबसूरत हो। मैं बच्चों को तो किसी प्रकार पाल लूंगी परन्तु तेरी रक्षा करनी मुश्किल है। यह अपने भाइयों के पास लुधियाना चली गई। तथा अपने बाल कटवा लिये। और घर के बाहर निकलना बन्द कर दिया। और भगवत

pdfelement

चरणों में ध्यान लगा लिया। कई बर्ष बीत जाने के बाद तीर्थयात्रा आरम्भ की। भारत के अनेक तीर्थों द्वारका जी से बद्रीनाथ, रामेश्वरम् से अमरनाथ तक पशुपतिनाथ नेपाल तक के तीर्थों की यात्रा की। अपनी सास के स्वर्गवास होने के बाद सन् १९४७ में आकर अपने पुत्रों को सम्भाला। इनके चेहरे पर इतना तेज उत्पन्न हो गया था कि कोई भी व्यक्ति इनकी ओर नहीं देख सकता था। इनके चरणों की ओर ही देखता था। सन् १९५२ में इनका स्वर्गवास हो गया। अतः अपने पति को दिया वचन कि, इन दोनों पुत्रों को माँ का अभाव न होने दूंगी। हर समय रक्षा करूँगी को पूरा करते-करते १९५२ में पति लोक को सिधार गईं।

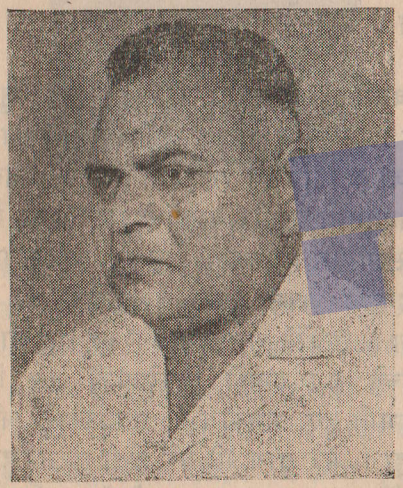

(श्री वृन्दावन दासजी)

श्रीवृन्दावनः— वृन्दावन का जन्म कार्तिक सुदी अष्टमी सन् ई० १९३० में लाहौर में हुआ। तीन वर्ष की आयु में ही मां का साया सिर से उठ गया। सात वर्ष की अवस्था में पिता का भी स्वर्गवास हो गया। यह बालकपन में ही भगवान् कृष्ण के सगुण रूप के उपासक थे। बच्चों में खेलते समय भगवान् की लीलाओं का खेल अति प्रिय था। अथवा घर आकर अपने ठाकुरजी से खेलते। स्कूल जाने से पहले और

Remove Watermark Now

स्कूल से आने के बाद जब भी खेलने जाते, ठाकुर सेवा या कीर्तन वन्दना में लगे रहते। सन् १९४७ में लाहौर से जीन्द आये। तथा अपना जमीदारी का कार्य भार सम्भाला। सर्वप्रथम जीन्द १९४४ में आये और अपनी प्राचीन जायदाद को प्राप्त करने में लगे। सन् १९४५ में महाराजा जीन्द से मिले। और राज्य की ओर से चौधरी शहर जीन्द की सनद मिली। तथा दरबार के समय दर्जा अव्वल की कुर्सी व पदवी कानुनगोई की पैन्शन प्राप्त की। परिवारिक कार्यों को बाद के समय में १८पुराण व पुराण शास्त्र एवं बाईवल कुरान व जैन बौद्ध धर्म शास्त्र आदि का गहन अध्ययन किया। शेष समय भगवान के गुणगान में व्यतीत करते थे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में भाग लिया। जनसंघ जीन्द शाखा के महामन्त्री बने परन्तु जब देखा कि राजनीति मौकाप्रस्ती व कुर्सियों का लालच है, राजनीति को छोड़ कर सामाजिक कार्यों में भाग लेना आरम्भ कर दिया। जीन्द में वैल फेयर निर्माण कमेटी द्वारा कालिज व अन्य कार्यों के लिए बनाई गई कमेटी के महामन्त्री बने व कालेज बनाने में हर प्रकार का सहयोग दिया। इसके पश्चात् हैप्पी नर्सरी स्कूल बनाया गया इसके मैनेजर नियुक्त हुए। सामाजिक संस्थाओं को सहयोग देकर अपना कर्तव्य निभाया। अपने पिताजी की इच्छानुसार इतिहास लिखने के लिए अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान की स्थापना की। इनका कथन है कि:—

१. समाज देश व लोगों की जहाँ तक हो सके सेवा करो। परन्तु पद लाभ आदि की भावना न करो। यही प्रभु की श्रेष्ठ सेवा है।

२. दान दो। परन्तु दान करने से नाम होने की भावना न करो।

३. कोई कुछ भी कहे, अपने स्वच्छ मन व वचन द्वारा कार्य करते रहो।

४. किसी से न डरो। और न किसी को डराओ। ऊँच नीच का भेद न रखो। सब भगवान् के वन्दे हैं।

५. सदैव दूसरों को सुख देने वाले मीठे वचन बोलो।

६. भगवान् पर विश्वास रखो। उसके नाम को दिल से न निकालो।

pdfelement

७. किसी को गलत मार्ग पर न चलाओ। उसे नेक सलाह दो।

८. मित्र को मित्र मानो उसके कार्यों की आलोचना न करके उसे मार्ग दर्शन दो। प्रभु की इच्छा पर निर्भर रहो।

लाला लाहौरीमल:—यह थावां धर्मदास से थे। यह मुगल बादशाह जहांदार शाह के समय सेनापति रहे।

लाला बृन्दावन:—यह राजा भागसिंह के समय सेनापति जीन्द थे। जब नवाब हांसी ने जीन्द पर आक्रमण किया उसे पराजित किया। राजा भरतपुर के आक्रमण को भी विफल बनाया।

लाला सेवकराम:—यह महाराजा भागसिंह के समय दीवान थे। कम्पनी की तरफ से महाराजा रणजीत सिंह के पास मित्रता का सन्देश लेकर गये थे। महाराजा रणजीत सिंह ने इन्हें छः सौ रुपये वार्षिक जागीर दी।

लाला शादीलाल:—यह महाराजा भागसिंह के समय वजीर थे। बाद में महाराजा रणजीतसिंह के दरबार में जीन्द की ओर से वकील (राजदूत) नियुक्त हुए। इनके द्वारा महाराजा रणजीतसिंह ने २००० रुपये वार्षिक जागीर की सन्द नलसाहिब को भेजी।

लाला जैसीराम:—लाला जैसीराम कानुनगोया तहलाई शाख से थे। राजा भागसिंह सख्त बीमार हो गये। राज्य का भार रानी सबराई ने सम्भाला। राजा भागसिंह व उसके छोटे कुंवर प्रतापसिंह ने रात्री में आक्रमण करके रानी सबराई व जैसीराम की हत्या कर दी। शादीलाल बाहर गये हुए थे, पता लगते ही भारी सेना लेकर कुंवर-प्रतापसिंह पर आक्रमण किया तथा १८१९ ई० में फतेहसिंह को राज्य पर बिठाया।

लाला गुरुमुखसिंह:—यह राजा सरदौलसिंह के दीवान थे। बाद में इनके पुत्र धन्नामल के वंश में फतेहचन्द व उसका पुत्र बनारसीदास हुए। आगे इनके वंश का पता नहीं चला कि कहाँ पर आबाद हुआ। किसी भी बन्धु को इस वंश का पता हो तो लिखने का कष्ट करें।

Remove Watermark Now

लाला दलवालीसिंह:—ये महाराजा संगतसिंह के दीवान रहे। संगतसिंह जी के स्वर्गवास के बाद रानी सुखां को सिंहासन पर बैठा कर आपने कार्यभार सम्भाला। जब राजा सरूपसिंह को राज्य मिला तब राजा सरूपसिंह ने इनकी जब्ती की व कैद किया। अँग्रेजी सरकार के हस्तक्षेप से रिहा हुए और थानेश्वर आबाद हुए। इनका पुत्र नन्दसिंह था। जिसके नाम से थानेश्वर में गढ़ी नन्दसिंह बनी है।

(श्री लाला राधा कृष्ण)

लाला राधाकृष्ण:—राधाकृष्णजी अपनी सौतेली माता के दुर्व्यवहार से अम्बाला चले गये और कम्पनी सरकार के मीर मुन्शी बने। इनके नाम से अम्बाला में मुंशी राधाकृष्ण बाजार है। इन्होंने अम्बाला में लंगर आरम्भ किया। कहते हैं कि यह दोनों समय लंगर का समय खत्म

pdfelement

होने के बाद वे लंगर का भोजन ही करते थे। जो भी गरीब या बेसहारा अपाहिज आता उसका पुरी तरह से जीविका का प्रबन्ध करते। गरीब कन्याओं के विवाह आदि में सहायता आदि करते। यदि किसी व्यक्ति को व्यापार में धन का अभाव होता तो उसे धन लिखित पढ़त के दो आने सैंकड़ा प्रति मास पर देते। इसका विवरण विस्तारपूर्वक वचनीराम ने अपनी पुस्तक सूर्यप्रकाश में लिखा है।

लाला उदयरामः—यह राधाकृष्ण के पुत्र थे। ये अम्बाला के उपायुक्त और १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों की सेना लेकर देहली गये थे। दरबार केसरी के समय गवर्नर जनरल ने इनको दरबार का मुन्तजिम बनाया था। इनसे राजा रघुबीरसिंह जीन्द ने पुरानी बातों को समाप्त करके मित्रता का हाथ बढ़ाया था। इन्होंने बड़ी होशियारी से राजा जीन्द को दरबार तक पालकी में व तख्त पर छत्र लगाने की आज्ञा गवर्नर से दिलवाई थी। दरबार में केवल बादशाह के छत्र लगा था और पालकीं में आया था या राजा जीन्द। इस पर और राजाओं ने ऐतराज उठाया था। परन्तु इनकी विजय हुई थी राजा ने इनको गाँव किशनपुरा व बाग एवं मकान पुरुस्कार के रूप में दिये थे। इनके तीन पुत्र, मनीराम, घनीराम व राजाराम हुए। राजाराम पीपली के तहसीलदार व किसनपुरा गाँव के विस्सेदार थे।

लाला गनीरामः—यह ब्रिटिश सरकार के सेनापति थे। इनके घुटनों में चोट लगने के कारण यह रिटायर हो गये थे तथा जीन्द आ गये थे। अपनी विस्सेदारी किसनपुरा गाँव जीन्द की देखभाल करते।

लाला ओइम प्रकाशः—यह गनीराम के पुत्र थे। राजा जीन्द ने सन् १९४५ में कुर्सी नशीन की उपाधि दी थी।

Remove Watermark Now

वंशावली

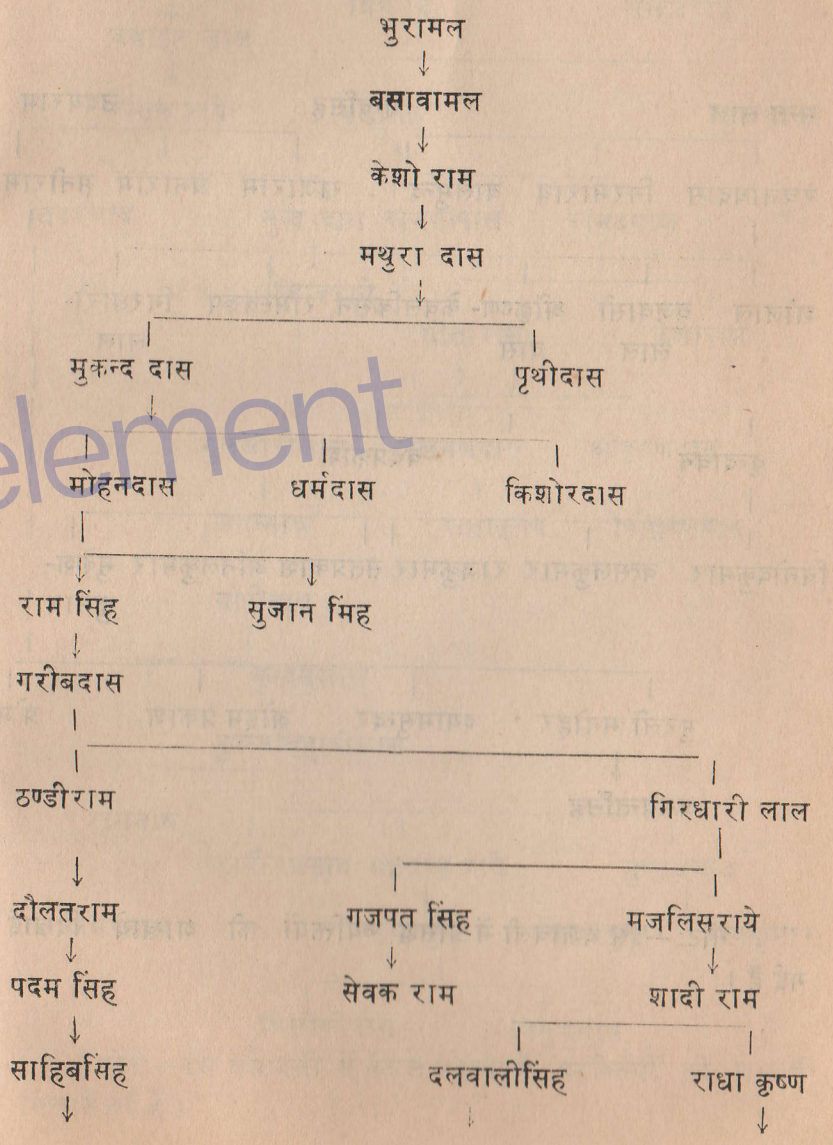

pdfelement

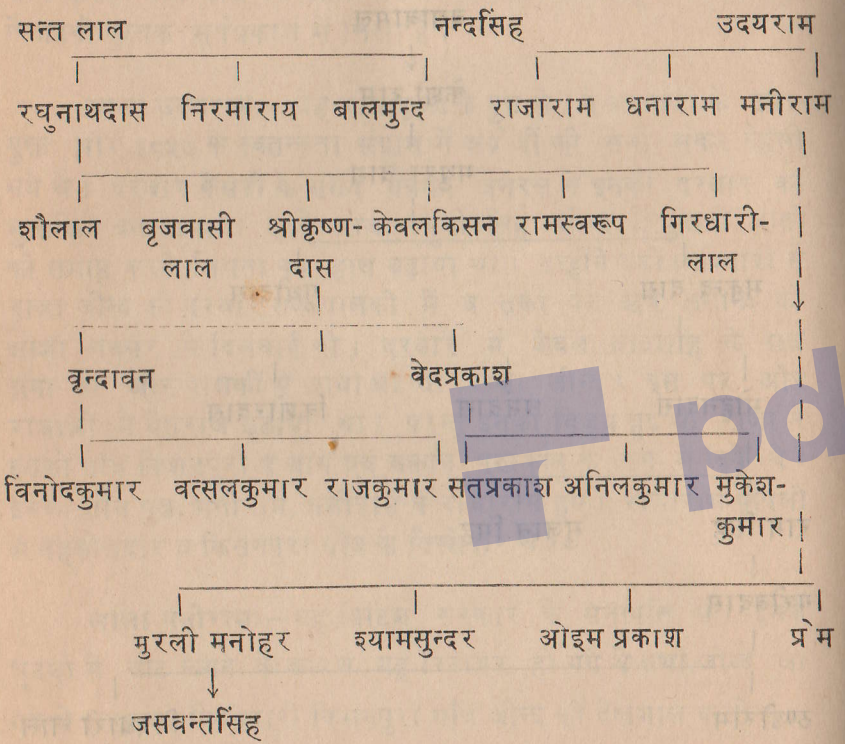

नोट:—इस वंशावली में प्रसिद्ध व्यक्तियों की शाखायें दिखाई गई हैं।

Remove Watermark Now

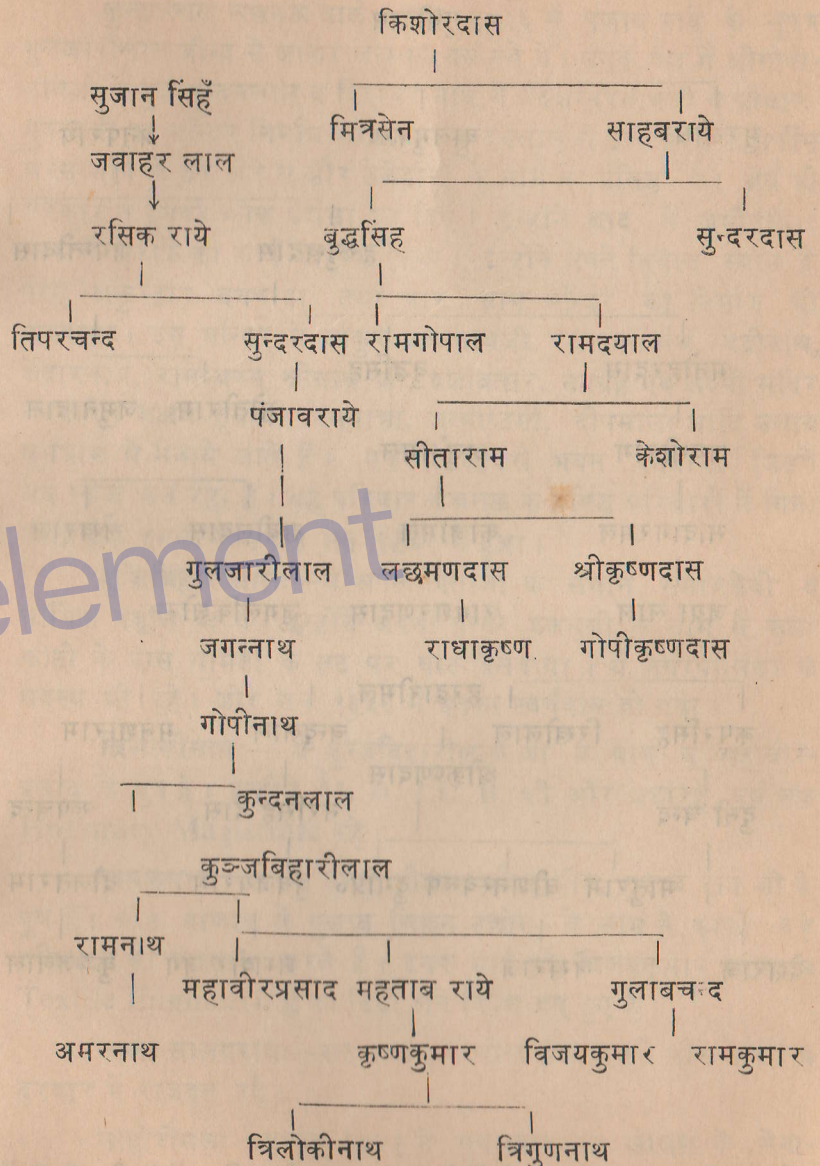

नोट:—इस वंशावली में केवल महत्वपूर्ण व्यक्तियों की शाखयें। दिखाई गई हैं।

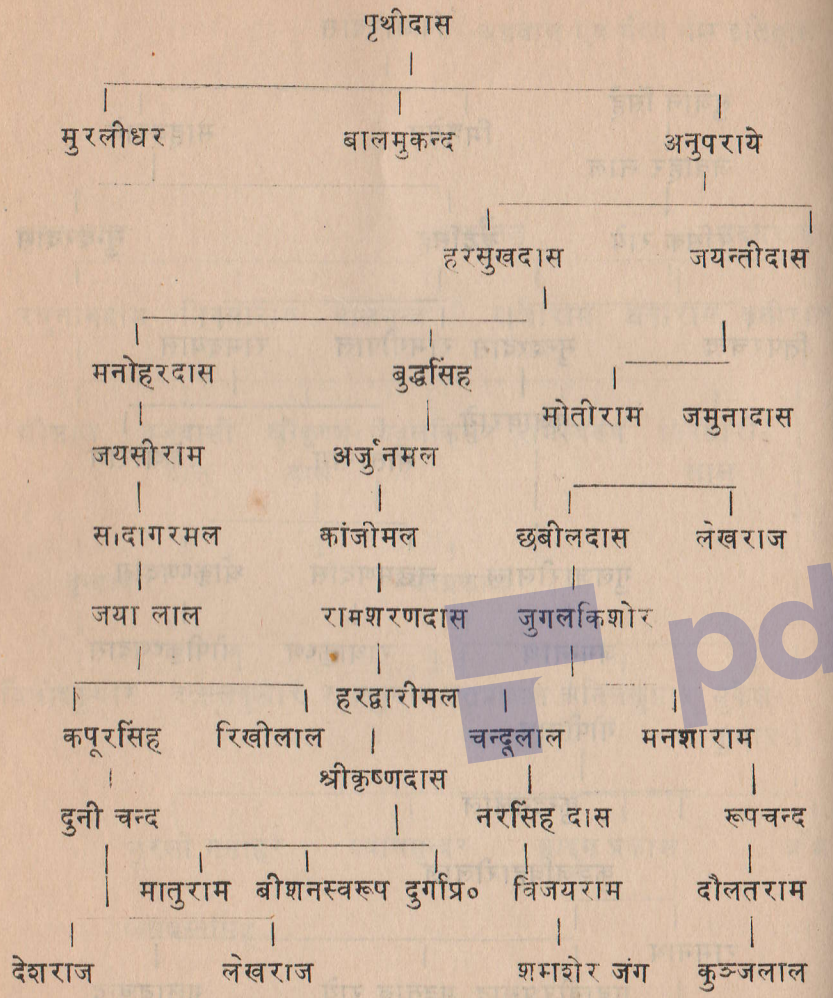

नोटः—इस वंशावली में केवल महत्वपूर्ण व्यक्तियों | की शाखायें दिखाई गई हैं ।

Remove Watermark Now

कुन्दनलाल लखनऊ वालेः—सन् १८३६ में पंजाब राये के सुपुत्र गुलजारीलाल जीन्द से जाकर लखनऊ बस गये थे। उनके वंश में श्रीगोपीनाथजी के पुत्र कुन्दनलाल व विश्म्वर नाथ थे।विशम्वरनाथजी ने श्रीबालमुकन्दजी का मन्दिर निर्माण करवाया। कुन्दनलालजी उत्तरप्रदेश के अफीम चरस भाँग के ठेके लेते थे और ठेकेदार के नाम से प्रसिद्ध थे। अंग्रेजी सरकार ने इनको अनेक प्रशंसा पत्र दिए। इन्होंने बाद में अमीनाबाद पार्क में शराफे का कार्य आरम्भ किया। इन्होंने अपने निवास स्थान के पास ठाकुरद्वार बनवाया तथा चार धाम मन्दिर का निर्माण भी करवाया। इस मन्दिर में ठाकुर जगन्नाथजी, द्वारकानाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम् श्रीनाथ जी, दशावतार, नवग्रह एवं लक्ष्मी मंदिर बनवाये। अक्षय तृतीया, रथयात्रा, जन्माष्टमी, दीपमाला आदि उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं। एक बारहदरी भवन बनबाया जिसमें अब स्कूल चल रहा है। यह परिवार लखनऊ के प्रसिद्ध परिवारों में गिना जाता है। इनका स्वर्गवास सन् १६४१ में हुआ।

कुंजबिहारीलालः—ये अपने पिताजी के समान समाजसेवी व धार्मिक प्रवृत्ति के थे। इन्होंने अपनी पत्नी रुकमणी के नाम से कला कोठी के पास गोमती के तट पर घाट बनवाया। ये नगरपालिका के सदस्य भी रहे। ओर सन् १६५६ में इनका स्वर्गवास हो गया।

त्रिलोकीनाथः— ये कुन्जविहारीलाल जी के पौत्र व महावीरप्रसाद के पुत्र हैं। इन्होंने M. A. LL. B. की और अठारह वर्ष तक Honorary Magistrate रहे।

रामकुमारः—ये कुंजबिहारीलाल जी के पौत्र, गुलाब राये जी के पुत्र हैं। चौक बाजार में गुलाब चिकन उद्योग के नाम से काफी बड़े प्रतिष्ठान का संचालन करते हैं। इनके भाई श्री विजयकुमार आजकल Textile Engineering की डिग्री लेने विदेश गए हुए हैं।

लाला सालगरामः—सन् १८४६ में जीन्द दरबार की ओर से पंजाब दरबार में राजदूत रहे।

लाहोरीमलः—सम्वत् १८२१ में मुगलबादशाह आलम के सेनापति थे।

रिखीलालः—सरकार जीन्द के राजपूत थे।

बख्शी श्रीकृष्णदासः— जीन्द रियासत की सेना के सेनापती थे। सरकार ने इन्हें रायबहादुर की उपाधि दी थी।

लाला दुनीचन्दः— इन्होंने तारीखे रियासत जीन्द लिखी।

देशराजः— ये दुनीचन्द के सुपुत्र थे। इन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। सम्वत् १९९० में जीन्द की जनता ने इनको और पं० पूर्णानन्द को डिक्टेटर चुना। जिस पर सरकार जीन्द ने इन्हें कैद कर लिया। पं० पूर्णानन्द मुआफी मांग कर वापिस आ गए। परन्तु इन्होंने मुआफी नहीं मांगी। बाद में नगरपालिका के सदस्य रहे।

लेखराजः—ये दुनीचन्द के पुत्र थे। अलीगढ़ में डाक्टर थे। अंग्रेजी सरकार ने इन्हें रायबहादुर की उपाधि दी थी। इनके नाम पर अलीगढ़ में लेखराज रोड़ है। इन्होंने अपने प्रभाव से डा० देशराज को जेल से मुक्त करवाया।

दीवान चन्दुलालः—ये पहले हिसार में वकील थे। एक वार महाराजा रघुवीर सिंह हिसार गए और इनको अपने साथ लाये तथा अपना दीवान बनाया। महाराजा रणवीर सिंह की अव्यस्क अवस्था में कोंसिल आफ बजारत के सदस्य रहे।

नरसिंहदासः—पहले मीर मुंशी रहे। बाद में रियासत जीन्द के सदस्य बने।

विजयरामः—ये नरसिँह दास के पुत्र थे। नाजिम नहर रहे। बाद में साबीय हजूरी के निदेशक रहे।

राणा शमशेर जंगः—ये विजयराम के पुत्र हैं। जीन्द में वकालत करते हैं। नगरपालिका के सदस्य एवं उपप्रधान रहे।

दौलतरामः—ये जिलेदार जीन्द रहे।

कुन्जलालः ये दौलतराम के पुत्र थे। बहुत होशियार व्यक्ति थे। इन्होंने अपनी होशियारी एवं चालाकी से हमारे खानदान का पुराना रिकार्ड एवं तलवार कानुनगोई व गुरु तेग बहादुर जी की तलवार अपने अधीन कर ली। एवं अन्य परिवार वालों से दुर्लभ वस्तुएँ व पुस्तकें हथिया लीं। और सरकार की बहुत सी जायदाद अपने नियंत्रण में की। इन्होंने अपनी एकमात्र पुत्री खत्री पंजाबियों के विवाही। इनके मरने के बाद जायदाद व सारी वस्तुएँ खुर्दबुर्द कीं।

Remove Watermark Now

ओमप्रकाश.—ये वकील संगरूर में हैं। जीन्द विधान सभा के सदस्य व अध्यक्ष भी रहे।

मुकन्ददासः—इन्होंने शिवालय, घाट व बारहदरी व छःदरी सोमनाथ में बनवाईं। तथा एक ठाकुरद्वारा बनवाया।

मोहनदासः—शिवालय, घाट व बारहदरी सोमनाथ में बनवाई।

दीवान ठण्डीरामः— एक घाट व शिवालय सोमनाथ में बनवाया। इनकी समाधी भी सोमनाथ पर है।

बख्तमलः—एक कुआं व बारहदरी रामराय तीर्थ पर बनवाई।

तीपरचन्दः— एक घाट व बारहदरी निर्जन में एक घाट व छःदरी सोमनाथ में बनवाई।

साहबसिंहः— यह पदमसिंह के पुत्र थे। इन्होंने एक घाट थानेश्वर में सन्नहित सरोवर पर बनवाया।

राधाकृष्णः— सोमनाथ पर भैंरों मन्दिर व एक घाट बनवाया।

गंगाबिशनः— एक घाट व मन्दिर मन्शा देवी व शिवालय बनवाया।

लालमलः—एक घाट व तीदरी सोमनाथ पर बनवाई।

भीमसेनः— एक धर्मशाला सफीदों दरवाजा जीन्द में बनवाई।

pdfelement

श्री सुरेशचन्द्र गर्ग पानीपत

श्री सुरेशचन्द्र गर्ग का जन्म श्री बद्रीप्रसाद गर्ग मोटर वालों के यहाँ हुआ। पिता जी के स्वर्गवास के पश्चात् पानीपत ट्रांसपोर्ट कम्पनी का दायित्व सम्भाला। इनका विवाह शशिप्रभा सुपुत्री चौ० वृन्दावन जी कानुन्गो जीन्द के साथ हुआ। ये मृदुस्वभाव व धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि रखते थे। इन्होंने अल्प आयु में ही अपने गुणों से जनता को मोहित कर लिया था। १२ अप्रैल १९८६ को एक कार ट्रक दुर्घटना में इनका अचानक निधन हो गया।

आनरेबल सर शादीलाल
केटी० पी० सी०

सर शादीलालजी अग्रवाल का जन्म १२ मई सन् १८७४ में रिवाड़ी (जिला गुड़गांव) में हुआ। सन् १८९० में फौरमैन क्रिश्चियन कालेज से इन्टर-मिडियेट परीक्षा उत्तीर्ण करके राजकीय महाविद्यालय लाहौर से १८९४ में बी० ए० की परीक्षा पंजाब प्रान्त में प्रथम स्थान प्राप्त करके छात्रवृत्ति प्राप्त की। फिर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में गहन अध्ययन किया। सन् १८९६ में वर्डान संस्कृत छात्रवृत्ति प्राप्त की। १८९८ में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय नागरिक कानून परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। सन् १९०० में स्वदेश लौट आये। और लाहौर को अपना कार्य क्षेत्र चुना। ब्रिटेन में आपने डा० धनपत राये गर्ग जो कि शाहवाद मारकण्डा के सर्राफ परिवार से थे। मित्रता की जो कि शिक्षा प्राप्ती के लिए इंगलैण्ड गये थे। डा० धनपत राये भी अमृतसर में नियुक्त हुए। दोनों मित्रों में अपार स्नेह था। तथा दोनों मित्र श्रीमती गंगादेवी बहिन डा० धनपतराये जो कि उच्च धार्मिक विचारों की एवं शास्त्रों की ज्ञाता महिला थीं। इन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने भारत के तीर्थों अमरनाथ आदि की यात्रा की। इन्हीं के कारण रानी भगवान कौर में धार्मिक सिद्धि का जागरण हुआ। रानी भगवान के मुकदमों में इनको भारी सफलता मिली। तथा उच्चकोटि की प्रतिष्ठा मिली। आप पंजाब लैजिस्लेटिव कोंसिल के सदस्य मनोनीत हुए। सन् १९१३ में चीफ कोर्ट के जज नियुक्त हुए। आपके प्रयास से १९१९ से चीफ कोर्ट लाहौर हाईकोर्ट के रूप में परिवर्तित हुआ। १९२० ई० में आप प्रथम भारतीय स्थाई चीफ जस्टिस बने।

Remove Watermark Now

सर शादीलाल जी में निर्भीकता कूट २ कर भरी थी। एक बार एक उच्च अधिकारी अंग्रेज मुकदमें का फैसला अपने ढंग से करना चाहता था। विशेष जोर देने पर भी स्पष्ट कह दिया कि ऐसा प्रयास न करो। ७ मई १९३४ को आप सेवा निवृत हुए। सन् १९३७ में ब्रिटिश साम्राज्य प्रिवी कोंसिल में नियुक्ति हुई। और लन्दन चले गये। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण १५ नवम्बर १९३८ को भारत वापिस आ गये तथा देहली से ही अपना त्यागपत्र भेज दिया। और देहली रहने लगे। इन्होंने षंसरपुर (उत्तर प्रदेश) व शामली में शुगर मिल चालू की। इनके पुत्र राजेन्द्रलाल व नरेन्द्रलाल हैं। सन् १९४२ में रिवाड़ी में महिला चिकित्सालय की स्थापना की। २६ मार्च १९४५ को इनका देहली में निधन हो गया। अग्रवाल समाज को इन पर गर्व है।

(लाला राजेन्द्रलालजी)

लाला राजेन्द्रलालजी:—इनका जन्म सरशादी लाल के परिवार में १५ फरवरी १९१३ को लाहौर में हुआ। सन् १९२५ में डी० ए० वी० हाईस्कूल से मैट्रिक पास की। १९३२ में लाहौर से बी० ए० पास करके उच्च शिक्षा हेतु इंगलैण्ड चले गये। आपके निम्नलिखित व्यापारिक प्रतिष्ठान हैं। सर शादीलाल सुगर मिल्ज लि० शामली, ELOCON इन्जिनीयरिंग कम्पनी लि० बल्लभी विद्यानगर गुजरात, शामली डिस्टलरी कैमिकल वर्क्स शामली, व पिलखनी आदि हैं। आपकी रुचि जनरल

स्पोर्टस, हाकी, टेनिस और सामाजिक कार्यों में हैं। आप अखिल भारतीय अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान जीन्द के संरक्षक पद पर हैं। आपने एक लाख रुपये सर शादीलाल मैमोरियल अस्पताल शामली ५०,००० रुपये गुरुकुल (हरियाणा) तथा पाँच लाख रुपये सुशीलादेवी राजेन्द्रलाल मैमोरियल को दान दिया। आप बम्बई और मुजफ्फरनगर क्लब के सदस्य हैं। आपका जीवन सादा एवं उच्च विचारमय है। आप वचन के पक्के और धार्मिक प्रवृति वाले एवं अत्यन्त मृदुभाषी हैं।

———

Remove Watermark Now

संरक्षक संस्थान

श्री चाननमल बंसल का जन्म २६ नवम्बर १६३६ को श्री श्योबक्स अग्रवाल ग्राम सिवानी (भिवानी) में हुआ। आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध-संस्थान जीन्द के संरक्षक हैं। आप हिसार में हरियाणा ट्यूबज प्रा० लि० का संचालन कर रहे हैं। अग्रवाल समाज में आपका महत्वपूर्ण स्थान है। पुस्तक प्रकाशन में सहयोग के लिए सस्थान आपका आभारी है।

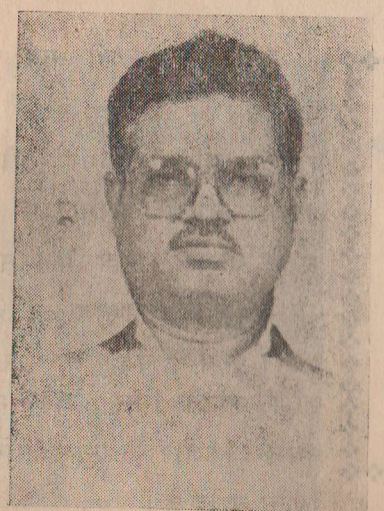

श्रीराम अवतार के० गुप्ता का जन्म ७ जनवरी १६४४ में श्री कुञ्जलाल गोयल के गृह में तिगड़ाना ग्राम (भिवानी) में हुआ। इन्होंने ५ जुलाई १६६६ में नासिक (महाराष्ट्र) में उद्योग स्थापित किये। १६६६ ई० में ला० कुञ्जलाल जी का स्वर्गवास हो गया। इनके भाई नरेशकुमार गोयल, पुत्र संजय-कुमार व पुत्री सुनीता व संगीता हैं। इनके तिगड़ानिया सन्ज त्रिम्बक इस्पात प्रा० लि० व तिगडानिया इस्पात (प्रा० लि०) प्रति-ष्ठान है।

(श्री बृजमोहन सिंगला)

श्री बृजमोहन सिंगला का का जन्म जीन्द के सिंगल गौत्री अग्रवाल परिवार में श्री-सीताराम के घर में हुआ। इन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। १९८२ में हरियाणा विधान सभा के सदस्य चुने गये। और हरियाणा के करा-धान मन्त्री पद पर आरूढ़ हुए। आप अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध-संस्थान के संरक्षक हैं।

श्री मदनमोहन गर्ग

श्री मदनमोहनजी गर्ग का जन्म सन् १९३४ में पानीपत के प्रसिद्ध परिवार गर्ग गौत्री अग्रवाल लाला आत्माराम जी के घर में हुआ। आप मिलनसार एवं मृदुभाषी स्वभाव के हैं। इनकी फर्में मै० आत्माराम कृष्ण काटन मिल। बल्लीमल नवल किशोर एवं जीनिंग मिल्स आदि हैं।

Remove Watermark Now

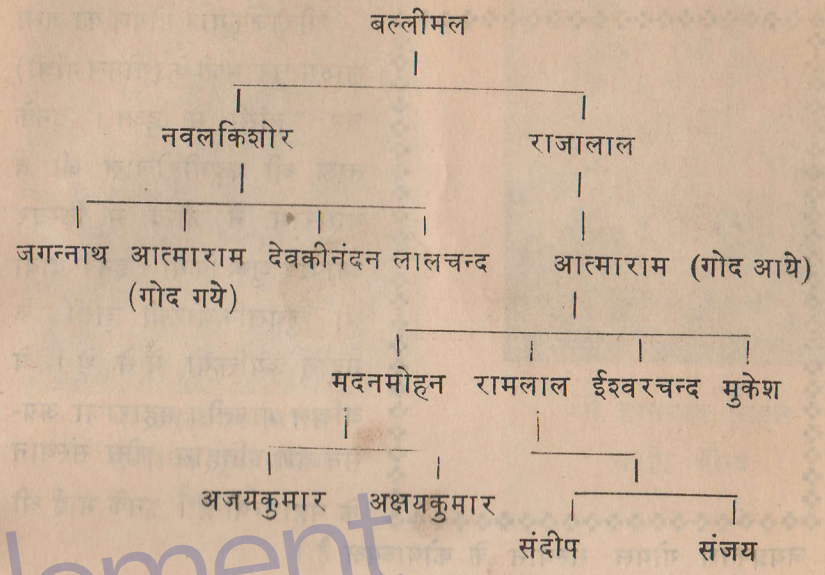

pdfelement

श्री पराग सिंहल

महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान जीन्द की पश्चिमी उत्तर प्रदेश की शाखा के सक्रिय उपमन्त्री श्री परागसिंहल का जन्म—१० मार्च १९६१ को बुलन्दशहर के प्रेसवाला परिवार के सुविख्यात प्रो० मनु सिंहल (आगरा) के यहां हुआ। ये वैश्य अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष तथा युवा अग्रवंश संघर्ष समिति आगरा के महामन्त्री भी हैं।

श्रीराजकुमार गोयल का जन्म ला०साधुरामजी के (गोयल गौत्री) घर हांसी में हुआ। इनके ताऊ श्री कश्मीरीलाल जी व साधुराम ने जीन्द में टिम्बर व्यापार शुरू किया। इनके दादा श्री जुगलकिशोरजी हासी के महान् व्यक्तियों में से थे। ये अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान के महामन्त्री हैं। इनके भाई श्री जयप्रकाश गोयल संस्थान के कोषाध्यक्ष है।

जुगलकिशोर

कश्मीरीलाल | रामेश्वरदास | साधुराम

प्रेमचन्द | वेदप्रकाश | ओमप्रकाश | राजकुमार | जयप्रकाश | सोमप्रकाश

श्री शीशपाल गर्ग:–श्री शीशपाल गर्ग का जन्म १०-८-४९ को कोड़ा ग्राम में लाला जियालाल के घर गर्ग गौत्री अग्रवाल परिवार में हुआ। इनका परिवार बिहारी के नाम से प्रसिद्ध है। अर्थात् इनके पूर्वज लाला विहारीलालजी थे। इन्होंने जे० बी० टी० का कोर्स किया और सनातनधर्म स्कूल जीन्द में अध्यापक लगे। आप अत्यन्त श्रद्धालु और प्राचीन रूढ़ीवादी विचारधारा के व्यक्ति हैं। इनकी प्रेरणा व सहयोग से अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान की स्थापना हुई। और संस्थान के आजीवन सदस्य बने। जनवरी १९८४ तक महामन्त्री रहे। फिर त्यागपत्र दे दिया। अगस्त १९८४ में व्यक्तिगत सचिव बने। इन्होंने इतिहास को लिपिबद्ध करने में सहयोग दिया। जनवरी १९८५ में व्यक्तिगत सचिव का कार्यभार भी छोड़ दिया।

श्रीरामस्वरूप मित्तल
सम्पादक पूर्वी पंजाब
भिवानी

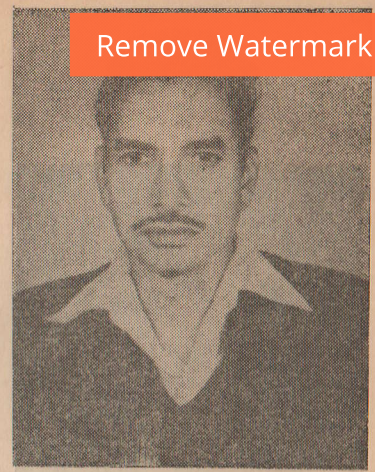

श्री ज्ञानचन्द सिंहल
सर्राफ जीन्द

श्री अदिशचन्द जैन
एडवोकेट जीन्द

श्री श्यामलाल सिंहल
जीन्द

Remove Watermark Now
pdfelement

(श्री कुलदीप भारद्वाज)

श्री कुलदीप भारद्वाज का जन्म ५ अप्रैल १९६२ में गागोंली ग्राम जिला जीन्द (हरियाणा) में श्री पं० श्रीदत्त भारद्वाज के घर में हुआ। सन् १९८२ में वाणिज्य स्नातक (B. Com.) की उपाधि प्राप्त करके गोपाल विद्या मन्दिर उच्च विद्यालय जीन्द में अध्यापक लगे। इतिहास को लेखनी बद्ध करने के लिए १९८३ में इनकी वैतनिक नियुक्ति की गयी। तथा जब श्री शीशपालजी गर्ग ने कार्य अधूरा छोड़ा तब इन्होंने इस कार्य को पूरा किया। हम इनके बहुत आभारी हैं क्योंकि इन्होंने कई बार किसी न किसी प्रकार इस संस्था के कार्यों में सहयोग दिया। वर्तमान में आप महासचिव का कार्य कर रहे हैं।

पुरावशेषों तथा कला सामिग्री के चित्र

Remove Watermark Now
pdfelement

"लाल किला देहली में निशान"

लाल किला देहली (लाल कोट) में खास महल में एक विशिष्ट निशान हिन्दू एवं अग्रवालों के लक्षण के रूप में मौजूद हैं। धरातल से लगभग १० फुट ऊँचाई पर और अपने आधार पर ५ फुट चौड़ा तथा ऊँचाई लगभग ३ फुट है। यह जालीदार संगमरमरी विभाजन दीवार के सबसे ऊपरी भाग में रेखा चित्रण है। आधार के दांए बांये बड़े बड़े शंख बने हैं। मध्य में दो तलवारें जिनकी मूठें आपस में जुड़ी हैं। इस पट्टी के मध्य में दो तलवारों की मूठों के ऊपर कलश है। कलश के ऊपर कमल है। कमल की डण्डी पर तुला (तराजू) रखी है। दोनों तलवारों की नौकों के समाप्त होने पर दो छोटे-२ शंख बने हैं। तुला के निकट खाली स्थान पर छोटे-२ सूर्य के १८ प्रतिबिम्ब बने हैं। मध्य में सूर्य का वृहदाकार प्रतिबिम्ब बना है। ऊपर बनी महराव में संगमरमरी सूर्य बना है।

१. शंख वैष्णव धर्म के प्रतीक हैं।
२. तलवारें क्षत्रीय धर्म की प्रतीक है।
३. कमलयुक्त कलश लक्ष्मी का प्रतीक है।
४. दीप्तिमान तेजस्वी सूर्य, सूर्यवंश का प्रतीक है।
५. १८ छोटे-२ सूर्य १८ गौत्रों के प्रतीक हैं।
६. तलवारों के फ्रल की नौकों के पास शंख हर प्रकार का वैभव प्राप्त करके भी गम्भीर रहने का प्रतीक है। अर्थात यह निशान अपने को स्वयं अग्रवाल का होना सिद्ध करता है तथा देहली पर अग्रवालों के राज्य की पुष्टि करता है। जिसका वर्णन प्राचीन हस्तलिखित अग्रपुराण में मिलता है।

Remove Watermark Now
pdfelement

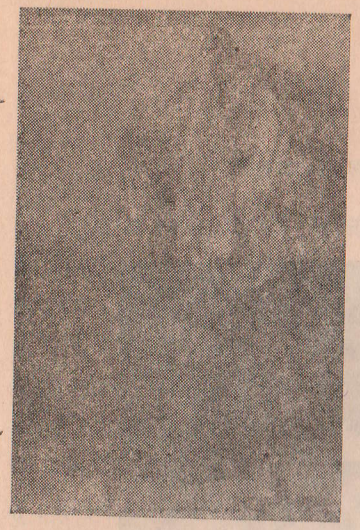

Remove Watermark Now

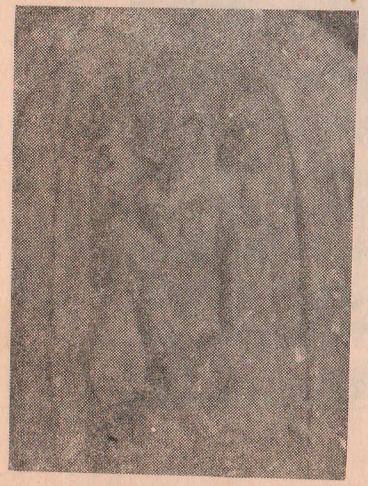

देवता आठवीं शताब्दी

महिषासुर मर्दिनी आठवीं शत ब्दी

यक्ष आठवीं शताब्दी

गणेश सातवीं शताब्दी

सूर्य सातवींश़ताब्दी

pdfelement

शंखवादिनी सातवीं शताब्दी

नागदेवी सातवीं शताब्दी

कश्यप ई० पूर्व दूसरी शताब्दी

टैराकोटा टैराकोटा ई० तूर्व दूसरी शताब्दी

1-शीश 2-मांत्रिका 3-सूर्य शीश 4-हण्डल सीस
दूसरी से चौथी शताब्दी

1-कुबेर 2-त्रिनेत्र शिव 3-यक्ष 4-गूजरी
दूसरी से चौथी शताब्दी

नन्दी आठवीं शताब्दी

खण्डित मूर्ति सातवीं शताब्दी

खण्डित मूर्तियाँ सातवीं शताब्दी

खण्डित मूर्तियाँ सातवीं शताब्दी

Remove Watermark Now

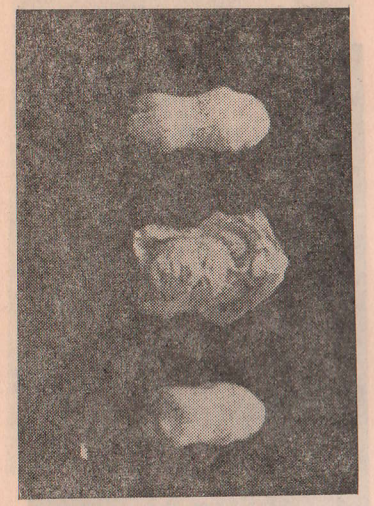

1-शिवलिंग ई० पूर्व तीसरी शताब्दी
2-नागकन्या सातवीं शताब्दी

सती तेरहवीं शताब्दी

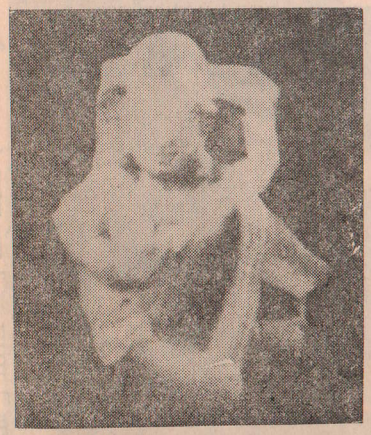

गन्धर्व आठवीं शताब्दी

हनुमान दूसरी शताब्दी

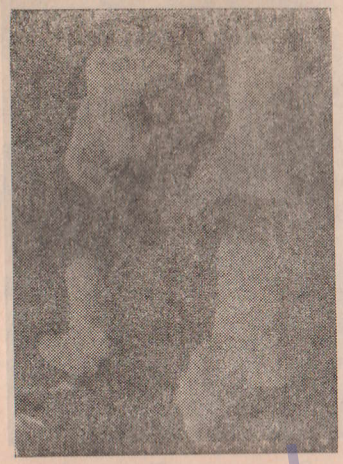

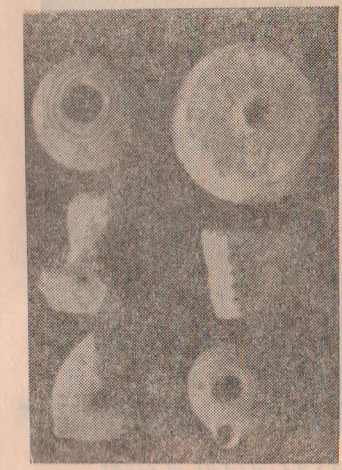

वस्त्र व पक्षी तथा अन्य वस्तुएं ई० पूर्व तीसरी से आठवीं शताब्दी

pdfelement

Remove Watermark Now

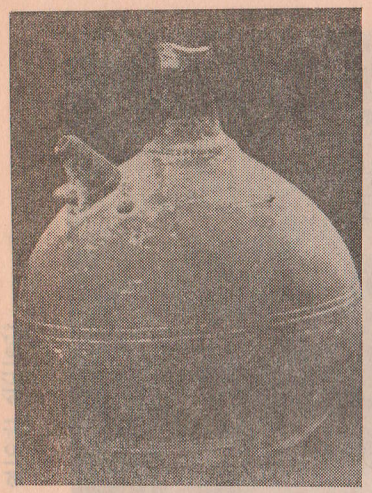

झज्जर सातवीं शताब्दी

गुडिया ग्यारहवीं शताब्दी

ऋषि सातवीं शताब्दी

नर्तकी सातवीं शताब्दी

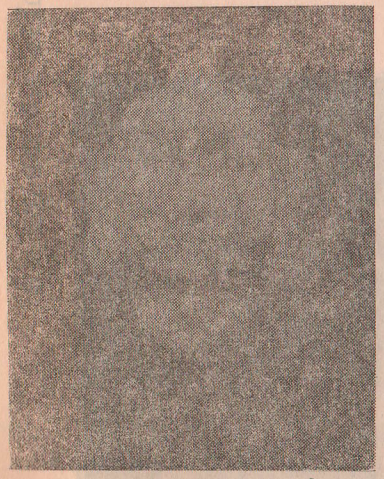

महावीर शीश तेरहवीं शताब्दी

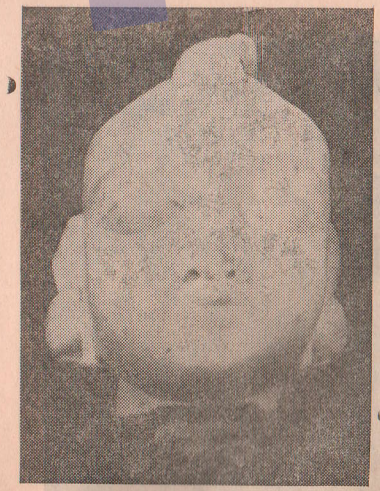

स्त्री शीश तेरहवीं शताब्दी

विष्णु बारहवीं शताब्दी

त्रिमुखी शक्ति बारहवीं शताब्दी

pdfelement

Remove Watermark Now

मुद्रांक अग्रवर्मस

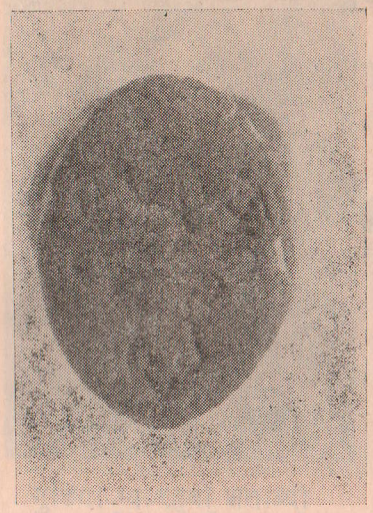

मुद्राँक त्रिलकस्य

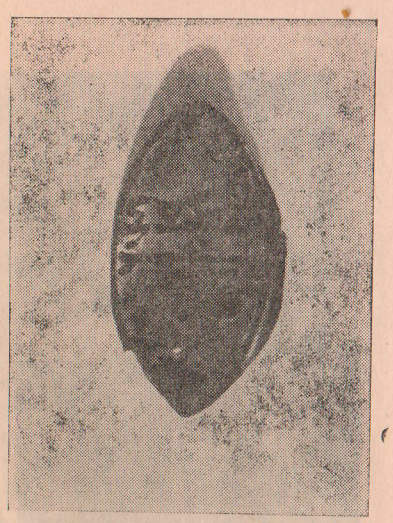

मुद्रांक देवसिद्धा

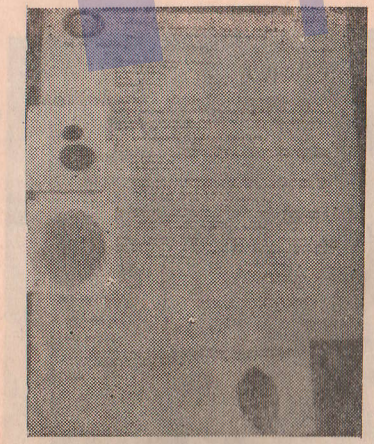

रिपोर्ट भारतीय मुद्रा परिषद,
वाराणसी

शीश विष्णु नौवीं शताब्दी

राजपुरुष सातवीं शताब्दी

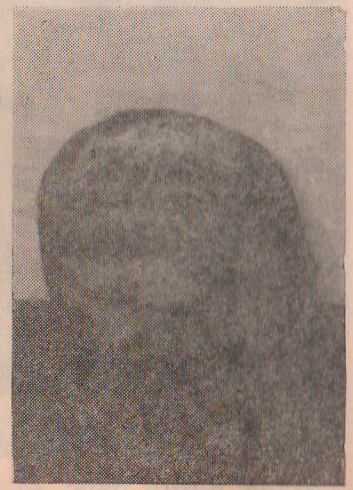

स्वयमव शिवलिंग

शीश गणे ।

pdfelement

Remove Watermark Now

रोहतक में प्राप्त मुदांक
महासेनापति वीर

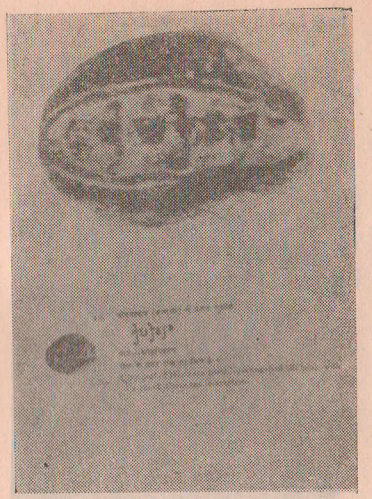

रोहतक मे प्राप्त मुद्राक
श्री हरीवर्म

औरंगाबाद में प्राप्त मुद्रांक
श्री रुद्रवर्मन

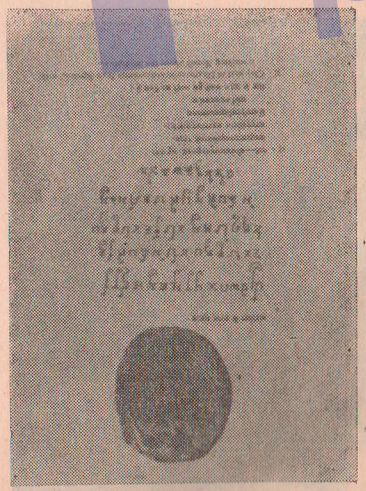

रोहतक में प्राप्त मुद्रांक
श्री नववर्मन

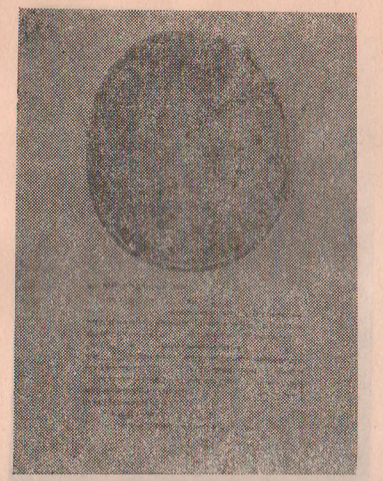

सानीपत में प्राप्त मुद्रांक
हर्षवर्धन

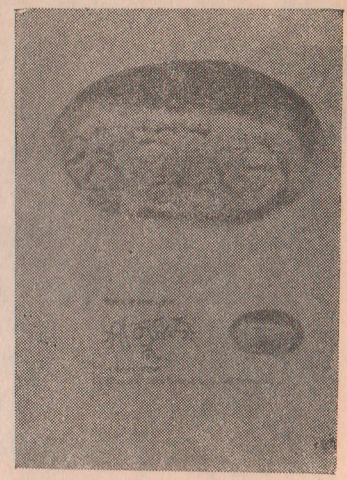

अग्रोहा में प्राप्त मुद्रांक
महीजन

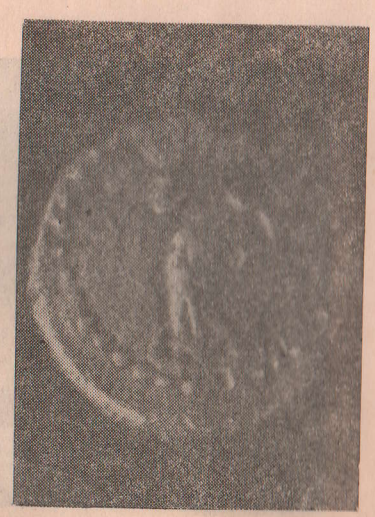

योधेयकालीन मुख्य भाग
स्कन्ध

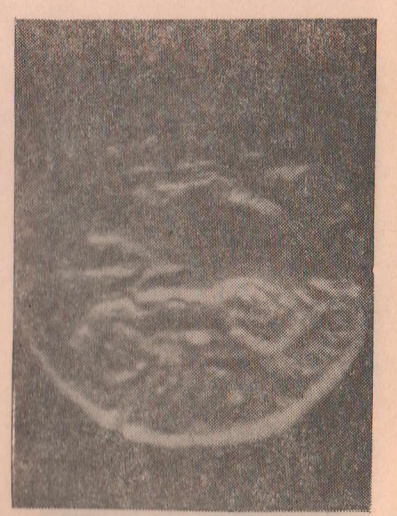

याधेयकालीन मुद्रा पृष्ठ भाग
खड़ी लक्ष्मी

pdfelement

Remove Watermark Now

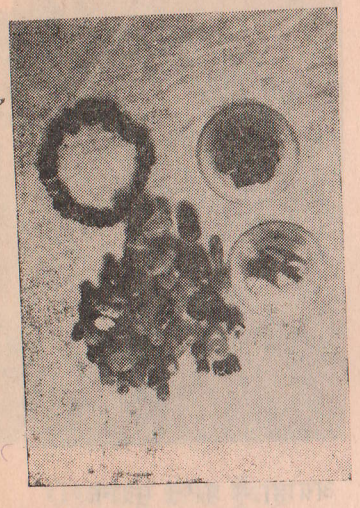

अग्रोहा में प्राप्त नग व मोती

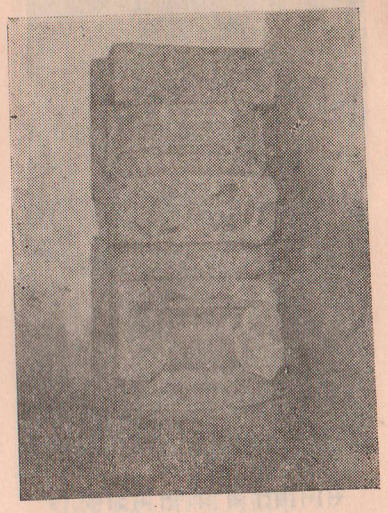

अग्रोहा में प्राप्त स्तंभ व तोर्णद्वार

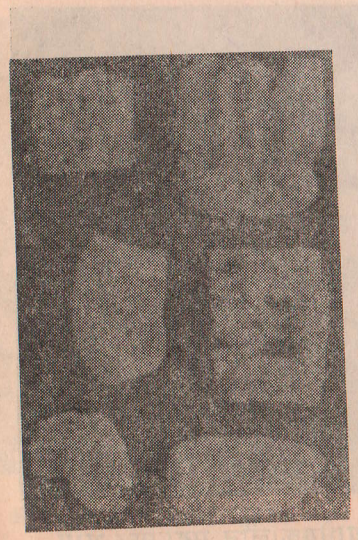

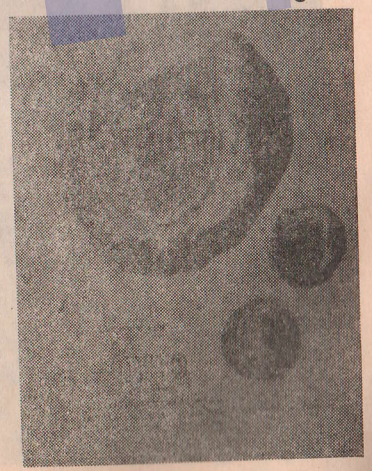

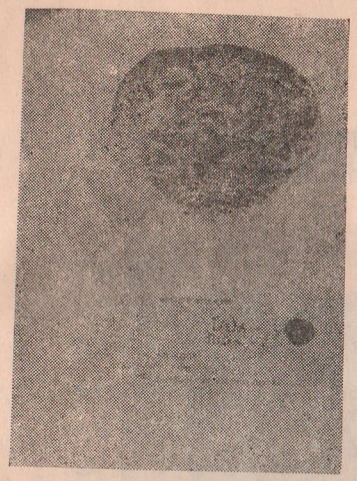

अग्रोहा में प्राप्त मुद्रांक
हालय

अग्रोहा में प्राप्त मुद्रांक
गूगा चौहान

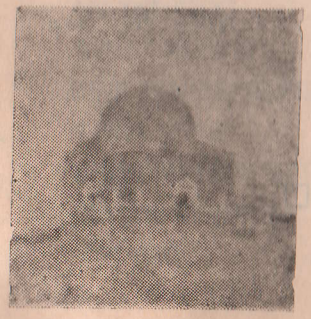

लक्खी बंजारे की समाधि, हांसी

अग्रोहा में प्राप्त मनके

pdfelement

ताम्र-पत्र अग्रोदक (अग्रोहा)

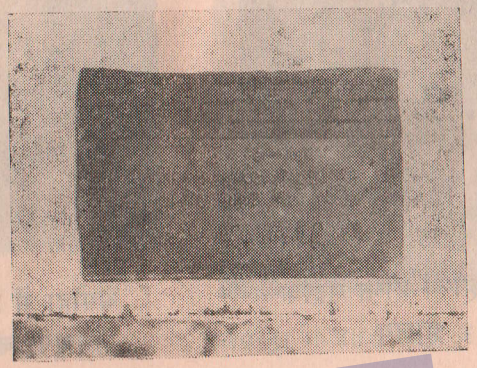

(अनुवाद)

स्वस्ति श्री मानव्यस गौत्राणा ..... हारिती पुत्राणाम
चालक्याना वंश संभुतं .....ईन्द्र अगर वर्मन
भगरोतक स्वामी चलका वशम्बर पूर्णचन्द्र

पोष ...२० ७००

□□□

सन्दर्भ सूची

१.	महाभारत	.... पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र
२.	हरीवंश पुराण	.... श्री ज० पन्नालाल जैन
३.	विष्णु पुराण	
४.	ब्रह्म वैवर्त पुराण	.... मुनीलाल गुप्त
५.	गर्ग संहिता	.... श्री रामनारायणदत्त
६.	स्कन्द पुराण	.... चमल लाल गौस्वामी
७.	अग्नि पुराण	.... श्री रामनारायणदत्त शास्त्री
८.	सत्यार्थप्रकाश	.... श्री दयानन्द सरस्वती
९.	हरिवंश पुराण	.... पं० गजाधर शर्मा
१०.	बाईबल	.... लंका क्रिश्चियन सोसाईटी
११.	देवी भागबत पुराण	....
१२.	श्रीमद् भागवत पुराण	.... हस्तलिखित विक्रमी संवत् १८०१
१३.	वामन पुराण	.... श्रीराम शर्मा
१४.	मत्स्य पुराण	.... श्रीराम शर्मा
१५.	भविष्य पुराण	.... श्रीराम शर्मा
१६.	चक्रवर्ती गुजरों	.... कन्हैयालाल मुंशी
१७.	प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग-२	.... परमेश्वरीदास गुप्त
१८.	प्राचीन भारत	.... रमेशचंद्र मजुमदार
१९.	प्राचीन भारतीय मूद्रायें	.... वासुदेव शरण उपाध्याय
२०.	इतिहास राजस्थान	.... कर्नल टाड
२१.	रासमाला	.... दिवान बहादुर रणछोड़ भाई उदयराम
२२.	खरतरगच्छ बृहद् गुरुवावली	.... जिन विजयमुनि पुरातत्वाचार्य

Remove Watermark Now
pdfelement

२३- हरियाणा की प्राचीन मुद्रायें .... श्री ओइमानन्द सरस्वती

२४. खरतर गच्छ के .ति- बोधित गौत्र व जातियाँ .... श्री अगरचन्द नाहटा

२५. क्षत्रप कालीन गुजरात .... रशेश जमीदार

२६. दक्षिण भारत का इतिहास .... डा० के० ए० नीलकण्ठ शास्त्री

२७. सौराष्ट्रनो इतिहास ... शम्भुप्रसाद हरप्रसाद देसाई (आई० ए० एस०)

२८. गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ-६ ... (भोलाभाई जयसिंह भाई)

२९. गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ-२ ... भोलाभाई जयसिंह भाई

३०. सोमनाथ .... शम्भूप्रसाद देसाई

३१. नन्द मौर्य युगिन भारत .... के० ए० नीलकण्ठ शास्त्री

३२. आद्यमहाराष्ट्र आणि सातवाहन काल .... रघुनाथ महारुद्र भुसारी

३३. यात्रा बिवरण .... ह्वेनसांग

३४. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग II .... डा० परमेश्वरीलाल गुप्त

३५. गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ I

३६. हर्ष चरित्तम ... वाणभट्ट

३७. जैन शिलालेख संग्रह .... पं० विजयमूर्ति शास्त्राचार्य (एम०ए०)

३८. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मन्दिर .... वासुदेव उपाध्याय

३९. गुप्त अभिलेख .... वासुदेव उपाध्याय

४०. प्रबन्ध चिन्तामणी .... श्रीमेरु तुङ्ग चार्य कृत

४१. गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास ग्रन्थ-५

४२. प्राचीन भारत का इतिहास ... डा० रमाशंकर त्रिपाठी

Remove Watermark Now

४३. सफर नामा .... अबन बतुता

४४. राजस्थान का इतिहास .... देवकीनन्दन खण्डेलवाल

४५. गुजरातनों राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहाथ ग्रन्थ ३-४.

४६. आईन-ए-अकबरी .... अबुल फेजी

४७. अल बरोनी .... सैयद असगर अली साहिब

४८. अग्रसेन-अग्रोहा अग्रवाल ... डा० स्वराज्य मणी अग्रवाल

४१. तारिख जीन्द रियासत .... डा० दुन्नीचन्द गुप्ता

५०. अग्रबाल जाति का विकास .... डा० परमेश्वरीलाल गुप्त

५१. अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास .... डा० सत्यकेतू विद्यालंकार

५२. अग्रोत कान्वये .... श्री निरंजनलाल गौतम

५३. अग्रवालों की उत्पत्ति .... बाबू राधाकृष्णदास

५४ अग्रवालो की उत्पत्ति .... परमानन्द जैन शास्त्री

५५. महाराजा अग्रसेन और वै य अग्रवाल .... जगन्नाथ सिंहल

५६. विष्णु अग्रसेन वंश पुराण .... ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी

५७. जाती भास्कर .... ज्वालाप्रसाद मिश्र

५८. अम्ब पाली .... आचार्य चतुर्सेन

५९. नकल सनन्दा. कायमी रियासत जीन्द हस्तलिखित .... ला० सालगराम राजदूत

६०. इतिहास गुजरातनों मध्यकालीन

६१. तवारिख कदीम आर्यव्रत ... ठाकुर नगीनाराम परमार

६२. पृथ्वीराज रासो .... चन्द्र वरदाई

६३. राज तिरंगनी कश्मीर

६४. तारीखे फरोजशाही .... कलहन

६५. दिल्ली सल्तनत

६६, राजगान पंजाब .... यदुनाथ सरकार

६७. प्राचीन लिपी माला .... गौरी शंकर ओझा

pdfelement

Remove Watermark Now

1. HISTORY OF PATIALA .... Patiala State
2. ANCIENT INDIA .... V.C. Pandey M.A.
3. COINS OF THE SAT-VAHANA .... Empire I.K. Sharma.
4. PUNJAB CASTES .... Sir Deziz Ibbetson.
5. PUNJAB STATE GAZETTERS .... Vol XVII. A. 1904
6. ANCIENT CITIES AND TOWNS OF SATVAHAN .... Kailash Chand
7. REPORT FOR THE YEAR 1871-72 .... J. D. Begiar
8. POLITICAL HISTORY OF THE CHALUKYAS OF BADAMI .... By D.P. Dikshit
9. RAJPUT & CRIBES .... C.T. Metcife
10. INDIAN NUMISMATIC STUDIES. .... K.D. Bajpai
11. HINDU TRIBES & CASTES .... Sherring M.A.
12. SUCCESSORS OF THE SATVAHANAS .... D.C. Sirkar
13. THE EARLY HISTORY OF THE DECCAN .... G. Yazdani
14. BHARUCH GAZETTEERS.

pdfelement